॥ श्रीः ॥

भूतनाथ ।

उपन्यास

॥ अथवा ॥

भूतनाथ की जीवनी ।

[तृतीय खण्ड]

सौवां हिस्सा ।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

रचित और प्रकाशित ।

PRINTED BY

PANNA LAL ROY

... LAHARI PRESS BENARES CITY.

1922

॥ श्रीः ॥

भूतनाथ ।

* उपन्यास *
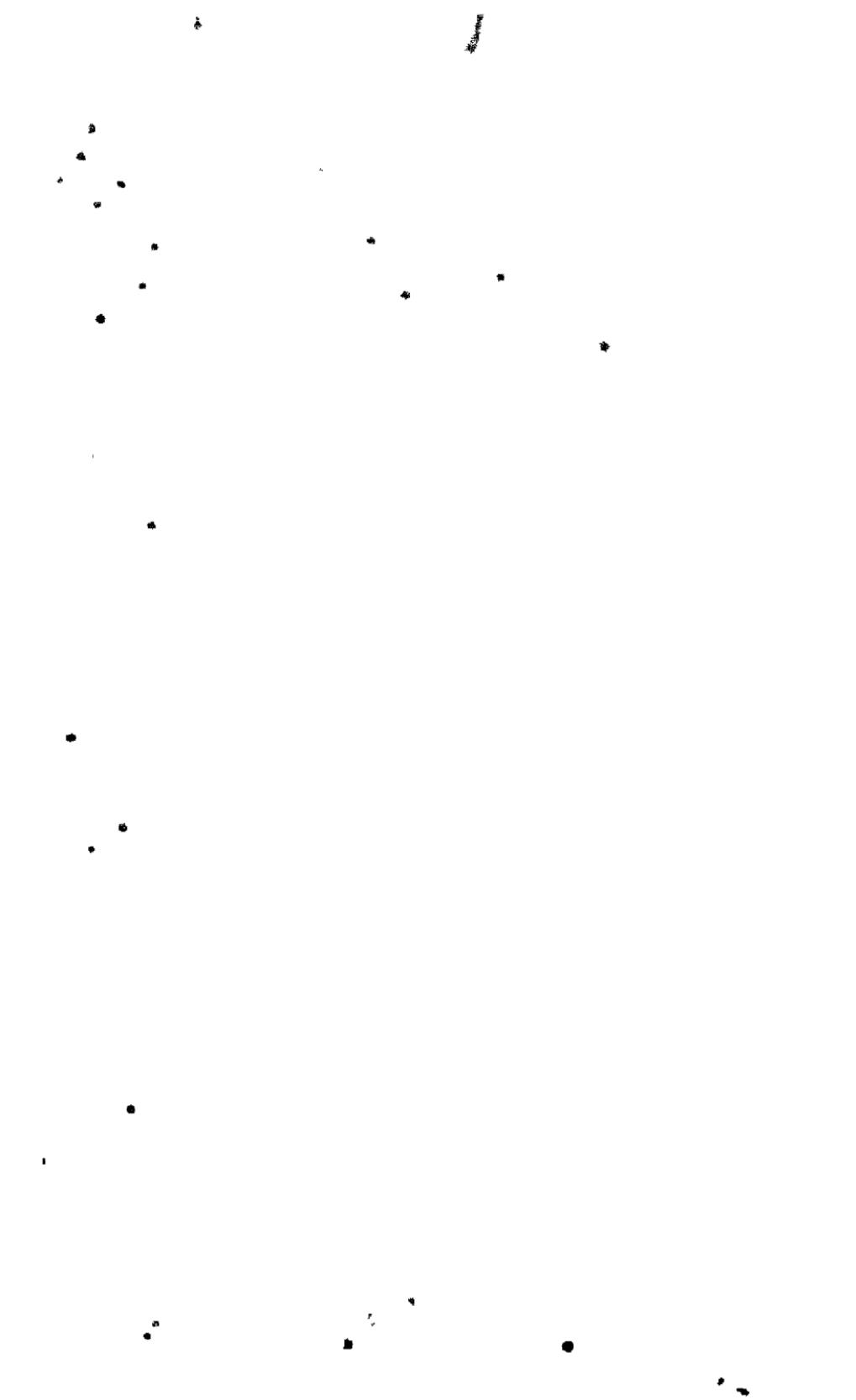
[तृतीय खण्ड]

पहिला बयान ।

अब वह जमाना आ गया है जिसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति पढ़ने वाले पाठकों को सन्तति के चौदह पन्द्रह और सोलह इत्यादि हिस्सों में इन्दिरा का हाल पढ़ने से मालूम हुआ होगा ॥

दामोदरसिंह का इन्दिरा की तस्वीर वाला कलमदान सर्यू को देना, इन्द्रदेव का जमानिया जाना और अपनी लड़की तथा स्त्री को लेकर अपने घर लौटना, दामोदरसिंह की मृत्यु, गोपालसिंह की उस विचित्र सभा द्वारा गिरफ्तारी, उनके पिता राजा गिरधरसिंह की मृत्यु, और गोपालसिंह का राजा बन कर इन्द्रदेव की सहायता से गुप्त कुमेटी का भण्डा फोड़ना आदि सब हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में खुलासे तौर पर लिखा जा चुका है अस्तु यहां पर हम उन बातों का जिक्र बिल्कुल ही न करेंगे या उतना ही करेंगे जितना कि आवश्यक होगा ॥

रात पहर भर से कुछ ऊपर जा चुकी है, अपने आलीशान मकान के एक बड़े कमरे में जिसके सब दर्वाजे भीतर से बन्द हैं दामोदरसिंह और भरतसिंह का नौकर हरदीन बैठे हुए कुछ बातें कर रहे हैं॥

कमरे में सिवाय एक शमादान के जो दामोदरसिंह के सामने जल रहा है और कोई रोशनी नहीं है इस कारण उस बड़े कमरे में एक प्रकार का अन्धकार है पर तो भी उस शमादान की रोशनी दामोदरसिंह के चेहरे की उदासी और लाचारी की अवस्था प्रगट करने को काफी है ॥

दामोदरसिंह के हाथ में एक कागज है जिसे वे मन ही मन पढ़ रहे हैं और हरदीन बेचैनी के साथ उनके मुंह की तरफ देख रहा है ॥

पढ़ना समाप्त कर दामोदरसिंह ने लम्बी सांस खींची और उसी

समय हरदीन ने कहा, "पर मैं फिर आपको समझाता हूं कि आप अपना यह विचार छोड़ दें। आप निश्चय रक्खें कि दारोगा को जिस की चालाकियों का जाल अच्छी तरह फैला हुआ है आपकी इस कार्रवाई का पता जरूर लग जायगा और फिर वह आपकी दोस्ती और अहसानों पर कुछ भी खयाल न कर आपका कट्टर दुश्मन बन बैठेगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह आपकी जान का ग्राहक बन बैठे, फिर आप ही सोचिये कि उसके मुकाबले में आप क्या कर सकते हैं और किस तरह अपने को बचा सकते हैं॥"

दामोदर०। हरदीन! तुम भी कैसी बातें करते हो? भला तुम सोचते हो कि जब मैं इतना बड़ा काम करने पर उतारू हुआ हूं तो उसकी मुसीबतों की तरफ मैंने खयाल न किया होगा या आने वाली आफतों को मैंने पहिले से सोच न लिया होगा? नहीं हरदीन! मैं सब कुछ सोच विचार चुका हूं और तब मैंने इस काम में हाथ लगाया है। मैं जानता हूं कि ऐसा करने और कुमेटी का हाल प्रगट कर देने पर दारोगा कदापि मेरे को जीता न छोड़ेगा पर यह विश्वास मेरे निश्चय को कदापि न बदल सकेगा। मैंने जो सोचा है वह मैं अवश्य ही कर डालूंगा पर अपनी प्रतिज्ञा को जो मैंने कुमेटी का मेम्बर होते समय की थी यहां तक निबाहूंगा कि मेरे मरने के पहिले इस कुमेटी का हाल लोगों पर प्रगट न होगा। जिस आदमी के हाथ मैं यह सब कागजात जो मैंने लिख कर तैयार किये हैं सौंपूंगा उसे अच्छी तरह समझा दूंगा कि मेरे मरने का निश्चय कर लेने के बाद वह इनको पढ़े और जैसा मुनासिब समझे वैसा कार्रवाई करे॥

हरदीन०। क्या आप समझते हैं कि दारोगा को आपकी इस कार्रवाई का पता नहीं लगेगा? क्या आप सोचते हैं कि जिस आदमी के हाथ आप ये कागजात सौंपेंगे उसका नाम दारोगा को मालूम न हो जायगा! क्या आप जानते हैं कि दारोगा की ताकत कहां तक बढ़ी हुई है और किस प्रकार घर घर में उसके भेदिये और दूत पहुंचे हुए हैं! और क्या आप इसी बात का मुझे विश्वास दिला सकते हैं कि खास आपके इसी घर में आपका कोई नौकर या सम्बन्धी दारोगा की तरफ मिला नहीं हुआ है और इस समय भी आपकी सब बातें सुन नहीं रहा है॥

दामो०। मैं सब समझता हूं, सब जानता हूं, सब बातों पर गौर कर चुका हूं, जो कुछ तुम कहते हैं वह सब ठीक है मगर क्या तुम्हीं इस बात का विश्वास मुझे दिला सकते हो कि इस गुप्त कुमेटी का भेद ज्यादा दिनों तक छिपा हुआ रह सकता है ! क्या तुम ही यह कह सकते हो कि इस सभा की कार्रवाइयें और करतूतें तथा अत्याचार ज्यादा दिनों तक इसे कायम रहने देंगे ! क्या तुमही यह बता सकते हो कि अब इस सभा की जिन्दगी कितने दिनों की है ? कुछ नहीं, तुम इस बात का निश्चय रक्खो कि इस सभा का अन्त अब आ चुका है और यदि मैं इस काम को न भी करूं तो कोई दूसरा अवश्य कर डालेगा और इस सभा का भण्डा फूट जायगा। ऐसी अवस्था में सभा का मन्त्री हो कर मैं ही क्यों न इस काम में अगुआ बनूं और दूसरे की जान आफत में न डाल मैं ही अपनी जान क्यों न होम करूं ॥

हरदीन चुप हो गया, दामोदरसिंह फिर बोले :—

दामो०। क्या तुम कह सकते हो कि वह विचित्र मनुष्य जो उस दिन ऐसी आश्चर्य रीति से हमारी सभा में आ पहुंचा और सब कार्रवाई देख सुन कर चला गया कौन था ! क्या तुमने उसकी शक्ति की तरफ खयाल किया ! क्या तुमने इस बात पर गौर किया कि उस विचित्र मनुष्य को जो केवल छू भर लेता था बेहोश हो जाता था ! और क्या तुमने इसी बात पर कभी ध्यान दिया कि जिस प्रकार वह आदमी एक दफे आया उसी प्रकार सौ दफे आ और सब बातें जान सुन सकता है और हम लोग उसका कुछ भी नहीं कर सकते हैं ॥

हर०। बेशक उस अद्भुत व्यक्ति में एक विचित्र ताकत थी ॥

दामो०। ताकत ! ताकत की बात जाने दो पहिले इस बात को सोचो कि वह था कौन ! मुझे विश्वास है कि वह अवश्य भैयाराजा या उनका कोई साथी था। तुम्हें मालूम है कि स्वयम् दारोगा अपनी जुबान से यह कह चुका है कि "भैयाराजा को इस कुमेटी का हाल मालूम हो गया है।" भला जब वे महाराज से बिगड़ कर चले गये उस समय के बाद केवल एक दफे महारानी की मृत्यु पर आने के सिवाय फिर वे कभी किसी को दिखाई दिये ! या दिये भी तो सिर्फ दारोगा को !! जरूर इतने दिनों तक गुप्त रह कर उन्होंने तपस्या या

और किसी ढङ्ग से यह अद्भुत शक्ति पाई है और अपना पुराना बदला लेने और सभा का भण्डाफोड़ करने आये हैं । हरदीन ! तुम इस बात का विश्वास रक्खो कि वह आदमी जो उस दिन आ पहुंचा था कोशिश करने पर सभा का गुप्त से गुप्त भेद जान सकता है और सभा को तहस नहस कर डालना तो उसके बाएं हाथ का खेल है। यदि मेरा खयाल ठीक निकला और वे वास्तव में ऐयारराजा हुए तो क्या वे प्रगट होने बाद इस सभा को और इसके मेम्बरों को जीता छोड़ेंगे ! नहीं ! कभी नहीं !! वे बुरी तरह से दागियों से अपना बदला लेंगे और उस दुष्ट के साथ ही साथ हम लोगों को भी मिट्टी में मिल जाना पड़ेगा ! फिर क्यों न मैंही इस काम में अगुआ बनूं और इस सभा का जीवन शेष करूं, क्यों दूसरों की निगाह में मैं व्यर्थ ही कमीना, बेईमान और राजद्रोही बनूं और ऐसों के दण्ड से दण्डित किया जाऊं ! नहीं हरदीन मैं सब कुछ सोच चुका हूं और सोचने बाद ही मैंने इस काम में हाथ डाला है. अब मैं अपना विचार बदल नहीं सकता और तुम भी मेरा निश्चय बदल नहीं सकते । तुमको मैं अपने भाई के बराबर समझता हूं और तुम पर विश्वास करता हूं इसी से ये सब कागजात मैं तुम्हें पढ़ने के लिये देता हूं जिन्हें दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद मैं समाप्त कर पाया हूं । इन कागजों में मैंने सभा का सब कच्चा चिट्ठा उतार दिया है, इसके सब मेम्बरों तथा सहायकों के भी नाम जहां तक मुझे मिल सके मैंने इसमें लिख दिये हैं, सभा के सब अधिवेशनों का हाल और उन आदमियों के नाम जिन को सभा की तरफ से प्राणदण्ड हुआ है, मय पूरे हाल के इसमें दिया है, जो जो लोग इस दुष्ट सभा के चक्र में पड़ कर कैद भोग रहे हैं उनका नाम मैंने इसमें लिखा है और जिन जिन पर इस सभा की क्रूरदृष्टि पड़ चुकी है और जो थोड़े ही दिनों में इस सभा के फंदे में पड़ा चाहते हैं उनका भी जिक्र मैंने कर दिया है। अपने जानते में तो मैंने कोई बात नहीं छोड़ी अब तुम भी पढ़ कर देख लो जिसमें विश्वास होजाय कि मैंने किसी बात में भूल नहीं की है । लो इन्हें पढ़ो और तब तक मैं एक दूसरे काम से छुट्टी पाकर आता हूं ॥

इतना कह अपने सामने के कई कागजात उठा कर दामोदरसिंह ने हरदीन के आगे बढ़ा दिये और तब उठ कर कमरे का दर्वाजा

खोलते हुए वे बाहर चले गये। बाहर जाकर उन्होंने फिर दर्वाजा बन्द कर दिया॥

लगभग आधे घण्टे में हरदीन ने उन कागजों का पढ़ना समाप्त किया और तब तक दामोदरसिंह भी वहां आ पहुंचे॥

कमरे का दर्वाजा फिर से बन्द कर वे हरदीन के सामने आकर बैठ गये और बोले, "सब बात दुरुस्त है, मेरी आज्ञानुसार इन्द्रदेव को बुलाने आदमी जा चुका है और उम्मीद है कि आज ही वे आ पहुंचेंगे। इन कागजों के रखने के लिये एक उपयुक्त पात्र भी मैं लेता आया हूं॥"

इतना कह दामोदरसिंह ने अपने कपड़ों में से सोने का बना हुआ छोटा सा कलमदान की शकल का एक डब्बा निकाला और हरदीन के आगे रख कर कहा, "बस इन कागजों के लिये यही डिब्बा उपयुक्त है और एक तरह पर कहना चाहिये कि इसी काम के लिये मैंने इसे बनवाया भी है, मगर पहिले तुम यह बताओ कि इन कागजों में कोई बात बढ़ाने या घटाने लायक तो तुमको नहीं मालूम हुई है॥"

हरदीन०। नहीं सब ठीक है, कोई बात की कसर नहीं है हां अब इन कागजों की हिफाजत का पूरा खयाल होना चाहिये क्योंकि यदि किसी तरह भी ये कागजात दारोगा के हाथ लग गये या उसे इनका पता लग गया तो फिर आप पर भविष्यत् में आने वाली आफत और भी नजदीक हो जायगी और आप अपने को इस दुष्ट के चंगुल से किसी प्रकार भी बचा न सकेंगे॥

दामोदर०। अपने भरसक तो मैं इसे बहुत ही गुप्त रक्खूंगा और इस बात का प्रबन्ध कर जाऊंगा कि मेरी मौत के पहिले ये कागजात खोले या पढ़े न जायं क्योंकि सब कुछ होने पर भी अपनी प्रतिज्ञा के निर्वाह का खयाल मुझे जरूर है पर तौभी भावी के आगे मेरी सब चेष्टा व्यर्थ होगी। मैं नहीं कह सकता कि मेरी मौत कैसी होगी, स्वभाविक होगी अथवा खूनियों के हाथ से, इसका पता ईश्वर ही जानता है और अब मैं उसी की कृपा पर अपने को छोड़ देता हूं॥

इतना कह दामोदरसिंह ने वह सोने का कलमदान खोला। सब कागजों को कायदे से सिलसिलेवार उसमें रक्खा और तब उसे बन्द करने बाद उसको साथ हाथ में लिये वे फिर कमरे के बाहर चले गये॥

हरदीन ने उस कलमदान को उठा कर देखा, सोने के खूबसूरत डब्बे के ऊपरी ढकने पर मीने की बहुत ही खूबसूरत तीन तस्वीरें बनी हुई थीं। बीचोबीच में एक लड़की की तस्वीर थी जिसके नीचे "इन्दिरा" यह नाम लिखा हुआ था। दाहिनी तरफ मियारानी की तस्वीर थी और बाईं तरफ एक नाजुक और खूबसूरत औरत की तस्वीर थी जिसे हरदीन पहिचानता न था॥

थोड़ी देर बाद दामोदरसिंह फिर वहां लौटे और हरदीन के पास आ कांपते स्वर में बोले, "हरदीन! एक प्रतिज्ञा तुमसे भी मैं कराया चाहता हूं। वह यह कि मेरे जीते जी अपनी जुबान से तुम इन कागजों और इस कलमदान का हाल किसी से भी न कहना और न यह बताना कि यह मैं किसे दे रहा हूं॥"

हरदीन ने दामोदरसिंह की इच्छानुसार प्रतिज्ञा की और तब उनकी मनशा समझ वह उठ कर सलाम करने बाद चला गया, दामोदरसिंह ने वह कलमदान उठा लिया और उसे कपड़ों में छिपाये वे मकान के जनाने हिस्से की तरफ चले गये॥

दूसरा बयान।

रोहतासगढ़ से जमानियां की तरफ आने वाली सड़क पर हम दो सवारों को आते देख रहे हैं जो जमानियां की तरफ बढ़े आ रहे हैं॥

दोनों सवारों के चेहरों पर नकाब है मगर इस समय उन्होंने उसे पीछे की तरफ फेंका हुआ है और इस कारण हमें इतना मौका मिलता है कि इनकी सूरत शक्ल के विषय में कुछ कह सकें॥

बाईं तरफ वाले सफेद घोड़े पर सवार आदमी की उम्र लगभग चालीस वर्ष के होगी, रङ्ग यद्यपि कुछ सांवला है पर तो भी चेहरा खूबसूरत है। बड़ी आंखें और सुडौल नाक उसकी सुन्दरता बढ़ाने के साथ ही चेहरे पर रौनक और रुआब डाले हुए हैं और बड़ी बड़ी मूछों ने जिसमें कोई कोई बाल सफेद नजर आ रहा है उसके रुआब को और भी बढ़ाया हुआ है और साथ ही चौड़ी छाती और मजबूत कलाइयां उसकी ताकत का परिचय दे रही हैं मगर बहादुरी के साथ ही उसकी कमर से लटकता हुआ खञ्जर और बटुआ तथा खूबसूरती

के साथ लपेटी हुई कमन्द इस बात की सूचना दे रही है कि इसे ऐयारी से भी कुछ शौक है या स्वयम् ऐयार है ॥

उसका साथी उम्र में उससे बहुत छोटा मालूम होता है। मूंछ दाढ़ी से एकदम साफ चेहरा बिल्कुल लड़कों का सा मालूम होता है पर तौ भी कद या ऊंचाई की तरफ ध्यान देने से मालूम होता है कि उसकी उम्र बीस वर्ष से कम न होगी। रङ्ग साफ गोरा, चेहरा बहुत ही सुन्दर और आंखें बड़ी ही रसीली हैं जो अपने साथी की तरफ देख बार बार जमीन की तरफ झुक जाती हैं। दूसरे सवार की तरह इसकी कमर में ऐयारी का कोई सामान यहां तक कि खञ्जर भी दिखाई नहीं दे रहा है ॥

दोनों सवारों की पोशाकें एकही रङ्ग ढङ्ग की हैं। सिर पर बड़ा मुंडासा जिसका सिरा कमर से भी कुछ नीचे तक लटका हुआ है, चुस्त अङ्गा और पायजामा तथा पैरों में कामदार जूते हैं जो यदि कीमती नहीं तो कमकीमती भी नहीं हैं ॥

दोनों आदमियों में धीरे धीरे कुछ बातें हो रही हैं जो औरों के कानों तक तो कदाचित् पहुंच न सकें पर हमारे पाठक अवश्य सुन सकते हैं। अपने साथी अधेड़ उम्र के आदमी की किसी बात पर हँस कर नौजवान ने कहा, "आप खातिर जमा रखिये, मेरे पास कोई हर्बा हथियार न रहने पर भी मुझे किसी प्रकार का डर नहीं है। दूसरे मेरा आना जाना इस राह से बराबर हुआ ही करता है और मैं आस पास के जङ्गलों से बखूबी वाकिफ हूं और सब प्रकार के हमलों से अपने को बचा सकता हूं ॥

अधेड़०। शायद आपका कहना ठीक हो! खैर अब आप मेरा हाल तो पूछ चुके अब अपना बताइये कि इस तरह अकेले सफर करने का क्या कारण है?

नौजवान०। हां हां मैं अपना हाल भी कहूंगा मगर आप पहिले अपना सब हाल तो बता दीजिये!!

अधेड़०। अब मेरे विषय में आप क्या जानना चाहते हैं, मैंने तो कहही दिया कि राजा वीरेन्द्रसिंह का ऐयार हूं और किसी खास काम से जमानिया जा रहा हूं॥

नौजवान०। और आपका नाम क्या है?

अघेड़० । सुजनसिंह ॥

नौजवान० । (जोर से हंस कर) हां आप कह चुके हैं मगर मेरा दिल आपकी बातें कबूल नहीं करता ॥

अघेड़० । क्यों क्या मैं झूठ कह रहा हूं ?

नौजवान० । यह तो मैं नहीं कहता कि आप झूठे हैं या झूठ कह रहे हैं ! मैं तो सिर्फ यही कहता हूं कि मेरा दिल आपकी बातें कबूल नहीं करता !!

अघेड़० । और तो आपका दिल क्या कहता है ?

नौजवान० । यही कि न तो आप राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं और न आपका नाम सुजनसिंह है ॥

अघेड़० । (चौंक कर) सो क्यों ? सो क्यों ?

नौजवान० । (हंस कर) आप ऐयार होकर भी ऐसी भारी भूल करते हैं ! क्या आप समझते हैं कि कोई आदमी ऐसा होगा जो प्रतापी राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को न जानता हो या जिसने उनका नाम न सुना हो !!

अघेड़० । तब ?

नौजवान० । तब यही कि राजा वीरेन्द्रसिंह के यहां सुजनसिंह नामक कोई ऐयार ही नहीं है ॥

अघेड़० । (कुछ रुकते हुए) बात यह है कि मैं खास राजा वीरेन्द्रसिंह का ऐयार नहीं हूं मगर उनके ऐयार देवीसिंह जी का शागिर्द जरूर हूं और इस सबब से अपने को वीरेन्द्रसिंह का ही ऐयार समझता हूं ॥

नौजवान० । शायद !!

अघेड़० । शायद के क्या मानी ? क्या अब भी आप मुझपर शक करते हैं ?

नौजवान० । मैं कह चुका हूं कि मेरी समझ में न तो आप वीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं और न आपका नाम सुजनसिंह है ॥

अघेड़० । आखिर आपके इस विश्वास का कोई सबब भी तो मालूम हो कि आप क्यों मुझे झूठा समझते हैं । अच्छा अगर मैं सुजनसिंह नहीं हूं और वीरेन्द्रसिंह का ऐयार भी नहीं हूं तो आप ही बताइये कि मैं कौन हूं । जरा पता तो लगे कि आप मुझ पर कैसा

होने का शक करते हैं ?

नौजवान० । (हंस कर) बता दूं ?

अधेड़० । हां हां बताइये, डर किस बात का है ?

नौजवान० । बहुत अच्छा तो सुनिये, आप रोहतासगढ़ के महाराज दिग्विजयसिंह के ऐयार हैं और आपका नाम शेरसिंह है !!"

नौजवान की बातें सुन वह सवार एकदम चौंक पड़ा और तब अपना घोड़ा नौजवान के घोड़े के पास ले जा गौर से उसकी सूरत देखने लगा ॥

उसी समय यकायक बाईं तरफ से आवाज आई, "और मैं भी पहिचान गया कि तू कौन है ।" और इसके साथ ही भूतनाथ आकर उन दोनों सवारों के सामने खड़ा हो गया ॥

भूतनाथ की सूरत देखते ही न जाने क्यों वह नौजवान एकदम कांप गया और तुरत ही अपने घोड़े का मुंह घुमा तेजी के साथ बगल के जङ्गल में घुस देखते देखते नजरों से गायब हो गया । भूतनाथ कुछ सायत तक एक टक उसकी तरफ देखता रहा और तब धीरे से बोला, "यह यहां क्यों आई ?"

अधेड़ उम्र आदमी भूतनाथ को देखते ही घोड़े पर से कूद पड़ा और उसके गले से चिमट गया । भूतनाथ ने भी उसे लिपटा लिया और दोनों की आंखों से प्रेमाश्रु बहने लगे ॥

थोड़ी देर बाद दोनों अलग हुए और शेरसिंह ने उस तरफ देखते हुए जिधर वह नौजवान चला गया था पूछा, "वह कौन था ! मैंने इसे नहीं पहिचाना पर इसने मुझे पहिचान लिया !!"

भूत० । तुमने नहीं पहिचाना ! यह गौहर थी !!

शेर० । गौहर ! शिवदत्त की लड़की * !!

भूत० । हां ! मैं तो पहली नजर में इसे पहिचान गया ॥

शेरसिंह कुछ देर तक एक टक उसकी तरफ देखता रहा इसके बाद उसने भूतनाथ की तरफ देखा ॥

भूत० । इधर बहुत दिनों बाद आये ?

शेर० । हां राजा साहब के एक काम से आना पड़ा और तुमसे

---

* चन्द्रकान्ता सन्तति में ये नाम आ चुके हैं ॥

है, बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई थी। इधर तुम्हारे बारे में कई ऐसी खबरें सुनीं कि जिनसे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ॥

भूत०। (लापरवाही की मुद्रा से सिर हिला कर) हां, इधर मैं बड़ी मुसीबत में पड़ गया था, अब आये हो तो सब सुनाऊंगा। चलो डेरे पर चलो॥

शेर०। नहीं भाई पहिले मैं वह काम कर लूं जिसके लिये आया हूं तब तुमसे बातें होंगी क्योंकि वह काम बहुत जरूरी है॥

भूत०। मैं समझता हूं दारोगा से कोई काम है॥

शेर०। हां तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

भूत०। (हंस कर) भला मुझे कौन बात नहीं मालूम!! कहो तो वह काम भी बता दूं जिसके लिये आये हो?

इतना कह भूतनाथ ने झुक कर शेरसिंह के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही वह चौंक पड़ा और कुछ सायत तक चुप रहने बाद बोला, "बेशक तुम्हारे विषय में मैंने जो कुछ सुना बहुत ठीक है, न जाने तुम्हें इन बातों का पता क्योंकर लगता है! इस वक्त तो मैं ठहर नहीं सकता फिर मिलूंगा! अच्छा तुम्हें कहां खोजूं, किस जगह रहोगे?"

"मैं तुम्हें खोज लूंगा।" कहते कहते यकायक भूतनाथ के कानों में सीटी की आवाज सुनाई पड़ी जो जङ्गल की तरफ से आई थी। वह चौंका और तब शेरसिंह से जाने का इशारा कर बड़ी फुर्ती के साथ उसी जङ्गल में घुस गया। शेरसिंह भी अपने घोड़े पर सवार हुए और तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुए॥

दिन पहर भर से कुछ कम ही बाकी रह गया होगा जब शेरसिंह जमानिया के दारोगा साहब के मकान पर पहुंचे। बागवाले मकान पर नहीं बल्कि शहरवाले उस मकान में जिसके विषय में कि हमारे पाठक ऊपर बहुत कुछ पढ़ चुके हैं॥

सूचना देते ही स्वयम् दारोगा साहब आकर शेरसिंह को दर्वाजे पर से ले गये और अपने कमरे में लेजाकर बैठाया, कुशल मङ्गल के बाद आने का कारण पूछा और तब शेरसिंह ने एक चीठी जिसपर मुहर की हुई थी निकाल कर दारोगा के हाथ पर रख दी॥

दारोगा ने बड़े गौर के साथ वह चीठी खोल कर पढ़ी और तब

कहा, "इस चीठी से मालूम होता है कि आपसे और भी कई बातों का पता लगेगा जो इसमें नहीं दी गई हैं ॥"

शेर० । बेशक ऐसा ही है । उस चीठी के साथ ही आपको यह चीठी भी देखनी चाहिये जिसके पढ़ने से आपको राजा साहब की चीठी का मतलब पूरी तौर से मालूम हो जायगा ॥

इतना कह शेरसिंह ने एक और पत्र निकाल के दारोगा के हाथ में दिया और कहा, "यह पत्र राजा शिवदत्त ने हमारे महाराज को भेजा था । इसे आपको दिखाने के लिये महाराज की आज्ञा से मैं लेता आया हूं ॥"

दारोगा ने इस पत्र को भी गौर से पढ़ा और तब दोनों चीठियें सामने रख कहा, "तो राजा शिवदत्त महाराज दिग्विजयसिंह से मदद चाहते हैं ॥"

शेर० । जी हां ॥"

दारोगा० । इस बारे में कि वे राजा वीरेन्द्रसिंह इत्यादि से बदला लेने में उसकी सहायता करें !!

शेर० । जी हां, महाराज शिवदत्त ने वीरेन्द्रसिंह इत्यादि से हार मान कर पहिले तो तपस्या करनी चाही पर तपस्या उन्हें रुची नहीं अस्तु अब वे अपने दुश्मनों से बदला लेने की फिक्र में लग गये हैं । उन्होंने शिवदत्तगढ़ नामक एक शहर भी बसाया है और उनके पास अब फौज और ऐयारों की भी कमी नहीं है पर तिस पर भी वे यह समझते हैं कि अकेले लड़ कर वे चाहे अपने और दुश्मनों पर फतह पाजायें पर राजा वीरेन्द्रसिंह को नहीं जीत सकेंगे इसी लिये वे अपने दोस्तों की मदद चाहते हैं । उन्होंने शायद आप से भी मदद मांगी थी पर आपने इन्कार कर दिया ॥

दारोगा० । हां उसने मदद मांगी थी पर मैंने नामंजूर किया क्योंकि..... (रुक कर) अच्छा आप अपनी बात सुना लें तो मैं इस बात का जिक्र करूंगा कि क्यों मैंने मदद नहीं देना चाहा ॥

शेर० । बहुत अच्छा । हमारे महाराज आपको गुरु की तरह मानते और इज्जत करते हैं अस्तु बिना आपकी आज्ञा लिये वे शिवदत्त को किसी तरह का जवाब नहीं दे सकते अस्तु इसी लिये उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है कि मैं आपको शिवदत्त की चीठी दिखाने के

साथ ही आपकी राय भी जान लूं और यह भी मालूम कर लूं कि आपके मदद से इनकार करने का क्या कारण है। शिवदत्त के बहुत ज़ोर देने और फायदे की उम्मीद होने पर भी वे तब तक इस काम में हाथ न डालेंगे जब तक आपकी आज्ञा न पा लें॥

दारोगा०। बहुत अच्छा तो मैं सोच कर आपको ठीक ठीक जवाब दूंगा। राजा शिवदत्त से और मुझसे दोस्ती थी और मैंने उनकी बहुत कुछ मदद की भी मगर उसकी मदद से मुझे कोई फायदा नहीं हुआ उलटे मेरे दुश्मनों की गिनती बढ़ गई। कुछ ही दिन का हाल है कि उन्होंने अपने कई कैदी हिफाजत के ख्याल से मेरे पास भेज दिये और मैंने दोस्ती के लेहाज से उन कैदियों को रख भी लिया पर फिर भी न जाने किस तरह वे सब कैदी छूट कर निकल गये और अपने साथ मेरे निज के कई कैदियों को भी निकाल ले जाकर मुझे आफत और तरद्दुद में डाल गये। अभी तक उन कैदियों का पता नहीं लगा है और अगर वे नहीं मिलेंगे तो शिवदत्त के आगे तो मुझे आँखें नीची करनी ही पड़ेंगी साथ ही मुझे भी बहुत तरद्दुद उठाना पड़ेगा। यही कारण है कि मैं शिवदत्त की मदद करने से हिचकता हूं और खास कर राजा बीरेन्द्रसिंह के मुकाबले में॥

शेर०। मगर आपने शायद उनकी चीठी पर गौर नहीं किया जो मैंने अभी आपको दी, वे आपसे कोई ज्यादा मदद नहीं चाहते और राजा बीरेन्द्रसिंह के विषय में तो वे केवल हमारे महाराज से ही मदद चाहते हैं। आपसे वे केवल उन्हीं बातों और अपने दुश्मनों के विषय में सहायता चाहते हैं जो आपके कब्जे में हैं। केवल उन्हीं शत्रुओं से बदला लेने में वे आपकी मदद चाहते हैं जिनको आप पकड़ सकते हैं या जो इस समय जमानिया राज्य में मौजूद हैं। उन्होंने ऐसे एक व्यक्ति का हमारे महाराज के पत्र में नाम भी लिखा है जो मुझे स्मरण नहीं आता॥

दारोगा०। (चीठी देख कर) प्रभाकरसिंह?

शेर०। जी हां प्रभाकरसिंह! प्रभाकरसिंह से और महाराज शिवदत्त से बहुत बड़ी दुश्मनी है और हाल में राजा बीरेन्द्रसिंह से कुमार में जो लड़ाई हुई थी उसमें प्रभाकरसिंह ने बीरेन्द्रसिंह की तरफ हो उन्हें बहुत नीचा दिखाया तथा सख्त जख्मी किया था। सुना गया

है कि आजकल वे जमानिया में ही हैं अस्तु राजा शिवदत्त चाहते हैं कि आप प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार कर उनके हवाले करदें। जहां तक मैं समझता हूं सिर्फ इसी काम में वे आपको मदद चाहते हैं ॥

दारोगा० । हां हां यह सब बातें तो राजा शिवदत्त की चीठी से जाहिर होती ही हैं मगर मेरे कहने का मतलब यह कि वे इस काम को जैसा सहज समझे हुए हैं वैसा सहज वास्तव में नहीं है और प्रभाकरसिंह को किसी ताकतवर आदमी की मदद मिल रही है जिस के आगे मुझे भी नीचा देखना पड़ा है ॥

शेर० । उन्होंने यह भी कहा है कि प्रभाकरसिंह के पकड़ने में किसी प्रकार का खर्च पड़े या और किसी इनाम इत्यादि की जरूरत पड़े तो वे देने को तैयार हैं और जरूरत पड़ने पर वे अपने ऐयारों को भी भेज सकते हैं यहां तक कि ऐसी अवस्था में भी वे प्रभाकर-सिंह आदि की गिरफ्तारी के लिये लाख दो लाख रुपया खर्च करने में आगा पीछा न करेंगे पर........

दारोगा० । हां भाई सो सब तो तुम्हारा कहना ठीक है मगर तुम्हीं सोचो कि मैं साधू आदमी, संसारत्यागी, विरक्त, मुझे इन झगड़ों में पड़ने से क्या फायदा, एक बार दोस्ती के खयाल से और बड़ा जोर देने पर मैंने शिवदत्तसिंह का काम कर दिया पर इसका यह मतलब तो नहीं है कि बराबर बुरे भले कामों में उनकी मदद करता रहूंगा और व्यर्थ की बदनामी का टोकड़ा अपने सिर पर लाद लोगों की निगाह में अपने को नीचा करूंगा ! एक दफे जो मैंने उनकी मदद कर दी वही मेरी बदनामी का सबब बनी हुई है और मदद करने से न जाने क्या होगा । उनको तो जाने दो अपने इसी जमानिया राज्य में देखो, महाराज गिरधरसिंह कई बार मुझसे दीवानी या राज्य का और कोई ओहदा लेने पर जोर दे चुके हैं परन्तु मैं नहीं लेता क्योंकि ऐसा करने से मेरे संसार त्याग और ईश्वर भजन में विघ्न पड़ेगा । मैं तो राज्य का जो काम करता हूं उतना भी न करता और तपस्या करने के लिये किसी जङ्गल में जा कर अपनी जिन्दगी के बाकी दिन काट देता अगर मुझे महाराज का प्रेम न होता और वे मुझसे इतना स्नेह न रखते । तब भी मैंने इस बात का प्रण कर लिया है कि केवल इन्हीं महाराज के समय तक इस शहर में रहूंगा......(यकायक अपने

का रोक कर) और इन बातों से कोई मतलब नहीं इस समय पहिले आपका काम होना चाहिये (कुछ सोच कर) यदि मैं कुछ विलम्ब करके महाराज दिग्विजयसिंह के पत्र का उत्तर दूं तो क्या कोई हर्ज है ?

शेर० । कोई हर्ज नहीं, आप जब उत्तम समझें तभी उत्तर दें, मैं अपना काम कर चुका अब उत्तर देना आपके हाथ है ॥

दारोगा० । हां ठीक है, अच्छा कल तो नहीं पर परसों किसी समय मैं आपको अपने उत्तर से सूचित करूंगा, इन दो दिन के बीच में मैं अच्छी तरह सोच विचार भी कर लूंगा और...(रुक कर) बहुत अच्छा तो परसों सन्ध्या को आप मुझसे मिलें ॥

शेर० । बहुत खूब ! परसों मैं आपसे मिलूंगा । अच्छा तो अब इस समय आप इजाजत दें तो मैं डेरे पर जा कर......

दा०। हां हां अब मैं आपको ज्यादा देर तक रोक नहीं सकता । क्या कहूं आप मेरी मेहमानदारी कुबूल ही नहीं करते नहीं तो इसी मकान में आपके आराम का सब प्रकार का बन्दोबस्त हो जाता ॥

शेर० । सब आप ही का है और मैं भी आप ही का हूं पर बात यह है कि इस शहर में मेरे दो एक सम्बन्धी ऐसे हैं जो मेरा दूसरे के यहां ठहरना या उतरना मन्जूर ही नहीं करते और लाचार मुझे उनकी बात माननी ही पड़ती है ॥

दारोगा० । जी हां यही बात तो आप पहिले भी कह चुके हैं और ऐसा करना उचित भी है, रिश्तेदारों का जोर ऐसा होना ही है जिसके विरुद्ध मैं आपको कुछ नहीं कह सकता । बहुत अच्छा अब फिर बातें होती रहेंगी इस समय आपको रोकना व्यर्थ कष्ट देना है ॥

शेरसिंह उठ खड़े हुए और दारोगा बड़ी खातिरदारी के साथ उन्हें दर्वाजे तक पहुंचा गया, जब वे अपने घोड़े पर सवार हो चले गये तो दारोगा लौटा और उस जगह न जा कर जहां बैठ कर अभी उसने शेरसिंह से बातें की थीं वह ऊपर की मंजिल में पहुंच एक कोठड़ी के दर्वाजे पर पहुंचा जिसमें ताला बन्द था । कमर से तालियों का एक झब्बा निकाल कर उसने ताला खोला और कोठड़ी के अन्दर जा उसने उसका दर्वाज़ा भीतर से बन्द कर लिया ॥

तीसरा बयान।

कोठड़ी के भीतर घोर अन्धकार था मगर अन्दाज से टटोलता हुआ दारोगा एक आलमारी के पास पहुंचा और उसमें से रोशनी का सामान निकाल उसने रोशनी पैदा की॥

लगभग आठ हाथ के चौड़ी और इतनी ही लम्बी यह कोठड़ी बिल्कुल सङ्गीन बनी हुई थी, इसमें आने के लिये केवल एक वही दर्वाजा था जिसकी राह दारोगा इस जगह आया था पर सामने की तरफ एक बड़ी आलमारी दीवाल में जड़ी हुई दिखाई पड़ रही थी जिसमें से अभी दारोगा ने रोशनी का सामान निकाला था॥

लालटेन हाथ में लिये दारोगा कुछ देर तक चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा, इसके बाद उसने लालटेन जमीन पर रख दी और सङ्गमर्मर की एक हाथ भर की चौखूटी पटिया को जो कोठड़ी की सतह के बीचोबीच में जड़ी हुई थी अपने खञ्जर की सहायता से उखाड़ने की चेष्टा करने लगा॥

मालूम होता है कि वह सङ्गमर्मर की पटिया जड़ी हुई न थी क्योंकि जोड़ में खञ्जर डाल कर जरा दबाते ही पटिया अलग होगई और दारोगा ने उसे उठाकर एक तरफ रख दिया। नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां दिखाई पड़ीं जिनकी राह लालटेन हाथ में लिये दारोगा नीचे उतरने लगा॥

दस बारह सीढ़ियां उतरने बाद दारोगा ने अपने को एक लम्बे चौड़े दालान में पाया जिसके दोनों तरफ दो कोठड़ियां थीं जिनके दर्वाजे खुले हुए थे मगर कुण्डों में ताले लगे हुए थे। दारोगा बाईं तरफ वाली कोठड़ी के अन्दर चला गया और उसका दर्वाजा अन्दर से बन्द करने तथा सिकड़ी लगाने बाद वह एक आलमारी के पास पहुंचा जिसमें बड़ाभा ताला बन्द था॥

दारोगा ने उसी गुच्छे में से एक ताली लगा इस ताले को भी खोला और तब अलमारी के दोनों पल्ले खोले। आलमारी में किसी तरह का सामान यहां तक कि तख्ते भी लगे हुए न थे और वह इतनी बड़ी थी कि उसके अन्दर दो आदमी अच्छी तरह खड़े हो सकते थे॥

हाथ में रोशनी लिये दारोगा इस अलमारी में घुसा और दाहिनी

कर रोक कर) और इन बातों से कोई मतलब नहीं इस समय पहिले आपका काम होना चाहिये (कुछ सोच कर) यदि मैं कुछ विलम्ब करके महाराज दिग्विजयसिंह के पत्र का उत्तर दूं तो क्या कोई हर्ज है।

शेर०। कोई हर्ज नहीं, आप जब उत्तम समझें तभी उत्तर दें, मैं अपना काम कर चुका अब उत्तर देना आपके हाथ है॥

दारोगा०। हां ठीक है, अच्छा कल तो नहीं पर परसों किसी समय मैं आपको अपने उत्तर से सूचित करूंगा, इन दो दिन के बीच में मैं अच्छी तरह सोच विचार भी कर लूंगा और...(रुक कर) बहुत अच्छा तो परसों सन्ध्या को आप मुझसे मिलें॥

शेर०। बहुत खूब! परसों मैं आपसे मिलूंगा। अच्छा तो अब इस समय आप इजाजत दें तो मैं डेरे पर जा कर......

दा०। हां हां अब मैं आपको ज्यादा देर तक रोक नहीं सकता। क्या कहूं आप मेरी मेहमानदारी कुबूल ही नहीं करते नहीं तो इसी मकान में आपके आराम का सब प्रकार का बन्दोबस्त हो जाता॥

शेर०। सब आप ही का है और मैं भी आप ही का हूं पर बात यह है कि इस शहर में मेरे दो एक सम्बन्धी ऐसे हैं जो मेरा दूसरे के यहां ठहरना या उतरना मन्जूर ही नहीं करते और लाचार मुझे उनकी बात माननी ही पड़ती है॥

दारोगा०। जी हां यही बात तो आप पहिले भी कह चुके हैं और ऐसा करना उचित भी है, रिश्तेदारों का जोर ऐसा होता ही है जिसके विरुद्ध मैं आपको कुछ नहीं कह सकता। बहुत अच्छा अब फिर बातें होती रहेंगी इस समय आपको रोकना व्यर्थ कष्ट देना है॥

शेरसिंह उठ खड़े हुए और दारोगा बड़ी खातिरदारी के साथ उन्हें दर्वाजे तक पहुंचा गया, जब वे अपने घोड़े पर सवार हो चले गये तो दारोगा लौटा और उस जगह न जा कर जहां बैठ कर अभी उसने शेरसिंह से बातें की थीं वह ऊपर की मंजिल में पहुंच एक कोठड़ी के दर्वाजे पर पहुंचा जिसमें ताला बन्द था। कमर से तालियों का एक झब्बा निकाल कर उसने ताला खोला और कोठड़ी के अन्दर जा उसने उसका दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया॥

कर देने की हिम्मत रखती होंगी इस समय बिल्कुल गड्ढे में धंसी हुई थीं। वे गाल जो किसी समय अपनी सुन्दरता से गुलाब को नीचा दिखाते थे इस समय मुर्झाये हुए थे और उनकी जगह दो ऊंची हड्डियों ने दखल की हुई थी जो आंखों को भी अपनी मातहती में लिये हुई थीं तथा वह बदन जो अपनी कोमलता से किसी समय फूलों को मात करता होगा इस समय झांवरासा हो गया था॥

दारोगा की आंखें इस कैदी औरत की आंखों से मिलीं। इस अवस्था में पहुंच जाने पर भी उन आंखों में न जाने कौन सी ताकत थी जिसने दारोगा का सिर नीचा कर दिया पर तुरत ही बेहयाई और बेमुरौवती का जामा पहिन कर उसने अपनी आंखें उठाईं और उस औरत की तरफ देख कर कहा, "मालती! क्या तू मुझे पहिचानती है?"

न मालूम दारोगा के इस सवाल में कौनसा भेद छिपा हुआ था कि इसके सुनते ही वह औरत एक दम सिर से पैर तक कांप उठी और थोड़ी देर तक ऐसा मालूम हुआ मानो उसे गश आ जायगी पर बहुत ही कोशिश करके उसने अपने को सम्हाला, और दोनों हाथों से अपना मुंह ढांक कर बोली, "दुष्ट! पापी!! क्या तुझे ज़रा भी शरम नहीं है? क्या ईश्वर ने तेरा दिल ऐसा बनाया है कि उस पर लज्जा शरम और हया की आभा तक नहीं पड़ सकती! क्या मरे को मारते हुए भी तेरे को दया नहीं आती! कम्बख्त! इतने दिनों तक तेरी कैद में रह कर भी मैं इस लिये ईश्वर को धन्यवाद देती थी वह मुझे तेरी काली सूरत नहीं दिखाता था और मैं इसी में प्रसन्न रहती थी कि मुझे तेरी आवाज सुननी नहीं पड़ती थी पर इतने दिनों बाद मेरी वह प्रसन्नता भी तू दूर किया चाहता है! कटे पर निमक छिड़का चाहता है! क्या......"

दारोगा०। ठहरो ठहरो इतना जोश में न आ जाओ, मैं तुम्हें किसी तरह का कष्ट नहीं पहुंचाया चाहता.........

औरत०। हां ठीक है इस समय तूने मुझे बड़े सुख में रक्खा हुआ है, पचासों दासदासी मेरे चारो तरफ हैं मुलायम बिस्तरा मेरे लेटने के लिये है और एक से एक स्वादिष्ट पदार्थ मैं भोजन करती हूं! भला मुझे किसी तरह का कष्ट है!!

दारोगा० । (सिर झुका कर) तुम्हारा कहना ठीक है, जरूर तुम्हें इस जगह कैद रह तकलीफ उठानी पड़ती है मगर इतना तो तुम खुद सोच सकती हो कि तुम्हारे इन दुःखों का कारण मैं नहीं हूं बल्कि तुम्हारी जिद्द है जिसने तुम्हें इस अवस्था तक पहुंचाया हुआ है, यदि मैं तुम्हारा वह विचार जान कर भी ऐसा न करता और तुम्हें कैद न करता तो क्या करता ! लाचारी से मुझे तुम्हें कैद करना पड़ा मगर ऐसी अवस्था में भी मैंने तुम्हें छुटकारे का एक उपाय बतलाया जिसे करते ही तुम इस कैद से छूट जाती पर तुम्हारी जिद्द का भी कोई ठिकाना है ! मेरी वह जरा सी बात भी तुमसे न मानी गई और तुम्हें इतना दुःख उठाना पड़ा !!

औरत० । इतना दुःख उठाना पड़ा ! वाह क्या कहना है, मानों आप इस समय मुझे छुटकारा देने ही तो आये हैं, या मैं......और तुमसे व्यर्थ की बकवाद मैं नहीं किया चाहती !!

दारोगा० । मैं व्यर्थ की बकवाद नहीं करता बल्कि तुम्हारे फायदे की बात कहता हूं यदि तुम्हें मेरी वह पहिली बात नहीं मंजूर है तो मैं तुम्हें कुछ और कहता हूं सुनो और व्यर्थ की जिद्द कर और कष्ट न उठाओ ॥

औरत ने इसका कुछ जवाब न दिया पर दारोगा ने झुक कर और जंगले से मुंह लगा कर धीरे से न जाने क्या कहा कि जिसे सुनते ही वह बेचारी औरत बिल्कुल बदहवास हो गई, उसकी आंखें बन्द हो गईं और एक गश की हालत में वह जमीन पर गिर गई ॥

दारोगा कुछ देर तक उस बेहोश औरत की तरफ देखता रहा इसके बाद उसने धीरे से यह कह कर कि "इस समय बेहोश होगई ! खैर फिर देखा जायगा मगर यह बड़ी कमजोर हो गई है कहीं मर न जाय !" कैदखाने का बाहरी लोहे का दर्वाजा बन्द किया और इस बात का कुछ खयाल न कर कि उस औरत की क्या दशा होगी वह वहां से हट सामने की तरफ के एक दूसरे दर्वाजे के पास पहुंचा ॥

और दर्वाजों की तरह इस दर्वाजे में भी एक बड़ा ताला लगा हुआ था जिसके खोलने के इरादे से दारोगा ने अपने हाथ की लालटेन जमीन पर रक्खी और उस झब्बे की तालियों में से जो किसी कम से लगी हुई थीं खोज कर उसने एक ताली उस ताले में लगाई मगर

ताला न खुला॥

कुछ देर तक जोर करने बाद दारोगा ने ताली निकाल ली और देख भाल तथा ठोक पीट करने बाद फिर लगाई पर इस बार भी वही नतीजा निकला। आश्चर्य करते हुए दारोगा ने उस ताले में एक दूसरी ताली लगाई फिर तीसरी लगाई मगर किसी प्रकार भी ताला न खुला॥

यह एक नई बात थी क्योंकि दारोगा को इस बात का विश्वास नहीं हो सकता था कि इस ताले में किसी तरह का ऐब आ गया है। उसको इस बात का सन्देह हुआ कि जरूर उसके झब्बे की तालियों में किसी ने उलट फेर कर दिया है। एक एक करके रोशनी में उसने झब्बे की सब तालियों को गिना और इसके साथ ही चौंक कर बोल उठा, "हैं! इसमें तो उन्नीस ही तालियें हैं! तीन तालियें और कहां गईं॥"

कुछ देर तक दारोगा वहां ही बैठा सिर पर हाथ रक्खे कुछ सोचता रहा इसके बाद मन ही मन यह कहता हुआ कि "जैपाल को बुलाना चाहिये, कदाचित वह जानता हो क्योंकि उसके सिवाय तो यह झब्बा मैं और किसी के हाथ में नहीं देता।" वह उठा और उन्हीं सीढ़ियों की राह होता हुआ आलमारी की राह नीचे की कोठड़ी में पहुंचा जिस राह वह इस जगह आया था। तालियों की कमी ने उसे इतना घबरा दिया था कि वह उस आलमारी का ताला बन्द करने को भी न ठहरा जो कैदियों के कमरे में जाने का दर्वाजा था और इस कोठड़ी का दर्वाजा खोल बाहर निकल गया॥

इस कोठड़ी की दाहिनी और बाईं दीवारों में भी एक एक आलमारी ठीक उसी तरह की लगी हुई थी जैसी कि बीच की दीवार में थी या जिसमें से कि दारोगा अभी निकला था। दारोगा के जाने के कुछ ही क्षण बाद दाहिनी तरफ की आलमारी जिसके कुंडे में ताला बन्द न था खुली और उसमें से एक आदमी बाहर निकला जिसके हाथ में मद्धिम रोशनी की एक विचित्र लालटेन थी जिसने दिखा दिया कि उस आदमी का सारा बदन स्याह कपड़े से ढंका हुआ है और चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई है। तेजी के साथ एक निगाह अपने चारों तरफ डालने बाद इस आदमी ने बीचवाली आल-

मारी जिसके पहले दारोगा सिर्फ भिड़का कर छोड़ गया था खोली और उसके अन्दर चला गया ॥
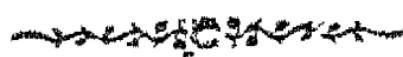
चौथा बयान ।

सूनसान और भयानक जङ्गल के बढ़ते जाते हुए सन्नाटे को तोड़ने की सामर्थ उन छोटी छोटी चिड़ियाओं में नहीं है जो दिन भर इधर उधर घूम फिर कर अब अपने अपने घोंसलों की तरफ जा रही हैं ॥

अन्धकार यद्यपि बढ़ता जा रहा है तथापि इसका कारण यह नहीं है कि सूरज डूब गया है। ऊंचे ऊंचे पेड़ों की चोटियों पर इस समय भी अन्तिम किरणें पड़ पड़ कर उन्हें सुनहरा कर रही हैं पर इस जगह का जङ्गल इतना घना है कि उस रोशनी को नीचे तक आने की जगह ही नहीं मिलती ॥

मन्द मन्द बहती हुई हवा जङ्गली चश्मे के किनारे किनारे जाती हुई उस औरत के कपड़ों को कभी कभी उड़ा देती है जो बार बार अपने चारों तरफ देखती और कुछ कुछ देर पर रुकती हुई दक्षिण की तरफ जा रही है जिधर वह नाला बह रहा है ॥

इस औरत की सूरत शक्ल का ठीक ठीक अन्दाजा यद्यपि उस घूंघट के कारण कुछ भी नहीं किया जा सकता जिसने उसके चेहरे के काफी से ज्यादा हिस्से को छिपाया हुआ है पर पोशाक इत्यादि के खयाल से हम कह सकते हैं कि वह किसी गरीब खानदान की नहीं मालूम होती। मुसल्मानी ढङ्ग की पोशाक पर का जरी इत्यादि का काम उसके अमीर होने की सूचना दे रहा है और दो चार नाजुक गहने उसके बदन पर पड़े हुए इस बात को और भी पुष्ट कर रहे हैं ॥

यकायक इस औरत के कानों में टापों की आवाज सुनाई पड़ी जिसने उसे चौंका दिया और वह इधर उधर देख कर इस बात पर गौर करने लगी कि यह आवाज किधर से आ रही है। थोड़े ही गौर ने उसे बता दिया कि यह आने वाला सवार उसके सामने की तरफ है और बहुत दूर भी नहीं है। उत्कण्ठा ने इस औरत की चाल भी तेज कर दी और बात की बात में वह एक सवार के पास पहुंच कर

खड़ी हो गई जो घोड़े को रोक उतरने की चेष्टा कर रहा था ॥

इस औरत को देख सवार ने उतरने में फुरती की और लगाम पेड़ की डाल से अटकाने बाद वह औरत के पास पहुंच सलाम कर खड़ा हो गया ॥

औरत ने सलाम का जवाब दिया और तब मीठी आवाज में पूछा, "कहो क्या कर आये ?"

सवार० । सब काम ठीक हो गया । उसने सब बातें स्वीकार कीं और चीठी लिख देने का वादा भी किया है मगर एक शर्त वह भी बेढब कहती है ॥

औरत० । क्या ?

सवार० । वह चाहती है कि आप लिख कर इन सब बातों की दरखास्त उससे करिये जो कि आपने जबानी कहला भेजी हैं ॥

औरत० । मगर ऐसा होना तो मुश्किल है ॥

सवार० । बेशक मुश्किल और बेमुनासिब है, क्योंकि लिखा हुआ सबूत उसके पास हो जाने पर वह अगर किसी सबब से आपके कभी बखिलाफ.........

औरत० । बेशक यही बात है, उस वक्त उसके दुश्मन हो जाने का बड़ा ही बुरा नतीजा निकलेगा जब उसके पास मेरे बखिलाफ मेराही लिखा हुआ कोई ऐसा सबूत होगा । लिख कर तो उसे मैं कुछ भी नहीं दिया चाहती या वादा किया चाहती ॥

सवार० । मगर वह और किसी तरह मानती ही नहीं ! मैंने बहुत कुछ उसे ऊंच नीच समझाया और कहा सुना मगर बातें आपकी सब मन्जूर कर लेने पर भी बस वह यही कहती है कि मुझे क्या सबूत कि तुम सच कह रहे हो और किसी तरह का धोखा देकर अपना कोई काम निकालने की तुम्हारी नीयत नहीं है ॥

औरत० । यह तो बड़े तरद्दुद की बात तुमने सुनाई । लिख कर तो मैं उससे कोई भी दरख्वास्त या वादा नहीं कर सकती ॥

सवार० । और बिना आप के लिखे वह मन्जूर नहीं कर सकती (कुछ रुक कर) यदि आप स्वयम् एक बार उससे मिलें तो कैसा हो !!

औरत० । मेरी उसकी कभी की जान पहचान नहीं मुलाकात नहीं ॥

सवार०। तो इससे क्या, जब आपने यह हक पकड़ा है तो आखिर कभी न कभी मुलाकात होहीगी, जान पहिचान होहीगी॥

औरत०। ठीक है मगर तो भी बगैर किसी जरिये के किसी दूसरे के घर जाना और सो भी खास कर ऐसे आदमी के घर जिससे मुझे बराबर डर ही लगा रहता है मुझे मुनासिब नहीं मालूम होता। क्या जाने किसी तरह की खराबी पैदा हो जाय॥

सवार०। कौन ताज्जुब है॥

औरत०। तुम एक दफे और उससे मिलो और बातचीत करो शायद मान जाय॥

सवार०। जो हुक्म मगर मुझे भरोसा नहीं है कि वह माने क्योंकि अपने भरसक मैं उसे बहुत कुछ कह सुन और समझा बुझा चुका हूं पर वह किसी तरह नहीं मानती (कुछ रुक कर) हां एक बात हो सकती है॥

औरत०। क्या?

सवार०। नन्हों उसे अच्छी तरह जानती है बल्कि दोनों में बड़ी दोस्ती है॥

औरत०। (चौंक कर) क्या यह तुम ठीक कह रहे हो?

सवार०। बेशक बहुत ठीक बात है॥

इस बात ने औरत को कुछ देर के लिये चुप कर दिया और वह सर नीचा कर कुछ सोचने लगी। कुछ देर के बाद उसने कहा, "अच्छा मैं नन्हों से मिलूंगी अगर तुम्हारा कहना ठीक है और नन्हों उसे जानती है तो इसमें कोई शक नहीं कि मेरा काम बखूबी बन जायगा और मैं गदाधरसिंह को हमेशा के लिये अपने कब्जे में कर सकूंगी। अच्छा अब तुम जाओ। मैं भी लौटती हूं बहुत देर हो गई है॥"

सवार०। यह सुन सलाम कर पीछे घूमा मगर उसी समय औरत ने फिर कहा, "मगर एक बात का तो कोई फैसला हुआ ही नहीं॥"

सवार०। (घूम कर) क्या?

औरत०। (एक पत्थर पर बैठ कर) यहां आओ बैठ जाओ तो बताऊं॥

सवार औरत के पास आकर बैठ गया और दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं। जङ्गल में पूरी तरह से अन्धकार छा गया था

जब उनकी बातें समाप्त हुईं और सवार घोड़े पर चढ़ उसी तरफ चला गया जिधर से आया था ॥

सवार के जाने बाद वह औरत भी उठी और धीरे धीरे जङ्गल के बाहर की तरफ रवाना हुई ॥

हम पहिले कह आये हैं कि इस घने और गुञ्जान जङ्गल में बाहर की बनिस्बत बहुत ही ज्यादा अन्धकार था अस्तु धीरे धीरे चलती और आहट लेती हुई वह औरत जब घने जङ्गल से निकल आई तो उसे कुछ चांदना मिलने लगा। सूर्य भगवान यद्यपि डूब चुके थे पर तो भी पश्चिम तरफ आस्मान पर कुछ कुछ लालिमा फैली हुई थी जो इस जगह को जिसे न जङ्गल ही कह सकते थे और न मैदान ही कुछ कुछ रोशनी पहुंचा रही थी। थोड़ी थोड़ी दूर पर के पेड़ अपनी फैली हुई डालियों के कारण इस सन्नाटे के समय में कुछ भयानक मालूम हो रहे थे जब एक ऐसे ही पेड़ के नीचे पहुंच उस औरत ने एक ऐसी चीज देखी जिसने उसे चौंका दिया ॥

एक कमसिन और गहने कपड़े से सजी हुई औरत की लाश पेड़ के नीचे पड़ी हुई थी जिसकी बढ़ी चढ़ी खूबसूरती इस समय भी अपना जौहर दिखा रही थी ॥

इस औरत ने एक दफे तो गौर से अपने चारों तरफ देखा और जब किसी पर निगाह न पड़ी तो धीरे धीरे चल कर वह उस लाश के पास आई और जमीन पर बैठ गौर से उसकी सूरत देखने लगी। बदन पर हाथ रक्खा, नब्ज देखी, और तब नाक के पास हाथ लगा कर बोली, "मरी नहीं जीती है किसी तरह बेहोश हो गई है ॥"

कुछ देर तक गौर के साथ उसका मुंह देखने बाद इस औरत ने कमर से एक डिबिया निकाली जिसमें किसी प्रकार की खुशबूदार चीज थी। उसने वह डिबिया बेहोश औरत के नाक से लगाई जिसके साथ ही उसे दो तीन छींकें आईं और वह होश में आकर उठ बैठी ॥

अपनी कामयाबी पर खुश होकर उस औरत ने उससे पूछा—"तुम कौन हो और इस जङ्गल में इस तरह तुम्हें किसने बेहोश किया?"

औरत०। मेरा नाम रम्भा है, अपने कई रिश्तेदारों के साथ मैं अमानियां की तरफ जा रही थी कि रास्ते में डाका पड़ा और डाकुओं ने आकर हम लोगों को घेर लिया। डर के मारे मैं बेहोश

हो गई, फिर मुझे कुछ खबर नहीं कि क्या हुआ और मैं यहां क्यों कर आई ॥

औरत० । तुम्हारा मकान कहां है ?

रम्भा० । विजयगढ़ । मैं वहां से अपने बाप के घर जमानिया आ रही थी जब रास्ते में यह आफत आई (रो कर) न मालूम मेरे रिश्तेदारों का क्या हाल हुआ डाकुओं ने उन्हें छोड़ा या मार डाला। हाय ! अब मैं क्या करूं !!

इतना कह कर औरत रोने लगी और रोते रोते उसे फिर गश आ गया ॥

अब बिल्कुल अन्धकार हो गया था इस कारण उस बेहोश औरत का हाल जानने की इच्छा रहने पर भी यह औरत ठहर नहीं सकती थी क्योंकि वह जानती थी कि इस जङ्गल में वह खतरों से खाली नहीं है । उसने अपनी पोशाक दुरुस्त की और उस औरत की तरफ से ध्यान हटा उस तरफ बढ़ी जिधर जा रही थी ॥

अभी वह मुश्किल से पचास कदम गई होगी कि उसके कानों में सीटी की आवाज सुनाई दी और इसके बाद ही कुछ दूर पेड़ों में उसे रोशनी दिखाई दी जो किसी लालटेन की मालूम होती थी । यह औरत रुक गई और गौर से उस तरफ देखने लगी ॥

थोड़ी देर बाद पेड़ों की झुरमुट में से एक आदमी हाथ में लालटेन लिये हुए निकला और उसी तरफ आता दिखाई दिया जिधर यह औरत खड़ी थी । उसे अपनी तरफ आते देख यह औरत हट गई और एक बड़े पेड़ की आड़ में हो गई । लालटेन की रोशनी में चारों तरफ गौर से देखता और आहट लेता हुआ जब वह आदमी उस जगह पहुंचा जहां थोड़ी देर पहिले यह औरत खड़ी थी तो रुका और इधर उधर इस प्रकार देखने लगा मानो किसी को ढूंढ रहा है । उसी समय वह औरत भी जिसे बेहोशी की हालत में पाठक देख चुके हैं इसी तरफ आती हुई दिखाई पड़ी ॥

पास आकर उस औरत ने लालटेन हाथ में लिये हुए आदमी से कुछ बातें कीं और तब उस तरफ इशारा किया जहां पेड़ की आड़ में वह पहिली औरत छिपी हुई थी । इसके बाद वह फिर कहीं चली गई और वह आदमी उस तरफ बढ़ा जिधर उस औरत ने इशारा

कया था ॥

इस औरत ने उसे अपनी तरफ आते देख भागने की चेष्टा की मगर भाग न सकी क्योंकि उसी समय पीछे से किसी ने उसे पकड़ लिया और जबर्दस्ती बेहोशी की दवा सुँघा कर उसे बेहोश कर दिया॥

वह आदमी जिसने इस औरत को बेहोश किया था भूतनाथ था और यह औरत वही थी जिसे दूसरे बयान में पाठक शेरसिंह के साथ मर्दानी सूरत में देख चुके हैं अथवा गौहर के नाम से भूतनाथ ने जिसका परिचय शेरसिंह को दिया था। शेरसिंह से अलग होने के बाद से भूतनाथ बराबर गौहर के पीछे घूम रहा था और उसकी सब कार्रवाई देख सुन कर उसे गिरफ्तार करने का मौका ढूंढ रहा था॥

गौहर को बेहोश करने बाद भूतनाथ वहां जरा भी न ठहरा क्योंकि लालटेन हाथ में लिये वह दूसरा आदमी भी उसे खोजता हुआ बराबर उसी तरफ बढ़ा आ रहा था। भूतनाथ ने अपने कमर में से एक चादर खोली और उसी में गौहर की गठड़ी बांध वह तेजी के साथ जङ्गल के बाहर की तरफ रवाना हुआ मगर थोड़ी ही देर में उसे मालूम हो गया कि वह अकेला नहीं है बल्कि कोई आदमी बराबर उसका पीछा कर रहा है, यह जान उसने अपनी चाल और भी तेज की और थोड़ी देर बाद जङ्गल के बाहर सड़क पर पहुंच वह जमानिया की तरफ रवाना हुआ॥

पांचवां बयान ।

दारोगा के चले जाने के बाद ही दीवार की आलमारी में से एक आदमी निकला और उस आलमारी में घुस गया जिसमें से सीढ़ियों के कोठड़ी में जाने की सीढ़ियां थीं ॥

जल्दी जल्दी सीढ़ियां चढ़ वह ऊपर की कोठड़ी में पहुंच गया। यहां पर आकर उसने अपने हाथ की लालटेन कुछ ऊंचो की और एक ऐसा खटका दबाया जिसके साथ ही लालटेन की रोशनी पहिले से बहुत ज्यादे तेज हो गई और उस जगह की सब चीजें साफ साफ दिखाई पड़ने लगीं। फुर्ती के साथ कमर से ताली निकाल कर उसने उस कोठड़ी का ताला खोला जिसे दारोगा न खोल सका था और पल्ला हटा लालटेन की रोशनी में अन्दर की तरफ देखने लगा। हथकड़ी बेड़ी से मजबूर प्रभाकरसिंह एक चटाई पर अधलेटे से दिखाई पड़े जिन पर निगाह पड़ते ही उस आदमी ने दूसरी ताली लगाकर वह जङ्गलेदार दर्वाजा भी खोला और प्रभाकरसिंह को उठने का इशारा किया ॥

प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए। इस आदमी ने उनको हथकड़ी बेड़ी से छुटकारा दिया और तब मुंह पर उंगली रख चुप रहने का इशारा कर वह सीढ़ियों की तरफ बढ़ा मगर प्रभाकरसिंह ने रोक कर कहा, "यहां एक और औरत कैद है, क्या उसे आप नहीं छुड़ा सकते !!"

उस आदमी ने सिर हिलाया पर प्रभाकरसिंह दृढ़ता के साथ बोले, "पर मैं बिना उसको छुड़ाये यहां से जाने वाला नहीं !!"

यह सुन उस आदमी ने जिसकी सूरत नकाब से ढंकी रहने के कारण प्रभाकरसिंह नहीं देख सकते थे धीरे से कहा, "दारोगा अब आता ही होगा हमें इतना समय नहीं है कि और किसी को छुड़ाने की कोशिश करें। देर होने से मैं खुद गिरफ्तार हो जाऊंगा ॥"

प्रभा०। तब लाचारी है आप जायं मुझे छोड़ जायं ॥

आदमी०। (कुछ देर चुप रह कर) वह कौन औरत है ?

प्रभाकर०। मैं ठीक ठीक तो नहीं पहिचान सका पर कुछ शक होता है ॥

इतना कह झुक कर प्रभाकरसिंह ने उस नकाबपोश के कान में

कुछ कहा जिसे सुनते ही वह चौंका और बोला, "हैं! वह है!! तब तो उस बेचारी को अवश्य छुड़ाना चाहिये। मगर बड़ा मुश्किल है दारोगा न आ पहुंचे। खैर तुम उस सीढ़ी के पास जा कर खड़े हो किसी के आने की आहट पाओ तो मुझे बताना मैं इस औरत को छुड़ाने का उद्योग करता हूं॥"

प्रभाकरसिंह बहुत अच्छा कह उस दर्वाजे की तरफ बना जिसमें वह औरत कैद थी सीढ़ी के पास जा खड़े हुए और वह नकाबपोश दर्वाजे के पास पहुंचा। पहिले तो उसने मजबूत जञ्जीर और भारी ताले को गौर की निगाह से देखा तब अपने कमर से एक छोटी शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का अर्क था। उसमें से कई बूंद जञ्जीर पर टपकाने बाद नकाबपोश ने शीशी बन्द कर फिर ठिकाने रक्खी और इस बात की राह देखने लगा कि जञ्जीर कट जाय तो दर्वाजा खोलें॥

लगभग दस मिनट के बाद एक हलकी सी आवाज के साथ वह जञ्जीर दो टुकड़े हो गई मगर उसी समय प्रभाकरसिंह का इशारा पा नकाबपोश उनके पास गया जो सीढ़ियों पर खड़े थे। पास पहुंचते ही प्रभाकरसिंह ने कहा, "दर्वाजा खुलने की आवाज आई है मालूम होता है दारोगा आ रहा है। अब क्या होगा!!"

"तो लाचारी है, पहिले हमें अपने बचाव का उपाय करना चाहिये अगर हम खुद ही फँस जायंगे तो फिर कुछ भी न हो सकेगा।" कह कर नकाबपोश ने प्रभाकरसिंह को नीचे चलने का इशारा किया। प्रभाकरसिंह ने कुछ उज्र किया मगर उसने कुछ भी न सुना और जबर्दस्ती प्रभाकरसिंह को नीचे ले आया॥

अपनी लालटेन उस आदमी ने बुझा दी थी अस्तु अन्दाज से टटोलता हुआ वह नकाबपोश प्रभाकरसिंह को उसी आलमारी के पास ले गया जिसमें कुछ देर पहिले वह स्वयं छिपा हुआ था। उन्हें अन्दर करने और स्वयम् भी जाने के बाद मुश्किल ही से उसने आलमारी का पल्ला बन्द किया होगा कि रोशनी हाथ में लिये जैपाल के साथ दारोगा ने कोठड़ी के अन्दर पैर रक्खा॥

बिना और किसी तरफ ध्यान दिये वे दोनो आदमी ऊपर चढ़

मारी के बाहर निकला। कोठड़ी का दर्वाजा खुला हुआ था जिसकी राह दोनों आदमी बाहर के दालान में पहुंचे और वहां से होते हुए उस कोठड़ी में पहुंचे जहां से पहिया हटा दारोगा नीचे उतरा था। नकाबपोश का खयाल था कि दारोगा उस कोठड़ी का दर्वाजा बन्द करता गया होगा पर ऐसा न था अस्तु वे दोनों खुशी खुशी बाहर निकल आये और तब नकाबपोश जो दारोगा के इस मकान के सब दर्वाजों और रास्तों से बखूबी वाकिफ मालूम होता था बगल की एक सीढ़ी पर से होता हुआ ऊपर छत पर आ पहुंचा। छत पर दीवार के साथ अभी तक एक कमन्द लटक रही थी जिसके सहारे पहिले नकाबपोश और उसके बाद प्रभाकरसिंह नीचे उतर गये, नकाबपोश ने कमन्द खैंच ली और तब दोनों आदमी शहर के बाहर की तरफ रवाना हुए॥

शहर के बाहर मैदान में पहुंच वह नकाबपोश रुका और प्रभाकरसिंह भी खड़े हो गये, चन्द्रदेव के उदय होने में विलम्ब होने के कारण यद्यपि चारों तरफ अन्धकार था पर नकाबपोश के हाथ की वह लालटेन दूर दूर तक रोशनी पहुंचा रही था। उसी की रोशनी में चारों तरफ देख नकाबपोश एक साफ जगह पर बैठ गया और प्रभाकरसिंह को भी बैठने को कहा॥

प्रभाकरसिंह के बैठ जाने पर नकाबपोश ने अपनी लालटेन बुझा दी और तब पूछा, "अच्छा प्रभाकरसिंह अब तुम बताओ कि क्योंकर इस दुष्ट दारोगा के फन्दे में पड़ गये। तुम्हें तो गदाधरसिंह ने न गिरफ्तार किया था॥"

प्रभाकर०। मैं सब हाल बताने को तैयार हूं मगर पहिले आपका परिचय चाहता हूं॥

"हां हां अब इसमें कोई हर्ज नहीं है" कह कर नकाबपोश ने पुनः अपनी लालटेन कोई खटका दबा कर बाली और चेहरे से नकाब दूर की। लालटेन की रोशनी में इन्द्रदेव को पहिचानते ही प्रभाकरसिंह उनके पैरों पर गिर पड़े। इन्द्रदेव ने उन्हें उठा कर गले से लगाया और तब बैठने बाद लालटेन फिर बुझा दी॥

प्रभाकर०। मुझे छुड़ाने के लिये आपको स्वयम् कष्ट करना पड़ा!!

इन्द्रदेव०। हां क्योंकि एक काम के लिये मुझे जमानिया आना

पड़ा था मगर तुम्हें एक और भी बुरी खबर सुनने के लिये तैयार हो जाना चाहिये ॥

प्रभाकर० । सो क्या ? सो क्या ? मेघराज जी तो अच्छी तरह से हैं ! इन्दु और जमना सरस्वती का तो कोई अनिष्ट नहीं हुआ !!

इन्द्रदेव०। इन्दुमति और तुम्हारे पिता कुशल से हैं पर मेघराज भूतनाथ के कब्जे में पड़ गये और.........

प्रभा० । हां हां कहिये कहिये ! जमना सरस्वती का क्या हाल है ?

इन्द्रदेव० । (रुकते गले से) उन दोनों को गदाधरसिंह ने मार डाला॥

प्रभाकर० । हैं, मार डाला ! सो कैसे ? वे भूतनाथ के हाथ कैसे पड़ गईं ॥

इन्द्र० । तुमको फँसाने बाद तुम्हारी सूरत बन गदाधरसिंह तुम लोगों के स्थान में जा पहुंचा और वहीं मौका पाकर उसने रातही भर में यह कार्रवाई कर डाली । सुबह जमना सरस्वती की लाश पाई गई। थोड़ी देर हुई मेरा एक शागिर्द यह खबर लेकर आया है ॥

जमना और सरस्वती की मौत का हाल सुन प्रभाकरसिंह को बड़ा ही दुःख हुआ क्योंकि वे अपनी नेकचलन सालियों को बहुत ही चाहते और मानते थे । इन्द्रदेव को भी इस बात का बहुत ही दुःख था पर वे बुद्धिमान आदमी थे इस कारण या किसी और सबब से इस समय उन्होंने रंज जाहिर करना उचित न समझा और देर तक प्रभाकरसिंह को समझाने बुझाने के बाद बोले, "मेरे एक शागिर्द ने तुम्हारे दारोगा की कैद में होने का हाल मुझे बताया और साथ ही तुम्हारे कैदखाने की तालियें भी जिन्हें वह न जाने दारोगा के कब्जे में से किस तरह निकाल लाया था मुझे दीं और मैंने भी तुम्हारा छुड़ाना जरूरी समझ पहिले तुम्हें छुड़ाया । अब तुम अपने को शान्त करो और गौर से मेरी बातें सुनो क्योंकि मैं एक बहुत ही भारी काम तुम्हारे सपुर्द किया चाहता हूं ॥

प्रभाकर० । जो आज्ञा कीजिये मैं करने को तैयार हूं ॥

इन्द्रदेव देर तक प्रभाकरसिंह को कई बातें समझाते रहे और प्रभाकरसिंह भी बड़े ध्यान से उनकी बातें सुनते रहे ॥

रात आधी से कुछ ज्यादे ही जा चुकी थी जब इन्द्रदेव की बातें

समाप्त हुईं और उन्होंने कहा, "तब अब मैं अपने ससुर के घर जाता हूँ देखूं उधर न जाने क्या मामला है और मेरी स्त्री मालती पर कौन सी आफत आई, पर तुम सीधे मेरे स्थान पर चले जाओ और जो कुछ मैंने कहा है करो। मगर देखो होशियार रहना कहीं ऐसा न हो कि फिर गदाधरसिंह के फेर में पड़ जाओ ॥"

"मैं सब तरह से होशियार रहूँगा आप कोई तरद्दुद न कीजिये।" कह प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए। इन्द्रदेव भी खड़े हुए और प्रभाकरसिंह को जाने के लिये कह किसी सोच में सिर झुकाये नौकरों के साथ शहर की तरफ चले। थोड़ी ही दूर जाने बाद एक निर्जन स्थान पर उनका एक ऐयार घोड़ा लिये खड़ा मिला जिससे दो बातें कर इन्द्रदेव ने उसे भी छुट्टी दी और तब घोड़े पर चढ़ जमानिया को रवाना हुए ॥

छठवां बयान ।

जैपाल को साथ लिये दारोगा कैदियों के कमरे में गया और वहां पहुंचते ही उसकी निगाह उस कोठड़ी के खुले हुए दर्वाजे पर गई जिस में प्रभाकरसिंह कैद थे। वह झपट कर वहां गया मगर प्रभाकरसिंह अब कहां थे ॥

दारोगा जैपाल की तरफ घूमा जो सामने के उस दर्वाजे की तरफ देख रहा था जिसमें वह औरत कैद थी उसकी टूटी हुई जंजीर की तरफ दारोगा का भी खयाल गया और वह उस तरफ बढ़ा मगर जैपाल ने रोक कर कहा, "ठहरिये ठहरिये, मालूम होता है कि जिस आदमी ने प्रभाकरसिंह को छुड़ाया है वह मालती को भी छुड़ाया चाहता था पर मौका न मिलने और शायद हम लोगों की आहट पा जाने के कारण अपना काम पूरा नहीं कर सका है। अभी उसे भागने का मौका न मिला होगा ताज्जुब नहीं कि नीचे कहीं छिपा हुआ मिल जाय पहिले उसे एकबार ढूंढना चाहिये ॥"

दारोगा ने जैपाल की बात मान ली और वह पिछले पांव लौट कर सीढ़ियां उतर नीचे की कोठड़ी में आया। जैपाल भी नीचे उतर आया और उस आलमारी का ताला बन्द कर वह प्रभाकरसिंह और

उनके छुड़ाने वाले की खोज में लगा ॥

बड़ी बड़ी आलमारियों, कोठड़ियों, और दालानों में घूमते और ढूंढते हुए दारोगा ने बहुत सा समय व्यर्थ नष्ट कर दिया और तब तक प्रभाकरसिंह और इन्द्रदेव को इतना मौका मिल गया कि वे बखूबी उस मकान के बाहर हो सकें। आखिर जब खोज ढूंढ करने बाद दारोगा को विश्वास हो गया कि अब यहां कोई नहीं है तो सुस्त और उदास वह आकर अपने कमरे में गद्दी पर बैठ गया। जैपाल भी सामने जा बैठा ॥

बड़ी देर के बाद दारोगा ने सिर उठाया और जैपाल की तरफ देख कर कहा, "आज तक मेरे उस कैदखाने में से कोई भी कैदी भाग न सका था। यह पहिला मौका है कि ऐसा हुआ है ॥"

जैपाल०। अभी तक आपने उस कैदखाने से काम भी तो नहीं लिया था। मगर तौ भी यह बड़ी विचित्र बात है कि आपके खास झब्बे में से कैदखाने की ताली निकल जाय और सो भी खास उस ही कोठड़ी की चाभी जिसमें प्रभाकरसिंह कैद थे !!

दारोगा०। और मैं उस झब्बे को सिवाय तुम्हारे और किसी के हाथ में कभी देता भी नहीं। मैं तो समझता हूं कि कल जब तुम कैदियों को खाना देने के लिये यह झब्बा मुझसे ले गये थे उसी समय या उसके बाद किसी ने धोखा देकर यह कार्रवाई की है और ऐसा होना कुछ मुश्किल भी नहीं है क्योंकि मुझे अच्छी तरह याद है कि कल तुम पानी लेने के लिये एक दफे लौटे थे ॥

जैपाल०। हां पानी के लिये मुझे लौटना तो जरूर पड़ा था और तालियों का झब्बा भी उस समय मैं वहां जरूर छोड़ आया था पर जब मैं लौट कर गया उस समय तक तो तालियों में कोई कमी नहीं हुई थी बराबर सब ताले बन्द करता हुआ मैं आया था ॥

दारोगा०। पर उस समय यदि कोई वहां छिपा हुआ होगा जैसा कि मैं खयाल करता हूं तो उसने कम से कम तालियों को पहिचान तो जरूर लिया होगा या ऐसा वह कर तो जरूर सकता था। और अब जो हुआ सो हुआ अब यह सोचना चाहिये कि गदाधरसिंह को क्या जवाब देना चाहिये जो अब आताही होगा ॥

जैपाल०। क्यों आपने उससे वादा किया था कि प्रभाकरसिंह

को लौटा देंगे ॥

दारोगा० । कभी ऐसा वादा तो नहीं किया था मगर बात यह थी कि प्रभाकरसिंह को मुझे सौंपते समय उसने मुझसे कह दिया था कि बिना उसकी मर्जी पाये मैं उन्हें शिवदत्त के कब्जे में न दूंगा न मालूम उसे कैसे पता लग गया था कि शिवदत्त प्रभाकरसिंह के बारे में मुझे लिखेगा ॥

जैपाल० । वह बड़ा धूर्त है और ऐसी ऐसी बातों की तो बराबर उसे बहुत ही खबर रहती है ॥

दारोगा० । और इस समय यदि मैं उससे कहूंगा कि प्रभाकरसिंह को कोई छुड़ा ले गया तो वह कभी मेरी बात पर विश्वास न करेगा और यही समझेगा कि मैं झूठ कह रहा हूं ॥

जैपाल० । बेशक वह ऐसा ख्याल कर सकता है ॥

दारोगा० । केवल उसी के ख्याल से नहीं बल्कि शिवदत्त के ख्याल से भी प्रभाकरसिंह को अपने कब्जे में रखना बड़ा जरूरी था क्योंकि शिवदत्त अब फिर उसको अपने कब्जे में कर पुराना बदला लिया चाहता है ॥

जयपाल० । जी हां मगर आपने तो उसको मदद देने से इन्कार कर दिया था ॥

दारोगा० । हां पहिले तो इन्कार कर दिया था मगर अब जो मैं सोचता हूं तो यही मालूम होता है कि उससे बिगाड़ करने की बनिस्बत दोस्ती बनाये रखना ज्यादा लाभदायक होगा । दूसरे उसने राजा दिग्विजयसिंह से भी मदद चाही है और उन्होंने अपना खास आदमी भेज कर मुझसे दरियाफ्त कराया है कि क्या करना चाहिये ॥

जय० । जी हां यह तो मालूम हुआ कि महाराज दिग्विजयसिंह के ऐयार शेरसिंह आये थे मगर क्या बातें हुईं यह न मालूम हुआ ॥

यह सुन दारोगा साहब ने वे चीठियें जो शेरसिंह के मारफत पाई थीं जैपाल को पढ़ने को दीं । जैपाल उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ गया और तब बोला, "तो आपने शेरसिंह को क्या जवाब दिया ?"

दारोगा० । अभी तो मैंने कोई उत्तर नहीं दिया है परन्तु जवाब देने का वादा किया है । इस बात में हमें ठीक २ निश्चय कर लेना चाहिये कि अब क्या करना मुनासिब है । कहो तुम्हारी क्या राय है ॥

जैपाल० । (कुछ देर सोच कर) मेरी समझ में तो शिवदत्त से बनाव रखने में ही हम लोगों का फायदा है एक तो आजकल उसने अपनी ताकत खूब बढ़ा ली है दूसरे.........

जैपाल की बात समाप्त न हुई थी कि बाहर दरवाजे पर कुछ आहट मालूम हुई और एक नौकर ने आ कर कहा, "गदाधरसिंह आये हैं और दर्वाजे पर खड़े हैं ॥"

दारोगा ने भूतनाथ को ले आने का हुक्म दिया और थोड़ी ही देर में वह आ मौजूद हुआ । दारोगा ने उठ कर बड़ी ही खातिरदारी के साथ उसे लाकर अपनी गद्दी पर बैठाया और नाहीं नूकर करते हुए उसके बैठ जाने पर आप भी बैठा । बैठते ही भूतनाथ ने कहा, "प्रभाकरसिंह के निकल जाने का तो आपको इस समय बड़ा अफ़सोस हुआ होगा !!"

दारोगा० । (आश्चर्य से) आपको उनके छूट जाने का हाल कैसे मालूम हुआ ?

भूत० । मुझे किस बात का पता नहीं रहता ! क्या शिवदत्त के विषय में मैंने जो खबर दी थी वह झूठ निकली ! या दिग्विजयसिंह के बारे में आपसे जो कुछ कहा उस पर अविश्वास करने का आपको मौका मिला !!

दारोगा० । नहीं नहीं आप की दोनों खबरें बहुत ठीक निकलीं वास्तव में आपके शागिर्द लोग बड़े ही तेज और अपने काम के पक्के हैं उनकी लाई हुई कोई खबर झूठ नहीं हो सकती, आज ही दिग्विजयसिंह का आदमी मुझसे मिला था ॥

भूत० । मुझे मालूम है ॥

दारोगा० । क्या शेरसिंह आपसे मिले थे ?

भूत० । नहीं यहां तो अभी तक मेरी उनकी मुलाकात नहीं हुई है, खैर हो ही जायगी मगर आपने उनको क्या जवाब दिया ॥

दारोगा० । मेरा जवाब तो बस आप ही के ऊपर है, आप जैसा कहें वैसा करूं !!

भूतनाथ० । क्यों मुझसे क्या मतलब, मुझसे न दिग्विजयसिंह से वास्ता और न शिवदत्त से दोस्ती, मैं इन लोगों के विषय में आप को क्या राय दे सकता हूं आप जो मुनासिब समझें करें, मुझसे तो

कोई मतलब नहीं ॥

दारोगा० । आप ही से तो बड़ा भारी मतलब है और आप ही के ऊपर इस बारे की सब कार्रवाई का भार है ॥

भूत० । इसका मतलब ?

दारोगा० । इसका यह मतलब कि अगर आप मेरी मदद करें तब तो मैं शिवदत्त की मदद करना मंजूर करूं और अगर आप इन्कार करें तो मैं शिवदत्त से इन्कार कर दूं ॥

भूत० । मैं तो अपने भरसक आपकी मदद बराबर ही करता रहा हूं । आपको इस विषय में शिकायत करने का मौका तो न मिलना चाहिये !!

दारो० । मैं शिकायत तो नहीं करता पर इतना तो जरूर कहूंगा कि इधर कुछ दिनों से आपने मेरी तरफ से सुस्ती इख़्तियार की है ॥

भूत० । कैसे सुस्ती ?

दारोगा० । क्या आप नहीं जानते कि मेरे ऊपर इधर कैसी कैसी मुसीबतें आई हैं और कैसे तरद्दुदों में मुझे पड़ना पड़ा है ॥

भूतनाथ० । इतना तो मुझे अवश्य मालूम है कि आपके कई कैदी निकल गये मगर ज्यादा तो और कुछ नहीं जानता ॥

दारोगा० । खैर तो क्या कैदियों का निकल जाना ही कुछ कम मुसीबत की बात है, क्या वे सब छूट छूट कर मेरा अनिष्ट नहीं करेंगे !!

भूत० । यह तो मैं कैसे कहूं कि आपको उनके सबब से तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी........

दारोगा० । अगर आप बुरा न मानें तो मैं इतना अवश्य कहूंगा कि यह मुसीबत मेरे ऊपर आप ही के सबब से आई है ॥

भूत० । (बनावटी हँसी हँस कर) क्या मैं आपके कैदी छुड़ा ले गया हूं !!

दारोगा० । नहीं नहीं यह तो मैं नहीं कहता मगर आपका मुझसे नाराज हो जाना ही इसका सबब है इस बात का तो मुझे विश्वास है, खैर अब इन पुरानी बातों को तो जाने दीजिये अब यह बताइये कि आज से आप मेरी मदद सच्चे दिल से करने को तैयार हैं या नहीं ॥

भूत० । (हंस कर) मैंने आपकी मदद करने से इनकार ही कब किया है ! जब जब मुझ से हो सका है मैं आपकी मदद ही करता रहा हूं ॥

दारोगा० । हां मगर कभी कभी आप मेरे दुश्मन भी बन चुके हैं खैर इन बातों को तो जैसा कि मैं कह चुका हूं जाने दीजिये अब आगे के लिये बताइये कि आपका क्या इरादा है । इस बात को आप अच्छी तरह समझ लीजिये कि मेरी मदद करने से आपका सिवाय फायदे के नुकसान नहीं है । मेरे साथी रहने से अभी तक आपका फायदा ही हुआ है और होगा, और मेरे विपक्ष में रहने से आपका कोई फायदा नहीं है बल्कि कुछ नुकसान ही है क्योंकि चाहे आप ऐसे धुरन्धर ऐयार का मैं या मेरे साथी कुछ नहीं बिगाड़ सकते मगर साथ ही इसके आप यह भी समझ रखिये कि चाहे कोई आदमी कैसाही ताकतवर क्यों न हो मगर उसके दुश्मनों की गिनती का बढ़ते जाना उस के हक में कदापि ठीक नहीं है । मैं अच्छी तरह जानता और समझता हूं कि इधर के कई काम आपके हाथ से ऐसे हुए हैं जिन्होंने आपके दुश्मन बढ़ा दिये हैं । मैं यह ताने के तौर पर नहीं कहता बल्कि अपना दिली खयाल आपसे कहता हूं कि आपके काम यदि आपके दुश्मनों की संख्या बढ़ा रहे हैं तो आपको अपने दोस्तों की गिनती भी बढ़ाने की बराबर कोशिश करते रहना चाहिये । आपको चाहे मेरी मदद की जरूरत न पड़े पर तौ भी मेरी मदद से आपको अपने कामों में सहायता जरूर मिल सकती है और इस बात का आपको अनुभव भी हो चुका है । साथ ही आप की मदद से मेरा भी बहुत कुछ फायदा हो चुका है और होने की उम्मीद है । सच तो यह है कि अगर हम आप साथी बने रहेंगे तो ऐसे ऐसे काम कर गुजरेंगे जिसका खयाल करना मुश्किल है और अलग अलग रहने से कुछ भी न हो सकेगा । आप ही कहिये क्या मेरा कहना गलत है ?

भूत० । नहीं नहीं आप बहुत ठीक कह रहे हैं । मैं इस बात को मानता हूं कि मेरे दुश्मन बढ़ गये हैं और इस बात को भी जानता हूं कि आपके दुश्मन भी घटे नहीं हैं तथा इस बात को भी मान लेने में कोई हर्ज नहीं है कि एक दूसरे की मदद करने से हमारा आपका दोनों का फायदा होगा मगर......

दारोगा०। मगर क्या?

भूत०। खैर इस बात को जाने दीजिये यह बताइये......

दारोगा०। नहीं नहीं पहिले आप अपनी बात तमाम कीजिये तो मैं कुछ बताऊंगा क्योंकि 'मगर' एक ऐसा शब्द है जिसके मतलब का कोई अन्त नहीं है॥

भूत०। (हँस कर) मगर बात यह है कि कई बातें ऐसी आ गई हैं जिनके सबब से कई खास खास कामों में मैं आपकी मदद न कर सकूंगा॥

दारोगा०। वे कौन कौन?

भूत०। एक तो इन्द्रदेव के विरुद्ध किसी प्रकार की और कोई भी कार्रवाई मैं नहीं करूंगा और न आपको करने दूंगा॥

दारोगा०। ठीक है यह तो मैं पहिले ही से जानता था, भला इन्द्रदेव से मेरी कौन दुश्मनी है जो मैं उनके विरुद्ध कुछ करूंगा। इसे तो आप अपने दिल से हटा दीजिये। अच्छा और कुछ!!

भूत०। दूसरे इन्द्रदेव के दोस्तों और साथियों के विरुद्ध तब तक किसी काम में मैं आपकी सहायता न करूंगा जब तक वे मेरे साथ दुश्मनी का बर्ताव न करेंगे॥

दारोगा०। हां यह तो ठीक ही है, इसे मैं मन्जूर करता हूं, और कुछ हो तो उसे भी बता दीजिये॥

भूत०। (कुछ रुक कर) तीसरी बात यह है कि......खैर इस समय उस बात को उठाने की कोई जरूरत नहीं है मौका पड़ने पर देखा जायगा। मेरी इन दो बातों का ही यदि आप खयाल रक्खेंगे तो फिर मुझे आपकी मदद करने में कोई उज्र न होगा॥

दारोगा०। मैं इस बात का वादा करता हूं कि इन्द्रदेव के बर्खिलाफ कभी कोई कार्रवाई न करूंगा और न तुमसे ऐसे किसी काम के लिये कहूंगा जिससे इन्द्रदेव उसके दोस्त या उसके साथियों का कुछ भी अनिष्ट होता हो॥

भूत०। और मैं इस बात का वादा करता हूं कि तब तक सच्चे दिल से आपकी मदद करूंगा जब तक आप कोई भेद की बात मुझ से न छिपावेंगे॥

इस बात पर दोनों ने कसम खाई और तब दारोगा ने उठ कर

भूतनाथ को गले लगाया। इसके बाद दोनों फिर बैठे और पुनः बात-चीत शुरू हुई॥

दारोगा०। अच्छा अब आप बताइये कि 'शिवदत्तसिंह' और दिग्विजयसिंह को मैं क्या जवाब दूं?"

भून०। ज़रा उन चीठियों को मुझे दिखाइये॥

दारोगा ने वे चीठियें भूतनाथ के आगे रख दीं, भूतनाथ सरसरी निगाह से उन्हें पढ़ गया और तब बोला, "जहां तक मालूम होता है शिवदत्त आपसे केवल प्रभाकरसिंह के मामले में मदद लिया चाहता है॥

दारोगा०। हां और इसी सबब से प्रभाकरसिंह का कब्जे में आकर निकल जाना मुझे बड़ा ही अखरा, हां यह तो बताइये, आपको इस बात का कैसे पता लगा कि प्रभाकरसिंह को कोई छुड़ा ले गया॥

भून०। (मुस्कुरा कर) मुझे मालूम हो गया और सच तो यह है कि मुझे पहिले ही से मालूम था कि वे आपके कब्जे में ज्यादा दिन तक रहने नहीं पावेंगे। इसका यह मतलब नहीं है कि मैंने जान बूझ कर उन्हें छूट जाने दिया या मैं उस आदमी को जानता हूं जिसने उन्हें छुड़ाया है मगर बात तो यही है कि जिस समय मैंने उन्हें आपके कब्जे में दिया था उसी समय मुझे इस बात का पता लग गया था कि वे छूट जायंगे॥

दारोगा०। जब आपको यह बात मालूम थी कि वे छुड़ा लिये जांयगे तो आपने यह बात मुझे क्यों नहीं बतादी जिसमें मैं उनको और भी होशियारी से रखता॥

भूतनाथ०। बेशक यह मेरी गल्ती है जो मैंने इस बात से आपको होशियार नहीं किया पर सच तो यह है कि जिस समय मैं बेहोश प्रभाकरसिंह को साथ लिये आपके पास आया था उस समय इतना घबड़ाया हुआ था कि मेरा होशहवास दुरुस्त नहीं था और एक तरह पर प्रभाकरसिंह से मैं अपना पिण्ड छुड़ाया चाहता था॥

दारोगा०। आपको इतनी घबड़ाहट! आश्चर्य की बात है! मुझे तो विश्वास नहीं होता॥

भूत०। चाहे न हो पर मैं वास्तव में ठीक कह रहा हूं खैर अब इस ज़िक्र के उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। अब मैं इजाजत चाहता हूं॥

दारोगा०। क्यों? इतनी जल्दी क्यों?

भूत० । बात यह है कि मुझे अभी शेरसिंह से मुलाकात करनी है जिनसे मिलने का वादा कर चुका हूं । वे कहां होंगे इसका मुझे पता नहीं इसलिए उन्हें भी खोजना ही होगा ॥

दारोगा० । यदि यह बात है तो मैं आपको नहीं रोक सकता (उठते हुए) तो अब कब मुलाकात होगी ?

भूत० । जरूरत होने पर आप मुझे अपने पास ही पाइयेगा ॥

इतना कह भूतनाथ उठ खड़ा हुआ, साथ ही उठा और खुशामद की बातें करता हुआ दारोगा उसे दर्वाजे तक पहुंचाने गया और उस के चले जाने पर नौकरों को दर्वाजा बन्द करने का हुक्म दे अन्दर लौट गया ॥

सातवां बयान ।

इन्द्रदेव से बिदा हो कर प्रभाकरसिंह अपने मकान की तरफ रवाना हुए ॥

इन्द्रदेव की जुबानी जमना और सरस्वती के मारे जाने का हाल सुन प्रभाकरसिंह को बड़ा ही कष्ट हो रहा था । आंखों से बेअख्तियार निकल पड़ने वाले आंसुओं को बड़ी कठिनता से रोकते और साथ ही भूतनाथ से इसका बदला लेने की कठिन प्रतिज्ञा करते हुए वे सिर झुकाये तेजी के साथ जा रहे थे ॥

भूतनाथ के सबब से उन्हें जो जो कष्ट उठाना पड़ा था वह सब एक एक करके इस समय प्रभाकरसिंह को याद आ रहा था । जिस समय पहिले पहिल अपनी स्त्री को लेकर भागते हुए नौगढ़ के पास के जङ्गल में गदाधरसिंह से उनकी मुलाकात हुई थी उस समय से लेकर अब तक की सब घटनाएं एक एक करके उनकी आंखों के सामने आ रही थीं । अपने माता पिता को अब उन्होंने पा लिया था और दयाराम का भी पता लग गया था उस समय उन्होंने समझा था कि उनके दुःख की घड़ी बीत गई है और अब उन्हें दुःखद घटनाओं के उस भयानक जङ्गल में पुनः आने की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी जिसमें शिवदत्त दारोगा और गदाधरसिंह सरीखे खूंखार जानवर भरे हुए थे मगर अब उन्हें मालूम हुआ कि अब भी उस जङ्गल का कोई

ऐसा टुकड़ा बाकी है जिसमें वे अभी तक पैर नहीं रख पाये हैं और जो बाकी हिस्सों से कहीं भयानक और खतरनाक है । पहिले तो भैयाराजा और उनकी स्त्री का गायब होना और उसके बाद यह जमना सरस्वती की मौत और दयाराम का पता न लगना साफ बता रहा था कि उनके ऊपर वह मुसीबत का पहाड़ जिसे वह सदा के लिये हट गया हुआ समझे हुए थे पुनः गिरा चाहता है और अगर वे अब सम्हल कर न चलेंगे तो ताज्जुब नहीं कि उनका अङ्गभङ्ग होने के साथ ही साथ उनकी जान पर भी आ बने क्योंकि वे इस बात को खूब समझते थे कि केवल यहां ही तक बस नहीं है और उनपर तथा उनकी स्त्री और पिता माता पर भी आफत आना चाहती है ॥

इसी प्रकार की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह चले जा रहे थे । कुछ सोच कर उन्होंने जङ्गल जङ्गल जाने की बनिस्बत सड़क सड़क जाना मुनासिब समझा था और इसी कारण वे सड़क पर से जा रहे थे ॥

शीघ्रही अस्त हो जाने वाले चन्द्रमा की रोशनी प्रभाकरसिंह को रास्ता चलने में कुछ कुछ मदद पहुंचा रही थी जब प्रभाकरसिंह के कान में घोड़े के टापों की आवाज सुनाई दी और वे चौकन्ने होकर इधर उधर देखने लगे । थोड़ी ही देर में उन्हें मालूम हो गया कि यह आवाज सामने अर्थात् उसी तरफ से आ रही है जिधर वे जा रहे थे और थोड़ी ही देर बाद एक सवार को अपनी तरफ आते देख प्रभाकरसिंह का सब शक जाता रहा ॥

न मालूम यह सवार उनका दोस्त है या दुश्मन, यह सोच प्रभाकरसिंह सड़क से हट कर एक किनारे हो गये और पेड़ों में उन्होंने अपने को छिपा लिया मगर मालूम होता है कि उस सवार ने उन्हें देख लिया था क्योंकि उस जगह के पास आ कर जहां से प्रभाकरसिंह ने सड़क छोड़ी थी वह सवार घोड़े पर से उतर पड़ा और जेब से एक सीटी निकाल कर किसी खास ढङ्ग से उसे बजाया । इसके बाद घोड़े की लगाम एक डाल से अँटका वह इधर उधर गौर के साथ निगाहें दौड़ाने लगा ॥

उसके सीटी बजाने के साथ ही एक दूसरी सीटी की आवाज सुनाई दी और उसके बाद ही दो सवार तेजी के साथ आते हुए

था और प्रभाकरसिंह बड़े तरद्दुद में पड़े हुए थे कि अब क्या करना चाहिये कि यकायक उनके कान में आवाज पड़ी “प्रभाकरसिंह जी !!”

आवाज कमज़ोर और जनानी मालूम होती थी जिससे प्रगट होता था कि यह बोलने वाला मर्द नहीं बल्कि कोई औरत है मगर इस बात को जानकर प्रभाकरसिंह का आश्चर्य और भी बढ़ गया। “ऐसे स्थान पर उनके जान पहिचान की अथवा उनका नाम जानने वाली कोई औरत कहां से आ गई और उसने मुझे कैसे पहिचाना” अभी प्रभाकरसिंह यही सोच रहे थे कि पुनः उसी औरत की आवाज आई “प्रभाकरसिंह जी !!”

इस बार भी प्रभाकरसिंह ने कुछ जवाब न दिया। थोड़ी देर बाद पुनः आवाज आई, “आप डरिये मत मैं आप की दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त हूं और अगर दोस्त न भी होऊं तो एक खाली हाथ औरत से डरने की आपको कोई वजह नहीं है ॥”

इसी समय प्रभाकरसिंह की निगाह नीचे सड़क की तरह गई और यह देख उन्हें कुछ ताज्जुब हुई कि अब वे तीनों आदमी जिन्हें पहिले वे देख चुके थे या जिनके सबब से वे यहां आये थे दिखाई नहीं देते अस्तु उन्होंने जवाब दिया “तुम कौन हो ?”

जवाब मिला, “मुझे आप नहीं पहिचानते ॥”

प्रभाकरसिंह बोले, “तो तुम मुझे क्योंकर पहिचानती हो ? या कैसे जानती हो कि मैं प्रभाकरसिंह हूं ॥”

औरत०। पहिले तो मुझे कुछ सन्देह था पर अब आपकी आवाज ने मुझे बता दिया कि आप निश्चय प्रभाकरसिंह जी ही हैं ॥

प्रभाकर०। मगर ताज्जुब की बात है कि जिस तरह मेरी आवाज ने तुम पर प्रगट कर दिया कि मैं प्रभाकरसिंह हूं उस तरह तुम्हारी आवाज मुझे कुछ भी नहीं बताती कि तुम कौन हो ?

औरत०। इसका सबब यह है कि आप मुझे नहीं जानते। (कुछ रुक कर) और इस पेड़ पर बैठ कर बातें करने की बनिस्बत यह मुनासिब है कि नीचे उतर चला जाय क्योंकि अब आपके दुश्मन कहीं दिखाई नहीं पड़ते अच्छा पहिले मैं नीचे उतर कर देखती हूं कि क्या हाल है और वे सब वास्तव में चले गये हैं या यहीं कहीं छिपे हुए हैं ॥

प्रभाकर०। नहीं नहीं पहिले मुझे उतर जाने दो, मैं इस बात का पता लगा लूंगा कि यहां कोई मेरा दुश्मन है या नहीं ॥

इसके जवाब में खिलखिला कर हंसने बाद उस औरत ने कहा, "मालूम होता है कि आपको मुझ पर विश्वास नहीं हुआ और आप समझते हैं कि नीचे पहुंच कर मैं आपके साथ दगा करूंगी, खैर कोई हर्ज नहीं पहिले आप ही उतर जाइये, लीजिये मैं कुछ और दूर हट जाती हूं ॥"

इसके बाद आहट से प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि वह औरत कुछ दूर हट गई है अस्तु प्रभाकरसिंह अपने स्थान से उठे और सावधानी के साथ पेड़ के नीचे उतरने लगे क्योंकि उन्हें अभी तक यह सन्देह था कि कहीं वह औरत धोखे में उन पर हमला न करे मगर ऐसा न हुआ और प्रभाकरसिंह सकुशल नीचे पहुंच गये ॥

इधर उधर नजर दौड़ाने पर भी प्रभाकरसिंह को वहां कोई दिखाई न पड़ा सिवाय इसके उस जगह अन्धेरा इतना था कि अगर कोई आसपास में छिपा हुआ होता भी तो प्रभाकरसिंह उसे देख न सकते थे। उसी समय पेड़ से उस औरत के उतरने की भी आहट आई और थोड़ी ही देर में वह नीचे आ कर इनके पास में खड़ी हो गई ॥

प्रभाकरसिंह ने पूछा, "अच्छा अब तुम अपना परिचय दो कि कौन हो और मुझसे क्या चाहती हो ॥"

औरत०। अपना परिचय देना व्यर्थ है क्योंकि आप मुझे बिलकुल नहीं पहिचानते, इसके साथ ही मैं यह भी चाहती हूं कि आप इस जगह अब न ठहरें क्योंकि आपके दुश्मन चारों तरफ मौजूद हैं ॥

प्रभाकर० । मेरे दुश्मन कौन ?

औरत० । क्या आप नहीं जानते कि वे आदमी जिन्हें आप ने थोड़ी देर हुई देखा था किसके आदमी हैं ?

प्रभाकर० । नहीं ॥

औरत०। ठीक है आप क्योंकर जान सकते हैं अभी तो गदाधरसिंह ने आपको दारोगा की कैद से छुड़ाया है ॥

प्रभा० । (आश्चर्य से) क्या कहती हो ? किसने मुझे छुड़ाया ?

औरत०। मैं बहुत ठीक कहती हूं, जिसे आप इन्द्रदेव समझे हुए

है वह वास्तव में गदाधरसिंह था ॥

प्रभाकर० । नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता ॥

औरत०। अवश्य ऐसा ही है और इन्द्रदेव से मिलते ही आपको मेरी बात का विश्वास हो जायगा, पर मुझे तो इसी बात में सन्देह है कि आप इन्द्रदेव से अब कभी मिल सकेंगे या नहीं ॥

प्रभाकर० । सो क्या ?

औरत०। आपके पुराने मालिक और शिवदत्तगढ़ के राजा शिवदत्तसिंह के ऐयार यहां आये हुए हैं और उन्होंने अपनी ऐयारियों का जाल इस तरह फैलाया हुआ है कि आपका निकल भागना मुझे असम्भव मालूम होता है क्योंकि वे आपको और आप के साथियों को अच्छी तरह जानते हैं और आप उनको बिलकुल नहीं पहिचानते। मुझे इस बात का भी डर है कि कहीं उनका कोई वार इन्दुमति के ऊपर भी न हो क्योंकि इस समय उस बेचारी की रक्षा करने वाला कोई भी नहीं है ॥

इस औरत की बातें सुन प्रभाकरसिंह के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा क्योंकि आवाज इत्यादि से वे उसे कुछ भी पहिचान नहीं सकते थे और इसके विपरीत वह इनके सब हाल से परिचित मालूम होती थी। इसके साथ ही वे इस बात का भी निश्चय नहीं कर सकते थे कि यह वास्तव में उनकी दोस्त है या दुश्मन अथवा इस पर कहां तक विश्वास करना चाहिये। आखिर उन्होंने कहा, "मैं उस समय तक तुमसे सवाल जवाब नहीं कर सकता जब तक तुम्हारा पूरा परिचय न पाऊं या मुझे इस बात का विश्वास न हो जाय कि तुम मेरी दोस्त हो दुश्मन नहीं ॥"

इस बात का कुछ जवाब न दे वह औरत सड़क की तरफ बढ़ी। कुछ सोच कर प्रभाकरसिंह भी उसके साथ चलने लगे। सड़क पर पेड़ों की आड़ न होने के कारण चन्द्रमा की अन्तिम किरणें अभी तक पड़ रही थीं और उसकी रोशनी में प्रभाकरसिंह को यह देख आश्चर्य हुआ कि वह औरत अपने चेहरे को नकाब से ढांके हुए है तथा खूबसूरती के साथ लपेटी हुई कमन्द और एक बटुआ भी उस के पास मौजूद है ॥

प्रभाकरसिंह की तरह उस औरत ने इनको भी अच्छी तरह देखा

को कैद से क्यों छुड़ाया, उसी ने तो मुझे गिरफ्तार कर के दारोगा के पास पहुंचाया था फिर मुझे छुड़ाने की क्या ज़रूरत थी ॥

औरत०। इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती और न अब ज्यादे देर ठहर ही सकती हूं। अब मैं जाती हूं ॥

इतना कह बिना प्रभाकरसिंह की और कोई बात सुने वह औरत सामने के इन पेड़ों की आड़ में हो प्रभाकरसिंह की नज़रों से गायब हो गई ॥

कुछ देर तक तो प्रभाकरसिंह वहीं खड़े तरह तरह की बातें सोचते रहे, इसके बाद तेज़ी के साथ पुनः उसी तरफ रवाना हुए जिधर पहिले जा रहे थे, मगर उनका दिल बार बार इस विचित्र औरत का उत्सुक हो जा रहा था ॥

आठवां बयान ।

सन्ध्या के समय अपने तिलिस्मी मकान के अन्दर वाले बाग में एक पेड़ के नीचे कुर्सी पर उदास बैठे हुए इन्द्रदेव कुछ सोच रहे हैं ॥

बेचारी जमना और सरस्वती की मौत ने जिसकी खबर ले उनका एक शागिर्द जमानियां पहुंचा था तो उन्हें अताही रक्खा था ऊपर से यह देख उनके रञ्ज का कोई ठिकाना न रहा था कि दयाराम और प्रभाकरसिंह का भी कहीं पता न था और बहुत खोज ढूंढ़ करने पर भी उनके शागिर्द कुछ नहीं जान सके थे कि वे कहां चले गये। क्या जाने जिस कम्बख़्त दुश्मन ने जमना और सरस्वती की जान ली उसी ने उन दोनों का भी कुछ अनिष्ट किया अथवा वे स्वयं कुछ पता पा कर खूनी के पीछे चले गये हैं दोनों में से किसी बात का भी पता नहीं लगता था और बेचारे इन्द्रदेव की जान एक अजीब खुटके में पड़ी हुई थी। वे कुछ भी निश्चय नहीं कर सकते थे कि जमना सरस्वती की मौत का बदला लें अथवा दयाराम और प्रभाकरसिंह का जिन्हें अपने खास लड़कों की तरह वह चाहते थे गम करें। तरह तरह के दुःखदाई ख्याल उनके दिल को मसोस रहे थे और रह रह कर उनका दिल किसी ऐसे आदमी से बदला लेने का दृढ़ सङ्कल्प करने पर

बनाव हो जाता था जिसे लाख बुराई करने पर भी दोस्ती का हक़ निबाहने की नीयत से अभी तक छोड़ते आते थे ॥

बेचारी इन्दुमति और प्रभाकरसिंह के माता पिता पर भी इस घटना का बुरा असर पड़ा, वृद्ध होने और ज़माने का बहुत कुछ ऊंच नीच देख चुकने के कारण यद्यपि दिवाकरसिंह और करुणाकरसिंह प्रगट में बहुत शोक न प्रकाश कर केवल इन्द्रदेव के ऊपर ही अपने प्यारे लड़के के पता लगाने का भार सौंप कर प्रगट में सन्तोष किये बैठे हुए थे और इसे भी ईश्वर की एक इच्छा समझ यह सोच मन मारे बैठे थे कि यदि हमारे भाग्य में पुत्रशोक बदा ही है तो वह किसी तरह रुक नहीं सकता पर बेचारी इन्दुमति की बुरी हालत हो रही थी। यद्यपि अपनी इस कच्ची उम्र में ही वह बड़े बड़े कष्ट उठा चुकी थी और दुनियां की अवस्था का बहुत कुछ अनुभव कर चुकी थी पर इस समय इन्द्रदेव और उसके सास ससुर का समझाना उसका कोई भी भला कर न रहा था। वह कई बार इन्द्रदेव से इस बात की इजाज़त मांग चुकी थी कि वे उसे भेष बदल कर अपने स्थान के बाहर जाने और अपने पति का पता लगाने की आज्ञा दें क्योंकि जमना सरस्वती के सङ्ग से उसे भी कुछ कुछ ऐयारी आ गई थी पर बेचारे इन्द्रदेव क्योंकर उसे ऐसा करने की इजाज़त दे सकते थे। वे बराबर उसे दिलासा देते और समझाते थे कि "ठहर जा बेटी जल्दी न कर आजकल में मेरा कोई न कोई शागिर्द प्रभाकरसिंह की खबर लेकर आता ही होगा॥"

यह नहीं था कि अपने शागिर्दों ही पर सब भार छोड़ इन्द्रदेव स्वयम् चुप बैठे हों। नहीं, मौका मिलने पर वे स्वयम् भेष बदल कर बाहर निकलते और दयाराम तथा प्रभाकरसिंह का पता लगाते थे मगर अभी तक उनकी मेहनत का कोई अच्छा नतीजा नहीं निकला था, केवल इस बात का पता वे लगा सके थे कि प्रभाकरसिंह दारोगा के यहां कैद थे मगर कई रोज हुए वहां से भी कोई उनको छुड़ा ले गया। दारोगा की कैद से छूटने बाद प्रभाकरसिंह फिर क्या हुए या कहां गये इसका कुछ भी पता लगता न था॥

इन तरद्दुदों के साथ ही साथ एक तरद्दुद इन्द्रदेव को अपने ससुर के बारे में भी लगा हुआ था। जिस ढङ्ग से आफतें उनके

उनके बुलाने पर अपनी स्त्री और लड़की को लेने जाने पर इन्द्रदेव से दामोदरसिंह की बातें हुई थीं * उससे तथा खुद भी कुछ पता लगाने से इस बात का इन्द्रदेव को पता लग गया था कि शीघ्र ही दामोदरसिंह की जान पर कुछ आफत आने वाली है मगर वह कैसी या किस प्रकार की इसका अभी ठीक ठीक पता नहीं लगा और इसके जानने की भी फिक्र इन्द्रदेव को लगी हुई थी क्योंकि अपने ससुर की रक्षा करना भी इन्द्रदेव अपना अवश्य कर्तव्य समझते थे ॥

जमना सरस्वती की मौत और दयाराम तथा प्रभाकरसिंह को गायब हुए आज तेरह चौदह दिन हो चुके हैं और जमानिया से अपनी स्त्री इत्यादि को ले कर इन्द्रदेव को लौटे भी करीब करीब इतना ही समय गुजर चुका है ॥

बहुत देर तक सोच में डूबे रहने बाद इन्द्रदेव ने सिर उठाया और ताली बजाई जिसके साथ ही एक नौकर जो अदब के साथ उसे थोड़े ही फासले पर खड़ा था पास आ पहुंचा । इन्द्रदेव ने उनसे अपना घोड़ा तैयार करने का हुक्म दिया और आप उठ कर जनाने मकान में सर्यू से कुछ बातें करने के लिये चले गए ॥

थोड़ी देर बाद एक भारी लबादा ओढ़े और अपनी सूरत में मामूली सा फर्क डाले हुए इन्द्रदेव जनाने मकान के बाहर आये। तिलिस्मी मकान का पेचीला रास्ता तय करके बाहर आने पर पहाड़ी के नीचे उन्हें घोड़ा तैयार मिला और इन्द्रदेव उस पर सवार हो तेजी के साथ एक तरफ रवाना हुए ॥

लगभग आध घण्टे तक इन्द्रदेव लगातार घोड़ा फेंकते हुए चले गए । सूर्यदेव अस्ताचल गामी हो चुके थे और उनकी किरणें केवल ऊँचे ऊँचे पेड़ों की चोटियों ही पर दिखाई पड़ रही थीं जब इन्द्रदेव सड़क के किनारे एक ऐसी जगह पहुंच कर रुके जहां सड़क के दोनों तरफ केवल बड़ के ही पेड़ लगे हुए थे और वे पेड़ इतने पुराने तथा बड़े थे कि उनके सबब से उस तरफ दूर तक सड़क तथा उसके आस पास बिलकुल अन्धकार हो रहा था । सड़क के दोनों तरफ के पेड़ों

* चन्द्रकान्ता सन्तति चौदहवां हिस्सा ११ हवां बयान—इन्दिरा का किस्सा ॥

की डालें आपस में बिल्कुल गुथ गई थीं और लटकती हुई बड़ की शाखें सड़क से आने जाने वालों को रुकावट डालती थीं । उसी जगह सड़क के किनारे पुराने ज़माने का एक आलीशान कूंआ भी था मगर वह अब बिल्कुल टूट फूट गया था और पेड़ों की पत्तियाँ गिर गिर कर उसका पानी भी अब पीने लायक नहीं रह गया था ॥

इन्द्रदेव कुछ देर तक यहां पहुंच कर रुके और इसके बाद पुनः घोड़े पर सवार हो कर रवाना हुए पर इस बार उन्होंने सड़क छोड़ एक पतली पगडण्डी का रास्ता पकड़ा जो उन्हीं पेड़ों के बीच में से घूमती हुई पश्चिम तरफ को निकल गई थी । अन्धेरा होते होते तक वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां घोर जङ्गल के बीच एक ऊंचा टीला था जिस पर एक बड़ा सा खूबसूरत बङ्गला बना हुआ दिखाई पड़ रहा था यहां पहुंच इन्द्रदेव घोड़े पर से उतर पड़े और उसे पगडण्डी से दूर हटा एक पेड़ के साथ लगाम अटका छोड़ दिया और पैदल उस पगडण्डी पर चलने लगे जो अब चक्कर खाती हुई उस टीले के ऊपर तक चली गई थी ॥

कुछ ही दूर गये होंगे कि यकायक इन्द्रदेव को अपने पीछे कुछ आहट मालूम हुई और उन्होंने घूम कर देखा तो एक नकाबपोश को अपने पीछे आते पाया । वे रुक गये और वह नकाबपोश भी उनके सामने आकर खड़ा होगया । कुछ देर तक दोनों एक टक एक दूसरे की तरफ देखते रहे और इसके बाद नकाबपोश ने धीरे से कहा, "शश-धर" और इसके जवाब में इन्द्रदेव से "राजन्" सुनते ही उसने नकाब दूर कर दी । अब मालूम हुआ कि ये इन्द्रदेव के दिली दोस्त दलीप-शाह हैं ॥

दलीपशाह ने इन्द्रदेव को गले लगाया और तब पूछा, "आप यहां कैसे आ पहुंचे ॥"

इन्द्र० । आज यकायक मेरे मन में आया कि यहां आ कर भी कुछ देखभाल कर लूं क्योंकि इस स्थान का तिलिस्म से भी कुछ सम्बन्ध है, मगर आपका यहां आना मुझे ताज्जुब में डालता है ॥

दलीप० । मैं और मेरे शागिर्द कई दिनों से इस मकान का हाल जानने की फिक्र में लगे हुए हैं क्योंकि इस बात का सन्देह होता है कि प्रभाकरसिंह कदाचित इसी जगह हैं ॥

इन्द्रदेव०। (चौंक कर) क्या वास्तव में यह बात है! आपलोगों ने प्रभाकरसिंह को यहां देखा है?

दलीप०। हां (कान लगा कर) देखिये किसी की आहट सुनाई देती है, मालूम होता है कोई आदमी इधर ही आ रहा है, हमलोगों को आड़ में हो जाना चाहिये॥

इन्द्रदेव और दलीपशाह रास्ते से हट कर एक पेड़ की आड़ में होगये और उसी समय उनकी निगाह एक औरत पर पड़ी जो तेजी के साथ इसी तरफ आ रही थी। यद्यपि अन्धकार के कारण उस औरत की सूरत शक्ल का अन्दाजा करना कठिन था तथापि इन्द्रदेव और दलीपशाह का ध्यान उसके हाथ के बड़े छुरे और उन बातों पर अवश्य गया जिन्हें वह बड़बड़ाती हुई कहती जाती थी, "यह बड़ा ही बुरा हुआ जो वह दुष्ट मेरे हाथ से बच कर निकल गया, अब वे लोग इस जगह का पता जरूर पा जायँगे और तब प्रभाकरसिंह का रहना कठिन होगा।" यह कहती हुई वह औरत तेजी के साथ उसी टीले पर चढ़ गई॥

उसके निकल जाने बाद इन्द्रदेव ने कहा, "इसकी बात से यह तो मालूम होता है कि प्रभाकरसिंह हैं यहीं॥"

दलीप०। जरूर,मेरी समझ में तो इसी वक्त इसका पीछा करना चाहिये॥

इन्द्र०। (कुछ सोच कर) अच्छा चलो॥

दोनों आदमी धीरे धीरे पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाते हुए उस टीले पर चढ़ने लगे और थोड़ी ही देर में ऊपर जा पहुंचे। टीले का ऊपरी हिस्सा लम्बा चौड़ा और इतना प्रशस्त था कि उस इमारत के इलावे भी जो वहां बनी हुई थी चारों तरफ कुछ मैदान और उसके बाद पेड़ थे। इन्द्रदेव और दलीपशाह एक पेड़ की आड़ में खड़े हो कर चारों तरफ निगाह दौड़ाने लगे॥

चन्द्रभगवान को अपनी पूरी किरणों के साथ उदय हुए आधी घड़ी के लगभग हो गई थी और इस कारण उस सुफेद रङ्ग से रंगे हुए मकान का बाहरी हिस्सा बिल्कुल साफ साफ दिखाई पड़ रहा था। यह मकान दो मञ्जिला और बहुत बड़ा था और बाहर से देखने से मालूम होता था कि इसमें सैकड़ों आदमियों के रहने की जगह

होगी । इमारत में किसी तरह की खूबसूरती नहीं थी और सिवाय एक दर्वाजे के जो इन दोनों के ठीक सामने ही था और कोई खिड़की या दरवाजा भी नजर नहीं आता था ॥

दलीपशाह और इन्द्रदेव ने पेड़ों की आड़ ही आड़ में एक बार उस मकान का चक्कर लगाया पर न तो कहीं कोई आदमी ही नजर आया और न और किसी तरफ कोई खिड़की या दर्वाजा ही दिखाई पड़ा । चारों तरफ घूमने पर इन दोनों को विश्वास होगया कि इस मकान में अगर कुछ आदमी हैं तो अवश्य अन्दर ही की तरफ होंगे और बिना अन्दर गये किसी तरह उनका पता लगना कठिन है ॥

दलीपशाह ने इन्द्रदेव से पूछा, "कहिये तो कमन्द लगा कर मकान के अन्दर जाने की कोशिश की जाय क्योंकि एकही दर्वाजा इस मकान में दिखाई पड़ता है और सो भी बन्द है ।" मगर इन्द्रदेव ने सिर हिला कर कहा,"नहीं,इस मकान में कमन्द नहीं लग सकेगी, यह ऐसी कारीगरी के साथ बना है कि इसकी दीवारों पर कहीं कमन्द अँटकने की जगह नहीं है ॥

दलीप० । फिर क्या करना चाहिये, मकान के अन्दर जाना तो जरूरी है, अन्दर किसी आदमी की भी आहट नहीं मालूम होती ॥

इन्द्रदेव० । जरा सब्र करो, कुछ देर तक और भी ठहर कर देखो अगर कोई आदमी नजर नहीं आवेगा तो इसी दर्वाजे की राह अन्दर जाने की कोशिश करेंगे । मगर देखो तो यह कौन आदमी है,है ! यह तो प्रभाकरसिंह ही हैं !!

मकान के पिछली तरफ से आते हुए एक आदमी पर इन्द्रदेव की निगाह पड़ी जो इधर ही आ रहा था । दलीपशाह ने भी उसे देखा और कहा, "बेशक मालूम तो प्रभाकरसिंह ही होते हैं मगर ताज्जुब की बात है कि जब ये यहां इस तरह पर खुले और स्वतन्त्र मालूम हो रहे हैं तो आपके पास न आकर या आपको अपनी खबर न देकर यहां क्यों रुके हुए हैं । रङ्ग ढङ्ग से तो यह नहीं मालूम होता कि किसी ने उन्हें कैद कर रक्खा है ॥"

इन्द्र० । बेशक वे कैदी तो नहीं मालूम होते ॥

दलीप०। मेरी राय में अभी उनसे मुलाकात न कीजिये आखिर इनका पता तो लगही गया है, अब कहीं जा नहीं सकते और कोई

जल्दी भी नहीं है, पहिले देखिये वे करते क्या हैं ॥

इन्द्र० । यही मैं भी सोचता हूं ॥

दोनों आदमी चुपचाप प्रभाकरसिंह की तरफ देखने लगे । जिस जगह वे दोनों छिपे खड़े थे उसके आगे लगभग चालीस कदम तक की जमीन पेड़ पत्तों से बिलकुल साफ थी जिसके बाद वह मकान पड़ता था और इसी तरह का मैदान मकान के चारों तरफ था ॥

प्रभाकरसिंह धीरे धीरे उसी मैदान में इधर उधर टहलते रहे इसके बाद मकान के दर्वाजे के पास पहुंचे और उसमें लगे हुए एक छोटे कुण्डे को उन्होंने खटखटाया, दर्वाजा खुल गया और वे अन्दर चले गये ॥

लगभग पन्द्रह मिनट के बाद वे पुनः बाहर आये मगर इस बार अकेले नहीं थे बल्कि खूबसूरत और कीमती पोशाक तथा जेवर पहिरे हुए मगर अपने चेहरे को नकाब से छिपाये एक औरत भी उनके साथ थी ॥

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह उस औरत के साथ इधर उधर टहलते और चांदनी रात की बहार देखते रहे इसके बाद दोनों आदमी एक साफ पत्थर पर आकर बैठ गये जो इसी काम के लिये वहां रक्खा हुआ था । उन दोनों का मुंह उसी तरफ था जिधर इन्द्रदेव और दलीपशाह छिपे खड़े थे और वहां से उनका फासला भी दस बारह कदम से ज्यादा न था । प्रभाकरसिंह और उस औरत में कुछ बात-चीत होने लगी जिसे इन्द्रदेव और दलीपशाह बड़े गौर से सुनने लगे । बिलकुल स्पष्ट न सुनाई पड़ने पर भी बातें समझ में आ सकती थीं ॥

प्रभा०। तो अब मुझे कब तक इस तरह छिपे बैठा रहना पड़ेगा । अकेले रहते रहते तो तबीयत घबड़ा गई ॥

औरत०। बस अब ज्यादा देर नहीं है क्या कहूं काम तो आज ही हो जाता मगर वह कम्बख्त होशियार हो गया और निकल भागा, और कोई हर्ज नहीं । कब तक ? आखिर कभी न कभी तो मेरे पंजे में पड़ेहीगा ॥

प्रभाकर०। तो क्या बिना उसको गिरफ्तार किये काम नहीं चल सकता ?

औरत० नहीं सिवाय उसके और कौन बता सकता है कि

उसने उन सभों के साथ क्या किया ?

प्रभा०। तो तुम्हें अभी तक उनकी मौत का विश्वास नहीं होता ?

औरत०। नहीं कदापि नहीं, मुझे पूरा विश्वास है कि जमना, सरस्वती मरी नहीं बल्कि तिलिस्म में कैद हो गई हैं॥

प्रभा०। मगर उन्हें तिलिस्म में कैद ही किसने किया, गदाधरसिंह तो तिलिस्म का हाल कुछ भी नहीं जानता !!

औरत०। गदाधरसिंह चाहे तिलिस्म का हाल कुछ भी न जानता हो पर दारोगा तो जानता है॥

प्रभा०। बेशक दारोगा जरूर जानता है और वह ऐसा कर भी सकता है (कुछ रुक कर) अच्छा तुमने तो एक बार कहा था कि मैं तिलिस्म में जा सकती हूं। तो क्या तुम जाकर उनका पता नहीं लगा सकतीं ?

औरत०। सब जगह तो नहीं मगर कुछ जगहें मैं जरूर जानती हूं और वहां जा भी सकती हूं॥

प्रभाकर०। तो चल कर वहीं देखो शायद मिल जायं, न भी पता लगे तो कम से कम चित्त को कुछ सन्तोष तो हो जायगा॥

औरत०। (कुछ सोच कर) अच्छा आपकी खुशी, मैं चलने को तैयार हूं॥

प्रभाकर०। तो बस चलो मैं भी तैयार हूं॥

इन्द्रदेव बड़े गौर से इन दोनों की बातें सुन रहे थे, जब प्रभाकरसिंह की आखिरी बात सुन वह औरत उठ खड़ी हुई और प्रभाकरसिंह भी चलने को तैयार हो गये तो इन्द्रदेव ने बहुत धीरे से दलीपशाह से कहा, "इन लोगों की बातें सुनीं ! मालूम होता है अब ये तिलिस्म में जायंगे॥"

दलीप०। आश्चर्य की बात है, कुछ समझ में नहीं आता कि यह औरत कौन है और प्रभाकरसिंह से इसकी दोस्ती क्योंकर हुई। (देख कर) लीजिये वे दोनों तो उस तरफ जा रहे हैं। मकान के अन्दर न जाकर टीले के नीचे जाया चाहते हैं। इसलिये हमलोग भी उधर ही चलें॥

कुछ सोचते हुए इन्द्रदेव भी दलीपशाह के साथ उसी तरफ रवाना हुए जिधर वह औरत और प्रभाकरसिंह गये थे॥

मकान के पश्चिम तरफ टीले के कुछ नीचे उतर कर पगडण्डी

रास्ते के बगल ही में चूने या पत्थर की लगभग तीन हाथ ऊंची एक गोल पिण्डी सी बनी हुई थी। पिण्डी का घेरा छः हाथ से कम न था और सिंदूर से रंगी रहने के कारण वह एकदम लाल हो रही थी। इन्द्रदेव ने जो दलीपशाह के साथ उस औरत और प्रभाकरसिंह के पीछे पीछे जा रहे थे देखा कि वह औरत उस जगह पहुंच कर रुकी और तब प्रभाकरसिंह के साथ पिण्डी के पीछे की तरफ चली गई॥

थोड़ी ही देर बाद इन्द्रदेव और दलीपशाह भी उस जगह पहुंचे मगर वहां कोई न था, न तो वह औरत ही दिखाई पड़ी और न प्रभाकरसिंह ही पर निगाह पड़ी॥

नौवां बयान ।

जमना की जली कटी बातें सुन भूतनाथ अपना क्रोध बर्दाश्त न कर सका और उसने जमना को खिड़की के बाहर खींच लिया तथा खञ्जर निकाल उसकी छाती पर सवार हो गया॥*

डर के कारण जमना बेहोश हो गई और करीब ही था कि भूतनाथ अपनी सब प्रतिज्ञाओं को भूल उसका सिर काट डाले, कि यकायक कुछ सोच कर उसने अपना हाथ रोक लिया॥

भूतनाथ ने सोचा कि यदि वह इस समय जमना को मार डालेगा तो उसको बड़ी भारी मुसीबत में पड़ना पड़ेगा क्योंकि एक तो यह स्थान इन्द्रदेव का है जहां वह मनमानी कारवाई करके बच नहीं सकता दूसरे इस स्थान के बाहर निकल जाने का रास्ता उसे मालूम नहीं हुआ था क्योंकि वह मेघराज के साथ आया था और वे मामूली ढङ्ग पर गुप्त दर्वाजों को खोलते और बन्द करते हुए चले आये थे जिनका भेद डर के मारे भूतनाथ उनसे दर्याफ्त कर नहीं सकता था। इसके सिवाय भूतनाथ ने यह भी सोचा कि यदि वह इस समय जमना को मार भी डाले तो उसका वह काम जिसके लिये वह यहां आया था अर्थात् मेघराज का भेद जानना और इस बात का पता लगाना कि वह कौन है रह ही जायगा और उसे एक दूसरी ही मुसीबत में पड़

* भूतनाथ द्वितीय खण्ड का अन्त ॥

जाना पड़ेगा। इसके सिवाय जमना को मार डालने पर भी कला अर्थात् सरस्वती बच ही जायगी और इन्द्रदेव, प्रभाकरसिंह आदि उसकी मदद दिल तोड़ कर करेंगे जिससे जान बचना मुश्किल हो जायगा॥

इन्हीं बातों को भूतनाथ तेजी के साथ सोच गया क्योंकि उसे इस बात का भी डर लगा हुआ था कि जमना की चिल्लाहट से होशियार हो कर कोई लौंडी इधर आ न जाय अस्तु सब सोच विचार कर उसने इस समय क्रोध को पी जाना ही मुनासिब समझा और जमना की छाती पर से अलग हो गया। उसके पास इस समय भी उसका बटुआ मौजूद था जिसे उसने होशियारी के साथ अपने कपड़ों में छिपाया हुआ था। उसने उसी बटुए में से बेहोशी की दवा निकाली और जमना को सुंघा कर उसे और भी अच्छी तरह बेहोश कर दिया। इसके बाद उसने उसे उठा कर पास ही की एक झाड़ी में छिपा दिया और तब सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये॥

कुछ देर बाद भूतनाथ वहां से उठा और काले कपड़े से अपने को अच्छी तरह छिपाये हुए वह उस मकान के पीछे की तरफ चला। इस तरफ पहुंच कर भूतनाथ ने देखा कि मकान का सदर दर्वाजा जो पूरब तरफ पड़ता था खुला हुआ है और उसमें से कोई औरत बाहर आ रही है। चन्द्रमा की रोशनी में उसके आते ही भूतनाथ पहिचान गया कि यह कला है। भूतनाथ ने इसे भी अपने कब्जे में करने का इरादा किया॥

दर्वाजे के बाहर निकल कला इधर उधर देखती हुई धीरे धीरे उसी तरफ रवाना हुई जिधर से भूतनाथ अभी आया था अथवा जहाँ भूतनाथ ने जमना पर हमला किया था। भूतनाथ भी अपने बटुए में से कोई चीज तलाश करता हुआ उसके पीछे पीछे उधर ही रवाना हुआ॥

जब कला उस खिड़की के पास पहुंची जिसके अन्दर से जमना ने भूतनाथ से बातचीत की थी तो खिड़की खुली हुई पा यकायक रुक गई और बोल उठी, "हैं! यह क्या मामला है?"

इसी समय कला की निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो इस समय एक नकाब से अपना मुंह छिपाये उसी झाड़ी के बाहर निकल रहा था

जिसमें उसने बेहोश जमना को डाल दिया था। उसे देख कला आश्चर्य के साथ कुछ बोला या किसी को पुकारा ही चाहती थी कि भूतनाथ ने उसे चुप रहने का इशारा किया और उसे दिखा कर एक लिफाफा जमीन पर रखने और उस झाड़ी की तरफ इशारा करने बाद जिसमें से निकला था वह एक दूसरे पेड़ की आड़ में जा खड़ा हुआ॥

न जाने क्या समझ कला चुप रही और पास जा कर उसने वह लिफाफा उठा लिया जो भूतनाथ ने जमीन पर रख दिया था। लिफाफे के अन्दर एक चीठी थी जिसमें कुछ लिखा हुआ था॥

यद्यपि चन्द्रमा की पूरी रोशनी उस जगह पड़ रही थी जहां कला खड़ी थी पर उस चीठी का पढ़ना कठिन था, कला बहुत देर तक उस खत के पढ़ने की चेष्टा करती रही और जब कृतकार्य्य न हो सकी तो उसने उस तरफ देखा जिधर पेड़ की आड़ में भूतनाथ अभी तक खड़ा था॥

अब भूतनाथ आड़ के बाहर निकल आया और नकाब हटा कर एक बार अपनी सूरत कला को दिखाने बाद पुनः नकाब डाल ली। कला ने प्रभाकरसिंह की सूरत देख चौंक कर कहा, "क्या आप बाहर गये थे ?"

कला के इस सवाल का मतलब भूतनाथ समझ न सका और कुछ सोचता हुआ क्षण भर ही रुका था कि कला झपट कर उसके पास आई और एक खञ्जर जो उसकी कमर में छिपा हुआ था निकाल कर बोली—"सच बता तू कौन है ? और प्रभाकरसिंह जी का रूप तैने क्यों लिया है !" मगर इससे ज्यादा वह कुछ भी कर न सकी क्योंकि जो चीठी भूतनाथ ने उसके सामने रक्खी थी या जो अभी तक उसके हाथ में मौजूद थी उसमें से एक प्रकार की विचित्र सुगंध निकल रही थी जिसमें तेज बेहोशी का असर था। बेहोशी का असर इस समय तक कला पर पूरे तौर से हो गया और वह बेहोश हो कर गिरने लगी मगर भूतनाथ ने उसे सम्हाला और चीठी अपने कब्जे में कर कला को उठाये हुए उसी झाड़ी में चला गया जिसमें बिमला को रक्खा था। बेहोश कला भी बिमला के बगल में रख दी गई और भूतनाथ पुनः झाड़ी के बाहर निकल कर उस मकान के सदर दर्वाजे की तरफ रवाना हुआ॥

उसकी जान कभी न बचेगी क्योंकि कोठड़ी की गरमी पल पल में बढ़ती ही जाती थी ॥

बड़ी बेचैनी और घबराहट की हालत में भूतनाथ इधर से उधर चल बल्कि दौड़ रहा था कि यकायक उस खुले हुए दर्वाजे में उसे किसी की सूरत दिखाई पड़ी, वह रुक कर उधर देखने लगा और कुछ ही देर में उसकी निगाह मेघराज पर पड़ी जो मुस्कुराते हुए आकर दरवाजे के पास खड़े हो गये थे ॥

मेघराज कुछ सायत तक भूतनाथ की तरफ देख कर बोले— "कहिये प्रभाकरसिंह जी ! आज आप इस कोठड़ी में क्योंकर फँस गये और अब तक इस गर्म जगह में खड़े क्या कर रहे हैं ! इधर मेरे पास क्यों नहीं आते ?"

भूतनाथ यह सुन बिना कुछ जवाब दिये मेघराज की तरफ बढ़ा मगर दो ही चार कदम गया होगा कि दर्वाजा पहिले की तरह बन्द हो गया, लाचार वह पुनः पीछे हटा, दर्वाजा खुल गया और मेघराज फिर दिखाई पड़ने लगे जो भूतनाथ की तरफ देख खिलखिला कर हँस पड़े और बोले, "वाह गदाधरसिंह ! तुम तो बड़े बहादुर और हिम्मतवर कहलाते हो, फिर भी एक निहत्थे आदमी का मुकाबला कर इस कोठड़ी के बाहर नहीं जा सकते !!"

भूतनाथ०। बहादुरी और हिम्मत का तो आप तब इम्तिहान ले सकते थे जब खुले मैदान हम और आप हो, इस तरह एक तिलिस्मी कोठड़ी में किसी को बन्द कर और उसे कष्ट में डाल उसे ताना मारना बहादुरी काम नहीं है !!

मेघ०। मैंने तुम्हें यहां बन्द नहीं किया, तुम स्वयम् यहां आये और चोरों की तरह कोने कोने की तलाशी लेते हुए यहां आ कर फँस गये इसमें किसी का क्या दोष ?

भूतनाथ०। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यहां किसी बुरी नीयत से मैं नहीं आया था। आप किसी तर्कीब से इस कम्बख्त गर्मी को दूर कीजिये जो इस कोठड़ी में पैदा हो रही है तो मैं आपसे बात करने लायक बनूं ॥

मेघ०। हां हां तुम्हें शीघ्र ही मैं इस जगह से निकाल दूंगा मगर [illegible]

भूत०। आप पूछें, मैं वादा करता हूं कि ठीक ठीक उत्तर दूंगा ॥

मेघराज०। पहिली बात तो यह कि तुम यहां क्यों आये ? हमारे तुम्हारे अब तो कोई दुश्मनी की जगह बाकी नहीं रह गई थी बल्कि आखिरी दफे तुम्हारी ही मदद से प्रभाकरसिंह जी ने अपने माता पिता को और भैयाराजा ने अपनी स्त्री को पाया था और उस समय तुम दोस्ती जाहिर करते हुए हमारे साथियों से बिदा हुए थे फिर क्या सबब है कि इतनी जल्दी तुम अपनी प्रतिज्ञा भूल गए और हम लोगों का पुनः पीछा करने लगे ? जहां तक मेरा खयाल है तुम नागर के मकान के पास से मेरा पीछा शुरू करके इस समय तक प्रभाकरसिंह की सूरत में मौजूद हो और मुझे इस बात का भी सन्देह होता है कि प्रभाकरसिंह तुम्हारे कब्जे में आ गए हैं, खैर यह बात तो पीछे होगी पहिले तुम यह बताओ कि यहां किस नीयत से आये ?

भूत० । मैं आप से सच सच कहता हूं कि यहां मेरा आना किसी बुरी नीयत से नहीं हुआ, नागर के मकान से आपको निकलता देख मेरी इच्छा हुई कि आपसे मिल कर किसी ढङ्ग से आपका परिचय लूं क्योंकि इतना साथ होने पर भी मैं आपको बिल्कुल पहिचान नहीं सका हूं, बस उसी इच्छा से मैं आपके साथ लगा और लाचारी से अब तक यहां हूं। आप विश्वास रक्खें कि केवल आपका परिचय जानना ही मेरा अभीष्ट है और था और किसी तरह का बुरा खयाल मेरे दिल में जरा भी नहीं है ॥

मेघ० । और प्रभाकरसिंह अब कहां हैं ?

भूत०। उन्हें मेरे शागिर्दों ने गिरफ्तार कर लिया था मैं नहीं कह सकता कि अब वे कहां हैं पर इस बात का वादा करता हूं कि यहां से जाते ही उन्हें छोड़ दूंगा और यदि किसी दूसरे के कब्जे में पड़ गये होंगे तो उन्हें छुड़ा दूंगा ॥

मेघ० । खैर अगर तुम उन्हें छोड़ दो तो अच्छा ही है नहीं हम लोग स्वयम् उन्हें छुड़ा लेंगे ॥

भूत० । नहीं नहीं आपको कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी मगर अब आप इस कोठड़ी से मुझे छुटकारा दें क्योंकि इस गर्म जगह में मेरा खड़ा रहना अब मुश्किल हो रहा है ॥

मेघ० । एक बात का जवाब पहिले और दे दो, इसी मकान में

जमना और सरस्वती भी रहती थीं जो मेरी रक्षा में थीं, वे दोनों कहीं दिखाई नहीं पड़तीं तुम जानते हो कहां गईं ?

भूत०। हां मैंने ही उन्हें बेहोश करके (हाथ से बता कर) उस खिड़की के बाहर एक झाड़ी में डाल दिया था वे वहां ही हैं ॥

मेघ०। उन्हें बेहोश करने की क्या जरूरत पड़ी ? क्या मेरा परिचय जानने के लिये उन दोनों को गिरफ्तार करना पड़ा ?

भूत०। जी नहीं, बात यह हुई कि इसी खिड़की में से मेरी और जमना की कुछ बातें हुईं और उन्होंने मुझे ऐसी जली कटी सुनाई कि क्रोध में आकर मैंने उन्हें खिड़की के बाहर खींच लिया और तब बेहोश कर के झाड़ी में डाल दिया। मगर अब तो मैं कुछ भी बात नहीं कर सकता गर्मी के मारे मेरी बुरी हालत होती जा रही है ॥

मेघ०। भूतनाथ ! जिस गर्मी से तुम इतना घबरा रहे हो उससे कहीं ज्यादा गर्मी पहुंचाने वाली आंच जमना और सरस्वती के कलेजे में दिन रात सुलगा करती है जिनके पति दयाराम को तुमने अपने हाथ से कत्ल किया है, मैं जानता हूं कि तुम्हारा कथन है, कि तुमने दयाराम को उस समय नहीं पहिचाना और मुमकिन है कि तुम्हारा कहना ठीक भी हो पर क्या उस दयाराम की स्त्रियों पर वार करना तुम्हें मुनासिब था जो जान से ज्यादा तुम्हें मानता और भाई से ज्यादा तुम्हारी इज्जत करता था ! अगर एक बार मान भी लिया जाय कि जमना और सरस्वती तुम्हें दुःख देने पर मुस्तैद होगई थीं पर इसका जवाब यह नहीं था कि तुम उनका अनिष्ट करने की कोशिश करो, उन्हें कष्ट पहुंचाने की बनिस्बत उनके हाथों से मारा जाना तुम्हारे हक में ज्यादा बेहतर होता, खैर यह पुराने पचड़े इस समय उठाना मैं पसन्द नहीं करता मैं इस कोठड़ी की गर्मी दूर करता हूं पर अभी मुझे दो चार सवाल और भी करने हैं उनका जवाब देकर तब तुम इस कोठड़ी के बाहर जाना ॥

इतना कह दयाराम वहां से हट गये, थोड़ी ही देर बाद एक खटके की आवाज आई और उसके साथ ही एक प्रकार की आवाज जो उस जगह गूंज रही थी बन्द होगई मानो किसी कल पुर्जे का घूमना बन्द कर दिया गया हो, साथही वह खिड़की भी खुल गई जो बाहर की तरफ पड़ती थी और ठण्ढी हवा के झोंके ने आकर भूतनाथ को

चैतन्य किया । धीरे धीरे कोठड़ी की गर्मी भी कम होने लगी और भूतनाथ कुछ स्वस्थता के साथ मेघराज के लौटने का इन्तजार करने लगा ॥

घड़ी भर के ऊपर बीत गया मगर दयाराम न लौटे भूतनाथ खड़ा खड़ा घबड़ा गया और आखिर अपने जगह से चल कर उस दर्वाजे के पास पहुंचा जिसके अन्दर से दयाराम ने उससे बातें की थी इस बार भूतनाथ के पास जाने पर भी वह दर्वाजा बन्द न हुआ और कुछ सोचते हुए भूतनाथ ने उस कोठड़ी के अन्दर पैर रक्खा ॥

यह कोठड़ी पहिली कोठड़ी की बनिस्बत बहुत छोटी थी और जमीन पर फर्श इत्यादि भी न था पर चारों कोनों पर चार सिंहासन चांदी के बने हुए रक्खे थे जो इतने बड़े थे कि हर एक पर चार चार आदमी बड़े आराम के साथ बैठ सकते थे । इसके सिवाय इस कोठड़ी की दिवारों पर तरह तरह की तस्वीरें भी मौके २ पर टँगी हुई थीं जो बहुत सफाई और कारीगरी के साथ बनी हुई थीं । इस कोठड़ी की छत में भी वैसा ही शीशे का गोला था जैसा पहिली कोठड़ी में था और उसमें से बेहिसाब रोशनी निकल रही थी । भूतनाथ ने देखा कि उस कोठड़ी में सिवाय एक उस दर्वाजे के जिसकी राह वह यहां आया था और कोई दर्वाजा न था और उसे इस बात का ताज्जुब हो रहा था कि इस कोठड़ी में से मेघराज कहां चले गये ॥

कुछ देर तक सोच विचार करने बाद भूतनाथ ने दयाराम की और कुछ देर तक राह देखने का निश्चय किया और समय काटने के लिहाज से वह उन दीवार पर टँगी हुई तस्वीरों को गौर से देखने लगा॥

सब तरफ की तस्वीरें देख भूतनाथ पश्चिम तरफ की दीवार के पास पहुंचा जहां दीवार के बीचोबीच में एक बड़ी तस्वीर लगी हुई थी जिस पर लाल रङ्ग का पर्दा पड़ा हुआ था । पर्दा पड़ी हुई तस्वीर को देखना मुनासिब न समझ पहिले तो भूतनाथ का इरादा हुआ कि इस तस्वीर पर का पर्दा न हटावे पर उसके चञ्चल स्वभाव ने न माना और उसने पास जा कर उस तस्वीर का पर्दा हटा दिया ॥

सुन्दर चौखटे में जड़ी हुई उस तस्वीर को भूतनाथ ने गौर से देखा और इसके साथ ही उसके रोंगटे खड़े होगये क्योंकि यह तस्वीर जिस स्थान और पात्र की थी उसे भूतनाथ अच्छी तरह जानता था

बल्कि यों कहना चाहिये कि भूतनाथ की जीवनी की एक घटना के वह तस्वीर प्रगट कर रही थी ॥

यह तस्वीर भूतनाथ द्वारा दयाराम के मारे जाने का दृश्य दिखा रही थी, एक मकान की ऊपरी छत पर कई आदमी दिखाई पड़ रहे थे जिनमें से दलीपशाह, शम्भू, भूतनाथ, राजसिंह और दयाराम साफ पहिचाने जाते थे। राजसिंह भूतनाथ के हाथ की चोट खा एक तरफ मुर्दा पड़े हुए थे, दलीपशाह और उसके साथी दूसरी तरफ जख्मी हो कर गिरे हुए थे और खाली हाथ दयाराम भूतनाथ के आगे खड़े थे, भूतनाथ के हाथ का खञ्जर दयाराम के कलेजे के पार हुआ ही चाहता था ॥ *

भूतनाथ अपने को सम्हाल न सका। तस्वीर का पर्दा उसके हाथ से छूट गया और वह पीछे की तरफ हटता हुआ जा कर एक कोने वाले सिंहासन पर बैठ अथवा यों कहना चाहिये कि गिर पड़ा। भूतनाथ के बैठते ही वह सिंहासन हिला और तब इस तेजी के साथ जमीन के अन्दर घुस गया कि भूतनाथ को उस पर से उतरने की जरा भी मुहलत न मिली साथ ही वह उसके असर से बेहोश भी हो गया ॥

जब भूतनाथ होश में आया उसने अपने को एक खोह में पाया जो सुरङ्ग की तरह मालूम हो रही थी। सामने की तरफ रोशनी दिखाई पड़ती थी और पेड़ों पर धूप पड़ी हुई बता रही थी कि सूर्य भगवान को उदय हुए कई घड़ी बीत चुका है, धीरे धीरे चलता हुआ भूतनाथ गुफा के बाहर निकला और उस समय उसे मालूम हुआ कि यह वही गुफा है जिसकी राह मेघराज के साथ वह इसके भीतर में गया था अर्थात् यही गुफा उस विचित्र स्थान में आने की राह थी और इसी की राह भूतनाथ अन्दर गया था। अभी तक भूतनाथ के होशहवास दुरुस्त नहीं हुए थे अस्तु वह बाहर आ कर एक घने पेड़ के नीचे बैठ गया जिसके पास ही से एक छोटा पहाड़ी चश्मा बह रहा था। थोड़ी देर बाद उसने उठ कर चश्मे के पानी से मुंह हाथ धोया और तब जमानिया की तरफ रवाना हुआ ॥

---

* चन्द्रकान्ता सन्तति बाहरवां हिस्सा तीसरा बयान ॥

दसवां बयान ।

पाठक सोचते होंगे कि जब भूतनाथ इस तरह पर घाटी के बाहर निकल गया और जमना सरस्वती पर सिवाय बेहोश कर देने के और किसी तरह का उसने वार न किया तो क्योंकर उनका मारा जाना मशहूर हुआ अथवा भूतनाथ ही पर उनके मारने का इलजाम कैसे लगा अस्तु यह हाल सुनने के पहिले पाठकों को एक बात का जान लेना जरूरी है ॥

जब इन्द्रदेव ने जैपाल बन कर जमना सरस्वती को छुड़ाया * और दयाराम वगैरह को इस घाटी में जगह दी उस समय उन्होंने इस बात को सोचा कि चाहे इस समय भूतनाथ हमलोगों का साथी बना हुआ है पर मुमकिन है कि कुछ दिन बाद वह फिर रङ्ग बदल कर हम लोगों का दुश्मन बन जाय और दयाराम या जमना सरस्वती से बदला लेने का इरादा करे। वे इस बात को समझते थे कि दयाराम और प्रभाकरसिंह का भूतनाथ जल्दी कुछ बिगाड़ न सकेगा क्योंकि ये लोग ऐयारी फन में बहुत होशियार हो गये हैं पर ज्यादा डर इन्दुमति और जमना, सरस्वती के विषय में था। इन्द्रदेव का विश्वास था कि भूतनाथ इस घाटी में जिसमें उन्होंने इन सभों को रक्खा था कदापि पहुंच न सकेगा तथापि ज्यादा हिफाजत के खयाल से उन्होंने जमना सरस्वती और इन्दु की सूरत ऐसे ढङ्ग पर बदल दी कि सिवाय एक खास तर्कीब के असली सूरत निकल ही न सके और मजेदारी तो यह कि उन तीनों की सुन्दरता और सुघरता में भी किसी तरह का फर्क न पड़े इसके सिवाय इन तीनों का नाम भी बदल दिया गया, जमना सरस्वती का नाम, बीरो और भानो रक्खा गया तथा इन्दुमति राधा के नाम से पुकारी जाने लगी और इन्द्रदेव ने इस बात की सख्त ताकीद कर दी कि सिवाय इन नामों के असली नामों से वे तीनों कभी बुलाई न जायँ ॥

इन्द्रदेव ने इतने ही पर बस न करके तीन लौंडियों को जो जमना सरस्वती के पास बहुत जमाने से थीं और जिन्हें इनके सब गुप्त भेदों

* द्वितीय खण्ड पैंतालीसवां बयान ॥

की खबर थी जमना सरस्वती और इन्दुमति की सूरत बना कर मुकर्रर कर दिया और उनकी इच्छानुसार यह बात भी इतनी गुप्त रक्खी गई कि सिर्फ कुछ खास २ आदमियों के आलावे गंवारों और नौकरों को इस बात का कुछ भी पता न लगा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में कहां तक उलट फेर हो गया है, अस्तु अब हमारे पाठक समझ गये होंगे कि भूतनाथ ने जिस जमना सरस्वती के मारा था अथवा जिन्हें बेहोश करके झाड़ी में डाल दिया था वे असली न थीं बल्कि नकली थीं ॥

अब हम लिखते हैं कि जमना सरस्वती का मरना क्यों मशहूर हुआ और दयाराम कहां गायब हो गये ॥

जिस समय दयाराम नकली प्रभाकरसिंह (भूतनाथ) के साथ जमानिया की गुप्त कुमेटी से निकल अपने स्थान की तरफ लौटे तो उनका विश्वास था कि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा है क्योंकि सभापति ने जिन आदमियों को उनका पीछा करने के लिये भेजा था उन्हें वे धोखा दे कर पीछे छोड़ आये थे पर वास्तव में उनका पिण्ड छूटा न था और दारोगा के दोस्त स्वयम् जयपालसिंह उनका पीछा करते हुए बराबर आ रहे थे ॥

उस खोह तक तो जयपाल बराबर पीछे पीछे चला आया जो घाटी में जाने का बाहरी दरवाजा था पर इसके आगे वह जा न सका क्योंकि खोह के अन्दर घुसते ही दस बीस कदम जाने बाद एक गुप्त दरवाजा पड़ता था जिसका खोलना जैपाल की सामर्थ्य के बाहर था अस्तु वह गुफा के मुहाने पर रुक कर कुछ देर तक तो इस आसरे में रहा कि शायद उन दोनों में से कोई लौटे पर जब कोई न लौटा तो वह समझ गया कि यहीं इन लोगों का घर है अस्तु वह लौटा और दारोगा से आकर उसने सब हाल तथा उस खोह का पता निशान बताया जिसमें दयाराम और प्रभाकरसिंह चले गये थे ॥

खुद दारोगा को उस घाटी का हाल बखूबी मालूम था क्योंकि उस स्थान को जमानिया तिलिस्म से बहुत कुछ सम्बन्ध था। इन्द्रदेव ने भूतनाथ का तो बन्दोबस्त कर लिया मगर दारोगा की तरफ से बेफिक्र रहे और इसी भूल के कारण उन्हें बहुत कुछ कष्ट उठाना पड़ा जैसा कि आगे चलकर मालूम होगा ॥

जैपाल की ज़ुबानी सब हाल सुनते ही दारोगा ने दो तेज़ घोड़े तैयार कराने का हुक्म दिया और जैपाल को साथ ले उसी समय मेघराज के स्थान की तरफ़ रवाना हुआ। आधी रात जाने के पहिले ही ये दोनों उस गुफा के मुहाने के पास आ पहुंचे जो घाटी में जाने का रास्ता था। दोनों घोड़े मुनासिब जगह पर लम्बी बागडोर के सहारे बांध दिये गये और चेहरों पर नकाब डाले आगे होते हुए, दारोगा और जैपाल उस गुफा के अन्दर घुसे॥

गुफा के अन्दर घोर अन्धकार था मगर अन्दाज़ से टटोलता हुआ दारोगा लगभग बीस कदम जा कर रुका जहां पर घाटी का पहिला दर्वाजा था। अन्धेरे में इस बात का पता जैपाल को न लगा कि दर्वाजा किस तरह खोला गया मगर कुछ ही देर बाद एक खटके की आवाज़ आई और वह दरवाज़ा जो लोहे का और एक ही पल्ले का था चूहेदानी के पल्ले की तरह सरसराता हुआ गुफा के अन्दर की छत में गायब हो गया। जैपाल का हाथ पकड़े हुए दारोगा आगे बढ़ गया और फिर रुक कर कुछ ऐसी तरकीब की जिससे वह दरवाज़ा पुनः पूर्ववत् बन्द हो गया॥

अब दारोगा ने अपने पास से रोशनी का सामान निकाला और एक छोटी लालटेन बाली जो अपने साथ लाया था। उसकी रोशनी में जैपाल ने देखा कि अब वह एक ऐसी चौकोर जगह में है जिसकी लम्बाई चौड़ाई दस हाथ से ज्यादा न होगी और जो ऊंचाई में लगभग चार हाथ के होगी। इस स्थान में चारों तरफ पत्थर ही पत्थर दिखाई पड़ते थे जिससे गुमान होता था कि यह स्थान पहाड़ काट कर बनाया गया है। चारों तरफ की दीवार में चार छोटे छोटे दर्वाजे दिखाई पड़ रहे थे जिनकी तरफ देख कर जैपाल ने दारोगा से पूछा, "ये चारों रास्ते क्या एक ही जगह पहुंचते हैं?" जिसके जवाब में दारोगा ने कहा, "तुम्हारे पीछे जो दर्वाजा है वह तो वही है जिसकी राह तुम आये हो और यह सामने तथा बाईं तरफ वाला दरवाज़ा उसी घाटी में जाने के रास्ते हैं जहां हम इस वक्त जाया चाहते हैं तथा यह दाहिनी तरफ वाला दरवाज़ा किसी और जगह का रास्ता है जिसे मैं नहीं जानता॥"

जैपाल०। तो अब आप किस तरफ से जायंगे?

दारोगा० । अब मैं इस सामने वाले रास्ते से चलूंगा । सीधा और बेहतर तो यह बाईं तरफ वाला रास्ता है पर इधर से जाने में मुम-किन है कि इस घाटी में सैर करने वाले किसी आदमी से मुलाकात हो जाय । सामने वाले रास्ते में यह डर कम होगा क्योंकि यह बहुत खतरनाक होने के कारण घाटी वाले इस रास्ते से कदापि आते जाते न होंगे ॥

इतना कह दारोगा ने लालटेन बुझा दी और दरवाजा खोलने को कुछ तर्कीब करने लगा । लालटेन बुझा देना जयपाल को कुछ बुरा मालूम हुआ क्योंकि वह समझ गया कि दारोगा ने अन्धकार इस लिये कर दिया है जिसमें वह दरवाजा खोलने का भेद जान न सके पर वह चुप रह गया । इसी समय एक आवाज आने से मालूम हुआ कि दरवाजा खुल गया अस्तु दारोगा जयपाल के साथ अन्दर चला गया और उसके जाते ही दरवाजा आप से आप बन्द हो गया ॥

अब दारोगा ने पुनः अपनी लालटेन बाली । रोशनी में जैपाल ने देखा कि अब वह एक ऐसी सुरङ्ग में है जिसकी चौड़ाई दो हाथ और ऊँचाई चार हाथ से कुछ ज्यादे होगी, लम्बाई का पता कुछ नहीं लगता था मगर सामने से कुछ ऐसी आवाज आ रही थी जिस से मालूम होता था कि मानो पास ही में कहीं तेजी के साथ पानी बह रहा हो ॥

दारोगा वहां जरा भी न ठहरा और जैपाल को पीछे पीछे आने का इशारा कर वह आगे की तरफ बढ़ा । लगभग सौ कदम के जाने बाद सुरङ्ग दाहिनी तरफ घूमी और साथ ही आगे की तरफ ढालुई भी होने लगी मानो उतराई पर जा रहे हों । ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते थे पानी की आवाज स्पष्ट होती जाती थी और आखिर कार घड़ी भर से ऊपर जाने के बाद जैपाल ने देखा कि सामने ही पानी का एक नाला बह रहा है जो चौड़ाई में बीस हाथ से कदापि कम न होगा । पानी बाईं तरफ से आता और तेजी के साथ बहता हुआ दाहिनी तरफ जा रहा था पर यह पानी किस राह से आता या जाता था इसका पता दारोगा के हाथ के लालटेन की रोशनी कम होने के कारण ठीक ठीक नहीं लगता था । सुरंग की छत भी इस

जगह मामूली से ज्यादा ऊंची थी और चौड़ाई भी आठ दस हाथ से कम न होगी ॥

दारोगा जैपाल को साथ आने का इशारा कर सामने की तरफ बढ़ा और पानी में से होकर चलने लगा। पानी की गहराई ज्यादा नहीं थी मगर बहाव बहुत ही तेज था और तह में काई लगी रहने के कारण चलना बड़ा ही मुश्किल हो रहा था ॥

किसी तरह ये दोनों नाले के पार हुए और अब सुरङ्ग भी ऊंची होने लगी साथ ही सुरङ्ग की चौड़ाई और ऊंचाई भी कम होकर पहिले की तरह हो गई। दारोगा ने जैपाल की तरफ देख कर कहा, "प्रायः बरसात के समय इस नाले का पानी बढ़ आया करता है उस समय इस राह से आना जाना बहुत ही खतरनाक हो जाता है और जिनको मजबूरन आना ही पड़ता है वे इस जञ्जीर को पकड़ कर नाला पार करते हैं ॥"

एक मोटा लोहे का सिक्कड़ दीवार के साथ साथ लगा हुआ उस पार तक चला गया था जिसकी तरफ जैपाल ने ध्यान नहीं दिया था। दारोगा की बात सुन उसने कहा, "पानी ज्यादा बढ़ने पर तो यह सिक्कड़ पानी में डूब जाता होगा ॥"

दारोगा०। नहीं इतना ज्यादा पानी कभी नहीं बढ़ता। इस सुरङ्ग के बनाने वालों ने ज्यादा पानी की निकास के लिये कोई खास रास्ता बनाया हुआ है। अच्छा देखो अब एक और दर्वाजा आ पहुंचा इसे खोलना होगा ॥

इस जगह पहुंच कर सुरङ्ग यकायक बन्द हो गई थी और सरसरी निगाह से देखने से मालूम होता था कि सुरङ्ग बनाने वालों ने यहीं तक बना कर सुरङ्ग का काम खतम कर दिया है पर वास्तव में ऐसा न था, सामने की दीवार में लोहे का एक मजबूत दर्वाजा था जिसका रङ्ग बिल्कुल पत्थर के रङ्ग में मिल गया था ॥

दारोगा ने हाथ की लालटेन जमीन पर रख दी और दोनों हाथों से एक तरफ की दीवार में एक खास जगह पर जोर से दबाया। एक बालिश्त के करीब का एक टुकड़ा पीछे की तरफ हट गया और उसके अन्दर हाथ डालकर दारोगा ने कुछ खटका दबाने या घुमाने बाद हाथ निकाल लिया। इसके बाद दर्वाजे को जोर से धक्का दिया

और वह खुल गया। जैपाल को लिये हुए दारोगा अन्दर चला गया और अन्दर पहुँच कर हाथ से दबा कर वह दर्वाजा बन्द कर दिया। एक खटके की आवाज आई और दर्वाजा मजबूती के साथ बन्द हो गया साथ ही बाहर की वह जगह भी जिसमें हाथ डाल कर दर्वाजा खोला गया था पहिले की तरह दुरुस्त हो गई॥

अब जिस सुरङ्ग में जैपाल ने अपने को पाया वह पहिले की बनिस्बत ज्यादा चौड़ी और ऊंची थी और उसकी जमीन पर काले और सफेद सङ्गमर्मर का फर्श लगा हुआ था। दीवारें भी सफेद सङ्गमर्मर की बनी हुई थीं जिनके बीच में जगह जगह पर हाथ भर के चौखूंटे तांबे के टुकड़े लगे हुए थे जो इस प्रकार चमकते थे मानो कोई अभी उन्हें साफ करके गया हो, गुफा की छत में जगह जगह पर लोहे के भारी गोले लटक रहे थे जिनके कद से मालूम होता था कि हर एक दस दस सेर से कदापि कम न होगा॥

जैपाल इन सब चीजों की तरफ आश्चर्य से देख रहा था कि दारोगा ने कहा, "देखो अब इस जगह होशियारी के साथ चलना पड़ेगा। ये जो काले सङ्गमर्मर के टुकड़े लगे हुए हैं इन पर चलने वाले का पैर कदापि न पड़ना चाहिये क्योंकि उस पर पैर पड़ते ही छत में लटकता हुआ लोहे का गोला नीचे गिर कर उसका काम तमाम कर देगा, देखो हर एक काले टुकड़े के ऊपर एक एक गोला लटक रहा है और साथ ही इन दीवार से भी बचे रहना चाहिये, ये जो तांबे के टुकड़े लगे हुए हैं इनके साथ छूना जान से हाथ धोना है। अच्छा अब चलना चाहिये॥"

इतना कह दारोगा ने आगे का रास्ता लिया और सफेद टुकड़ों पर पैर रखता हुआ वह होशियारी के साथ चलने लगा। जैपाल भी खूब गौर के साथ जमीन की तरफ देखता हुआ उसके पीछे पीछे जाने लगा॥

करीब आधे घण्टे तक इन दोनों को इस सुरङ्ग में चलना पड़ा और इसके बाद पुनः एक दर्वाजा मिला जिसे दारोगा ने किसी तर्कीब से खोला और दर्वाजे के दूसरी तरफ चलाही था कि उसका ध्यान एक विचित्र तरह की आवाज की तरफ गया जो दर्वाजे के दूसरी तरफ से आ रही थी। वह ठिठक कर खड़ा हो गया और गौर से

सुनने लगा, यह आवाज़ किसी तरह के कल पुर्जों की थी और अब दारोगा को विश्वास होगया कि यह किसी आदमी की आवाज़ नहीं है तो वह दर्वाजे के दूसरी तरफ गया और जैपाल भी साथ हुआ।

अब ये लोग एक कमरे में थे जो तरह तरह के विचित्र सामानों और कल पुर्जों से भरा हुआ था जिनका हाल लिखना इस जगह व्यर्थ है। दारोगा को कई पुर्जे चलते हुए भी दिखाई दिये और इसके साथ ही उस गर्मी की तरफ भी उसका ध्यान गया जो यहां बाहर वाले सुरङ्ग की बनिस्बत बहुत ज्यादे थी यहां तक कि कुछ ही सायत बाद दारोगा को पसीना आने लगा और मामूली कपड़े भी जो वह पहिने हुए था गर्म मालूम होने लगे। यह हाल देख दारोगा ने धीरे से जैपाल से कहा, "अब हमलोग अपने ठिकाने आ गये हैं, इस जगह के ऊपर ही एक मकान है जिसमें मैं समझता हूं कि वे लोग रहते हैं जिनका पीछा करते हुए हम यहां आये हैं, मगर यह गर्मी जो यहां पैदा हो रही है स्वाभाविक नहीं है बल्कि किसी तर्कीब से पैदा की गई है, मालूम होता है कि इस मकान वाले इस समय बेफिक्र या सोये हुए नहीं हैं, अब हमें होशियारी से काम लेना चाहिये, अगर कोई देख लेगा अथवा हमारा यहां आना जान जायगा तो फिर लौटना मुश्किल हो जायगा॥"

इतना कह दारोगा ने लालटेन बुझा दी और इस जगह घोर अन्धकार छा गया। जैपाल का हाथ पकड़े हुए दारोगा उस कमरे के एक कोने की तरफ गया जहां एक दर्वाजा था। किसी तर्कीब से वह दर्वाजा खोल जैपाल के साथ दारोगा अन्दर चला गया और पुनः दर्वाजा बन्द कर दिया॥

इस जगह भी घोर अन्धकार था मगर जैपाल का हाथ पकड़े दारोगा आगे बढ़ा। दस बारह कदम चलने बाद सीढ़ियां मिलीं जिन पर वह बेखौफ चढ़ गया। सीढ़ियें गिनती में सोलह थीं और उनके दूसरे सिरे पर भी एक दर्वाजा था। यह दर्वाजा बन्द नहीं था बल्कि जरा सा खुला था और अन्दर से रोशनी की एक लकीर आ कर सामने की दीवार पर पड़ उस स्थान को कुछ उजाला कर रही थी। दारोगा इसी राह से अन्दर वाले कमरे का हाल देखने लगा॥

यह वही कमरा था जिसका हाल पाठक ऊपर वाले बयान में

पढ़ चुके हैं, जहां भूतनाथ ने वह भयानक तस्वीर देखी थी और जहां से एक सिंहासन पर गिर वह इस स्थान से बाहर हो गया था । इस समय दयाराम इस कमरे में मौजूद थे और दर्वाजे के पास खड़े होकर भूतनाथ से बातें कर रहे थे जो प्रभाकरसिंह की सूरत में था मगर जिस जगह दारोगा खड़ा था उस जगह से भूतनाथ पर नजर पड़ नहीं सकती थी ॥

दारोगा के देखते ही देखते अपनी बातें समाप्त कर दयाराम दर्वाजे के पास से हटे और कमरे के एक कोने की तरफ चले गये जहां दारोगा की निगाह नहीं पड़ती थी । कुछ ही देर में एक खटके की आवाज आई और उन कल पुर्जों के घूमने की आवाज जिन्हें दारोगा नीचे के कमरे में देख आया था बन्द हो गई । इसके बाद ही दयाराम पुनः दिखाई पड़े जो अब उस तरफ आ रहे थे जिधर दारोगा खड़ा था ॥

दयाराम को अपनी तरफ आते देख फुर्ती के साथ दारोगा ने कमर से एक चादर खोली जिसमें तेज बेहोशी का अर्क लगा कर वह अपने साथ लाया था । एक तरफ से जैपाल को चादर पकड़ा कर दूसरी तरफ से दारोगा ने स्वयम् पकड़ ली और जैसे ही दयाराम दर्वाजा खोल कर इधर आए उनके मुंह पर डाल कस दिया । शीघ्र ही दयाराम बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़े और दारोगा ने खुशी भरी आवाज में जैपाल से कहा, "लो एक दुश्मन तो हमारे कब्जे में आ गया ॥"

जैपाल० । बेशक, मगर इस समय इसके बदन पर वह विचित्र कवच कदाचित् नहीं है जिसकी तासीर से उस समय यह बच कर निकल आया था नहीं तो आप इसे इतनी आसानी से कदाचित् न पकड़ सकते ॥

दारोगा० । बेशक ऐसा ही है ॥

इतना कह दारोगा जमीन पर बैठ गया और बेहोश दयाराम की सूरत गौर से देखने लगा क्योंकि इस स्थान पर जहां ये लोग खड़े थे कोई रोशनी न थी केवल उस कमरे की रोशनी खुले दर्वाजे की राह यहां तक आ रही थी जिसमें से दयाराम आये थे ॥

जैपाल० । (दारोगा से) अब आप क्या देख रहे हैं, इस जगह ज्यादा देर करना मुनासिब नहीं है, क्या ताज्जुब कि इसका और

कोई साथी यहां आ जाय !!

दारोगा० । मैं इसे पहिचानने की कोशिश कर रहा हूं क्योंकि ऐसा मालूम होता है मानो इसे मैंने पहिले कभी देखा हो, उस रोज सभा में भी मुझे इस बात का सन्देह हुआ था ॥

जैपाल० । खैर, चाहे यह कोई हो पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह आपका दुश्मन अथवा आपके दुश्मनों का दोस्त अवश्य है अस्तु अब इसे छोड़ना नहीं चाहिये और न इसको पहिचानने की कोशिश करके व्यर्थ की देर लगाना ही मुनासिब है ॥

दारोगा०। हां तुम्हारा कहना ठीक है, देर करना खतरनाक है। अब इसे......

कहते कहते दारोगा रुक गया क्योंकि उसके कानों में दो औरतों के बोलने की आवाज आई जो बहुत धीमी थी, ऐसा मालूम होता था कि मानो दीवार के दूसरी तरफ दो औरतें आपुस में कुछ बातें कर रही हों। दारोगा और जैपाल ने दीवार के साथ कान लगा दिया, आवाज कुछ स्पष्टता से सुनाई देने लगी ॥

एक०। गदाधरसिंह भी सोचता होगा कि बुरी मुसीबत में आ पड़े, ऐसी दुर्दशा उसकी कभी न हुई होगी ॥

दूसरी०। एक तो यह मकान ही विचित्र दूसरे तिलिस्म से इसका गहरा सम्बन्ध है फिर ऐसी जगह में किसी को फँसा कर तङ्ग करना क्या कठिन बात है ॥

एक० । बेहद गर्मी से घबड़ा कर गदाधरसिंह अवश्य सब बातें बता देगा ॥

दूसरी० । मालूम होता है कि उन्होंने भूतनाथ से बातें कर लीं क्योंकि अब पुरजों के चलने फिरने की आवाज कुछ देर से नहीं आ रही है, चलकर देखना चाहिये कि गदाधरसिंह की क्या हालत है ॥

इसके बाद आवाज बन्द होगई और कुछ ही देर बाद उस कमरे में जिसमें से दयाराम बाहर आये थे कुछ ऐसी आहट आई मानो कोई छोटा दर्वाजा या आलमारी का पल्ला [illegible]ला गया हो इसके साथ ही कुछ आहट भी आई जिससे दारोगा [illegible]विश्वास होगया कि वे दोनों औरतें (या जो कोई हों) इस कम[illegible] आई हैं। उसने इशारे से जैपाल को होशियार किया और कु[illegible] के साथ इस बात

पढ़ चुके हैं, जहां भूतनाथ ने वह भयानक तस्वीर देखी थी और जहां से एक सिंहासन पर गिर वह इस स्थान में बाहर हो गया था। इस समय दयाराम इस कमरे में मौजूद थे और दर्वाजे के पास खड़े होकर भूतनाथ से बातें कर रहे थे जो प्रभाकरसिंह की सूरत में था मगर जिस जगह दारोगा खड़ा था उस जगह से भूतनाथ पर नजर पड़ नहीं सकती थी ॥

दारोगा के देखते ही देखते अपनी बातें समाप्त कर दयाराम दर्वाजे के पास से हटे और कमरे के एक कोने की तरफ चले गये जहां दारोगा की निगाह नहीं पड़ती थी। कुछ ही देर में एक खटके की आवाज आई और उन कल पुर्जों के घूमने की आवाज जिन्हें दारोगा नीचे के कमरे में देख आया था बन्द हो गई। इसके बाद ही दयाराम पुनः दिखाई पड़े जो अब उस तरफ आ रहे थे जिधर दारोगा खड़ा था ॥

दयाराम को अपनी तरफ आते देख फुर्ती के साथ दारोगा ने कमर से एक चादर खोली जिसमें तेज बेहोशी का अर्क लगा कर वह अपने साथ लाया था। एक तरफ से जैपाल को चादर पकड़ा कर दूसरी तरफ से दारोगा ने स्वयम् पकड़ ली और जैसे ही दयाराम दर्वाजा खोल कर इधर आए उनके मुंह पर डाल कस दिया। शीघ्र ही दयाराम बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़े और दारोगा ने खुशी भरी आवाज में जैपाल से कहा, "लो एक दुश्मन तो हमारे कब्जे में आ गया ॥"

जैपाल०। बेशक, मगर इस समय इसके बदन पर वह विचित्र कवच कदाचित् नहीं है जिसकी तासीर से उस समय यह बच कर निकल आया था नहीं तो आप इसे इतनी आसानी से कदाचित् न पकड़ सकते ॥

दारोगा०। बेशक ऐसा ही है ॥

इतना कह दारोगा जमीन पर बैठ गया और बेहोश दयाराम की सूरत गौर से देखने लगा क्योंकि इस स्थान पर जहां ये लोग खड़े थे कोई रोशनी न थी केवल उस कमरे की रोशनी खुले दर्वाजे की राह यहां तक आ रही थी जिसमें से दयाराम आये थे ॥

जैपाल०। (दारोगा से) अब आप क्या देख रहे हैं, इस जगह ज्यादा देर करना मुनासिब नहीं है, क्या ताज्जुब कि इसका और

कोई साथी यहां आ जाय !!

दारोगा० । मैं इसे पहिचानने की कोशिश कर रहा हूं क्योंकि ऐसा मालूम होता है मानो इसे मैंने पहिले कभी देखा हो, उस रोज सभा में भी मुझे इस बात का सन्देह हुआ था ॥

जैपाल० । खैर, चाहे यह कोई हो पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह आपका दुश्मन अथवा आपके दुश्मनों का दोस्त अवश्य है अस्तु अब इसे छोड़ना नहीं चाहिये और न इसको पहिचानने की कोशिश करके व्यर्थ की देर लगाना ही मुनासिब है ॥

दारोगा०। हां तुम्हारा कहना ठीक है, देर करना खतरनाक है। अब इसे......

कहते कहते दारोगा रुक गया क्योंकि उसके कानों में दो औरतों के बोलने की आवाज आई जो बहुत धीमी थी, ऐसा मालूम होता था कि मानो दीवार के दूसरी तरफ दो औरतें आपुस में कुछ बातें कर रही हों। दारोगा और जैपाल ने दीवार के साथ कान लगा दिया, आवाज कुछ स्पष्टता से सुनाई देने लगी ॥

एक० । गदाधरसिंह भी सोचता होगा कि बुरी मुसीबत में आ पड़े, ऐसी दुर्दशा उसकी कभी न हुई होगी ॥

दूसरी०। एक तो यह मकान ही विचित्र दूसरे तिलिस्म से इसका गहरा सम्बन्ध है फिर ऐसी जगह में किसी को फँसा कर तङ्ग करना क्या कठिन बात है ॥

एक० । बेहद गर्मी से घबड़ा कर गदाधरसिंह अवश्य सब बातें बता देगा ॥

दूसरी० । मालूम होता है कि उन्होंने भूतनाथ से बातें कर लीं क्योंकि अब पुरजों के चलने फिरने की आवाज कुछ देर से नहीं आ रही है, चलकर देखना चाहिये कि गदाधरसिंह की क्या हालत है ॥

इसके बाद आवाज बन्द होगई और कुछ ही देर बाद उस कमरे में जिसमें से दयाराम बाहर आये थे कुछ ऐसी आहट आई मानो कोई छोटा दर्वाजा या आलमारी का पल्ला खोला गया हो इसके साथ ही कुछ आहट भी आई जिससे दारोगा को विश्वास होगया कि वे दोनों औरतें (या जो कोई हों) इस कमरे में आगई हैं। उसने इशारे से जैपाल को होशियार किया और कुछ चिन्ता के साथ इस बात

पढ़ चुके हैं, जहां भूतनाथ ने वह भयानक तस्वीर देखी थी और जहां से एक सिंहासन पर गिर वह इस स्थान से बाहर हो गया था। इस समय दयाराम इस कमरे में मौजूद थे और दर्वाजे के पास खड़े होकर भूतनाथ से बातें कर रहे थे जो प्रभाकरसिंह की सूरत में था मगर जिस जगह दारोगा खड़ा था उस जगह से भूतनाथ पर नजर पड़ नहीं सकती थी ॥

दारोगा के देखते ही देखते अपनी बातें समाप्त कर दयाराम दर्वाजे के पास से हटे और कमरे के एक कोने की तरफ चले गये जहां दारोगा की निगाह नहीं पड़ती थी। कुछ ही देर में एक खटके की आवाज आई और उन कल पुर्जों के घूमने की आवाज जिन्हें दारोगा नीचे के कमरे में देख आया था बन्द हो गई। इसके बाद ही दयाराम पुनः दिखाई पड़े जो अब उस तरफ आ रहे थे जिधर दारोगा खड़ा था ॥

दयाराम को अपनी तरफ आते देख फुर्ती के साथ दारोगा ने कमर से एक चादर खोली जिसमें तेज बेहोशी का अर्क लगा कर वह अपने साथ लाया था। एक तरफ से जैपाल को चादर पकड़ा कर दूसरी तरफ से दारोगा ने स्वयम् पकड़ ली और जैसे ही दयाराम दर्वाजा खोल कर इधर आए उनके मुंह पर डाल कस दिया। शीघ्र ही दयाराम बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़े और दारोगा ने खुशी भरी आवाज में जैपाल से कहा, "लो एक दुश्मन तो हमारे कब्जे में आ गया ॥"

जैपाल० । बेशक, मगर इस समय इसके बदन पर वह विचित्र कवच कदाचित् नहीं है जिसकी तासीर से उस समय यह बच कर निकल आया था नहीं तो आप इसे इतनी आसानी से कदाचित् न पकड़ सकते ॥

दारोगा० । बेशक ऐसा ही है ॥

इतना कह दारोगा जमीन पर बैठ गया और बेहोश दयाराम की सूरत गौर से देखने लगा क्योंकि इस स्थान पर जहां ये लोग खड़े थे कोई रोशनी न थी केवल उस कमरे की रोशनी खुले दर्वाजे की राह यहां तक आ रही थी जिसमें से दयाराम आये थे ॥

जैपाल० । (दारोगा से) अब आप क्या देख रहे हैं, इस जगह ज्यादा देर करना मुनासिब नहीं है, क्या ताज्जुब कि इसका और

कोई साथी यहां आ जाय !!

दारोगा० । मैं इसे पहिचानने की कोशिश कर रहा हूं क्योंकि ऐसा मालूम होता है मानो इसे मैंने पहिले कभी देखा हो, उस रोज़ सभा में भी मुझे इस बात का सन्देह हुआ था ॥

जैपाल० । खैर, चाहे यह कोई हो पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह आपका दुश्मन अथवा आपके दुश्मनों का दोस्त अवश्य है अस्तु अब इसे छोड़ना नहीं चाहिये और न इसको पहिचानने की कोशिश करके व्यर्थ की देर लगाना ही मुनासिब है ॥

दारोगा० । हां तुम्हारा कहना ठीक है, देर करना खतरनाक है । अब इसे......

कहते कहते दारोगा रुक गया क्योंकि उसके कानों में दो औरतों के बोलने की आवाज़ आई जो बहुत धीमी थी, ऐसा मालूम होता था कि मानो दीवार के दूसरी तरफ दो औरतें आपुस में कुछ बातें कर रही हों । दारोगा और जैपाल ने दीवार के साथ कान लगा दिया, आवाज़ कुछ स्पष्टता से सुनाई देने लगी ॥

एक० । गदाधरसिंह भी सोचता होगा कि बुरी मुसीबत में आ पड़े, ऐसी दुर्दशा उसकी कभी न हुई होगी ॥

दूसरी० । एक तो यह मकान ही विचित्र दूसरे तिलिस्म से इसका गहरा सम्बन्ध है फिर ऐसी जगह में किसी को फँसा कर तङ्ग करना क्या कठिन बात है ॥

एक० । बेहद गर्मी से घबड़ा कर गदाधरसिंह अवश्य सब बातें बता देगा ॥

दूसरी० । मालूम होता है कि उन्होंने भूतनाथ से बातें कर लीं क्योंकि अब पुरजों के चलने फिरने की आवाज़ कुछ देर से नहीं आ रही है, चलकर देखना चाहिये कि गदाधरसिंह की क्या हालत है ॥

इसके बाद आवाज़ बन्द होगई और कुछ ही देर बाद उस कमरे में जिसमें से दयाराम बाहर आये थे कुछ ऐसी आहट आई मानो कोई छोटा दर्वाजा या आलमारी का पल्ला खोला गया हो इसके साथ ही कुछ आहट भी आई जिससे दारोगा को विश्वास होगया कि वे दोनों औरतें (या जो कोई हों) इस कमरे में आगई हैं । उसने इशारे से जैपाल को होशियार किया और कुछ चिन्ता के साथ इस बात

का इन्तज़ार करने लगा कि देखें अब क्या होता है ॥

कुछ देर बाद खुले दरवाज़े के पास एक औरत दिखाई पड़ी जो दर्वाज़े के इस तरफ़ यानी जिधर दारोगा और जैपाल खड़े थे उधर ही देख रही थी, दारोगा या जैपाल पर उसकी निगाह न पड़ी क्योंकि ये लोग दोनों तरफ़ आड़ में हो गये थे मगर बेहोश दयाराम पर उसकी निगाह अवश्य पड़ गई क्योंकि वे सामने ही पड़े हुए थे और दर्वाज़े की राह आती हुई रोशनी उन पर बखूबी पड़ रही थी। "हैं! ये बेहोश क्योंकर होगये।" कह कर उस औरत ने बाहर पैर रक्खा ही था कि जैपाल और दारोगा उस पर झपट पड़े और उसी चादर की मदद से उसे भी बेहोश कर दिया जिससे दयाराम बेहोश किये गये थे ॥

यह बात इस फुर्ती से होगई कि वह औरत एक चीख भी मार न सकी और बेहोश होगई। दारोगा इस इन्तज़ार में खड़ा रहा कि शायद वह दूसरी औरत भी जिसके बातचीत की आवाज़ आई थी यहां आवे मगर फिर वहां कोई भी न आया और न किसी प्रकार की आहट ही सुनाई दी। दारोगा उस बेहोश औरत की सूरत भी गौर से देखने लगा मगर पहिचान बिल्कुल न सका कि यह कौन है ॥

कुछ देर तक सन्नाटा रहा इसके बाद जयपाल ने कहा, "अब क्या इरादा है, इन दोनों को लेकर लौटना है या अभी और रुकना है।" दारोगा इसका जवाब दिया ही चाहता था कि वह दरवाज़ा जिसकी राह दयाराम या वह औरत आई थी आपसे आप बन्द हो गया और उस जगह घोर अन्धकार छा गया। दारोगा और जयपाल चिहुंक कर खड़े होगये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये ॥

कुछ देर तक सन्नाटा रहा और इस बीच में दारोगा ने अब क्या करना उत्तम होगा यह भी निश्चय कर लिया। दोनों बेहोश एक ही चादर में कस कर बांधे गये और एक तरफ़ से दारोगा तथा दूसरी तरफ़ से जैपाल उठाये हुए सीढ़ियां उतर नीचे वाले कमरे में पहुंचे जिसमें कि बहुत से कल पुरज़े देखे गये थे अथवा जिसमें से होकर ये दोनों ऊपर गये थे ॥

ऐसा मालूम होता था कि मानो दारोगा कई बार इस जगह आ

चुका हो अथवा यहां का हाल बखूबी जानता हो क्योंकि अन्धकार में भी अपने को तथा जयपाल को कल पुरजों से बचाता हुआ वह बेधड़क उस बड़े कमरे के एक कोने की तरफ चला गया और वहां एक दर्वाजा किसी ढङ्ग से खोल वह जयपाल के साथ अन्दर चला गया। इस जगह भी अन्धकार था मगर अन्दाज से जैपाल को मालूम हो गया कि यह वह जगह नहीं है जिस रास्ते दारोगा आया था॥

यहां भी दारोगा न रुका और दरवाजा बन्द करता हुआ आगे बढ़ने लगा। एक दरवाजा और लांघने की नौबत आई और उसके भी पार जाने तथा उसे बन्द करने बाद दारोगा ने हाथ का बोझ जमीन पर रख दिया। इसके बाद रोशनी की और अब जयपाल को मालूम हुआ कि वह एक ऐसी कोठड़ी में है जिसकी दरोदीवार और छत यहां तक कि जमीन पर भी किसी धातु की चादर चढ़ी हुई है जो पुरानी हो जाने के कारण काली हो रही थी। इस स्थान में इस बात का कुछ भी पता नहीं लगता था कि आने जाने का रास्ता कौन सा किस तरफ है क्योंकि दरवाजा या दर्वाजे का निशान कहीं भी दिखाई नहीं पड़ता था। हां एक तरफ की दीवार में कई खूंटियें लगी हुई दिखाई पड़ती थीं जो गिनती में बारह थीं। ये खूंटियें भी किसी धातु की ही थीं और हर एक खूंटी के नीचे की तरफ एक से बारह तक के अङ्क बने हुए थे। दारोगा ने दीवार के पास जा कर एक नम्बर की खूंटी को उमेठना शुरू किया, कई बार घूम कर जब वह रुक गई तो दारोगा ने तीन नम्बर की खूंटी को घुमाया और उसके बाद सात नम्बर की खूंटी को उमेठा ही था कि एक हलकी सी आवाज आई और खूंटियों के नीचे की दीवार का एक हिस्सा पीछे की तरफ खसकता हुआ हट कर गायब हो गया और इतना बड़ा रास्ता दिखाई देने लगा जिसमें एक आदमी बखूबी घुस जाय, दारोगा ने दयाराम को और जयपाल ने उस औरत को उठा लिया और दोनों उसी राह से अन्दर चले गये। उनके भीतर जाते ही वह दर्वाजा ज्यों का त्यों दुरुस्त हो गया॥

ग्यारहवां बयान।

पाठक सोचते होंगे कि जिन दोनों औरतों की बातचीत दारोगा और जैपाल ने सुनी थी वे दोनों अवश्य जमना और सरस्वती होंगी और वास्तव में ऐसा ही था भी। जिस जगह दारोगा खड़ा था उसके पीछे ही एक दूसरी छोटी कोठड़ी पड़ती थी जिसमें जमना और सरस्वती को बैठा कर दयाराम भूतनाथ से बातें करने गये थे जिस की कार्रवाइयों का पता उन्हें किसी तरह से लग गया था और जिस के विषय में वे जान गये थे कि वह नकली जमना और सरस्वती अर्थात् उन दोनों लौंडियों को जिन्हें इन्द्रदेव ने जमना सरस्वती की सूरत बना रक्खा था बेहोश करके कहीं डाल आया है॥

जब दयाराम को दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया, जमना और सरस्वती एक गुप्त राह से उस कमरे में आईं जिसमें दयाराम थे अथवा जिसके बाद वाले कमरे में इस समय भूतनाथ खड़ा हुआ था। उस कमरे में दयाराम को न देख जमना उस दर्वाजे की तरफ बढ़ी जिधर दारोगा और जैपाल थे और वहां जा कर उनके कब्जे में पड़ गई। कला ने थोड़ी देर तक तो जमना के लौटने की राह देखी पर जब वह न लौटी तो वह होशियार औरत समझ गई कि कुछ न कुछ दाल में काला अवश्य है। दर्वाजे के अन्दर जाना मुनासिब न समझ कला दरवाजे के बगल में लटकती हुई एक तस्वीर के पास पहुंची और उसे हटा कर उसके पीछे की तरफ कोई ऐसा खटका दबाया जिससे दीवार में एक छोटा छेद इस लायक दिखाई देने लगा जिसमें आंख लगा कर दूसरी तरफ का हाल बखूबी देखा जा सकता था। कला ने इस छेद की राह यह देख लिया कि उस तरफ दो आदमी खड़े हैं और जमीन पर जमना तथा दयाराम भी बेहोश पड़े हुए हैं, क्योंकि यद्यपि दारोगा और जयपाल अन्धकार में थे तथापि खुले दरवाजे की राह इतनी रोशनी उस तरफ आ रही थी कि दोनों बेहोश पहिचाने जा सकें॥

अब कला इस फिक्र में पड़ी कि किसी तरह उन आदमियों को गिरफ्तार करना तथा अपनी बहिन और पति को उनके पंजे से छुड़ाना चाहिये इसके साथ ही भूतनाथ के विषय में भी कुछ प्रबन्ध करना

जरूरी था जिसका इस जगह से चले जाना ही वह इस समय मुनासिब समझती थी ॥

कुछ सोच विचार कर कला ने किसी ढङ्ग से वह दर्वाजा बन्द कर दिया जिसके अन्दर दारोगा इत्यादि थे, बन्द होने पर वह दरवाजा अगल बगल की दीवार के साथ ऐसा मिल जाता था कि बहुत गौर करने पर भी दरवाजे का निशान तक दिखाई नहीं पड़ता था और अनजान आदमी को तो इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यहां कोई दर्वाजा है ॥

वह दरवाजा बन्द कर कला ने एक दूसरा गुप्त दरवाजा खोला और उसकी राह वह कहीं चली गई। उसके जाने के थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ उस कमरे में आया और उस अद्भुत तस्वीर को देख बदहवासी की हालत में एक सिंहासन पर बैठ गया, सिंहासन पर बैठते ही जिस प्रकार वह सिंहासन जमीन में धँस गया और भूतनाथ बेहोश होगया, यह हम ऊपर लिख आये हैं पर यहां यह लिखना आवश्यक है कि यह कार्रवाई कला की थी जो कहीं छिप कर भूतनाथ की बदहवासी अच्छी तरह देख रही थी ॥

भूतनाथ को कहीं ठिकाने पहुंचा कर वह सिंहासन पुनः ज्यों का त्यों अपनी जगह पर आकर बैठ गया और इसी समय कला भी उस कमरे में आ मौजूद हुई। इस समय वह एक मजबूत और खूबसूरत सुनहरी जालों वाला कवच पहिने हुई थी जो वास्तव में वही था जो इन्द्रदेव ने दयाराम को दिया था और जिसके अद्भुत गुण से दारोगा इतना डरता था। इस कवच के इलावे कला ने एक नकाब भी चेहरे पर डाली हुई थी और हाथ में उसके तिलिस्मी खञ्जर भी मौजूद था ॥

अब कला को किसी से डरने की आवश्यकता न थी अस्तु उसने लौटके वह दरवाजा खोला जिसके अन्दर दारोगा अथवा जयपाल थे मगर वे सब पहिलेही गायब हो चुके थे। कला इस बात के लिये तैयार थी और समझती थी कि वे दोनों दुष्ट अवश्य भागने की चेष्टा करेंगे अस्तु वह फुर्ती के साथ तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी करती हुई सीढ़ियां उतर कर नीचे वाले कमरे में पहुंची जहां बहुत से कल पुरजे लगे हुए थे। इस समय तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी के कारण उस

बड़े कमरे का कोना कोना साफ साफ दिखाई दे रहा था। कमरे के बीच में तो बहुत से कल पुरजे थे पर चारो तरफ की दीवारों में हर तरफ तीन तीन दरवाजे दिखाई पड़ रहे थे जो सब बन्द थे। कला एक एक करके इन्हीं दरवाजों को गौर से देखने लगी॥

ये बारहों दरवाजे एक ही किस्म के थे और लम्बाई चौड़ाई में भी बराबर थे। हर एक दर्वाजे के ऊपर की तरफ एक ताक (आला) था जिसमें सुफेद पत्थर का एक छोटा हाथी रक्खा हुआ था। ये हाथी हाथ भर से भी छोटे थे पर इतनी कारीगरी और सफाई के साथ बने हुए थे कि देखने में बड़े ही सुन्दर मालूम होते थे। हर एक हाथी की सूंड़ नीचे जमीन की तरफ झुकी हुई थी पर जब सब दरवाजों को देखती हुई कला उस दर्वाजे के पास पहुंची जिसमें दारोगा और जयपाल गये हुए थे तो उसके ऊपर वाले हाथी की सूंड़ मामूल के खिलाफ ऊपर की तरफ उठी हुई देखी। यह देखते ही कला उसी जगह रुक गई और धीरे से बोली, "बेशक वे लोग इसी दर्वाजे की राह गये हैं मगर यह तो तिलिस्म में आने का दर्वाजा है तो क्या वे सब तिलिस्म के अन्दर चले गये?"

इसी समय कला को अपने पीछे कुछ आहट मालूम पड़ी और घूम कर देखने पर उसकी निगाह उन दोनों लौंडियों पर पड़ी जो कला और बिमला बनी हुई थीं और जिन्हें बेहोश कर के भूतनाथ झाड़ी में छोड़ आया था। हम ऊपर लिख आये हैं कि इन्द्रदेव ने इन्दुमति तथा जमना और सरस्वती की सूरत बदल कर उनका नाम राधा, बीरो और भानो रख दिया था तथा तीन विश्वासपात्र लौंडियों को उनकी सूरत बना दिया था अस्तु इस जगह से हम सरस्वती को उसके बनावटी नाम भानो से ही पुकारेंगे और उन दोनों लौंडियों को जमना और सरस्वती कहेंगे॥

जमना और सरस्वती को देख भानो उनके पास पहुंची और उधर जो कुछ हुआ था उसे मुख़्तसर में बयान किया। जमना और सरस्वती ने भी अपना हाल अर्थात् भूतनाथ ने किस तरह उन्हें बेहोश किया था कह सुनाया और अब तीनों में सलाह होने लगी कि क्या करना चाहिये। ज्यादा तरद्दुद की बात तो यह थी कि अब इन बेचारियों की मदद करने और सलाह देने वाला कोई मर्द भी यहां मौजूद न

था । इन्द्रदेव जमानिया आ चुके थे, प्रभाकरसिंह भूतनाथ के कब्जे में पड़े हुए थे और दयाराम को दारोगा पकड़ ले गया था ॥

जमना सरस्वती का हाल सुन भानो ने कहा, "मैंने उन आदमियों को भागने से रोकने के लिये उन दोनों रास्तों को भी बन्द कर दिया था जिनकी राह हमलोग इस घाटी के बाहर आते हैं क्योंकि मेरा खयाल था कि उनके बन्द हो जाने पर फिर कोई इस कमरे के आगे जा न सकेगा मगर यह खयाल भी गलत निकला। हमारा दुश्मन (चाहे वह कोई हो) यहां का हाल बखूबी जानता है क्योंकि वह सुरङ्ग के बाहर जाने की कोशिश न कर तिलिस्म के अन्दर चला गया है जहां उसे खोजना या पकड़ना बड़ा ही कठिन है तथापि मेरी इच्छा है कि एक बार उसका पीछा तो अवश्य करूं फिर जो होगा देखा जायगा॥"

बहुत देर तक इस विषय पर बहस होती रही और अन्त में भानो की बात जमना, सरस्वती को माननी पड़ी हां इतना अवश्य हुआ कि भानो ने जमना सरस्वती को भी साथ रखना मन्जूर किया ॥

किसी गुप्त रीति से भानो ने वह दर्वाजा खोला, अन्दर जा कर लगभग दस बारह कदम की लम्बी एक सुरङ्ग और एक दूसरा दरवाजा मिला । इसे भी भानो ने खोला और तब वह उस कोठड़ी में पहुंची जिसमें की दीवारों और जमीन पर धातु के पत्र चढ़े हुए थे अथवा जहां से दरवाजा पैदा कर दारोगा और जयपाल, दयाराम तथा असली जमना को ले गये थे ॥

जिस तरह खूंटियां उमेठ दारोगा ने दरवाजा निकाला था उसी तरह भानो (अर्थात् सरस्वती) ने भी खोला और तीनों औरतें दर्वाजे के अन्दर चली गईं । अन्दर जाते ही वह दर्वाजा बन्द हो गया और तीनों ने अपने को एक दालान में पाया जिसके सामने की तरफ एक छोटा सा बाग था ॥

यह बाग नाममात्र ही को बाग था, फलों के पेड़ इसमें कोई भी दिखाई न देते थे और न फूलों के पौधे ही बहुतायत से दिखाई पड़ते थे । जगह जगह जङ्गली पेड़ों और झाड़ियों के कारण यह एक छोटा जङ्गल ही मालूम पड़ता था पर यहां तरावट बहुत थी जो उस छोटे चश्मे के कारण थी, जो पूरब की तरफ से बहता हुआ आ कर पश्चिम की तरफ कहीं निकल जाता था । भानो इसी चश्मे के किनारे किनारे

पूरब तरफ जाने लगी और नकली जमना सरस्वती भी उसके साथ हुईं। पौ फटा ही चाहती थी और पूरब तरफ आकाश पर लालिमा दिखाई दे रही थी॥

भानो कुछ ही दूर आगे गई होगी कि उसकी निगाह दारोगा और जयपाल पर पड़ी जो दयाराम और जमना को कहीं पहुँचा कर इधर ही आ रहे थे। यद्यपि उनके चेहरे नकाब से ढँके रहने के कारण उन्हें पहिचान न सकी पर इतना वह अवश्य समझ गई कि ये वेही हैं जो उसके पति और बहिन को गिरफ़ार कर चुके हैं। हाथ में तिलिस्मी खञ्जर लिये वह उनकी तरफ लपकी साथ ही खञ्जर का कब्जा इस नीयत से दबाया कि उसकी तेज रोशनी से उन दोनों की आंखें बन्द हो जायँ॥

दारोगा और जयपाल जिस जगह खड़े थे उसके पास ही एक छोटा चबूतरा था। खञ्जर की तेज रोशनी से घबड़ा कर उन दोनों ने अपनी आंखें बन्द कर लीं और इस चबूतरे पर चढ़ गये। उनके पीछे ही लपकती हुई भानो भी पहुंची और चबूतरे पर चढ़ फुर्ती के साथ खञ्जर बदन से लगा उन्हें बेहोश कर दिया मगर अभी मुश्किल से उसने इस काम से छुट्टी पाई थी कि वह चबूतरा जिस पर वह थी एक बार कांपा और तब इस तेजी से जमीन में घुस गया कि भानो को चबूतरे से कूदने का भी समय न मिला और न उसकी दोनों साथिनों को ही उसके मदद करने का मौका मिला जो चबूतरे के पास ही थीं। थोड़ी देर बाद वह चबूतरा पुनः अपनी जगह पर आ गया पर इस समय इस पर कोई भी न था, न तो दारोगा या जैपाल ही दिखाई देते थे और न भानो (असली सरस्वती) का ही कहीं पता था॥

जमना ने सरस्वती की तरफ देखा और तब धीरे से गरदन हिला कर कहा, "ऐसा तो होना ही था, भला तिलिस्मी कामों में भी किसी का जोर चल सकता है!!"

सरस्वती०। अब लौटना चाहिये, यहां रहने से ताज्जुब नहीं कि हम लोग भी किसी मुसीबत में पड़ जायं, यदि इन्द्रदेव जी हों तो चल कर उन्हें खबर दी जाय॥

जमना०। इन्द्रदेव जी यहां तो नहीं होंगे हां अमानिया जाने से खबर मिल जायँगे॥

सरस्वती० । तो कोई आदमी वहां भेजना चाहिये ॥

जमना०। आदमी की क्या जरूरत है हमी लोग चले चलें, रास्ते में यदि गदाधरसिंह कहीं मिल जायगा तो उससे भी कुछ छेड़खानी करते चलेंगे क्योंकि अभी तक उसकी बेहोशी दूर न हुई होगी और वह उस सुरङ्ग ही में पड़ा होगा ॥

सर०। अच्छी बात है चलो, मगर यह बैठे बैठाये की मुसीबत बुरी आ पड़ी न जाने वे दोनों कम्बख़्त कौन थे जो इतनी आफत कर गये। यह तो प्रगट ही है कि उन्हें यहां के सब भेद बखूबी मालूम हैं नहीं तो वे ऐसी जगह आकर इस तरह की कार्रवाई कर नहीं सकते थे ॥

जमना० । खैर वे सब चाहे कोई भी हों मगर इसमें कोई शक नहीं कि हमलोगों की मुसीबत की घड़ी अभी बीती नहीं है। अच्छा चलो लौटो, देर करना व्यर्थ है ॥

जिस राह से गई थीं उसी राह से लौटती हुई ये दोनों औरतें पुनः अपने ठिकाने आईं और कुछ सामान और बन्दोबस्त कर उसी समय घाटी के बाहर निकलीं ॥

बारहवां बयान ।

भूतनाथ ने खोह के बाहर निकल चश्मे के पानी से हाथ मुंह धोया और तब धीरे धीरे जमानिया की तरफ रवाना हुआ ॥

पिछली रात की बातें एक एक कर उसकी आंखों के सामने आ रही थीं और जब कभी उसे उस तस्वीर का ध्यान आ जाता था जो उसने वहां देखी थी तब तब वह कांप उठता था क्योंकि वह इस बात को बखूबी समझता था कि यह तस्वीर उसके गुप्त भेद प्रगट करने का बड़ा भारी जरिया होगी और उसकी बदनामी का जिसको दूर करने के ख्याल से वह इतने दुष्कर्म कर चुका और कर रहा था, यह तस्वीर झण्डा बन जायगी ॥

तरह तरह की बातें सोचता हुआ वह धीरे धीरे जा रहा था कि यकायक उसके कानों में घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई दी। उसने फिर कर देखा और कुछ दूरी पर दो औरतों को घोड़ों पर सवार अपनी तरफ आते देख सड़क के किनारे एक पेड़ की आड़ में हो

गया । इसी बीच में वे औरतें भी जो तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाती हुई आ रही थीं पास आ पहुंचीं और भूतनाथ ने देखते ही पहिचान लिया कि ये दोनों जमना और सरस्वती हैं ॥

हम नहीं कह सकते कि जिस तरह भूतनाथ ने उन दोनों को देख और पहिचान लिया उसी तरह उन दोनों ने भूतनाथ को देखा और पहिचाना या नहीं पर यहां पहुंच कर उन दोनों ने अपने घोड़ों की चाल अवश्य कम कर दी और कुछ बातें करती हुई जाने लगीं ॥

आधे घण्टे तक इसी तरह जाने के बाद जमना और सरस्वती एक ऐसी जगह पहुंचीं जहां एक नाला सड़क को काटता हुआ बह रहा था, नाले के ऊपर एक छोटा खूबसूरत पुराने जमाने का पुल बँधा हुआ था जिसके चारों कोनों पर चार नीम के पेड़ इतने बड़े लगे हुए थे कि उनकी डालियें आपुस में बिलकुल गुंथ गई थीं और पुल उनके साये में होगया था उन पेड़ों के कारण पुल पर कुछ अंधकार भी हो गया था मगर इतना नहीं कि वहां के आदमी को दस पांच हाथ की दूरी से पहिचानने में कुछ कठिनता हो ॥

जमना और सरस्वती जब पुल के पास पहुंचीं तो उनकी निगाह एक आदमी पर पड़ी जो उस पुल पर सड़क के बीचोबीच में लेटा हुआ था और न जाने किस तकलीफ से इधर उधर करवटें बदल रहा था । उसे देख उन दोनों ने पास पहुंच अपने घोड़े रोके और जमना घोड़े पर से उतर उस आदमी के पास गई । इस समय वह आदमी बेहोश होगया सा मालूम पड़ता था पर बीचबीच में उसके मुंह से कुछ २ टूटे फूटे शब्द निकल आते थे जिनकी तरफ जमना का ध्यान गया । वे शब्द ये थे, "हाय......प्रभाकर...इन्द्रदेव के... प्यारी......जान..." इसके बाद और भी कुछ कहा मगर इतने धीरे से कि कुछ सुनाई नहीं दिया । जमना ने पहिचानने की नीयत से गौर से उसकी सूरत देखी मगर आज से पहिले उसने इस आदमी को कभी देखा न था ॥

जमना ने सरस्वती को भी पास बुलाया और जब वह पास आई तो उस आदमी के मुंह से सुने हुए शब्द उसे कह कर कहा, "मालूम होता है कि यह बेहोश होगया है, इसे होश में लाया जाय तो शायद अपने मतलब की कोई बात मालूम हो, इसे उठा कर पुल के नीचे

के चलो तो इसे होश में लाने की कोशिश की जाय ॥

जमना और सरस्वती ने मिल कर उस आदमी को उठाया। उसके कपड़े इतने मैले और बदबूदार थे कि उठाते ही एक दफे बदबू से उन दोनों का दिमाग खराब हो गया मगर किसी तरह उठाये हुए वे दोनों सड़क के किनारे पुल के नीचे ले आईं और जमीन पर डाल दिया। जमना उसके पास बैठ कर उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी मगर सरस्वती उसके कपड़ों और बदन से निकलती हुई बदबू से घबड़ा कर कुछ दूर हट खड़ी हो गई ॥

जमना की तर्कीबों से बड़ी देर के बाद उस आदमी को कुछ२ होश आने लगा। यह देख सरस्वती भी पास आ गई और जमना को मदद देने लगी। कुछ ही देर बाद वह आदमी पूरी तरह से होश में आ कर उठ बैठा और अपने चारो तरफ देख कर बोला, "मैं कहां हूं और तुम दोनों कौन हो?"

जमना०। तुम उस पुल पर बेहोश पड़े हुए थे, हम दोनों तुम्हें यहां उठा लाई हैं और तुम्हारा हाल सुना चाहती हैं?

आदमी०। तुम दोनों का नाम क्या है?

जमना०। मेरा नाम धनदेई है और (सरस्वती की तरफ बता कर) इसका नाम जयदेई है ॥

आदमी०। शायद ऐसा ही हो!!

जमना०। इसका क्या मतलब?

आदमी०। मेरी समझ में तो तुम लोगों का यह नाम असली नहीं बल्कि बनावटी है ॥

जमना०। (कुछ रुकावट के साथ) खैर हम लोगों का नाम चाहे कुछ हो तुम अपना नाम बताओ ॥

आदमी०। (खड़ा हो कर) मेरा नाम गदाधरसिंह है ॥

इतना कह उस आदमी ने नकली दाढ़ी जो वह लगाये हुए था दूर कर दी और गदाधरसिंह की सूरत दिखाई देने लगी। गदाधरसिंह को देखते ही जमना सरस्वती चौंक कर पीछे को हटीं मगर भूतनाथ ने हँस कर कहा, "भला गदाधर के होशहवास में होते हुए भी कोई आदमी उससे भाग कर बच सकता है? तुम दोनों भागने की कोशिश मत करो और इस बात को अच्छी तरह समझ रक्खो कि तुम

लोगों को कुछ ही देर तक इस दुनिया में रहना है क्योंकि बेहोशी की दवा का असर जो मेरे कपड़ों में लगी हुई है तुम लोगों पर पूरी तरह से आ चुका है ॥"

अब जमना को मालूम हुआ कि उसने बहुत बुरा धोखा खाया और भूतनाथ के कपड़े की वह बू बेहोशी की किसी दवा के कारण थी जिस पर उसने ध्यान नहीं दिया था। वह अच्छी तरह समझ गई कि इस समय गदाधरसिंह के फन्दे से छूट नहीं सकती पर तौ भी हिम्मत बांध कर उसने कहा, "भला मैंने इस समय तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि तुम हम दोनों की जान लेने पर तुल गये हो ?"

भूत०। तुमने मेरा बड़ा भारी नुकसान किया है और यों कहना चाहिये कि मेरी बदनामी का सबसे बड़ा कारण तुम्हीं दोनों हो, तुम्हारे ही सबब से इन्द्रदेव मुझसे विरुद्ध हो गये, तुम्हारे ही सबब से मैं प्रभाकरसिंह का दुश्मन बना और तुम्हारे ही सबब से भैयाराजा ने मुझसे शत्रुता की। तुम लोगों के कारण सुख की नींद सोना मेरे लिये हराम होगया है। अस्तु अब मैं यही चाहता हूं कि तुम दोनों को मार कर एकदम ही बखेड़ा तय करूं। हां एक तरह पर तुम्हारी जान कदाचित् बच जाय ॥

जमना०। सो कैसे ?

भूत०। तुम्हारे मकान में मैंने लाल पर्दे से ढंकी हुई एक तस्वीर देखी थी ॥

जमना०। बेशक देखी होगी और अगर तुमने उसका पर्दा हटाया होगा तो तुम यह भी जान गये होगे कि उसका विषय क्या था ॥

भूत०। खैर इससे कोई मतलब नहीं अगर तुम वह तस्वीर मुझे ला दो तो मैं तुम्हें छोड़ दूं ॥

जमना०। तुम्हारी बात का भला क्या विश्वास ?

भूत०। क्यों क्या मैं अपना वादा पूरा नहीं करूंगा ?

जमना०। बेशक मुझे यही डर है और फिर बिना अपने घर गये मैं उसे ला ही क्योंकर सकती हूं ॥

भूत०। नहीं मैं तुमको घर जाने की इजाजत तो दे नहीं सकता, कौन ताज्जुब तुम वहां जाकर बैठ रहो फिर मैं क्या करूंगा ?

जमना०। तो लाचारी है ॥

भूत०। अच्छा तुम यही बता दो कि उस तस्वीर का बनाने वाला कौन है ?

जमना०। यह मैं नहीं बता सकती ॥

भूत०। तुम्हें बताना पड़ेगा ॥

जमना०। नहीं कदापि नहीं, क्या मैं इस बात को नहीं जानती कि मेरी तरह तू उसका भी दुश्मन बन बैठेगा और उसे जान से मारने को कोशिश करेगा ॥

भूत०। नहीं नहीं ऐसा नहीं होगा, मैं वादा करता हूं कि नाम बता देने पर तुम दोनों को छोड़ दूंगा ॥

जमना०। मैं तेरी बात पर विश्वास नहीं करती और तेरे वादे पर थूकती हूं। अपने एक दोस्त को तेरे कब्जे में देने की बनिस्बत खुद जान से हाथ धोना पसन्द करती हूं ॥

भूतनाथ ने उसे बहुत कुछ समझाया, डराया और धमकाया मगर जमना ने एक न सुनी और बराबर उसे जली कटी सुनाती गई आखिर भूतनाथ झल्ला उठा और उठ कर उसने एक ऐसी लात उस बेचारी को मारी कि वह जमीन पर गिर पड़ी, बेहोशी का असर तो हो ही चुका था अस्तु गिरते ही बेहोश भी हो गई ॥

अब भूतनाथ सरस्वती की तरफ घूमा जो बेहोशी के नशे में झूम रही थी, उसने उससे भी कुछ पूछना चाहा मगर मौका न मिला क्योंकि वह बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ी। भूतनाथ भी उसी जगह जमीन पर बैठ गया और हाथ पर सिर रख कर कुछ सोचने लगा ॥

आखिर बहुत देर के बाद भूतनाथ यह कहता हुआ उठा, "खैर अब चाहे जो कुछ हो मगर इन दोनों को तो मैं बिना जान से मारे छोड़ता नहीं, इन्द्रदेव को भला क्या पता लग सकता है कि जमना सरस्वती को भूतनाथ ने मार डाला है। इनको समाप्त कर फिर उस आदमी की खोज करूंगा जिसने यह तस्वीर बनाई है ॥"

बड़ी ही बेदर्दी के साथ भूतनाथ ने बेहोश जमना और सरस्वती का सिर काट डाला और तब उनकी लाशों को एक गड्ढे में डाल ऊपर से पत्तियां और मिट्टी डाल कर छिपाने बाद यह कहता हुआ वहां से चला—"इन दोनों ने भी बड़ा ही अन्धेर मचा रक्खा था,

इनके मारे सुख की नींद सोना हराम हो गया था। चलो इधर से तो फुरसत मिली !!"

गदाधरसिंह कुछ ही दूर गया होगा कि पीछे से किसी ने कहा, "भला भला गदाधरसिंह ! कोई हर्ज नहीं अगर मैं जीता रहा तो बिना इसका बदला लिये कभी न छोड़ूंगा ॥"

भूतनाथ यह आवाज सुनते ही पीछे लौटा और इधर उधर गौर से देखने लगा मगर कहीं भी कोई आदमी न दिखाई पड़ा आखिर सुस्त और उदास उसने जमानिया का रास्ता लिया ॥

तेरहवां बयान ।

एक औरत और प्रभाकरसिंह के पीछे २ चल कर इन्द्रदेव और दलीपशाह भी उस पिण्डी के पास पहुंचे मगर वहां कोई भी दिखाई न पड़ा । दोनों आदमियों ने इधर उधर घूम फिर कर बहुत देखा मगर जब कुछ भी पता न लगा तो इन्द्रदेव बोले, "बेशक वे दोनों तिलिस्म में चले गये ॥"

दलीपशाह० । तो अब क्या करना चाहिये ? आप तो तिलिस्म के भीतर जा कर भी उनका पीछा कर सकते हैं ?

इन्द्रदेव० । हां कर सकता हूं मगर ऐसा करना इस समय ठीक न होगा । इसमें बहुत समय लग जायगा और यह मौका ऐसा आ पड़ा है कि मैं अपने घर से ज्यादा देर तक अलग नहीं रहा चाहता ॥

दलीप० । बेशक इस समय आप पर बड़ा भारी तरद्दुद आ पड़ा है और खास कर जमना सरस्वती का मारा जाना......

इन्द्र० । खैर उस बात की तो मुझे इतनी चिन्ता नहीं है पर......

दलीप० । कैसी चिन्ता नहीं है ? क्या जमना सरस्वती मारी नहीं गईं ?

इन्द्रदेव० । नहीं मगर गायब जरूर हो गई हैं ॥

दलीप० । (खुश हो कर) तो क्या वे दोनों कोई दूसरी ही थीं जिनके मारे जाने का हाल मैंने सुना था ?

इन्द्रदेव० । वे दोनों जमना सरस्वती की दो लौंडियां थीं जिन्हें जमना सरस्वती की सूरत में मैंने बना रक्खा था ॥

इतना कह इन्द्रदेव ने जमना इत्यादि के विषय में जो कुछ चालाकी की थी वह दलीपशाह से कह सुनाया पर दयाराम का जिक्र न किया। सब हाल सुन दलीपशाह ने कहा, "खैर, उन दोनों के मारे जाने का डर तो जाता रहा पर यह तरद्दुद रह गया कि उस विचित्र घाटी में से वे कहां गायब हो गईं॥"

इन्द्रदेव०। बस यही तरद्दुद तो बड़ा भारी है कुछ मालूम नहीं होता कि वे चली कहां गईं॥

दलीप०। और इस बात का पता लगा कि उन नकली जमना सरस्वती को किसने मारा?

इन्द्र०। वह काम तो गदाधरसिंह का था। मेरे एक शागिर्द ने अपनी आंखों उसे ऐसा करते देखा॥

दलीप०। यह दुष्ट किसी तरह भी राह पर आता दिखाई नहीं पड़ता, ज्यों ज्यों आप उसे छोड़ते जाते हैं त्यों त्यों वह और सिर चढ़ता जाता है, मैं आपकी यह चाल बिलकुल पसन्द नहीं करता। मुझे विश्वास है कि यदि आप ऐसा करते जायंगे तो किसी न किसी दिन वह आप पर भी अवश्य वार करेगा क्योंकि इस बात को तो वह अब अच्छी तरह जान ही गया है कि आप जमना सरस्वती की मदद पर हैं॥

इन्द्र०। मुझ पर तो वार वह कदाचित न करे, पर कुछ ठीक भी नहीं है उसका स्वभाव बड़ा खराब है जो न कर जाय थोड़ा है। अच्छा चलो अब यहां ठहर कर क्या करेंगे॥

दलीप०। हां चलिये, मगर आप अब इस जगह पर ध्यान अवश्य रक्खें बल्कि अगर मौका मिले तो तिलिस्म के अन्दर जा कर भी प्रभाकरसिंह को खोजें, मैं भी अपने शागिर्दों को यहां तैनात करूंगा॥

दोनों आदमी आपुस में धीरे धीरे बातें करते हुए उधर ही को लौटे जिधर से आये थे। इस समय रात आधी के करीब जा चुकी थी पर शुक्लपक्ष होने के कारण इन दोनों को उस बेढङ्गे रास्ते पर चलने में ज्यादा तकलीफ नहीं हो सकती थी॥

उस टीले पर से उतरने बाद जिस पर वह मकान बना हुआ था ये दोनों बहुत दूर नहीं गये होंगे कि पगडण्डी के बगल ही से एक विचित्र ढङ्ग की सीटी के बजने की आवाज आई, यह आवाज बहुत ही

धीमी थी और इसके सुनते ही दलीपशाह ने भी वैसी ही सीटी बजा कर जवाब दिया, पुनः सीटी की आवाज आई और एक आदमी इन दोनों के सामने आ सलाम कर खड़ा होगया। इन्द्रदेव ने इस आदमी को पहिचाना, यह दलीपशाह का एक प्यारा शागिर्द था और इसका नाम गिरजाकुमार था॥

दलीप०। (गिरजाकुमार से) क्या हाल है? कुछ पता लगा?

गिरजा०। जी हां बहुत कुछ, आपका खयाल ठीक निकला वह गौहर ही है॥

दलीप०। किस नीयत से वह यहां आई है?

गिरजा०। ठीक ठीक पता तो नहीं लगा मगर उसका इरादा भूतनाथ के ही विषय में कुछ जानने का मालूम होता था मगर भूतनाथ ने उसे कैद कर लिया॥

दलीप०। कैद कर लिया! सो कब?

गिरजा०। बस उसी रोज जिस रोज उसे आपने देखा था। गदाधरसिंह ने भी किसी तरह उसे देख लिया और उसका पीछा कर उसे पकड़ लिया। पर वह छूट जायगी क्योंकि गदाधरसिंह ने उसे लामाघाटी में ही कैद किया है और वहां ही उसकी रामदेई भी रहती है॥

दलीप०। और ऐसों में दोस्ती हो जाना कुछ कठिन भी नहीं है। खैर और भी कुछ मालूम हुआ?

गिरजा०। हां और भी कई बातें मालूम हुई हैं मगर वह निश्चिन्ती में सुनने लायक हैं इस समय कहने योग्य नहीं। आप ऊपर टीले पर गये थे, कुछ पता लगा?

दलीप०। हां प्रभाकरसिंह दिखाई पड़े मगर वहीं गायब होगये, उस स्थान को भी तिलिस्म से कुछ सम्बन्ध है और वे शायद तिलिस्म ही में चले गये हैं, उनके साथ एक औरत भी है॥

गिरजा०। वही औरत होगी जिसे कई दफे इधर से आते जाते हमलोग देख चुके हैं॥

दलीप०। हां वही है॥

गिर०। तो प्रभाकरसिंह का पता लगाना चाहिये कि कहां गये?

दलीप०। हां और यह काम मैं तुम्हारे सुपुर्द किया चाहता हूं,

तुम यहां मौजूद रहो और इस बात का पता बराबर लगाते रहो कि कौन आदमी यहां आते जाते हैं, तथा यदि प्रभाकरसिंह दिखाई पड़ें तो मुझे या (इन्द्रदेव की तरफ बता कर) इन्हें जिसको मुनासिब समझो खबर दो ॥

गिरजा० । बहुत अच्छा ॥

इन्द्र० । तुम्हारे और भी तो साथी होंगे ?

गिरजा० । जी हां कई हैं, कोई नई बात होने से आपको तुरत खबर दी जायगी ॥

इन्द्रदेव० । बस ठीक है (दलीप से) तो चलिये इन्हें यहीं छोड़ दीजिये, बहुत रात गुजर गई ॥

दलीप० । (गिरजाकुमार से) मेरा घोड़ा कहां है ?

गिरजा० । पास ही में है, अभी लाया ॥

इतना कह गिरजाकुमार चला गया और थोड़ीही देर में दलीपशाह का घोड़ा लिये हुए आ पहुंचा, इस बीच में इन्द्रदेव ने भी अपना घोड़ा खोल लिया जिसे पासही में बांधा हुआ था और दोनों आदमी घोड़ों पर सवार हो जङ्गल के बाहर की तरफ चले ॥

इन्द्र०। यह गौहर कौन है जिसके बारे में तुम बातें कर रहे थे॥

दलीप० । उसी पटने वाले शेरअली खां की लड़की है ॥

इन्द्र० । शेरअली तो बड़ा जबर्दस्त आदमी है उसकी लड़की इस तरह खुलेआम घूमती फिरती है ॥

दलीप०। मैं नहीं कह सकता कि क्या बात है ? शायद यह बात हो कि शिवदत्त और शेरअली में आज कल बड़ी दोस्ती हो रही है और शिवदत्त ही के सबब से आपके दारोगा साहब भी शेरअली के मित्र हो रहे हैं ॥

इन्द्र० । जो कुछ हो ॥

दलीप० । एक बात की खबर आपको न लगी होगी ॥

इन्द्र० । सो क्या ?

दलीप० । शिवदत्त ने भी अब हाथ पांव फैलाना शुरू किया है, प्रभाकर, इन्दुमति और दिवाकरसिंह इत्यादि को पकड़ने के लिये उसने कई ऐयार भेजे हैं तथा दारोगा से भी मदद मांगी है, उसके कई ऐयार यहां पहुंच भी गये हैं ॥

आदमियों पर पड़ी जिनमें दो एक औरतें भी मालूम होती थीं। एक तरफ आग सुलग रही थी जिस पर कुछ भोजन का सामान तैयार हो रहा था तथा दूसरी तरफ एक कम्बल बिछा हुआ था जिस पर कोई बैठा न था। ऐसा मालूम होता था कि मानों यहां इन आदमियों का डेरा कई दिन से पड़ा हुआ है, क्योंकि उस जगह आस पास में कई छोटी बड़ी गुफाएँ भी थीं जिनमें से जङ्गल की चीजों को वे आदमी निकाल लाया करते थे। दलीपशाह भी एक पेड़ की आड़ में हो कर उनकी तरफ देखने लगे॥

थोड़ी देर बाद एक गुफा में से सादी पोशाक पहिरे हुए बड़ी २ दाढ़ी मोछों वाला एक आदमी निकला जिसे देखते ही बाहर के सब आदमी उठ खड़े हुए। एक आदमी ने उस कम्बल पर जो वहाँ पड़ा हुआ था एक सफेद कपड़ा डाल दिया और दूसरे ने भीतर आ दो गाव तकिये लाकर रख दिये जिनके सहारे वह आदमी उठँग कर बैठ गया, दो एक आदमी अपने काम में लगे और बाकी के उस आदमी के इर्द-गिर्द बैठ गये। इन लोगों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं जो दूर होने के कारण दलीपशाह बिलकुल नहीं सुन सकते थे॥

कुछ देर तक सोच विचार करने बाद दलीपशाह पेड़ की आड़ से निकले और घबड़ाती सी सूरत बनाये हुए उन लोगों की तरफ बढ़े। इनको आते देख उन लोगों ने अपनी बातें बन्द कर दीं और इनकी तरफ देखने लगे॥

पास पहुंच कर किसान (दलीपशाह ने) सभों को बड़े ही अदब से सलाम किया और हाथ जोड़ कर कहा, "सरकार! मेरी स्त्री को सांप ने काट लिया है और वह (हाथ से बता कर) वहां बेहोश पड़ी है। आपलोगों को देख मैं यहां आ गया, अगर आप में से कोई सांप काटने का इलाज जानता हो तो दया कर मेरे साथ चले, उसे एक आदमी की जान बचाने का पुण्य होगा॥"

इस बात को देहाती ने इस ढंग गिड़गिड़ाहट के साथ कहा कि सभों को उसकी बात पर विश्वास हो गया और सरदार ने उससे पूछा, "तुम्हारी औरत यहां से कितनी दूर है?"

किसान०। बस यहीं थोड़ी दूर पर है। आप लोगों में से कोई चल चलता तो बड़ी दया होती॥

सरदार०। सांप का इलाज तो मैं जानता हूं अगर अपनी स्त्री को तुम यहां ला सको तो कोशिश करें शायद अच्छी हो जाय ॥

किसान०। तो सर्कार अकेले मुझसे तो वह उठाई नहीं जायगी, अगर कोई आदमी साथ हो जाय तो उठा लाऊं ॥

सरदार ने यह सुन एक साथी की तरफ देख कहा, "अनिरुद्धसिंह ! इसके साथ जाओ और उसे उठा लाओ ॥"

अनिरुद्धसिंह "बहुत अच्छा" कहकर उठ खड़ा हुआ और किसान से बोला, "चलो किधर चलें ?"

किसान ने अनिरुद्धसिंह को साथ ले दक्खिन का रास्ता लिया। कई टीले और ऊंची नीची जमीन पार करते हुए जब दोनों दूर निकल गये और कहीं उस किसान की औरत का पता न लगा तो अनिरुद्ध ने पूछा, "तुम्हारी स्त्री कहां है ? इतनी दूर तो निकल आये कहीं दिखाई नहीं पड़ती ॥"

किसान ने कुछ जवाब न दे आगे का रास्ता लिया। कुछ दूर तक अनिरुद्ध साथ चला आखिर फिर रुक कर उसने पूछा, "तुम बोलते क्यों नहीं आखिर तुम्हारी औरत है कहां ? मैं कितनी दूर तक इस तरह तुम्हारे साथ चलूंगा ?"

देहाती किसान ने चारों तरफ देख कर कहा, "यहीं कहीं तो रही कहीं चली गई होगी ॥"

अनिरुद्ध०। जब उसे सांप ने काट लिया तो फिर कहीं कहां गई होगी ? तुम्हीं ने न कहा था कि थोड़ी दूर पर बेहोश पड़ी है ॥

किसान०। हां रही तो थोड़ी ही दूर पर ॥

अनिरुद्ध०। अबे तो अभी तक तेरा थोड़ी दूर पूरा नहीं हुआ, कोसभर चला आया सो क्यों ?

किसान०। मैं सो सब क्या जानूं मैं तो तुम्हारे साथ साथ चला आ रहा हूं ॥

अनिरुद्ध०। अबे मैं तेरे साथ आ रहा हूं या तू मेरे साथ आ रहा है, बता जल्दी कि वह औरत कहां है नहीं अभी मैं लौट जाता हूं ॥

किसान०। अबे तबे करोगे तो जबान खींच लेंगे, बड़ा आया है मुझे अबे तबे करने वाला। कहते तो हैं कि यहीं कहीं होगी बोलते हैं,

अनिरुद्ध को यह सुन गुस्सा आया और वह अकड़ कर बोला, "खबरदार जबान सम्हाल कर बातें कर, गाली गलौज करेगा तो पीट कर रख देंगे ॥"

किसान० । वाह क्या तीसमार खां तुम्हारा ही नाम है ?

किसान की बातें सुनते ही अनिरुद्धसिंह क्रोध में आ उस पर झपट पड़ा और उससे लिपट कर जमीन पर गिरा देने की कोशिश करने लगा मगर इस बात को जैसा सहज उसने माना हुआ था वैसा न पाया । उसने किसान को अपने से बहुत जबर्दस्त पाया और देखते ही देखते किसान ने उसे उठा कर जमीन पर पटक दिया, इसके बाद जबर्दस्ती अपने बटुए में से बेहोशी की दवा निकाल और उसे सुंघा कर बेहोश कर दिया ॥

अनिरुद्ध को बेहोश कर दलीपशाह ने फुर्ती से अपने कपड़े उतार अनिरुद्ध के कपड़े पहिन लिये । उन्हीं कपड़ों में छिपा हुआ दलीपशाह को एक ऐयारी का बटुआ तथा एक खञ्जर मिला जिसे उन्हों ने अपने पास रख लिया । अपने बटुए में से चीजें निकाल उन्होंने अनिरुद्ध वाले बटुये में डाल दी और उस बटुये की चीजें अपने बटुये में डाल बटुआ उसकी कमर में बांध दिया । इसके बाद शीशा सामने रख बटुये में से सामान निकाल अपनी सूरत अनिरुद्ध की सी बनाने लगे । जब ठीक वैसी होगई तो उसकी सूरत अपनी ऐसी बनाई और अपनी चादर उढ़ा उठ खड़े हुए पर कुछ सोच कर फिर बैठे और बटुए में से एक डिबिया निकाली जिसमें किसी प्रकार की मरहम थी । इसे थोड़ा बेहोश अनिरुद्ध की जुबान पर लगाया और वह डिबिया बन्द कर अपने बटुये में रखने बाद सिर हिला कर यह कहते हुए उठ खड़े हुए, "अब कोई हर्ज नहीं ॥"

यहां चार कदम गये होंगे कि सामने से एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया जिसे देखते ही पहिचान गये कि यह उन्हीं आदमियों में से है जिन्हें वे देख आये थे, दलीपशाह को देखते ही उस आदमी ने पुकार कर कहा, "वाह अनिरुद्धसिंह ! तुमने तो घण्टों लगा दिये सरदार बिगड़ रहे हैं कि कुछ और काम का भी फिक्र है या नहीं । वह तुम्हारे साथ वाला देहाती कहां गया ?"

* **दलीपशाह ने जिनको अब हम अनिरुद्धसिंह के नाम से ही पुका-**

इन्द्र० । क्या वास्तव में ऐसा हुआ है !!

दलीप० । बेशक ऐसा ही है ॥

इन्द्रदेव० । तो क्या ताज्जुब कि यह सब कार्रवाइयें उन्हीं की हों और वह औरत भी जो प्रभाकर के साथ थी उन्हीं की कोई ऐयारा हो । तुम्हें इस बात का पता क्योंकर लगा ?

दलीप० । मैंने स्वयम् अपनी आंखों से उन्हें देखा और उनकी बातें सुनीं । मगर अभी उनका कोई ठीक ठीक हाल मुझे मालूम नहीं हुआ है, मैं उनकी फिक्र में लगा हुआ हूं, यदि कुछ पता लगा तो आप से कहूंगा ॥

इन्द्र० । जरूर ॥

अब ये दोनों आम सड़क पर आ पहुंचे, इन्द्रदेव अपने मकान की तरफ रवाना हुए और दलीपशाह जमानिया की तरफ जाने लगे । हम दलीपशाह के साथ चलते और देखते हैं कि वे क्या करते हैं ॥

बाकी रात और करीब दो घण्टे दिन तक दलीपशाह बराबर चले गये, इसके बाद एक पहाड़ी चश्मे के किनारे पहुंच उन्होंने घोड़ा रोका और उतर पड़े । घोड़े को बागडोर से एक डाल के साथ बांध दिया और उसका साज वगैरह उतार दिया । इसके बाद अपने कपड़े उतारे और चश्मे के पानी से हाथ मुंह धोने बाद जरूरी कामों से छुट्टी पाने की फिक्र में लगे ॥

घण्टे भर के भीतर ही दलीपशाह ने स्नान सन्ध्या आदि से छुट्टी पा ली और अपने ऐयारी के बटुए में से कुछ मेवा निकाल कर जल-पान भी कर लिया । इसके बाद एक शीशा सामने रख बटुए में से सामान निकाल कर उन्होंने अपनी सूरत बदलना शुरू किया ॥

थोड़ी ही देर में दलीपशाह ने अपनी सूरत एक देहाती किसान की बनाई और एक मैली-चादर ओढ़ने बाद बटुए को होशियारी के साथ कमर में छिपा लिया । इसके बाद अपने कपड़े तथा घोड़े को जीन वगैरह किसी ठिकाने छिपा दी और तब इधर उधर देखते हुए पश्चिम की तरफ चलने लगे जिधर कई छोटी मोटी पहाड़ियां या ऊंचे टीले दिखाई पड़ रहे थे ॥

बहुत दूर निकल जाने बाद दूर ही से दलीपशाह की निगाह दो पहाड़ियों के बीच के एक दर्रे में बैठे और कुछ करते हुए चार इस

आदमियों पर पड़ी जिनमें दो एक औरतें भी मालूम होती थीं। एक तरफ आग सुलग रही थी जिस पर कुछ भोजन का सामान तैयार हो रहा था तथा दूसरी तरफ एक कम्बल बिछा हुआ था जिस पर कोई बैठा न था। ऐसा मालूम होता था कि मानों वहां इन आदमियों का डेरा कई दिन से पड़ा हुआ है, क्योंकि उस जगह आस पास में कई छोटी बड़ी गुफाएँ भी थीं जिनमें से जरूरत की चीजों को वे आदमी निकाल लाया करते थे। दलीपशाह भी एक पेड़ की आड़ में हो कर उनकी तरफ देखने लगे॥

थोड़ी देर बाद एक गुफा में से सादी पोशाक पहिरे हुए बड़ी २ दाढ़ी मोछों वाला एक आदमी निकला जिसे देखते ही बाहर के सब आदमी उठ खड़े हुए। एक आदमी ने उस कम्बल पर जो वहां पड़ा हुआ था एक सफेद कपड़ा डाल दिया और दूसरे ने भीतर जा दो तीन तकिये लाकर रख दिये जिनके सहारे वह आदमी उठंग कर बैठ गया, दो एक आदमी अपने काम में लगे और बाकी के उस आदमी के इर्द-गिर्द बैठ गये। इन लोगों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं और दूर होने के कारण दलीपशाह बिलकुल नहीं सुन सकते थे॥

कुछ देर तक सोच विचार करने बाद दलीपशाह पेड़ की आड़ से निकले और घबड़ाहट की सूरत बनाये हुए उन लोगों की तरफ बढ़े। इनको आते देख उन लोगों ने अपनी बातें बन्द कर दीं और इनकी तरफ देखने लगे॥

पास पहुंच कर किसान (दलीपशाह ने) सभों को बड़े ही अदब से सलाम किया और हाथ जोड़ कर कहा, "सरकार! मेरी स्त्री को सांप ने काट लिया है और वह (हाथ से बता कर) वहां बेहोश पड़ी है। आपलोगों को देख मैं यहां आ गया, अगर आप में से कोई सांप झाड़ने का इलाज जानता हो तो कृपा कर मेरे साथ चले, एक गरीब आदमी की जान बचाने का पुण्य होगा॥"

इस बात को दलीपशाह ने इतनी गिड़गिड़ाहट के साथ कहा कि सभों को उसकी बात पर विश्वास हो गया और सरदार ने उससे पूछा, "तुम्हारी औरत यहां से कितनी दूर है?"

किसान०। बस यहीं थोड़ी दूर पर है। आप लोगों में से कोई जल्द चलता तो बड़ी कृपा होती॥

सरदार०। सांप का इलाज तो मैं जानता हूं अगर अपनी स्त्री को तुम यहां ला सको तो कोशिश करूं शायद अच्छी हो जाय ॥

किसान०। तो सरकार अकेले मुझसे तो वह उठाई नहीं जायगी, अगर कोई आदमी साथ हो जाय तो उठा लाऊं ॥

सरदार ने यह सुन एक साथी की तरफ देख कहा, "अनिरुद्ध-सिंह! इसके साथ जाओ और उसे उठा लाओ॥"

अनिरुद्धसिंह "बहुत अच्छा" कहकर उठ खड़ा हुआ और किसान से बोला, "चलो किधर चलें?"

किसान ने अनिरुद्धसिंह को साथ ले दक्खिन का रास्ता लिया। कई टीले और ऊंची नीची जमीन पार करते हुए जब दोनों दूर निकल गये और कहीं उस किसान की औरत का पता न लगा तो अनिरुद्ध ने पूछा, "तुम्हारी स्त्री कहां है? इतनी दूर तो निकल आये कहीं दिखाई नहीं पड़ती॥"

किसान ने कुछ जवाब न दे आगे का रास्ता लिया। कुछ दूर तक अनिरुद्ध साथ चला आखिर फिर रुक कर उसने पूछा, "तुम बोलते क्यों नहीं आखिर तुम्हारी औरत है कहां? मैं कितनी दूर तक इस तरह तुम्हारे साथ चलूंगा?"

देहाती किसान ने चारों तरफ देख कर कहा, "यहीं कहीं तो रही कहीं चली गई होगी॥"

अनिरुद्ध०। जब उसे सांप ने काट लिया तो फिर चली कहां गई होगी? तुम्हीं ने न कहा था कि थोड़ी दूर पर बेहोश पड़ी है॥

किसान०। हां रही तो थोड़ी ही दूर पर॥

अनिरुद्ध०। अबे तो अभी तक तेरा थोड़ी दूर पूरा नहीं हुआ, कोस भर चला आया सो क्यों?

किसान०। मैं सो सब क्या जानूं मैं तो तुम्हारे साथ साथ चला आ रहा हूं॥

अनिरुद्ध०। अबे मैं तेरे साथ आ रहा हूं या तू मेरे साथ आ रहा है, बता जल्दी कि वह औरत कहां है नहीं अभी मैं लौट जाता हूं॥

किसान०। अबे तब करेगा तो जबान खींच लेंगे, बड़ा आया है कहने वाला। कहते तो हैं कि यहीं कहीं हाथ पैर मार रहे हैं,

अनिरुद्ध को यह सुन गुस्सा आया और वह अकड़ कर बोला, "खबर्दार ज़बान सम्हाल कर बातें कर, गाली गलौज करेगा तो पीट कर रख देंगे॥"

किसान०। वाह क्या तीसमार खां तुम्हारा ही नाम है?

किसान की बातें सुनते ही अनिरुद्धसिंह क्रोध में आ उस पर झपट पड़ा और उससे लिपट कर ज़मीन पर गिरा देने की कोशिश करने लगा मगर इस बात को जैसा सहज उसने माना हुआ था वैसा न पाया। उसने किसान को अपने से बहुत ज़बर्दस्त पाया और देखते ही देखते किसान ने उसे उठा कर ज़मीन पर पटक दिया, इसके बाद ज़बर्दस्ती अपने बटुए में से बेहोशी की दवा निकाल और उसे सुंघा कर बेहोश कर दिया॥

अनिरुद्ध को बेहोश कर दलीपशाह ने फुर्ती से अपने कपड़े उतार अनिरुद्ध के कपड़े पहिन लिये। उन्हीं कपड़ों में छिपा हुआ दलीपशाह को एक ऐयारी का बटुआ तथा एक खञ्जर मिला जिसे उन्होंने अपने पास रख लिया। अपने बटुए में से चीज़ें निकाल उन्होंने अनिरुद्ध वाले बटुये में डाल दीं और उस बटुये की चीज़ें अपने बटुये में डाल बटुआ उसकी कमर में बांध दिया। इसके बाद शीशा सामने रख बटुये में से सामान निकाल अपनी सूरत अनिरुद्ध की सी बनाने लगे। जब ठीक वैसी होगई तो उसकी सूरत अपनी ऐसी बनाई और अपनी चादर उढ़ा उठ खड़े हुए पर कुछ सोच कर फिर बैठे और बटुए में से एक डिबिया निकाली जिसमें किसी प्रकार की मरहम थी। इसे थोड़ा बेहोश अनिरुद्ध की ज़ुबान पर लगाया और वह डिबिया बन्द कर अपने बटुये में रखने बाद सिर हिला कर यह कहते हुए उठ खड़े हुए, "अब कोई हर्ज नहीं॥"

दो ही चार कदम गये होंगे कि सामने से एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया जिसे देखते ही पहिचान गये कि यह उन्हीं आदमियों में से है जिन्हें वे देख आये थे, दलीपशाह को देखते ही उस आदमी ने पुकार कर कहा, "वाह अनिरुद्धसिंह! तुमने तो घण्टों लगा दिये सरदार बिगड़ रहे हैं कि कुछ और काम का भी फिक्र है या नहीं। वह तुम्हारे साथ वाला दिहाती कहां गया?"

दलीपशाह ने जिनको अब हम अनिरुद्धसिंह के नाम से ही पुका-

रेंने आगे बढ़ कर कहा, "यार क्या बतावें, यह कमबख्त दिहाती तो बड़ा दगाबाज निकला, यहां तक तो यह कहता चला आया कि थोड़ा और आगे है, कुछ दूर और है, और जब यहां पहुंचा तो मुझसे ही बिगड़ खड़ा हुआ और लड़ने लगा। लड़ने के पहिले उसने कई बार सीटी भी बजाई जिससे मैंने समझा कि अपने साथियों को बुला रहा है अस्तु मैंने उसे बेहोश कर दिया है (हाथ से बता कर) वह देखो जमीन पर पड़ा है। अब जो तुम कहो सो करें॥

वह आदमी अनिरुद्ध के साथ बेहोश देहाती के पास आया और उसे गौर से देख बोला, "आखिर यह तुम से क्यों लड़ गया कुछ सबब भी तो मालूम हो॥"

अनिरुद्ध०। मैं क्या जानूं क्या सबब है, शायद मेरे कपड़े इत्यादि देख समझा हो कि अमीर आदमी है इसे तङ्ग करने से कदाचित कुछ मिल जाय॥

नया आदमी०। ऐसा तो नहीं मालूम होता, एक देहाती की इतनी हिम्मत नहीं पड़ सकती कि यकायक एक भले आदमी पर हमला करदे॥

अनिरुद्ध०। बेशक सो तो ठीक है, खैर तो इसे भी उठाये लिये चलो सरदार आपही कुछ निश्चय करेंगे कि क्या बात है॥

नया आदमी०। हां अब तो ऐसा करना ही पड़ेगा। इस को सरदार के पास ले चलना जरूरी है। बांधो गठड़ी तो उठा ले चलें, लो चादर मुझसे लो॥

इतना कह उस आदमी ने कमर से चादर खोल कर दी, और अनिरुद्ध बेहोश दिहाती की गठड़ी बांधने लगा॥

गठड़ी में उस आदमी को बांधते हुए दलीपशाह ने यकायक सोचा कि यदि मैं इसे सरदार के पास ले गया और उसने इसको सूरत धोने का हुक्म दिया तब तो इसकी असली सूरत निकल आवेगी और लोग पहिचान जांयगे कि मैं ऐयार हूं और अनिरुद्ध की सूरत बना हुआ हूं। अस्तु ऐसी तर्कीब करनी चाहिये जिसमें यह वहां तक न जाय। अस्तु कुछ सोच उन्होंने अपने साथी से कहा, "मगर एक बात की तो बड़ी मुश्किल हुई है?"

आदमी०। क्या?

अनिरुद्ध०। इस आदमी ने मुझ पर हमला करने के पहिले कई

इफे सीटी बजाई थी और एक तरफ से उसके जवाब में हलकी सीटी की आवाज भी आई थी। मैं समझता हूं कि इसने अपनी मदद के लिये कुछ आदमियों को बुलाया था और उन्होंने सीटी बजा कर जबाब दिया था। अब हम लोगों को रास्ते में यदि वे आदमी मिल गये तो एक गट्ठर उठाये लेजाते देख जरूर शक करेंगे और ताज्जुब नहीं कि हमें रोक कर देखा चाहें कि गट्ठर में क्या है॥

आदमी०। यदि उन्होंने जान लिया कि इस गट्ठर में उन्हीं का साथी है तब तो वे जरूर हमें गिरफ्तार कर लेंगे॥

अनिरुद्ध०। जरूर ऐसा ही होगा, अस्तु मैं तो यही मुनासिब समझता हूं कि हम लोग इसे गठड़ी में बांध कर इसी जगह कहीं छिपा दें और सरदार से सब हाल जाकर कहें, यदि वह कहेंगे तो सब कोई साथ आकर इसे उठा ले जायंगे॥

आदमी०। मगर सरदार हमें डरपोक तो नहीं बनावेंगे कि दो चार आदमियों के डर से अपने कैदी को छोड़ आये?

दलीप०। नहीं ऐसा भला क्या होगा? क्या वे इतना नहीं समझ सकते कि हम लोग किस खयाल से इसे यहां छोड़ चले हैं॥

वह आदमी दलीपशाह की बातों पर कुछ नीम राजी सा होगया और दलीपशाह उस गट्ठर को कहीं छिपाने की फिक्र में लगे ही थे कि पीछे की तरफ निगाह पड़ने पर उन्होंने उसी आदमी को जिसे सरदार के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं कई साथियों सहित इसी तरफ तेजी से आते देखा। देखते ही देखते वे लोग पास आ पहुंचे और सरदार ने इन दोनों के पास पहुंच दलीपशाह से कहा, "क्यों अनिरुद्धसिंह! इतनी देर से तुम यहां क्या कर रहे हो? मुझे पक्की खबर लगी है कि दलीपशाह को जो हमारा सबसे भारी दुश्मन है हम लोगों के यहां होने का पता लग चुका है और वह किसी फिक्र में इसी तरफ आया हुआ है। तुम दोनों ने उसे कहीं देखा तो नहीं है?"

चौदहवां बयान ।

भूतनाथ के विचित्र स्थान लामाघाटी से हमारे पाठक अपरिचित नहीं होंगे, क्योंकि चन्द्रकान्ता सन्तति में कई जगह इस स्थान का नाम आ चुका है। भूतनाथ इस स्थान को बहुत ही गुप्त समझ कर इसी में अपने कैदियों को रखता था और कैदियों के सिवाय अपनी उन चीजों को भी जिनको वह बेशकीमत समझता था या जिनका दुश्मनों के हाथ लग जाना वह अपने हक में बुरा समझता था वह इसी जगह कहीं रखता था। खास करके जब से कला और बिमला के कारण तङ्ग होकर भूतनाथ ने उस तिलिस्मी घाटी को छोड़ दिया था जिसमें पहिले रहता था तब से यह लामाघाटी उसका और भी मुख्य अड्डा हो गया था॥

इसी लामाघाटी के एक हिस्से में जिधर की इमारत का बहुत कुछ हिस्सा टूटा फूटा होने पर भी बाकी बचा हुआ हिस्सा मजबूत और रहने लायक बना हुआ है हम एक कोठड़ी में उसी गौहर को सुस्त और उदास कैदी की हालत में बैठे हुए देखते हैं जिसका जिक्र इस खण्ड के दूसरे बयान में आ चुका है। यद्यपि इस कमसिन और खूबसूरत लड़की के हाथ पैर बंधे हुए नहीं हैं और न उस कोठड़ी में हम कोई जङ्गला या दरवाजा ही लगा हुआ देखते हैं जिसमें वह बैठी हुई है तथापि हम खूब जानते हैं कि वह यहां कैद है। इस कोठड़ी के बाहर निकलने की गौहर को इजाजत नहीं है और न इस घाटी में रहने वाले आदमियों में से ही कोई इससे बात कर सकता है। सुबह, दोपहर और शाम को सिर्फ एक आदमी आकर इसकी जरूरियात को दूर कर जाता है और उसके सिवाय फिर इसे किसी आदमी की सूरत नहीं दिखाई देती और न इस घाटी के बाहर निकलने की ही कोई तर्कीब दिखाई पड़ती है, तथापि यह लड़की अभी तक हताश नहीं हुई है और उसके होठों और आंखों से कभी कभी किसी खयाल के साथ प्रगट हो जाने वाली मुसकुराहट साफ कहे देती है कि इसे आज ही कल में इस स्थान से निकल जाने की पूरी आशा बंधी हुई है॥

समय सन्ध्या का है और इस कारण घाटी में सन्नाटा छाया हुआ है क्योंकि यहां के आदमियों में से दो एक को छोड़ बाकी के सभी

बाजादबी के लिये बाहर गये हुए हैं जो यहां के रहने वालों के लिये एक जरूरी काम है क्योंकि ये सभी आदमी भूतनाथ के शागिर्द और ऐयार हैं और भूतनाथ के हुक्म के इलावे अपनी इच्छा से भी बराबर भेष बदल कर इधर उधर घूमते हुए भूतनाथ का काम करते और गुप्त भेदों का पता लगाने की फिक्र में पड़े रहते हैं। यही सबब है कि यहां इस समय कोई आदमी खास तौर पर गौहर की निगहबानी के लिये मुस्तैद नहीं दिखाई दे रहा है जिसके सबब से उस औरत को यहां आने में तरद्दुद हो जो एक मोटी चादर ओढ़े पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाती हुई सामने की तरफ से इधर ही आ रही है॥

थोड़ी देर में वह औरत पास आ गई और तब सावधानी से इधर उधर देख कर उसने उस जगह पैर रक्खा जहां गौहर बैठी हुई थी। उसे देखतेही गौहर प्रसन्नता के साथ उठ खड़ी हुई और मुसकुराती हुई दो कदम आगे बढ़ कर बोली, "आओ सखी! चारे किसी तरह आई तो सही! मैं तो समझी थी कि तुम अपना वादा पूरा न करोगी, शायद भूल ही गई हो॥"

औरत०। नहीं नहीं भला अपना वादा मैं कभी भूलती हूं! मेरे आने में देर होने का सबब यही हुआ कि उनके शागिर्द लोगों के जाने की मैं राह देख रही थी। जब सिर्फ दो आदमियों को छोड़ बाकी सब घूमने फिरने चले गये तो मैं इधर आई सो भी अपने को उन दोनों की निगाह से बचाती हुई क्योंकि मुझे यद्यपि मालिक ने तुम से मिलने से मना नहीं किया है तो भी तुमसे मिल कर किसी तरह का शक उनके दिल में पैदा करना मैं मुनासिब नहीं समझती॥

गौ०। मैं उम्मीद करती हूं कि इस वादे की तरह अपना दूसरा वादा भी तुम नहीं भूलोगी (हाथ पकड़ कर) अच्छा सखी बैठो तो सही!!

वह औरत और गौहर दोनों एक कम्बल पर जो वहां बिछा हुआ था बैठ गईं और तब उस औरत ने अपनी चादर जो वह ओढ़े हुए थी उतार दी। इस समय इसकी खूबसूरती या नखसिख का वर्णन कर हम व्यर्थ पाठकों का समय खराब नहीं किया चाहते पर इतना बता देना जरूरी है कि यह औरत भूतनाथ की दूसरी स्त्री है और इसी का नाम रामदेई है॥

रामदेई०। (बैठने बाद) नहीं नहीं मैं अपना दूसरा वादा भी न

भूलूंगी, तुम्हें ज़रूर इस जगह के बाहर निकाल दूंगी और मुमकिन है कि वह दिन भी आज ही हो जब तुम स्वतंत्रता की हवा खाती दिखाई दो पर एक दो सवाल मैं तुमसे अवश्य पूछा चाहती हूं ॥

गौहर०। हां हां खुशी से पूछो,जो कुछ मैं जानती हूं अवश्य कहूंगी॥

रामदेई०। पहिली बात तो यह कि तुम यहां क्यों इस तरह पर घूम फिर रही थीं जब उन्होंने (भूतनाथ ने) तुम्हें गिरफ़ार किया और दूसरी बात यह कि तुम्हारी तरफ से जो आदमी दो एकबार मुझसे काशी जी में मिल और बातें कर चुका है वह क्या वास्तव में तुम्हारा ही आदमी है ?

गौहर०। हां वह मेरा ही आदमी था ॥

राम०। मगर उसकी मारफत जिस किस्म की बातें......

गौहर०। देखो मैं दोनों बातों का जवाब तुम्हें देती हूं। मेरी मां के मरने का हाल तो तुमने सुना ही होगा ॥

राम०। हां मैं सुन चुकी हूं ॥

गौहर०। मैं अपनी मां को बहुत चाहती थी और उसके मर जाने पर एक तरह पर मैं पागल सी हो गई। मेरे बाप ने यह देख मुझे स्वतन्त्र कर दिया और मैं थोड़े से आदमियों को ले इधर उधर घूमा करती हूं। इसी तरह एक दफे मैं चुनार भी गई थी। वहां के राजा बीरेन्द्रसिंह के दो लड़के हैं जिन्हें तुम शायद जानती हो ॥

राम०। हां हां मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूं इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उनका नाम है और दोनों बड़े ही खूबसूरत और बहादुर भी हैं ॥

गौहर०। इन्द्रजीतसिंह तो ऐसे कुछ नहीं हैं पर आनन्दसिंह बड़े ही खूबसूरत और मनचले हैं उनको जब मैंने देखा (गरदन नीची कर के) तो.........

राम०। हां हां ठीक है मैं समझ गई अच्छा तब ?

गौहर०। मैंने बहुत कोशिश की कि किसी तरह आनन्दसिंह से मिलूं पर उन्होंने मेरी तरफ ध्यान भी नहीं दिया तब मुझे बड़ा क्रोध आया पर मैं कर ही क्या सकती थी लाचार मन मार वहां से चल दी। फिर एक दिन घूमते फिरते शिवदत्तगढ़ पहुंची जिसे चुनार के पिछले राजा शिवदत्त ने बसाया है। वहां मालूम हुआ,कि

राजा शिवदत्त उन दोनों कुमारों को गिरफ़ार कर अपना पुराना वैर जो वीरेन्द्रसिंह से है चुकाया चाहते हैं अस्तु मैं भी अच्छा मौका देख कर शिवदत्त के साथ होगई। वह मेरे बाप को अच्छी तरह जानता था इससे मुझे ज्यादा परिचय आदि देने की जरूरत न पड़ी--(रुक कर) अब इस समय उसी के एक काम से मैं यहां आई हुई थी जब तुम्हारे पति ने मुझे गिरफ़ार कर लिया। मैं नहीं कह सकती कि उन्हें मुझ पर किस तरह का सन्देह हुआ जो वे मुझसे रञ्ज हो बैठे। क्या तुम इस बारे में कुछ कह सकती हो कि उन्होंने मुझे क्यों गिरफ़ार किया ?

रामदेई०। भला मैं क्या कह सकती हूं वे जानें उनका काम जाने, मैं उनकी बातों में दखल नहीं देती। शायद उन्हें तुम्हारे पर कुछ शक हो गया हो॥

गौहर०। मैंने उनके विषय में तुम से जो बातें पुछवाईं उनका पता कदाचित उन्हें लग गया हो और वे समझ बैठे हों कि मैं उन से दुश्मनी रखती हूं॥

रामदेई०। नहीं तुम्हारी मेरी बातों का पता तो उन्हें नहीं लगा है, अगर ऐसा होता तो मुझे इस बात की खबर जरूर होती। कुछ और ही बात है॥

गौहर०। तो कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि तुम इधर मुझे कैद से रिहाई दो तो उधर आप ही तरद्दुद में पड़ जाओ और तुम पर लोग शक करने लगें कि इसी ने गौहर को भगा दिया है!!

रामदेई०। नहीं ऐसा न होगा। एक तो इन आदमियों की जो इस समय यहां हैं इतनी हिम्मत नहीं होगी कि मुझ पर ऐसा शक करें दूसरे मैं आज ही यहां से जाने वाली हूं॥

गौहर०। क्या तुम जाओगी ? तो फिर मेरी क्या दशा होगी ? क्या मैं यहीं पड़ी सड़ा करूंगी ? तुम्हारे सिवाय तो और कोई यहां ऐसा दोस्त भी दिखाई नहीं देता जिसके पास बैठ कर कुछ बातचीत कर तबीयत तो बहला सकूं॥

रामदेई०। नहीं नहीं, मैं जाऊंगी तो क्या तुम्हारा कुछ बन्दोबस्त किये बिना ही चली जाऊंगी ? ऐसा तुम स्वप्न में भी खयाल न करना। मैं तुम्हारा कुछ बन्दोबस्त किये बिना यहां से नहीं जाने की॥

गौहर० । हां यही तो मेरा भी विश्वास है ॥

रामदेई० । (कुछ देर चुप रह कर) अच्छा तुम यहां से छूट कर कहां जाओगी और क्या करोगी ?

गौहर० । यह तो मैं अभी ठीक ठीक नहीं कह सकती । एक बार जमानियां तो अवश्य जाऊंगी, फिर वहां से चाहे जहां जाऊं । आज कल जमानिया में शिवदत्तसिंह के कई ऐयार भी आये हुए हैं ॥

रामदेई० (आश्चर्य से) सो क्यों ?

गौहर० । मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती । प्रभाकरसिंह वगैरह को गिरफ्तार करने की फिक्र में शायद आये हुए हैं ॥

रामदेई० । कौन प्रभाकरसिंह ?

गौहर० । वही शिवदत्त के सेनापति जिनकी स्त्री इन्दुमति को शिवदत्त अपने महल में डाला चाहता था । क्या तुम उसे नहीं जानती ?

रामदेई० । नहीं नहीं मैं उसे बखूबी जानता हूं मगर वह तो मर गया न ?

गौहर० । वह यह तुमसे किसने कहा कि प्रभाकरसिंह मर गये !!

रामदेई । क्या वह नहीं मरे ?

गौहर० । नहीं कदापि नहीं, इधर दस पांच दिन का हाल तो मैं नहीं कह सकती पर इसके पहिले तक तो ऐसा नहीं हुआ था ॥

रामदेई० । (कुछ सोचती हुई) हूं ! प्रभाकरसिंह नहीं मरे ! तब मुझे यह झूठी खबर दी गई ! (चुप रह कर) अच्छा तो इस प्रभाकरसिंह को शिवदत्त पुनः पकड़ा चाहता है ?

गौहर० । हां ! शिवदत्त के पास ताकत हो गई है अब वह चुन चुन कर अपने दुश्मनों से बदला लेंगे ॥

रामदेई० । (धीरे से) मगर शिवदत्त के दुश्मनों में तो वह (भूतनाथ) भी हैं !!

गौहर० । (मुस्कुराती हुई) हां हैं तो सही ॥

रामदेई ने यह सुन धीरे से गौहर के कान में कुछ कहा जिसके जवाब में उसने भी रामदेई के कान में मुंह लगा कर कुछ कहा । इसके बाद इन दोनों औरतों में इतने धीरे धीरे बातें होने लगीं कि हम भी न सुन सकें ॥

इन दोनों की बातचीत बड़ी रात गये तक इसी तरह होती रही

और तब रामदेई ने उठते हुए कहा, "अच्छी बात है, तो मैं अपना यहां से काशी जाना दो एक दिन के लिये रोक देती हूं। उनके आने की खबर है और ताज्जुब नहीं कि आज कल में वे यहां आ जायें। आने पर जोर दे कर मैं पूछूंगी कि असल बात क्या है। यह तुमने बड़े ताज्जुब की बात कही है और जब तक असल बात का मुझे पता नहीं लगेगा मेरे पेट में पानी नहीं पचेगा॥"

गौहर०। (खड़ी हो कर) मैंने जो कुछ कहा है उसमें तुम रत्ती भर का फर्क न पाओगी। अच्छा तो आज आधी रात को मैं तुम्हारी राह देखूं?

राम०। हां मैं अवश्य आऊँगी॥

इतना कह रामदेई ने अपनी चादर से पुनः अपने को अच्छी तरह ढांप लिया और तब उसी तरफ लौट गई जिधर से आई थी। गौहर कुछ देर तक उधर देखती रही और तब यह कहती हुई ठिकाने गई, "अब इनमें लड़ाई तो हो जायगी! ऐसा होने से ही तो मेरा काम चलेगा और मैं गदाधरसिंह के भेदों का पता लगा कर शिवदत्त की निगाहों में ऊँची होऊँगी॥"

रात आधी से कुछ ऊपर जा चुकी है। कामाघाटी में चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। कोई कहीं हिलता डुलता दिखाई नहीं देता क्योंकि यहां की गुलाबी सर्दी किसी को चादर के बाहर मुंह निकालने की इजाजत नहीं देती। यद्यपि दिन के समय यह 'घाटी' उजाड़ और जङ्गली झाड़ियों और खंडहरों के कारण कुछ भयानक सी मालूम होती थी पर इस समय के चन्द्रदेव की शीतल किरणों ने यहां की भयङ्करता को दूर कर एक प्रकार की रमनीयता पैदा कर दी है जिस पर गौहर आश्चर्य की निगाह डालती हुई सोच रही है कि यही स्थान जो इस समय इतना रमणीक मालूम हो रहा है दिन के समय कैसा विकट मालूम पड़ता था। कदाचित गौहर के निगाह के इस परिवर्तन का कारण यह हो कि दिन के समय वह कैदी थी और इस समय यहां से निकल भागने की पूरी उम्मीद में है। अपने सामने के दृश्य से होती हुई उसकी निगाह कभी २ उस तरफ भी जा पहुंची है जिधर भूतनाथ के दूसरे शागिर्दों और रामदेई का डेरा है और कभी कभी सोये हुये उस आदमी के खुर्राटों की तरफ भी उसका ध्यान चला

आता है जो उसकी निगहबानी के लिये रात को वहां ही एक तरफ दालान में रहता है पर इस समय नींद के कारण बदहोश हो कर यह नहीं देख रहा है कि वह औरत जिस की रक्षा के लिये वह यहां मुकर्रर किया गया था भागा ही चाहती है॥

यकायक गौहर की निगाह काली चादर ओढ़े हुए किसी आदमी पर पड़ी जो घने पेड़ों की छाया में अपने को छिपाता हुआ उधरही को आ रहा था। उसे देखते ही नागर के मुंह पर प्रसन्नता छा गई और एक निगाह उस तरफ और डाल कर वह यह कहती हुई पीछे हटी, "आ पहुंची! अब मुझे भी तैयार हो जाना चाहिये॥"

गौहर ने उस कोठड़ी में जा जिसमें वह एक तौर पर कैद सी रहती थी अपने कपड़े पहिने और दुरुस्त किये। दो एक चीजें जिनकी कोई जरूरत न समझी वहीं छोड़ीं और तब एक निगाह गौर से चारों तरफ डाल वह पुनः बाहर निकल आई। वह आदमी जिसे काली चादर ओढ़े उसने अपनी तरफ आते देखा था एक पेड़ की आड़ में खड़ा था। गौहर उसके पास चली गई और बड़ी प्रसन्नता के साथ बोली, "कहो सखी सब ठीक है!!"

इसके जवाब में उस आदमी ने जो वास्तव में रामदेई थी जवाब दिया, "हां सखी सब ठीक है बस अब चलने ही की देर है। (कंधे पर से एक और काली चादर उतार कर) लो इसे तुम ओढ़ लो तुम्हारे लिये लेती आई हूं॥"

गौहर ने वह चादर ओढ़ ली, दोनों कुछ देर तक चुपचाप खड़ी आहट लेती रहीं और जब सन्नाटा मालूम हुआ तो धीरे धीरे घाटी के बाहर की तरफ रवाना हुईं॥

लामाघाटी के बाहर आने अथवा वहां जाने के रास्ते का हाल लिखने की इस जगह कोई आवश्यकता नहीं मालूम होती क्योंकि चन्द्रकान्ता सन्तति में इसके रास्ते का हाल खुलासा तौर पर लिखा जा चुका है अस्तु इस विषय में कुछ न कह कर हम केवल इतना ही कहते हैं कि गौहर को साथ लिये हुए रामदेई बेखटके उस पेचीली घाटी के बाहर निकल आई और घाटी के किसी आदमी को इस बात का पता न लगा। लगभग आधे घण्टे के भीतरही रामदेई और गौहर एक छोटी पहाड़ी पर दिखाई देने लगीं जो लामाघाटी के भीतर अभी

का पहिला दर्वाजा सा था और अपने चारों तरफ निगाह दौड़ाने लगी। चारो तरफ दूर २ तक जहां निगाह जाती थी जङ्गल मैदान ही नजर आता था और चन्द्रमा की रोशनी में किसी आदमी की सूरत दिखाई न देती थी॥

दोनों औरतें कुछ देर तक चुपचाप इधर उधर निगाहें दौड़ाती रहीं इसके बाद दो चार गुप्त बातें कर रामदेई ने गौहर को बिदा किया और जब वह सकुशल उस छोटी पहाड़ी के नीचे पहुंच गई तो पुनः अपने घर की तरफ लौटी॥

अभी रामदेई बहुत दूर न गई होगी कि यकायक किसी प्रकार की आहट पा उसने पीछे घूम कर देखा और एक आदमी को पहाड़ी पर चढ़ते देख उसका कलेजा उछलने लगा। पहिले तो उसने सोचा कि इधर उधर कहीं छिप जाऊं पर जब उसे विश्वास हो गया कि मेरी तरह उस आदमी ने भी मुझे देख लिया है तो लाचारी समझ वह उसी जगह रुक गई मगर कपड़े के भीतरही उसने एक खञ्जर जरूर निकाल लिया जो कमर में खोंसे हुए वह अपने साथ लाई थी। इस बीच में वह आदमी भी और पास आ पहुंचा और अब यह देख रामदेई की हालत और भी खराब हो गई कि वह और कोई नहीं स्वयम् भूतनाथ है॥

देखते देखते भूतनाथ उसके पास आ पहुंचा और अपनी खास परदे के भीतर रहने वाली स्त्री को इस प्रकार आधी रात के समय वहां खड़ा देख आश्चर्य करने लगा॥

पन्द्रहवां बयान।

अमानिया राज्य में आज बड़ा ही हड़कम मचा हुआ है क्योंकि आज सुबह को राजमहल की चौमुहानी पर राजा के खास मुसाहब और मित्र तथा अमानिया के प्रसिद्ध रईस दामोदरसिंह की लाश पाई गई है जिसके सर का पता न था। सारे शहर में इस बात का कोलाहल सा मचा हुआ था और जगह जगह लोग इकट्ठे हो कर इसी की चर्चा करते हुए अफसोस के साथ कह रहे थे, "हाय हाय! इस बेचारे की जान न जाने किस हत्यारे ने ली। यह तो किसी के

साथ भी दुश्मनी करना जानता न था फिर किस कारण इसकी यह दशा हुई !!"

केवल एक इसी बात की नहीं बल्कि इसे ले कर और भी कई प्रकार की गप्पें और बनावटी खबरें शहर में उड़ रही हैं जिनमें यदि बुद्धिमानों को नहीं तो अनपढ़ और बेवकूफों को अवश्य विश्वास हो रहा है। कोई इसे किसी प्रेत की कार्रवाई समझता है तो कोई डाकू लुटेरों की। कोई इस काम को किसी षड्यन्त्र करने वाली सभा का काम बताता है तो कोई इसे किसी दूसरी जगह के राजा की करतूत कहता है, तथा यह बात भी रह रह कर किसी किसी के मुंह पर सुनाई पड़ती है कि "इसी प्रकार रोज शहर के एक रईस की जान ली जायगी और अन्त मे राजा साहब भी इसी तरह मारे जायगे।" मगर ऐसी बातो पर विश्वास करने वाले बहुतही कम पाये जाते थे॥

खैर जाने दीजिये इन सब बातों मे तो कोई तत्व नहीं है और न इन अनपढ़ लोगों में इतनी वुद्धि ही है कि किसी गूढ़ मामले का कारण समझ सकें, हम तो आपको ले कर खास राजा साहब के महल में चलते हैं और देखा चाहते हैं कि वहां क्या हो रहा है॥

खास महल की एक लम्बी चौड़ी बारहदरी में राजा गिरधरसिंह सुस्त और उदास बैठे हुए हैं। राजा साहब की आंखों से रह रह कर आंसू टपकते हैं जिन्हें वे रूमाल से पोंछते जाते हैं। सामने ही एक सङ्गमर्मर की बड़ी चौकी पर दामोदरसिंह की सिर कटी लाश पड़ी हुई है जिस पर बार बार उनकी निगाह जाती है और वे लम्बी सांस ले कर गरदन फेर लेते हैं॥

उनकी गद्दी से कुछ दूर हट कर बाई तरफ हम दारोगा साहब को बैठे हुए देख रहे हैं जिनके बाद दो तीन और मुसाहब भी गरदन झुकाये बैठे हुये हैं। राजा साहब की तरह दारोगा की आंखों से भी आसू गिर रहे हैं जो रोके नहीं रुकते हैं और उसे बात करने की इजाजत भी नहीं देते हैं। बार २ वह आंसू पोछ कर और दिल सम्हाल कर राजा साहब की बात का जवाब दिया चाहता है जो उसकी तरफ कुछ गौर के साथ झुके हुए अपनी बात का जवाब सुना चाहते हैं पर उसकी आंख के आंसू उसे बोलने नहीं देते और वह बार बार मुंह खोलने पर भी कोई बात बाहर निकाल नहीं सकता है॥

आखिर बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाल कर दारोगा ने कहा, "महाराज मैं क्योंकर बताऊँ कि यह काम किसका है, किस दुष्ट पापी ने हमारे खैरखाह दामोदरसिंह की जान ली यह मैं क्योंकर जान सकता हूं ! हां इतना मैं अवश्य कह सकता हूं कि चाहे मेरी जान इसके लिये चली जाय तो कोई परवाह नहीं पर मैं इनके खूनी का पता अवश्य लगाऊँगा ॥"

महा० । सो तो ठीक है मगर मेरी बात का जवाब आपने नहीं दिया । क्या उस गुप्त कमेटी का पता हम लोगों को कुछ भी नहीं लगेगा जिसके विषय में मैं बहुत कुछ सुन चुका और आपको सुना भी चुका हूं । मुझे विश्वास है कि यह काम भी उसी कमेटी का है और उसी कमेटी ने (लाश की तरफ बता कर) इस बेचारे की जान ली है ॥

इतना कह महाराज कुछ रुके मानो दारोगा से कुछ जवाब पाने की आशा करते हों मगर जब उसने कुछ न कह कर सिर झुका लिया तो वे बोले, "और मुझे बार बार यह सन्देह होता है कि आप उस कम्बख्त कमेटी का हाल अच्छी तरह नहीं तो कुछ कुछ जरूर जानते हैं मगर मुझे बताया नहीं चाहते ॥"

महाराज की बात सुन दारोगा दिल ही दिल में कांप गया मगर अपने को सम्हाल वह बोला, "न मालूम महाराज के दिल में किस तरह ऐसा बेबुनियाद ख्याल जड़ पकड़ गया है, पर खैर यदि महाराज का ऐसा ही ख्याल है तो मैं भी प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूं कि अगर यह कमेटी वास्तव में कोई चीज है तो मैं शीघ्र ही उसका पूरा पूरा पता लगा कर महाराज को बताऊँगा ॥"

महा० । (कुछ खुशी के साथ) बेशक आप ऐसा ही करें और बहुत जल्द पता लगा कर मुझे बतावें कि कमेटी क्या बला है जो इस तरह मेरे पीछे लग गई है ! अगर आप इसका ठीक ठीक हाल मुझे बता सकें तो मैं बहुत ही खुश हूंगा ॥

दारोगा० । (सलाम कर के) बहुत खूब ॥

महा० । (बाकी मुसाहियों और सर्दारियों की तरफ देख कर) और आप लोग भी इस काम में कोशिश करें । दारोगा साहब आपकी इस काम में मदद करेंगे ॥

इतना कह राजा गिरधरसिंह उठ खड़े हुए और दामोदरसिंह की

लाश को उसके रिश्तेदारों के सपुर्द करने की आज्ञा दे कर आंसू बहाते हुए महल की तरफ चले गये। दर्बारी लोग इस विचित्र कमेटी और महाराज की आज्ञा के विषय में बातें करते हुए बिदा हुए और दारोगा भी लाश का बन्दोबस्त कर किसी गहरे सोच में सिर झुकाये हुए अपने घर की तरफ रवाना हुआ॥

महल में पहुंच राजा साहब सीधे उस तरफ चले जिधर कुंअर गोपालसिंह रहते थे। गोपालसिंह उसी समय अपनी सन्ध्या पूजा समाप्त कर उठे थे जब महाराज के आने की खबर उन्हें मिली और वे घबराये हुए उन्हें लेने के लिये चले क्योंकि दामोदरसिंह की लाश के पाये जाने की खबर उन्हें भी लग चुकी थी॥

महाराज ने गोपालसिंह का हाथ पकड़ लिया और उनके बैठने के कमरे की तरफ बढ़े। नौकरों को हट जाने का इशारा कर वे एक कुर्सी पर जा बैठे और गोपालसिंह को अपने सामने बैठने का हुक्म दिया॥

कुछ देर सन्नाटा रहा और दामोदरसिंह की याद में महाराज आंसू बहाते रहे इसके बाद अपने को सम्हाल कर गोपालसिंह से बोले, "तुमने दामोदरसिंह के मरने की खबर सुनी?"

गोपाल०। जी हां अभी कुछही देर हुई यह दुखदाई खबर मुझे मालूम हुई है। न जाने किस हत्यारे ने उस बेचारे की जान ली॥

महाराज०। तुम यह किसका काम खयाल करते हो?

गोपाल०। (कुछ सोच कर) शायद दामोदरसिंह का कोई दुश्मन...

महाराज०। नहीं नहीं यह काम दामोदरसिंह के किसी दुश्मन का नहीं है बल्कि मेरे और जमानिया राज्य के दुश्मन का यह काम है। बेटा! अब तो तुम खुद सोचने विचारने लायक हो गये हो। क्या इधर कुछ दिनों से जो जो कार्रवाइयें देखने सुनने में आ रही हैं उनको देख कर यह नहीं कहा जा सकता कि हम लोगों का कोई भारी दुश्मन पैदा हुआ है जो यह सब कर रहा है?

गोपाल०। बेशक इधर की घटनाओं को देख कर तो यही कहने की इच्छा होती है॥

महाराज०। हाय, हाय! हमारे खैरख्वाह लोग इस तरह मारे जावें और हम कुछ न कर सकें, हमारे जिगर के टुकड़े इस तरह हमसे

अलग कर दिये जायँ और हमलोग हाथ न उठा सकें । ओफ !! अब हद्द हो गई !!

दिल के कमजोर राजा गिरधरसिंह आंसू बहाने लगे, गोपाल-सिंह यह देख हाथ जोड़ बोले, "पिताजी ! अब इस तरह सुस्त हो जाने से काम न चलेगा, हम लोगों को दामोदरसिंह के खूनी का पता लगाने की कोशिश करनी चाहिये । मैंने यह खबर सुनते ही अपने मित्र इन्द्रदेव के पास अपना आदमी भेजा है, वह बड़ा ही तेज ऐयार है जरूर कुछ न कुछ पता लगावेगा ॥"

महाराज० । बेशक इन्द्रदेव अगर इस काम को अपने जिम्मे ले लें तो अवश्य बहुत कुछ कर सकते हैं, और उन्हें करना भी चाहिये क्योंकि दामोदरसिंह उनके ससुर ही ठहरे ॥

गोपाल० । वे जरूर अपने ससुर के खूनी का पता लगावेंगे और मैं खुद उनकी मदद करूंगा, अब बेफिक्री के साथ सुस्त बैठे रहने का जमाना बीत गया, मालूम होता है कि अभी हम लोगों पर कोई और भी भारी मुसीबत आने वाली है ॥

महाराज० । बेशक ऐसी ही बात है, यह मामला यहां ही तक नहीं रहेगा मगर बेटा ! तुम होशियार रहना और जानबूझ कर अपने को मुसीबत में न फँसाना, क्योंकि मैंने यह भी सुना है कि हम लोगों के बखिलाफ कहीं कोई कुमेटी भी खुली है जिसका यह सब काम है ॥

गोपाल० । हां मैंने भी इस विषय में कुछ सुना है मगर यह खबर कहां तक सच है इस बारे में कुछ नहीं कह सकता ॥

महाराज० । मैंने दारोगा साहब के सपुर्द इस कमेटी का पता लगाने का काम सौंपा है उम्मीद है कि वे जल्दी ही कुछ न कुछ पता लगावेंगे ॥

गोपाल० । अफसोस इस वक्त चाचा जी (भैयाराजा) न हुए, नहीं तो वे बहुत कुछ कर सकते थे, इस कमेटी का जिक्र उन्होंने ही पहिले पहिल मुझसे किया था ॥

महाराज० । न जानें शङ्करसिंह कहां चले गये, मुझसे बिगड़ कर जो गये तो फिर नजर ही नहीं आये ॥

गोपाल० । मैं कह तो नहीं सकता पर आप के बर्ताव से उनके दिल को बड़ी कड़ी चोट पहुंची ॥

महाराज०। मेरे बर्ताव से ! मैंने क्या किया ?

गोपाल०। (रुकते हुए) यही कि उनके मुकाबले में दारोगा साहब की इज्जत की और उनकी बात पर विश्वास न किया। माना मैंने कि इन्हें दारोगा साहब से कुछ चिढ़ होगई थी और वे इन पर विश्वास नहीं करते थे तो भी क्या हुआ वे फिर भी अपने ही थे और दारोगा साहब फिर भी एक नौकर ही। चाहे चाचाजी का दारोगा साहब पर झूठा शक ही क्यों न हो पर एक बार उनकी बात मान कर पीछे उनकी गलती दिखाना ही वाजिब था। जैसा बर्ताव यहां से किया गया उसे देख कर भी अगर वे चले न जाते तो ताज्जुब की बात थी। खैर अब जो हुआ हो गया॥

गोपालसिंह की बातें सुन राजा साहब ने सिर झुका लिया और कुछ जवाब न दिया। गोपालसिंह ने यह देख सिलसिला बदलने के खयाल से कहा, "हमारे यहां भी तो कई ऐयार हैं, वे सब क्या किया करते हैं ? बिहारीसिंह और हरनामसिंह को आपने दामोदरसिंह के खूनी का पता लगाने का हुक्म दे दिया होगा ?"

महाराज०। (चौंक कर) नहीं उनकी तरफ मेरा खयाल ही नहीं गया मैं अभी उन्हें बुलाता हूं॥

यह सुन गोपालसिंह उठे और एक खिदमतगार को जो बातचीत की आवाज के पहुंच के बाहर खड़ा हुआ था बुलाकर महाराज का हुक्म सुना जल्दी दोनों ऐयारों को बुला लाने का हुक्म दिया। कुछ ही देर बाद हरनामसिंह हाजिर हुआ और महाराज और कुंअर साहब को अदब से सलाम कर हाथ जोड़ बोला, "आज्ञा ?"

गोपाल०। बिहारीसिंह कहां है ?

हरनाम०। जी वे दामोदरसिंह जी का हाल सुन उधर ही को गये हैं॥

महाराज०। ठीक किया, तुम भी जाओ और बहुत जल्द पता लगाकर मुझे बताओ कि यह काम किसका है। बस सीधे चले जाओ॥

"बहुत खूब" कह कर हरनामसिंह ने झुक कर सलाम की और पीछे पांव लौटा। उसके चले जाने बाद गोपालसिंह ने अपने पिता की तरफ देख कहा, "महाराज ने भी अभी तक कदाचित् नित्य कृत्य की छुट्टी नहीं पाई है......"

महाराज० । कहां, सुबह से तो इसी तरद्दुद में पड़ा हुआ था । अब जाता हूं, (रुक कर) क्या कहूं तुम्हारा ब्याह आदि हो जाय तो तुम्हें राज्य दे मैं तपस्या करने चला जाऊं अब इस संसार से मुझे बिल्कुल विरक्ति हो गई है ॥

कुछ और बातचीत के बाद महाराज जरूरी कामों से छुट्टी पाने की फिक्र में पड़े और गोपालसिंह भी किसी आवश्यक काम में लग गये ॥

सोलहवां बयान ।

अपने पति को सामने पा एक बार तो रामदेई घबरा गई पर इस समय मौका बेढब जान उसने शीघ्र ही अपने को चैतन्य किया और भूतनाथ को हाथ जोड़ कर प्रणाम करने बाद प्रसन्नता के ढङ्ग पर बोली, "इस समय आप बड़े अच्छे मौके पर आये !!"

भूतनाथ० । सो क्या? और तुम इस जगह खड़ी क्या कर रही हो॥

राम० । आज आपके मकान में चोर घुसे थे ॥

भूत० । (चौंक कर) क्या ? लामाघाटी में चोर !!

राम० । जी हां । लगभग घण्टे भर के हुआ मैं किसी जरूरी काम से उठी और घर के बाहर निकली । चांदनी खूब छिटकी हुई थी और घाटी में खूब शोभा दे रही थी इससे जी में आया कि कुछ देर टहल कर चांदनी रात की बहार लूं । मैं धीरे धीरे टहलती हुई उस तरफ बढ़ी जिधर आप के शागिर्दों का डेरा है तो यकायक किसी आदमी के बोलने की आहट आई । पहिले तो मुझे खयाल हुआ कि शायद अपना ही कोई आदमी है पर जब इस बात की तरफ गौर किया कि कई आदमी बातें कर रहे हैं और वह भी बहुत ही धीरे धीरे फुसफुस करके तो मेरा शक बढ़ा । मैंने अपने को एक पेड़ की आड़ में छिपाया ही था कि पासही की एक झाड़ी में से कई आदमी हथियारबन्द निकले जो गिनती में छः से कम न होंगे । मैं घबड़ा गई पर चुपचाप खड़ी देखती रही कि ये लोग कौन हैं और किस इरादे से आये हैं । उसमें से दो आदमी तो वहीं खड़े रहे और बाकी के चार किसी तरफ को चले गये । मैं बड़े तरद्दुद में पड़ी क्योंकि यह तो मुझे निश्चय हो

गया कि इन आदमियों की नीयत अच्छी नहीं है और इनके काम में अवश्य बाधा डालनी चाहिये पर करती तो क्या करती, मेरे से कुछ ही फासले पर वे दोनों आदमी खड़े थे और होशियारी के साथ चारो तरफ देख रहे थे । अगर मैं जरा भी अपनी जगह से हिलती या किसी को आवाज देती तो जरूर पकड़ जाती, इससे मौका न समझ ज्यों की त्यों छिपी खड़ी रही और उन लोगों की कार्रवाई देखती रही क्योंकि इस बात का भी विश्वास था कि मेरे आदमी ऐसे बेफिक्र नहीं होंगे कि घर में इतने आदमी घुस आवें और किसी को खबर न हो । आखिर कुछ देर के बाद वे ही चारो आदमी लौटते हुए दिखाई पड़े जिन में से एक आदमी अपने सिर पर कोई भारी गठड़ी उठाये हुए था । अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि ये लोग बेशक चोर हैं और कुछ माल उठा कर भाग रहे हैं क्योंकि उन चारो के आते ही वे दोनों आदमी भी जो वहां खड़े हुए थे उनमें शामिल हो गये और तेजी के साथ सब बाहर की तरफ रवाना हुए । पहिले तो मेरा इरादा हुआ कि लौट कर अपने आदमियों को होशियार करके इन सभों को गिरफ्तार करने की कोशिश करूँ पर फिर यह सोचा कि जब तक मैं अपने आदमियों के पास पहुंचूंगी तब तक ये लोग बाहर निकल जायेंगे क्योंकि उस जगह से जहां मैं थी वह दर्वाजा दूर न था, मैंने वह खयाल छोड़ दिया और बराबर उन आदमियों के पीछे चल कर यहां तक पहुंची । वे सब पहाड़ी के नीचे उतर गये और मैं लौटा ही चाहती थी कि आप आते हुए दिखाई पड़े इससे रुक गई कि शायद आपने उन आदमियों को देखा हो या उन्हें जानते हों ॥"

भूतनाथ० । (ताज्जुब के साथ) नहीं मैंने तो किसी आदमी को नहीं देखा ! उनको गये कितनी देर हुई ?

रामदेई० । बस वे लोग मेरी आंखों की ओट हुए हैं और आप दिखाई पड़े हैं ॥

भूत० । बड़े ताज्जुब की बात है, लामाघाटी में और इस तरह चोरी हो जाय । यह बेशक किसी जानकार आदमी का काम है मामूली चोरों का नहीं क्योंकि यहां का रास्ता हर एक को मालूम हो जाना जरा टेढ़ी खीर है ॥

रामदेई० । बेशक और इसी बात से मैं और भी फिक्र में पड़ी हुई हूं ॥

भूत०। (घूम कर) मैं अभी उनका पीछा करता हूं ॥

रामदेई०। (प्यार से हाथ पकड़ कर) नहीं नहीं तुम अभी थके हुए आ रहे हो इस समय मैं जाने न दूंगी और तुम पहिले भीतर चल के देख भी तो लो कि कुछ चीज गायब भी हुई है या मेरा झूठा ही खयाल है ॥

भूत०। जब तुमने आंख से गठरी ले कर भागते देखा है तो बेशक कोई न कोई चीज चोरी गई होगी। इसी समय उन लोगों का पीछा करना मुनासिब होगा ॥

राम०। नहीं सो तो न होगा और अगर पीछा ही करना है तो तुम्हारे यहां ऐयारों की कमी है जो तुम खुद यह काम करो ?, पहिले अपने शागिर्दों से तो पूछ ताछ कर लो शायद उन्हें कुछ खबर हो ॥

भूत०। (कुछ क्रोध के साथ) उन कम्बख्तों को कुछ खबर होती तो यह नौबत ही क्योंकर आती ! खैर मैं एक बार चल कर उन्हीं से दरियाफ़ करता हूं ॥

इतना कह भूतनाथ अपनी स्त्री को लिये अपनी घाटी के अन्दर घुसा। भीतर सब जगह सन्नाटा छाया हुआ था। सब लोग गहरी नींद में मस्त पड़े हुए थे और यदि कोई जागता भी हो तो इस समय की गुलाबी सर्दी चादर से बाहर मुंह निकालने की इजाजत नहीं देती थी ॥

भूतनाथ को लिये रामदेई उधर चली जिधर नागर कैद की गई थी। कुछ ही दूर बढ़ी होगी कि सामने से एक आदमी आता दिखाई पड़ा जो वास्तव में वही आदमी था जिसके सपुर्द नागर की हिफ़ाज़त की गई थी। नींद टूटने पर नागर को कहीं न पा वह घबराया हुआ इधर उधर उसे ढूंढ रहा था। भूतनाथ को देखते ही सहम गया और प्रणाम करके बोला, "गुरू जी, नागर कहीं चली गई !!"

भूत०। (अपने क्रोध को दबा कर) क्यों ? कैसे भाग गई, तुम क्या कर रहे थे ?

शागिर्द०। (संकपका कर) जी मैं···मुझे कुछ झपकी सी आने लगी थी जरा सा आंख बन्द की थी कि वह गायब हो गई। मालूम होता है कोई उसे छुड़ा ले गया ॥

भूत०। तो तुम लोगों को यहां झख मारने के लिये मैंने रख

छोड़ा है ? एक अदने कैदी की हिफाजत तुमसे न हुई और क्या करोगे, लो सुनो कि रात को पांच छः आदमी इस घाटी में घुस आए और नागर को छुड़ा कर ले गये ॥

इस बीच में भूतनाथ के और भी कई शागिर्द वहां आ पहुंचे और नागर का गायब होना सुन आश्चर्य कर ने लगे क्योंकि किसी को कुछ भी आहट नहीं लगी थी । भूतनाथ ने उन्हें बहुत कुछ टेढ़ी सीधी सुनाई और तब कहा, "तुम लोगों में से चार आदमी तो अभी उन लोगों का पीछा करो और बाकी आदमी देखो कि सिर्फ नागर ही गायब हुई है या और कुछ सामान भी चोरी गया है ॥"

चार आदमी तो उसी समय नागर का पता लगाने चले गये और बाकी घाटी भर में फैल देखने लगे कि और कुछ तो गायब नहीं हुआ है मगर शीघ्र ही विश्वास हो गया कि सिवाय नागर के और कुछ नहीं गया । भूतनाथ ने इतने ही को गनीमत समझा क्योंकि वह अब अपना कुछ खजाना भी इसी घाटी में रखने लगा था और एक बार धोखा खाकर अब बराबर इस मामले में चौकन्ना रहा करता था ॥

भूतनाथ अपनी स्त्री के साथ अपने खास रहने की जगह को चला गया और एक उचित स्थान पर बैठ कर बातें करने लगा । मामूली बातचीत के बाद उसने कहा, "अब मुझे कुछ दिन के लिये तुम से अलग होना पड़ेगा ॥"

रामदेई० । (चौंक कर) क्यों ? सो क्यों ?

भूत० । जमानिया से एक बुरी खबर सुनने में आई है ?

रामदेई० । क्या ?

भूत० । दुश्मनों ने दामोदरसिंह को मार डाला ॥

रामदेई० । हाय हाय, वह बेचारा तो बड़ा सीधा आदमी था उसकी जान किसने ली ?

भूत० । मालूम होता है कि यह काम भी उसी दारोगा वाली कुमेटी का है ॥

रामदेई० । दारोगा वाली कुमेटी कौन ? वही जिसका हाल तुमने...

भूत० । हां वही ॥

राम० । (अफसोस करती हुई) उस बेचारे से उन्हें क्यों दुश्मनी हो गई ? वह किसी से द्वेष करने वाला तो न था ॥

भूत०। कुछ होहीगा तो ॥

रामदेई० । खैर तो तुम्हें मुझसे अलग होने की क्या जरूरत पड़ी ?

भूत० । मुझे और भी दो एक ऐसी बातें मालूम हुई हैं जिसने मुझे बेचैन कर दिया है और जिनका ठीक ठीक हाल मालूम करना मेरे लिये जरूरी होगया है । इसके सिवाय मेरे मालिक रणधीरसिंह को भी अब मेरी जरूरत पड़ेगी इससे मैं चाहता हूं कि खुद उनके पास जाऊं और उस शागिर्द को जो वहां मेरी सूरत बन रहता है कोई और काम सपुर्द करूं । इन्हीं सब बातों को सोच कर मैं कहता हूं कि अब कुछ दिन तक तुमसे मुलाकात न हो सकेगी ॥

राम० । (रंज के साथ) खैर मालिक के काम की फिक्र तो सब से जरूरी है, तो क्या बीच बीच में भी कभी मुलाकात न होगी ?

भूत०। (कुछ तरद्दुद के साथ) देखो कुछ ठीक नहीं कह सकता, अपना हाल चाल तो बराबर तुमको पहुंचाया ही करूंगा । (कुछ देर ठहर कर) हां एक बात और बहुत जरूरी है ॥

राम० । कहो ॥

भूत० । मैं तुम्हें यहां से जाकर कुछ जरूरी चीजें रखने के लिये भेजूंगा उन्हें अपने जान से ज्यादा हिफाजत से रखना ॥

राम०। (आश्चर्य से) ऐसी कौन सी चीज है जिसके लिये इतनी हिफाजत की जरूरत है ?

भूत० । कई जरूरी कागज वगैरह हैं जो इतना गुरुत्व रखते हैं कि उनका दुश्मन के हाथ में जाना मेरे लिये मौत से बदतर है । इसी सबब से मैं उन्हें अपने घर पर भी नहीं रक्खा चाहता और उन्हें तुम्हारे सपुर्द किया चाहता हूं ॥

राम० । उन कागजों में क्या है ?

भूतनाथ ने इस सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया । कुछ देर तक वह किसी गम्भीर चिन्ता में डूबा रहा इसके बाद एक लम्बी सांस लेकर बोला, " खैर तुम इस बात का खयाल रखना कि उस कागज का भेद किसी को लगने न पावे । अपनी जुबान से कदापि किसी से जिक्र न करना, तुम्हारे ऊपर मेरा बहुत विश्वास है इसी से मैं यह तुम्हारे सपुर्द करता हूं ॥"

इतना कह भूतनाथ ने बात का सिलसिला बदल दिया और फिर दूसरे ढङ्ग की बातें होने लगीं ॥

सत्रहवां बयान ।

अनिरुद्धसिंह की सूरत बने हुए दलीपशाह ने जब उस सरदार को आते देखा और पास आने पर उसकी बातें सुनीं तो चौकन्ना हो गया और अपने बचाव की फिक्र सोचने लगा ॥

उस सरदार ने इनको चुप देख पूछा, "क्यों चुप हो गये क्यों? और वह किसान कहां चला गया जिसके साथ तुम आये थे?"

दलीप० । मैं उसी का हाल (अपने दूसरे साथी की तरफ बता कर) इनसे कह रहा था, वह किसान जो मुझे बुला लाया बड़ा ही मक्कार निकला बल्कि मैं तो समझता हूं वह कोई ऐयार था। मैं उसके साथ यहां तक तो आया किन्तु यहां पर वह बिगड़ खड़ा हुआ और मुझी से लड़ने लगा। आखिर मैंने उसे हरा कर बेहोश कर दिया और गठड़ी में बांध आपही के पास ले चला था ॥

सरदार० । वह है कहां?

दलीप० । (गठड़ी की तरफ इशारा करके) इसी में बंधा है ॥

सरदार० । गठड़ी खोलो उसकी सूरत देखें ॥

दलीपशाह ने तरह २ तरह की बातें सोचते हुए गठड़ी खोली। सरदार ने आगे बढ़ कर गौर से उसकी सूरत देखी और कहा, "मुझे शक होता है कि कहीं यह दलीपशाह हो तो नहीं है। इसका मुंह धोकर देखना चाहिये ॥"

दलीप० । यहां पानी कहां है?

सरदार० । पास ही में है। (एक आदमी की तरफ देख कर) जाओ कोई कपड़ा तर कर लाओ तो इस बेहोश का चेहरा धो कर देखा जाय कि यह कम्बख्त कौन है और अनिरुद्ध पर हमला करने की इसे क्या जरूरत थी ॥

सरदार की बात सुन एक आदमी अपना दुपट्टा हाथ में लिये पानी की इच्छा से चला गया। बाकी लोग उसी जगह जमीन पर बैठ गये और बातचीत करने लगे ॥

दलीपशाह के मन में एक अजीब खिचड़ी सी पक रही थी वे मन ही मन कह रहे थे कि कहां की बला में आ पड़े और अब किस तरह छुटकारा होगा । सूरत धोतेही रङ्ग उड़ जायगा और असली अनिरुद्ध की शक्ल निकल आवेगी इस बात को तो वे बखूबी समझ रहे थे मगर अब अपने को बचाने की भी कोई तरकीब नजर नहीं आती थी । भगवानसिंह और उसके साथियों ने शक से हो या और किसी कारण से हो, उन्हें इस प्रकार घेरा हुआ था कि एकायक उठ कर भाग जाना जरा मुश्किल था दूसरे भागने की तबीयत भी उनकी नहीं होती थी और वे जानना चाहते थे कि ये लोग कौन हैं और इनके यहां आने का क्या कारण है । आखिर उन्होंने सरदार से पूछा, "आपको यह कैसे मालूम हुआ कि दलीपशाह यहां आया हुआ है ?"

यह सवाल सुन सर्दार ने एक नये आदमी की तरफ देखा जिस को पहिले दलीपशाह ने नहीं देखा था और जो सूरत शक्ल से मुसल्मान मालूम होता था—और कहा, "ये यारअली अभी आये हैं इन्हीं ने यह खबर मुझे दी है ॥"

यारअली नाम सुनते ही दलीपशाह चौंके क्योंकि वे बखूबी जानते थे कि यारअली * महाराज शिवदत्त के एक ऐयार का नाम है । वे यारअली तथा शिवदत्त के बाकी ऐयारों को भी बखूबी पहिचानते थे क्योंकि ऐयार होने के कारण इन्हें कई बार शिवदत्तगढ़ जाने की जरूरत पड़ी थी पर यारअली की सूरत इस समय उस आदमी से नहीं मिलती थी जिसकी तरफ सरदार ने इशारा किया था । इस बारे में यह सोच दलीपशाह ने सन्तोष किया कि कदाचित् यह इस समय अपनी सूरत बदले हुए हो । इसके साथही उन के विचारों ने एक नया ही ढङ्ग पकड़ा और वे सोचने लगे कि कहीं ये लोग राजा शिवदत्त ही के ऐयार तो नहीं हैं जिनके आने की खबर उन्हें लग चुकी थी ॥

कुछ देर बाद सरदार ने उतावली दिखाते हुए कहा, "वह पानी लेने कहां चला गया बड़ी देर हो गई ॥"

दलीपशाह यह सुनते ही उठ खड़े हुए और बोले, मैं अभी पानी

* सन्तति में यह नाम आ चुका है ।

ले कर आता हूं, और तब बिना जवाब का इन्तजार किये उसी तरफ लपके जिधर वह आदमी गया था। सरदार ने पहिले तो इन्हें जाने से रोकना चाहा पर फिर कुछ सोच चुप हो रहा ॥

लपकते हुए दलीपशाह जब कुछ दूर निकल गये तो उनकी निगाह उस आदमी पर पड़ी जो पहिले पानी के वास्ते भेजा गया था। वह एक छोटे मगर गहरे नाले में झुका हुआ दुपट्टा तर कर रहा था। ये (दलीपशाह) यकायक उसके पीछे जा पहुंचे और धोखे से उसे ऐसा धक्का दिया कि जमीन पर गिर पड़ा दलीपशाह ने उसे सम्हलने की फुरसत न दी और जबर्दस्ती बेहोशी की दवा सुंघा उसे बेहोश कर दिया। इसके बाद जल्दी २ अपनी सूरत इस आदमी के ऐसी बनाई और तब उसे उठा कर एक झाड़ी में डाल अपना दुपट्टा तर कर लौट चले। पोशाक आदि बदलने की जरूरत न समझी क्योंकि उसकी पोशाक भी ठीक वैसी ही थी जैसी इस समय वे पहिने हुए थे। इन्हीं की क्या इस समय जितने आदमी उस गरोह में उन्होंने देखे सभी एक ही किस्म की पोशाक पहिरे हुए थे ॥

बहुत जल्दी करने पर भी सूरत बदलने में कुछ देर लग ही गई थी। वह सर्दार और बाकी के साथी बैठे घबरा रहे थे। दलीपशाह के पहुंचते ही बोले, "वाह बांकेसिंह ! तुम तो अच्छा पानी लेने गये कि घण्टों लगा दिये ! और वह अनिरुद्ध कहां चला गया जो तुम्हारे पीछे पानी लेने गया था ?"

दलीप०। क्या अनिरुद्धसिंह भी पानी के वास्ते गये थे ? मुझे तो कहीं दिखाई न पड़े !!

सरदार०। खैर आता होगा तुम उस आदमी का चेहरा तो धो डालो ॥

दलीपसिंह जिन्हें अब बांकेसिंह कहना चाहिये दुपट्टे से पानी डाल उस आदमी का चेहरा रगड़ रगड़ कर धोने लगे। कुछ ही देर में असली अनिरुद्धसिंह की शक्ल निकल आई और ये बनावटी घबराहट के साथ बोल उठे, "हैं यह तो अनिरुद्ध है ! इसे किसने बेहोश किया ?"

बांके की बातें सुन सब लोग ताज्जुब में आ कर उसके पास आ खड़े हुए और बेहोश अनिरुद्ध को देख देख ताज्जुब करने लगे सप-

दार ने कहा, "इसे होश में लाओ तब मालूम होगा कि क्या मामला है॥"

बांकेसिंह ने अपने बटुए में से लखलखा निकाल कर उसे सुंघाया। दो तीन छींकें आईं जिसके साथ ही वह उठ कर बैठ गया और अपने चारों तरफ ताज्जुब के साथ देखने लगा। सरदार और बाकी के साथी उससे तरह तरह के प्रश्न करने लगे मगर वह किसी बात का भी जवाब न दे सका क्योंकि पाठकों को याद होगा कि दलीपशाह ने उसे अपनी सूरत बनाते वक्त उसकी जबान पर ऐंठने वाली दवा मल दी थी जिससे वह कुछ बोल न सके॥

बांकेसिंह ने कहा, "मालूम होता है इसकी जुबान पर कोई ऐसी दवा लगा दी गई है जिससे यह बोलने से लाचार हो गया है, ठहरो मैं इसका बन्दोबस्त करता हूं॥"

इतना कह बांकेसिंह ने अपने बटुए से एक खूबसूरत डिबिया निकाली जिसमें किसी तरह की खुशबूदार मरहम थी। इस मरहम की यह तारीफ थी कि जुबान ऐंठने वाली दवा के असर को दूर कर जुबान दुरुस्त कर देती थी मगर साथही इसमें यह भी खूबी थी कि इस की खुशबू में मस्त और बदहोश कर देने का असर था और जो इसे सूंघता था वह कुछ देर बाद गहरी बेहोशी के नशे में पड़ बदहोश हो जाता था। इस दवा को दलीपशाह ने स्वयम् खास मौकों पर काम में लाने के लिये बनाया था॥

इस मरहम में से थोड़ी उंगली में लगा दलीपशाह ने उस आदमी (अनिरुद्ध) की जुबान पर लगाया और तब वह डिबिया दवा का गुण बयान कर सरदार के हाथ में दी, सरदार ने उसे गौर और ताज्जुब से देखा और उसकी मस्तानी खुशबू पर लट्टू हो कई बार सूंघा भी। बारी बारी से वह डिबिया सभों के हाथ में घूम गई और तब दलीपशाह ने उसे पुनः अपने बटुए के हवाले किया॥

इस बीच में अनिरुद्ध बोलने लायक हो गया था। उसने उस नकली किसान द्वारा अपने गिरफ्तार किये जाने का हाल सभों को सुनाया। सब कोई ताज्जुब के साथ गौर करने लगे कि वह कौन आदमी था जिसने इस तरह पर धोखा दिया। आखिर यही निश्चय हुआ कि वह और कोई नहीं दलीपशाह ही होगा॥

इस बातचीत में कुछ समय बीत गया और उस विचित्र मरहम की खुशबू ने असर करना शुरू किया। दलीपशाह के इलावा बाकी और सभों के दिमाग में चक्कर आने लगे और हाथ पांव कमजोर होने लगे। सरदार ने यह देख कहा, "यह क्या मामला है! मेरे सिर में चक्कर क्यों आ रहे हैं?"

दूसरा०। मेरा भी यही हाल है॥

तीसरा०। मेरी भी यही दशा हो रही है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है मानो किसी ने बेहोशी की दवा खिलाई हो॥

सर०। बेशक यही बात है। (गौर कर के) जब से वह डिबिया मैंने सूंघी है तभी से यह हालत हो रही है। मालूम होता है उसी में कुछ बेहोशी का असर था॥

इतना कह सरदार ने शक की निगाह दलीपशाह पर डाली। दलीपशाह समझ गये कि इसका शक मुझ पर हुआ है, मगर वह बखूबी समझते थे कि ये लोग मेरा अब कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। अस्तु वह उठ खड़ा हुआ और सरदार को एक फरांशी सलाम करने बाद कहा, "आपका खयाल बहुत ठीक है, मेरी ही कृपा के असर से आपकी यह हालत है और बहुत जल्द ही आप लोग जहन्नुम रसीद किये जायंगे। सुनिये और याद रखिये कि मेरा ही नाम दलीपशाह है॥"

इतना सुनते ही वे सब के सब उठ खड़े हुए और उन्होंने दलीपशाह को चारों तरफ से घेर लिया मगर कुछ कर न सके क्योंकि बेहोशी का असर पूरी तरह पर हो चुका था॥

सब के सब बेहोश हो कर जमीन पर लेट गये और दलीपशाह ने खुश हो कर कहा, "वह मारा! अब इन लोगों की सूरत धो कर देखना चाहिये कि ये लोग कौन हैं? अफसोस इस समय मेरा कोई साथी मेरे पास नहीं है नहीं तो बड़ा काम निकलता॥"

अट्ठारहवां बयान ।

दूसरे दिन बहुत सवेरे ही भूतनाथ लामाघाटी के बाहर निकला और तेज़ी के साथ पूरब की तरफ रवाना हुआ ॥

इस समय भूतनाथ का मन तरह २ की चिन्ताओं से बड़ा ही व्याकुल हो रहा था । गौहर के निकल जाने का जो कुछ रंज था वह तो था ही उसके सिवाय इसके पहिले भी जो कुछ घटनाएं हो चुकी थीं वे उसे बेचैन कर रही थीं । सब से बढ़ कर उस जमना और सरस्वती के मामले ने उसे बेचैन कर दिया था जिन्हें वह क्रोध के आवेश में आ कुछ समय हुआ मार चुका था । उसे सब से भारी तरद्दुद तो इस बात का लगा हुआ था कि अगर इन्द्रदेव को इस बात का पता लग गया तो वह कहीं का भी नहीं रहेगा और दुनिया में मुंह दिखाना उसके लिये कठिन हो जायगा क्योंकि यह बात तो एक प्रकार से उसे मालूम ही हो गई थी कि इन्द्रदेव खुले आम उन दोनों की मदद कर रहे हैं और करते थे ॥

सिर झुकाए हुए भूतनाथ बहुत देर तक चला गया । उसे यह भी होश न रह गई कि वह किधर जा रहा है और अब दिन कितना ढल गया है । आखिर एक बहुत ही घने और भयानक जङ्गल में पहुंच वह रुका और ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखने लगा कि मैं कहां आ पहुंचा ॥

शीघ्र ही उसे मालूम हो गया कि यह जगह जमानिया से बहुत दूर नहीं है और यह भी उसे विश्वास हो गया कि यह वही स्थान है जहां एक बार वह कुंअर गोपालसिंह का पीछा करता हुआ आया था जब कई आदमियों ने उन पर हमला कर दिया था और दारोगा तथा जयपाल ने पहुंच उन्हें बचाया था * क्योंकि वह नाला ज्यों का त्यों इस जगह बह रहा था जिस में गोपालसिंह कूद पड़े थे और वह पत्थरों का ढेर भी मौजूद था ॥

भूतनाथ को थकावट आ गई थी परन्तु उसका इरादा हुआ कि कुछ देर यहां ठहर जाय और जरूरी कामों से भी छुट्टी पा ले । इस इरादे से उसने अपने कपड़े इत्यादि उतार कर नाले के किनारे

* भूतनाथ, दूसरा भाग [illegible] बयान देखो ॥

रख दिये और बैठ कर सुस्ताने लगा। जब बदन की गर्मी दूर होगई तो जरूरी काम से निपट उसी नाले के साफ जल से हाथ मुंह धोया और स्नान भी किया गीला कपड़ा एक पेड़ पर डाल दिया और सूखने का इन्तजार करने लगा॥

इसी समय यकायक कुछ शब्द हुआ और नाले के जल में खल-बलाहट पैदा होने लगी। भूतनाथ कुछ आश्चर्य के साथ गौर से देखने लगा कि यह क्या बात है॥

कुछ देर के बाद पुनः कुछ आवाज आई और जल की खलबला-हट बन्द हो गई मगर साथ ही ऐसा मालूम हुआ मानो कोई आदमी जल के भीतर गोता लगा कर ऊपर आ रहा है। थोड़ीही देर में यह शक जाता रहा जब उसने एक हसीन और खूबसूरत औरत को पानी में से सिर निकालते हुए देखा। उस औरत का मुंह दूसरी तरफ होने के कारण वह भूतनाथ को देख न सकी मगर भूतनाथ ने उसे बखूबी देखा और इस इराद से किनारे के पास से हट आड़ में हो गया कि वह पानी से निकल किनारे पर आवे तो मालूम हो कि यह क्या मामला है और यह कौन औरत है॥

वह औरत कुछ देर बाद पानी के बाहर निकली और जब चारो तरफ सन्नाटा पाया तो किनारे ही पर जमीन पर बैठ गई। उस समय भूतनाथ आड़ से निकला और उसकी तरफ चला। पैरों की आहट सुनते ही वह औरत चौकन्नी हो उठ खड़ी हुई और भूतनाथ को अपनी तरफ आते देख क्रोध भरी निगाहों से उसकी तरफ देखने लगी। उसके ढङ्ग से मालूम होता था कि वह भूतनाथ को देख बहुत ही नाराज है और इसका आना उसे पसन्द नहीं है। भूतनाथ कुछ सहम कर खड़ा हो गया क्योंकि आज के पहिले उसने ऐसी नाजुक हसीन और खूबसूरत औरत स्वप्न में भी नहीं देखी थी॥

यकायक उस औरत ने जोर से एक चीख मारी और तब पीछे हट उसी नाले में कूद पड़ी। भूतनाथ भी जिस पर उस औरत की सूरत ने अजीब जादू का सा असर किया था लपका और उस औरत के पीछे इसने भी अपने को जल में डाल दिया। दोनों के पानी में आते ही नाले का पानी बीचोबीच में से तेजी के साथ

चक्कर खाने लगा जिससे भूतनाथ के हाथ पांव एक दम बेकार हो गये और वह बिलकुल घबड़ा कर बदहवास हो गया, यहां तक कि कुछ सायत और जाने के बाद वह बेहोश होगया और उसे तनोबदन की कुछ भी सुध न रह गई। कुछ देर बाद नाले के पानी का उबलना और चक्कर खाना बन्द हो गया और नाला पूर्ववत् शान्ति के साथ बहने लगा॥

भूतनाथ जब होश में आया उसने अपने को एक अद्भुत स्थान में पाया॥

एक खुशनुमा मगर छोटे बाग को चारो तरफ से आलीशान इमारतों ने घेरा हुआ है। ये इमारतें यद्यपि पुराने ज़माने की हैं मगर फिर भी कहीं से बेमरम्मत या टूटी फूटी नहीं हैं और सरसरी निगाह से देखने में यही जान पड़ता है कि हाल ही में बन कर तैयार हुई हैं॥

पूरब अर्थात् जिधर भूतनाथ है उसके सामने की तरफ एक चौमंजिली इमारत है जिसका नीचे का हिस्सा तो पत्थर का है मगर ऊपरी हिस्सा बिलकुल सङ्गमर्मर है और सूर्य की अन्तिम किरणों के पड़ने से विचित्र शोभा दे रहा है। इसी इमारत की तरफ भूतनाथ आश्चर्य के साथ देख रहा है क्योंकि इसमें बाकी तीन तरफ की इमारतों से कुछ विचित्रता है॥

सबसे ऊपरी हिस्से में और जो उस जगह से जहां भूतनाथ बैठा है साफ साफ नज़र आ रहा है, एक बारहदरी है जिसके दोनों तरफ दो कोठड़ियां हैं। इस खुली बारहदरी की छत को पतले पतले तेरह सङ्गमूसा के काले खम्भों ने सामने की तरफ से अपने सिर पर सम्हाला हुआ है और हर एक खम्भे के बीच में सुफेद महराब है। इस समय जिस चीज पर भूतनाथ की निगाह गौर और ताज्जुब के साथ बल्कि कुछ डर लिये हुए पड़ रही है वे ग्यारह लाशें हैं जो इन महराबों के बीच में लटक रही हैं। दूर से देखने से ऐसा मालूम होता है मानो ग्यारह आदमी ग्यारह कड़ियों के साथ फांसी लटकाये गये हैं। बाईं तरफ की सबसे अन्तिम एक महराब खाली है पानी उसके साथ कोई लाश नहीं लटकती है। सिर्फ हवा के झोंकों [illegible]

बदहवास भूतनाथ कुछ देर तक तो ताज्जुब के साथ इन लाशों को देखता और इस बात पर गौर करता रहा कि यह किस तरह यहां पर आ पहुंचा पर आखिर उससे रहा न गया और वह अपनी जगह से उठ कर उस सामने वाले मकान की तरफ बढ़ा कि पास जा कर देखे कि यह क्या मामला है ॥

उस छोटे से बाग में सिवाय फूलों के या और छोटे पौधों के बड़े पेड़ बिल्कुल ही न थे । एक छोटी सी नहर भी एक तरफ से आई और बाग में चारो तरफ फैली हुई थी जिसके सबब से यहां के पौधे हर मौसिम में सरसब्ज बने रहते थे । भूतनाथ इस बाग और नहर को पार करता हुआ सामने के मकान के पास जा पहुंचा और रुक गया क्योंकि आगे बढ़ने की जगह न थी और न कोई दरवाजा ही दिखाई पड़ता था । उसने सिर उठा कर ऊपर की तरफ उन लाशों को देखना चाहा मगर वह भी हो न सका क्योंकि एक छज्जली की आड़ पड़ जाने के कारण वे लाशें जो दूर से दिखाई पड़ती थीं, मकान के ठीक नीचे आ जाने पर आंखों की ओट हो जाती थीं ॥

नीचे की मञ्जिल में कोई दरवाजा ऐसा न था जिसकी राह कोई आदमी उस मकान के अन्दर जा सके अस्तु लाचार हो भूतनाथ ने वहां से हटना चाहा मगर उसी समय एक खटके की आवाज आई और सामने की दीवार में एक छोटा दरवाजा दिखाई पड़ने लगा जिसके अन्दर ऊपर चढ़ जाने को छोटी छोटी सीढ़ियां दिखाई पड़ रही थीं ॥

डरते और आश्चर्य करते हुए भूतनाथ ने दरवाजे के अन्दर जा इन सीढ़ियों पर पैर रक्खा और ऊपर की तरफ चढ़ना शुरू किया । ये सीढ़ियां कुछ दूर तक तो सीधी ऊपर चली गई थीं पर इसके बाद घूमती हुई ऊपर की तरफ गई थीं मानो किसी बुर्ज या मीनार पर जाने के लिये बनी हों । भूतनाथ भी बेखटके ऊपर चढ़ने लगा । इस सीढ़ी पर इस समय अन्धकार बिल्कुल न था क्योंकि मौके ब मौके पर बने हुए मोखों और छेदों की राह काफी रोशनी और हवा यहां आ रही थी । भूतनाथ सीढ़ियां चढ़ने के साथ ही साथ उन्हें गिनता भी जाता था ॥

अस्सी सीढ़ियें चढ़ जाने के बाद ऊपर की तरफ चांदना मालूम होने लगा और पता लगा कि अब सीढ़ियों का अन्त आ पहुंचा। भूतनाथ ने आश्चर्य और उत्कण्ठा के साथ बीस सीढ़ियें और तय कीं और तब एक लम्बे चौड़े आलीशान दीवानखाने में अपने को पाया जो बिल्कुल सङ्गमर्मर का बना हुआ था। यह जान लेने में भूतनाथ को कुछ भी विलम्ब न लगा कि हम उसी जगह आगये हैं जो नीचे से देखा था क्योंकि सामने ही की तरफ सङ्गमूसा के तेरह खम्भों के बीच लटकती हुई वे ग्यारह लाशें दिखाई पड़ रही थीं जो नीचे नजर आई थीं। इस दालान और उसकी बनावट पर कुछ भी ध्यान न दे धड़कते हुए कलेजे के साथ भूतनाथ ने उन लाशों की तरफ कदम बढ़ाया जो उस जगह से लगभग बीस कदम के फासले पर थीं॥

ओह! उस समय भूतनाथ की क्या अवस्था हुई जब उसने पास जा इन लाशों को देखा और पहिचाना!!

पहिली लाश जिस पर उसकी निगाह पड़ी दयाराम की थी। उनके गले में मोटे रेशमी रस्से का एक फन्दा पड़ा हुआ था जिसका दूसरा सिरा ऊपर की कड़ी में मजबूत बंधा हुआ था और इसी रस्से के सहारे वह लाश टंगी हुई थी। उसके दोनों तरफ इसी तरह लटकती हुई दो लाशें जमना और सरस्वती की थीं। जमना के बाद गुलाबसिंह की लाश थी और सरस्वती के बगल में भूतनाथ के ऐयार बहादुर की और उसके बाद पारस की लाश थी। इसके बाद तीन लाशें और थीं जो भूतनाथ ही के तीन शागिर्दों की थीं और जिन्हें भूतनाथ ने अच्छी तरह देखा और पहिचाना। गुलाबसिंह के बगल में दो लाशें और थीं पर उनका मुंह बाहर की तरफ घूमा हुआ होने के कारण भूतनाथ पहिचान न सका। इनके भी बाद की बारहवीं दर खाली थी यानी उसके साथ कोई लाश लटक नहीं रही थी॥

केवल इतने ही पर बस न था। भूतनाथ के बचे बचाये हवास भी उस समय जाते रहे जब उसने दयाराम की लाश को बाकी लाशों से कुछ बातें करते सुना। उससे सिवाय इसके और कुछ न बन पड़ा कि जमीन पर गिर जाय और ताज्जुब के साथ उन लाशों की बातचीत को सुने॥

दयाराम की लाश ने बेचैनी के साथ जमना की लाश की तरफ घूम कर कहा, "जमना ! यह मैं किसे अपने सामने देख रहा हूं ?"

जमना की लाश० । नाथ ! यह वही गदाधरसिंह है जो किसी जमाने में आपका साथी और दोस्त था ॥

दया०की ला० । हैं ! यह वही गदाधर है ? यह यहां किस तरह आया ? हमलोगों की तरह इसकी भी क्या अकाल मृत्यु हुई है जो यह यहां भेजा गया है ?

जमना० । नहीं नाथ ! यह अभी मरा नहीं है । यह तो नहीं कह सकती कि यहां किस तरह आया पर इतना जानती हूं कि मुझे यहां भेजने बाद अपने दुष्कर्मों का फल भोगने के लिये उस स्थान में रह गया था जिसे लोग संसार कहते हैं ॥

इतने ही में गुलाबसिंह की लाश के मुंह से यह आवाज निकली :—

"नहीं यह बात नहीं है,यह संसार में दुष्कर्मों का फल भोगने को नहीं रहा है बल्कि उन्हें करने के लिये रहा है, और यहां इस लिये भेजा गया है कि हमलोग इसे देखें और इससे अपना बदला लेने के पहिले यह सवाल करें कि हम लोगों ने इसका क्या बिगाड़ा था जो इसने ऐसा निकृष्ट व्यवहार हमारे साथ किया ॥"

यह बात सुनते ही सरस्वती की लाश घूमी और बोली,"पहिला सवाल मैं इससे यह करूंगी कि इसने मुझे और मेरी बहिन को क्यों बिधवा किया !!"

गुलाब की ला० । मैं भी इससे पूछता हूं कि इसने मुझे क्यों मारा ?

बाकी-लाशें० । हमलोग भी इसी बात का जवाब पाया चाहते हैं ॥

जमना की लाश० । संसार में आ इसने क्या क्या उपद्रव, क्या क्या-अनर्थ नहीं किया ? कौन दुष्कर्म ऐसा था जो इसके हाथ से नहीं हुआ ? इसने अपने दोस्त और मालिक की हत्या की, उसकी स्त्रियों की जान ली, अपने दोस्त गुलाबसिंह को मारा और अपने हाथ से अपने प्यारे शागिर्दों को मारते हुए न हिचकिचाया । पापियों के सङ्ग मिल सब तरह के पाप किये और ऐयाशों का साथी हो ऐयाशी की पर कभी भी यह नहीं बिचारा कि मैं क्या कर रहा हूं और मेरे कामों को देखने वाला और न्याय करने वाला भी कोई है

या नहीं, कभी इसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जो मैं कर रहा हूं वह भला है या बुरा और उसका कोई नतीजा भी मुझे भोगना पड़ेगा या नहीं। इसने दोस्ती को दोस्ती न समझा, दया और धर्म का नाम नहीं लिया, यहां तक कि अपने कर्मों पर पश्चात्ताप तक इसने कभी न किया !!

क्या यह समझता है कि इसकी यही दशा बनी रहेगी ? क्या यह समझता है कि यह इस संसार में अमर होकर आया है ? क्या यह समझता है कि ईश्वर की तरफ से इसे कोई ऐसा सट्टा मिल गया है कि जिसके कारण यह अपने कर्मों का फल भोगने से बच जायगा ! नहीं नहीं ! असल तो यह है कि यह बहुत शोख हो गया है और घमण्ड ने इसकी आंखों के आगे यहां तक पर्दा डाल दिया है कि यह अपने सामने किसी को कुछ मानता ही नहीं। अपने स्वार्थ के आगे यह दूसरे को कुछ नहीं समझता और अपने काम के लिये दूसरों के काम का कोई ख्याल नहीं करता, अपने सुख के आगे दूसरे के सुख का कोई ख्याल नहीं करता और अपनी जान के आगे दूसरों की जान की कोई परवाह नहीं करता ॥

जमना की बात सुनते ही बाकी लाशों के मुंह से आवाज आने लगी—"बेशक ऐसा ही है, बेशक ऐसा ही है !!"

गुलाबसिंह की लाश०। इसने दयारामजी को मारा, उनकी दोनों स्त्रियों की हत्या की, मुझे बेकसूर मारा, अपने कई शागिर्दों को व्यर्थ यमलोक पठाया, सच तो यह है कि कितने आदमियों की इसने जानें ली हैं इसे अभी स्वयम् हम लोग भी नहीं जान सके हैं, अभी तो हम लोग केवल उन्हीं का हाल जानते हैं जिन्हें इस जगह अपनी मण्डली में मौजूद पाते हैं। हमलोगों के इलावे भी इतने कैसे ही होंगे जो इस अदालत का हाल न जानने के कारण अभी यहां नहीं आ सकते हैं ॥

बहादुर की लाश ०। (दयाराम की तरफ घूम कर और हाथ जोड़ कर) कृपानिधान ! मैं अपने खून का बदला इस गदाधरसिंह से लिया चाहता हूं ॥

बाकी लाशें ०। हम सभी अपने अपने खून का बदला लिया चाहते हैं और अभी अभी इसे भी मार कर उस बारहवीं कड़ी में टांग देंगे जो इसी के लिये खाली पड़ी है ॥

दया० की ला० । ठहरो ठहरो, जल्दी न करो, पहिले यह तो मालूम करो कि इसे अपने बचाव में भी कुछ कहना है या नहीं। मुमकिन है कि यह अपने बचाव में कुछ कहे ॥

गुलाब की ला० । (कुछ देर ठहर कर) यह कुछ भी नहीं कहता है, बेशक यह अपना कसूर स्वीकार करता है । अब हमें इससे अपना बदला लेने की इजाज़त मिलनी चाहिये ॥

दया० की ला० । बेशक यह अपने कसूर के बचाव में कुछ नहीं कह सकता । अस्तु मैं हुक्म देता हूं कि इसे मार कर अपने में मिला लो ॥

भूतनाथ यह बातचीत लाचारी के साथ सुनता और दिल ही दिल में कांप रहा था । अगर उसके पैरों में इतनी ताकत होती कि उसके शरीर का बोझ उठा सकते तो वह कभी का वहां से भाग गया होता मगर उसके हाथ पावों ने तो मानो जवाब सा दे दिया था । अपने कसूरों के इस सच्चे परिचय ने उसके आगे ऐसे भयानक दृश्य खड़े कर दिये थे कि जिन्हें देखने की बनिस्बत वह मौत पसन्द करता था ॥

बड़ी ही कोशिश से वह अपनी जगह से उठा और हाथ जोड़ दयाराम की लाश की तरफ देख बोला, " कृपानिधान ! आप लोग चाहे कोई भी हों पर इस में सन्देह नहीं कि अतुल शक्तिशाली महापुरुष हैं ! मैं उन सब कसूरों को स्वीकार करता हूं जो आपने मुझ पर लगाये हैं, बेशक मैंने अनगिनत पाप किये और अभी तक कर रहा हूं जिनका प्रायश्चित्त हो ही नहीं सकता । पर मैं आप लोगों के सामने शपथ खाकर कहता हूं कि आगे के लिये ऐसा कदापि न करूंगा । मैं अपनी चाल चलन को सुधारूंगा और आगे के लिये कुछ नेकनामी पैदा कर इस बदनामी के कलंक से गंदी हो गई हुई अपनी चादर को धोने की कोशिश करूंगा । मैं........"

भूतनाथ ने यहां ही तक कहा था कि यकायक उन लाशों के मुंह से आवाज़ आने लगी-" कभी नहीं, कभी नहीं, यह झूठा है, यह बेईमान हम लोगों को भी धोखा दिया चाहता है, इसे अभी मार डालो" इत्यादि और इसके साथ ही उन लाशों ने यकायक उस के ऊपर भयानक आक्रमण किया जिसके साथ ही भूतनाथ एक चीख मार कर बेहोश हो गया ॥

उन्नीसवां बयान।

हम नहीं कह सकते कि भूतनाथ की वह डर और परेशानी से आई हुई बेहोशी कितनी देर तक रही, घड़ी भर तक या दिनभर तक वह बेहोश रहा इसे हम भी नहीं जानते और न खुद भूतनाथ ही समझ सकता है॥

एक अंधेरी कोठड़ी में भूतनाथ अपने को पा रहा है। उसके चारो तरफ इतना घना अंधकार है कि हाथ आंख के पास लाने पर भी दिखाई नहीं पड़ता। वह नहीं कह सकता कि यह समय दिन का है या रात का, और इस समय वह कहां है, उसी अद्भुत स्थान में या किसी और मकान में॥

जो कुछ बातें वह देख चुका है उन्होंने उसे बेहद परेशान कर रक्खा है। उसने जो कुछ देखा है उसने दिलपर गहरा असर किया है और वह न जाने किस सोच में पड़ा हुआ गर्म गर्म आंसू निकाल अपने कपड़े तर कर रहा है॥

यकायक उसका ध्यान एक आवाज की तरफ गया। वह आवाज कहां से आ रही थी, उसके पासही से या किसी दूसरी जगह से, इसे वह नहीं समझ सकता था पर इतना जान गया था कि किसी जगह दो आदमी आपुस में धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। उसने उस आवाज की तरफ कान लगाया जो अब धीरे धीरे स्पष्ट हो रही थी। कुछ देर बाद इस तरह दो आदमियों की बातचीत भूतनाथ ने सुनी॥

एक आवाज०। तो अब इस कम्बख्त को यहां कब तक रक्खे रहोगे। मेरी तो राय है कि इसे जान से मार बखेड़ा तय करो॥

दूसरा०। क्यों सो क्यों?

पहिला०। यह जब तक जीता रहेगा अनर्थ ही करता रहेगा। इसे सांप का बच्चाही समझो। जीता छोड़ोगे तो जरूर किसी न किसी की जान लेगा॥

दूसरा०। नहीं नहीं, अब यह ऐसा न करेगा॥

पहिला०। अवश्य करेगा! जरूर करेगा!! हजार बार वही काम करेगा जैसे करता आया है, ऐसे दुष्ट को जीता छोड़ना एक साधु

को मार डालने से बढ़ कर है । भला तुम ही सोचो, कब से हमलोग इसे जीता छोड़ते आये हैं, कै बार जान बूझ कर भी इसे छोड़ दिया है, कितनी बार इसके कसूरों पर कुछ ध्यान न दे इसे माफ किया है पर क्या इसने कभी भी इन बातों पर कुछ खयाल किया । मैंने कई बार स्वयम् यह समझ इसे छोड़ दिया कि कदाचित् अब भी सम्हल जाय, पर नहीं, यह अपनी शैतानी से कभी बाज़ न आया और न आवेगा । क्या तुम कह सकते हो कि ऐसा कौन सा पाप है जो इसके हाथ से नहीं हुआ ? क्या कोई ऐसा दुष्कर्म बचा है जो इसके हाथ से न हुआ हो !!

दूसरा० । बेशक इसने पाप तो बहुत किये हैं ॥

पहिला० । और जब तक जीता रहेगा करता ही रहेगा, इससे तो यही मुनासिब है कि इसे एक दम से मार बखेड़ा तय करो ! इसने जो हम लोगों को इतना कष्ट दिया है, सब सब तरह के दुःख दिये हैं तो भला इसे भी तो कुछ मालूम हो कि ऐसे कामों का नतीजा क्या निकलता है ॥

दूसरा० । खैर जो तुम्हारी राय है तो ऐसा ही सही मगर...

पहिला० । मगर क्या ?

दूसरा० । मगर मैं तो समझता था कि एक बार इसे और माफ किया जाय और देखा जाय कि अब भी सम्हलता है या नहीं, यदि इस बार भी अपने को नहीं सुधारेगा तो अवश्य इसे मार डालेंगे । हम लोगों से यह बच तो सकता ही नहीं है, जब चाहेंगे पकड़ लेंगे ॥

पहिला० । नहीं भाई मैं तो इस बात को न मानूंगा । और फिर हमारे मालिक का भी तो हुक्म यही है कि यह जीता न छोड़ा जाय ॥

दूसरा० । खैर तो ऐसा करो, एक बार मालिक ही से चल कर कहें शायद उन्हें दया आ जाय या कोई और हुक्म दें ॥

पहिला० । अच्छा चलो, मगर मेरी समझ में तो इसका कोई नतीजा न निकलेगा—खैर—आओ इधर से आओ ॥

इसके बाद कुछ देर के लिये सन्नाटा हो गया ॥

भूतनाथ बड़ी बेचैनी के साथ इन बातों को सुन रहा था । उसे विश्वास हो गया था कि अब इस स्थान से जीता न बचेगा । अपने पिछले कर्मों को अब वह [illegible] विचार रहा था और सोच [illegible]

था कि बेशक इन लोगों का कहना ठीक है, मैंने अपनी जिन्दगी व्यर्थ ही गँवाई, पापों का बोझा बढ़ाया और दुष्कर्मों की गठरी पीठ पर लादी। उसके पिछले कर्म इस समय उसकी आंखों के सामने याद आ आ उसे सताने लगे और उसके बदन में थर्थरी पैदा हो गई॥

उसी समय पुनः उन आदमियों के लौटने और बातें करने की आवाज आई। एक ने कहा, "लो अब तो उनका हुक्म भी हो गया॥"

दूसरे ने कहा, "हां ठीक है, तो चलो इसे अंधे कूप में डाल दें॥"

कुछ सायत के लिये सन्नाटा हुआ और इसके बाद ही कई प्रकार के कल पुर्जों के घूमने और चलने फिरने की आवाज आने लगी। यकायक भूतनाथ के मुंह से एक चीख की आवाज निकल गई क्योंकि उसे मालूम हुआ कि उसके नीचे की जमीन कांपती हुई उसे लिये तेजी के साथ नीचे की तरफ जा रही है॥

कुछ देर के बाद जमीन थमी और इसके साथ ही उसमें एक तरफ से न जाने किस तरह इतनी ढाल पैदा हो गई कि भूतनाथ किसी तरह सम्हल न सका और फिसल कर लुढ़कता हुआ ढाल की तरफ जाने लगा। मगर कुछही देर बाद उसका शरीर किसी चीज की रुकावट पाकर रुक गया और वह सम्हल कर उठ खड़ा हुआ॥

यहां का अंधकार ऊपर से भी कुछ ज्यादा ही मालूम होता था और हवा ऐसी खराब थी कि सांस लेने में तकलीफ होती थी॥

इस जगह जहां भूतनाथ अब था, चारो तरफ से एक इस प्रकार की विचित्र आवाज आ रही थी कि भूतनाथ का दिमाग परेशान हो रहा था। ऐसा मालूम होता था मानो उसके चारों तरफ पासही में कहीं बहुत तेजी के साथ कई कल पुरजे घूम रहे या चल रहे हैं जिनके कारण यह गूंजने वाली आवाज पैदा हो रही है। अंधकार के कारण भूतनाथ अपने हाथ पांव हिलाने से भी डरता था कि कहीं किसी पुरजे में लग उसके टुकड़े टुकड़े न हो जायँ॥

कुछ देर के बाद उन पुरजों के घूमने की आवाज और भी तेज हो गई और इसके बाद ही एक प्रकार की बहुत ही तेज रोशनी उस जगह पैदा हुई जिसने उस डरावनी जगह की हर एक चीज भूतनाथ की आंखों के सामने कर दी॥

भूतनाथ ने देखा कि वह लगभग बीस हाथ के गोलाई में बने हुए एक गोल कमरे में है जिसकी छत इतनी ऊंची है कि बिलकुल दिखाई नहीं पड़ती और वह जगह एक कूंए की तरह मालूम हो रही है। इस गोल कमरे में चारो तरफ बहुत से चक्र, नुकीले और तेज धार वाले बरछे, दुधारी तलवारें और इसी प्रकार के अन्य बहुत से अस्त्र हैं और ये सभी चीजें एक खास तौर पर हरकत कर रही हैं। बीचोबीच में लगभग दो हाथ के जमीन खाली है और बाकी सभी तरफ ये खौफ पैदा करने वाली चीजें फैली हुई हैं। भूतनाथ साफ समझ गया कि अगर वह अपनी जगह छोड़ जरा भी किसी तरफ हिलेगा तो ये चक्र और बरछे आदि उसके बदन के टुकड़े टुकड़े काट कर उड़ा देंगे। अपनी हालत देख भूतनाथ एक दम कांप गया और उसने अपनी जिन्दगी की बिलकुल आशा छोड़ दी। कुछ देर बाद वह रोशनी भी जो एक शीशे के गोले में से निकल रही थी जाती रही और पुनः घोर अंधकार छा गया॥

चारो तरफ से अपने बदन को सिकोड़े भूतनाथ उस अन्धकूप में बैठा अपनी मुसीबत की घड़ियें गिनने लगा। उसे यह निश्चय हो गया कि अब वह सदा के लिये इसी स्थान में छोड़ दिया गया है जहां वह अपना हाथ पैर भी बेखौफ हिलाने की हिम्मत नहीं कर सकता, और जहां बैठे २ ही उसे आखिरी सांसें लेनी पड़ेंगी। अपनी जिन्दगी से बिलकुल ही नाउम्मीद हो वह दोनों हाथ जोड़ ईश्वर से प्रार्थना करने लगा॥

बहुत देर तक भूतनाथ ईश्वर से प्रार्थना और नाक रगड़ कर बिनती करता रहा, जो कुछ पाप उसने किये थे उसके लिये सच्चे दिल से पश्चात्ताप करते हुए आगे के लिये अपने को सुधारने की चेष्टा करने की प्रतिज्ञा की। यहां तक कि इसी अवस्था में उसे एक प्रकार का नशा आ गया और वह कुछ बेहोश सा हो वहीं जमीन पर गिर पड़ा॥

यकायक वहां एक अद्भुत मूर्ति का प्रादुर्भाव हुआ। वह तमाम कोठड़ी एक तेज रोशनी से भर गई और उसी रोशनी में जटाधारी, चन्द्रमा माथे पर धारण किये और त्रिशूल हाथमें लिये एक शिवमूर्ति का भूतनाथ को दर्शन हुआ॥

अद्भुत शिवमूर्ति को देखते ही भूतनाथ गद्गद हो हाथ जोड़ जमीन पर गिर गया। उसके रुंधे हुए गले से अस्फुटरूप से यह आवाज निकली—"महात्मा! आप कोई भी हों! साक्षात् त्रिशूल-धारी शिव ही हों या कोई योगीराज ही हों! गदाधरसिंह हाथ जोड़ विनीत हो इन चरणों में दंडवत करता है। वह अपने पिछले कर्मों के लिये सच्चे दिल से पश्चात्ताप करता हुआ क्षमा प्रार्थना करता है। आगे के लिये वह ऐसे कामों को सदा के लिये तिलाञ्जुली देता है, और प्रतिज्ञा करता है कि अपने को सुधारेगा और भविष्यत् में ऐसे कर्म करेगा कि जिसकी सहायता से पिछली बदनामी की कालख को धो सके, और साथ ही इस बात की भी प्रतिज्ञा करता है कि यदि ऐसा न कर सका, यदि पुनः उसने न्यायपथ के विरुद्ध पैर रक्खा, यदि कभी दुष्कर्मों की तरफ उसका चित्त बढ़ा तो सदा के लिये वह इस संसार को छोड़ देगा और अपना काला मुंह किसी को नहीं दिखावेगा। एक बार उसे इन कामों के लिये और मौका दिया जाय यही उसकी प्रार्थना है॥"

भूतनाथ की सच्चे दिल के साथ निकली हुई इन बातों को सुन उस मूर्ति के गम्भीर चेहरे पर मुस्कुराहट की एक आभा दिखाई पड़ी और साथ ही एक गम्भीर आवाज में भूतनाथ को ये शब्द सुनाई पड़े:—

"गदाधरसिंह! मैं इस बार तुझे क्षमा करता हूं, देख खबरदार!! यदि अपने कहे से जरा भी विचला तो इस बार तेरा कल्याण नहीं है!!"

इतना कह वह शिवमूर्ति आगे बढ़ी और उसने अपना दाहिना हाथ जो खाली था, भूतनाथ के सिर पर फेरा। उस हाथ के स्पर्श होते ही भूतनाथ का शरीर एकदम कांपा और वह बेहोश हो गया॥

जब भूतनाथ होश में आया उसने अपने को उसी नाले के किनारे पड़े हुए पाया जहां से एक औरत के पीछे पानी में कूद उसने अपने को इस आफत में फँसाया था। इस समय पौ फट चुकी थी बल्कि पूरब तरफ आकाश में सूर्य की लालिमा अच्छी तरह फैल चुकी थी॥

बीसवां बयान ।

भूतनाथ की लामाघाटी से निकल कर गौहर उस छोटी पहाड़ी के नीचे उतरी और तब जमानियां की तरफ रवाना हुई ॥

रात का समय होने पर भी चन्द्रमा की रोशनी गौहर को काफी मदद दे रही थी और वह चारों तरफ से चौकन्नी तेजी के साथ चली जा रही थी और चाहती थी कि जितनी जल्दी हो सके लामाघाटी और अपने बीच में इतना फासला डाल दे कि फिर भूतनाथ का कोई डर न रह जाय । इसी इरादे से वह सड़क या आम राह छोड़ पगडण्डियों और घने जङ्गल का आश्रय ले रही थी ॥

घने और भयानक जङ्गल में इस समय सन्नाटा छाया था पर फिर भी कभी कभी किसी दरिन्दे जानवर के बोलने की आवाज आ जाती थी । यद्यपि गौहर की उम्र बहुत कम थी पर तौ भी उसका दिल इतना मजबूत था कि ऐसे रात के समय में भी भयानक जानवरों से भरे हुए जङ्गल में से होकर जाते उसे कुछ डर नहीं मालूम होता था ॥

यकायक गौहर के कान में घोड़े के टापों की आवाज सुनाई पड़ी । वह ठमक गई और कान लगा कर आहट लेने से मालूम हुआ कि एक नहीं बल्कि दो घुड़सवार हैं और उसी की तरफ आ रहे हैं क्योंकि टापों की आवाज पल पल में तेज होती जाती थी । गौहर को भूतनाथ का डर हो गया और वह पगडण्डी से हट एक घनी झाड़ी की आड़ में हो गई ॥

थोड़ी ही देर बाद वे दोनों सवार नजदीक आ पहुंचे और अब मालूम हुआ कि उनमें से एक तो मर्द है मगर दूसरी औरत है जो बड़े ठाठ के साथ घोड़े पर सवार उस मर्द के साथ बातें करती हुई आ रही है ॥

इस जगह जहां गौहर छिपी हुई थी कोई घना पेड़ न था और इस कारण चन्द्रमा की रोशनी बेरोक टोक जमीन तक पहुंच रही थी । इस रोशनी में यह देख गौहर को बेहद खुशी हुई कि ये दोनों उसी के साथी हैं । वह बेखटके अपनी आड़ की जगह से बाहर निकल आई और दोनों सवारों के सामने खड़ी हो गई । गौहर को देखते ही

थे दोनों सवार ठमक गये और उसे पहिचानते ही दोनों ने घोड़ों से उतरने में जल्दी की। वह औरत झटपट आगे बढ़ी और गौहर का हाथ पकड़ बोली, "बहिन, तू छूट आई !! हमलोग तुझे ही छुड़ाने को जा रहे थे॥"

गौहर०। (उस औरत को गले लगा कर) गिल्लन ! तू कहां से आ पहुंची !!

गिल्लन०। (अलग हो कर) अब स्वतन्त्र हो गई हो तो सब कुछ सुनोहोगी॥

गौहर उस आदमी की तरफ घूमी जो गिल्लन के साथ था और अब घोड़े से उतर अदब के साथ खड़ा था। यह आदमी वही था जिसे अब के पहिले भी दो एक बार पाठक गौहर से बातें करते देख चुके हैं। गौहर को अपनी तरफ मुखातिब देख उसने कहा, "मैं तो बड़े तरद्दुद में पड़ गया था कि गदाधरसिंह की कैद से आपको किस तरह छुड़ाऊँगा क्योंकि यह तो मुझे मालूम हो गया था कि आप उसी के कब्जे में चली गई हैं, बारे आप स्वयम् ही छूट कर आ गईं !!"

गौहर०। मुझे गदाधरसिंह ने अपनी लामाघाटी में कैद कर दिया था। भाग्य से उस समय उसकी रामदेई भी वहां मौजूद थी और उसी ने अन्त में कुछ देर हुई मुझे रिहाई दी॥

आदमी०। हां ! रामदेई भी वहां मौजूद थी ! तब तो आप ने सब बातें.........

गौहर०। हां, मेरा बहुत कुछ मतलब इस कैद में निकल गया। मगर सांवलसिंह ! इस तरह रास्ते में खड़े हो कर बात करना खतरे से खाली नहीं है। मैं चाहती हूं कि तुम्हारे घोड़े पर सवार हो जाऊं और तब रास्ते में बातें होती आयेंगी॥

सांवलसिंह०। बहुत अच्छी बात है॥

इतना कह कर सांवलसिंह अपना घोड़ा उस जगह ले आया। गौहर उछल कर उस पर सवार हो गई और गिल्लन अपने घोड़े पर चढ़ गई। घोड़ों का मुंह अजायबघर की तरफ घुमाया गया और सांवलसिंह पैदल इन दोनों से बातें करता हुआ साथ साथ आने लगा॥

सांवल०। मुझे अब तक न मालूम हुआ कि आप क्योंकर और कब इस गदाधर की कैद में पड़ गईं ॥

गौहर०। बस जिस रोज तुम मुझसे उस जङ्गल में मिले उसी रोज तुम्हारे जाने के कुछ ही देर बाद,मैं उसके, फन्दे में पड़ गई। सुनो मैं सब हाल तुमसे कहती हूं ॥

इतना कह गौहर ने अपने गिरफ़ार होने का सब हाल जो हम ऊपर लिख आए हैं खुलासा तौर पर कह सुनाया। सब कह चुकने पर उसने कहा, "मुझे अभी तक यह सन्देह बना ही हुआ है कि जिस औरत को मैंने बेहोश देखा था और जिसने अपना नाम रम्भा बताया था वह वास्तव में भूतनाथ ही की कोई चालबाजी थी या कोई और औरत थी! इसमें तो कोई शक नहीं कि वह औरत जान बूझ कर नखरा किये पड़ी थी क्योंकि अपने पकड़े जाने से कुछ ही पहिले मैंने उसे एक मर्द के साथ अपनी तरफ आते देखा था। लेकिन अगर वह भूतनाथ का कोई साथी था तो उसने उसी समय मुझे क्यों न पकड़ लिया जब मैं उससे बातें कर रही थी! कुछ समझ में नहीं आता ॥"

गिल्लन०। मैं बता सकती हूं कि वे लोग कौन थे ॥

गौहर०। अच्छा बताओ ॥

गिल्लन०। वे लोग महाराज शिवदत्त के ऐयार थे। उन्होंने अपने दुश्मनों को गिरफ़ार करने की नीयत से कई आदमी और ऐयार यहां भेजे हैं और वे ही लोग तरह तरह के जाल चारो तरफ फैलाये हुए हैं। उस दिन उन लोगों ने भूतनाथ ही को फंसाने का बन्दोबस्त किया हुआ था पर वह तो निकल गया उलटे तुम उसके फन्दे में आ पड़ीं ॥

गौहर०। (कुछ सोच कर) तुम्हें कैसे मालूम कि वे लोग महाराज शिवदत्त के ऐयार थे?

गिल्लन०। मैं उन लोगों से मिल चुकी हूं। और उन्हीं की जुबानी यह हाल मुझे मालूम हुआ है। अच्छा यह तो बताओ कि अब तुम्हारा क्या इरादा है और कहां जाना चाहती हो?

गौहर०। जहां कहो ॥

गिल्लन०। मेरी समझ में तो तुम भी शिवदत्त के आदमियों के

सङ्ग हो जाओ। वे लोग तुम्हारी इज्जत करते और तुमसे डरते भी हैं॥

गौहर०। मेरे काम में हर्ज तो न पड़ेगा? तुम तो जानती ही हो कि मैं कैसे नाजुक काम के लिये......

गिल्लन०। हां हां सो तो मैं अच्छी तरह जानती हूं और सब समझ बूझकर ही ऐसा कह रही हूं। तुम्हारे काम में सिवाय मदद के हर्ज किसी तरह का न पड़ेगा॥

गौहर०। अच्छी बात है? तुम्हें उनका पता ठिकाना मालूम है?

गिल्लन०। हां बखूबी। हम लोग उसी तरफ जा रहे हैं। अगर इसी चाल से चलते गये तो दोपहर होते होते पहुंच जायँगे॥

कुछ देर के लिये तीनों आदमी चुप हो गये। गौहर न जाने क्या क्या सोच रही थी और उसके दोनों साथी मन ही मन न जाने कैसे कैसे बांधनू बांध रहे थे। आखिर कुछ याद आ जाने पर गिल्लन ने चौंक कर गौहर से पूछा, "अच्छा तुम बलभद्रसिंह से मिली थीं?"

गौहर०। कहां से, मैं जमानियां पहुंचने भी नहीं पाई थी कि कमबख्त गदाधर के कब्जे में पड़ गई॥

गिल्लन०। तो तुम्हें पहिले वह काम करना चाहिये नहीं तो तुम्हारे पिता नाराज होंगे और फिर तुम्हें आजादी के साथ इस तरह घूमने......

गौहर०। नहीं नहीं, मैं उस काम को भूली नहीं हूं जरूर करूंगी और इस खूबसूरती के साथ करूंगी कि वे भी खुश हो जायँगे। मगर यह तो कहो कि तुम यहां कैसे आ पहुंचीं?

गिल्लन०। मुझे भी तुम्हारे पिता ने तुम्हारी मदद के लिये भेजा है और कहा है कि वह जिद्दी लड़की अकेली चली गई है, और यद्यपि किसी तरह का खतरा नहीं तथापि तुम भी जाओ और उसकी मदद करो। क्योंकि मैं जानता हूं कि वह अभी ऐयारी में पक्की नहीं हुई है और हिम्मत बहुत होने पर भी जरूर धोखा खा जायगी। मगर असल तो यह है कि मैं उनके सबब से उतना नहीं आई हूं जितना तुम्हारी मां के सबब से। उन्हीं के जोर से मुझे आना पड़ा है क्योंकि वे तुम्हें बहुत चाहती हैं और एक पल के लिये भी आंखों की ओट होने देना नहीं चाहतीं॥

गौहर०। (हँस कर) सच तो यह है कि मेरा यह ऐयारी सीखना

सांवल० । मुझे अब तक न मालूम हुआ कि आप क्योंकर और कब इस गदाधर की कैद में पड़ गईं ॥

गौहर० । बस जिस रोज तुम मुझसे उस जङ्गल में मिले उसी रोज तुम्हारे जाने के कुछ ही देर बाद में उसके फन्दे में पड़ गई। सुनो मैं सब हाल तुमसे कहती हूं ॥

इतना कह गौहर ने अपने गिरफ़ार होने का सब हाल जो हम ऊपर लिख आए हैं खुलासा तौर पर कह सुनाया। सब कह चुकने पर उसने कहा, "मुझे अभी तक यह सन्देह बना ही हुआ है कि जिस औरत को मैंने बेहोश देखा था और जिसने अपना नाम रम्भा बताया था वह वास्तव में भूतनाथ ही की कोई चालबाजी थी या कोई और औरत थी ! इसमें तो कोई शक नहीं कि वह औरत जान बूझ कर नखरा किये पड़ी थी क्योंकि अपने पकड़े जाने से कुछ ही पहिले मैंने उसे एक मर्द के साथ अपनी तरफ आते देखा था। लेकिन अगर वह भूतनाथ का कोई साथी था तो उसने उसी समय मुझे क्यों न पकड़ लिया जब मैं उससे बातें कर रही थी ! कुछ समझ में नहीं आता ॥"

गिल्लन० । मैं बता सकती हूं कि वे लोग कौन थे ॥

गौहर० । अच्छा बताओ ॥

गिल्लन० । वे लोग महाराज शिवदत्त के ऐयार थे। उन्होंने अपने दुश्मनों को गिरफ़ार करने की नीयत से कई आदमी और ऐयार यहां भेजे हैं और वे ही लोग तरह तरह के जाल चारों तरफ फैलाये हुए हैं। उस दिन उन लोगों ने भूतनाथ ही को फंसाने का बन्दोबस्त किया हुआ था पर वह तो निकल गया उलटे तुम उसके फन्दे में आ पड़ीं ॥

गौहर० । (कुछ सोच कर) तुम्हें कैसे मालूम कि वे लोग महाराज शिवदत्त के ऐयार थे ?

गिल्लन० । मैं उन लोगों से मिल चुकी हूं। और उन्हीं की जुबानी यह हाल मुझे मालूम हुआ है। अच्छा यह तो बताओ कि अब तुम्हारा क्या इरादा है और कहां चला चाहती हो ?

गौहर० । जहां कहो ॥

गिल्लन० । मेरी समझ में तो तुम भी शिवदत्त के आदमियों के

सङ्ग हो जाओ। वे लोग तुम्हारी इज्जत करते और तुमसे डरते भी हैं
गौहर०। मेरे काम में हर्ज तो न पड़ेगा? तुम तो जानती ही हो कि मैं कैसे नाजुक काम के लिये......

गिल्लन०। हां हां सो तो मैं अच्छी तरह जानती हूं और सब समझ बूझकर ही ऐसा कह रही हूं। तुम्हारे काम में सिवाय मदद के हर्ज किसी तरह का न पड़ेगा॥

गौहर०। अच्छी बात है? तुम्हें उनका पता ठिकाना मालूम है?

गिल्लन०। हां बखूबी। हम लोग उसी तरफ आ रहे हैं। अगर इसी चाल से चलते गये तो दोपहर होते होते पहुंच जायँगे॥

कुछ देर के लिये तीनों आदमी चुप हो गये। गौहर न जाने क्या क्या सोच रही थी और उसके दोनों साथी मन ही मन न जाने कैसे कैसे बांधनू बांध रहे थे। आखिर कुछ याद आ जाने पर गिल्लन ने चौंक कर गौहर से पूछा, "अच्छा तुम बलभद्रसिंह से मिली थीं?"

गौहर०। कहां से, मैं जमानियां पहुंचने भी नहीं पाई थी कि कम्बख्त गदाधर के कब्जे में पड़ गई॥

गिल्लन०। तो तुम्हें पहिले वह काम करना चाहिये नहीं तो तुम्हारे पिता नाराज होंगे और फिर तुम्हें आजादी के साथ इस तरह घूमने......

गौहर०। नहीं नहीं, मैं उस काम को भूली नहीं हूं जरूर करूंगी और इस खूबसूरती के साथ करूंगी कि वे भी खुश हो जायँगे। मगर यह तो कहो कि तुम यहां कैसे आ पहुंचीं?

गिल्लन०। मुझे भी तुम्हारे पिता ने तुम्हारी मदद के लिये भेजा है और कहा है कि वह जिद्दी लड़की अकेली चली गई है, और यद्यपि किसी तरह का खतरा नहीं तथापि तुम भी जाओ और उसकी मदद करो। क्योंकि मैं जानता हूं कि वह अभी ऐयारी में पक्की नहीं हुई है और हिम्मत बहुत होने पर भी जरूर धोखा खा जायगी। मगर असल तो यह है कि मैं उनके सबब से उतना नहीं आई हूं जितना तुम्हारी मां के सबब से। उन्हीं के ओर से मुझे आना पड़ा है क्योंकि वे तुम्हें बहुत चाहती हैं और एक पल के लिये भी आंखों की ओट होने देना नहीं चाहतीं॥

गौहर०। (हँस कर) सच तो यह है कि मेरा यह ऐयारी सीखना

उन्हें ज़रा नहीं भाया है। इस बार तो मैं किसी तरह ज़िद्द करके चली आई पर आगे मौका न पा सकूंगी॥

गिल्लन०। हां मालूम तो मुझे भी ऐसा ही होता है॥

गौहर०। मगर घर के बाहर निकल कर तो मुझे ऐसी ऐसी बातें मालूम हुई हैं कि जिसका ठिकाना नहीं और जिनके सबब से बहुत सम्भव है कि मैं तरद्दुद में पड़ जाऊं, खैर जो होगा देखा जायगा॥

इसी किस्म की बातें करती हुई गौहर धीरे धीरे चली जा रही थी। रात नाम मात्र को बाकी रह गई थी। अपने मालिक सूर्य्यदेव की अवाई जान चन्द्रमा अपने हुकूमत के सिंहासन पर से उतरने की तैयारी कर रहे थे और उनकी यह हालत देख मातहत तारों ने भी मुंह छिपाना शुरू कर दिया था। ऐसे समय में गौहर एक टीले के पास पहुंच कर रुकी जिसकी तह में छोटा पहाड़ी नाला भी बह रहा था और बोली, "यहां कुछ देर के लिये रुक जाना चाहिये॥"

गौहर घोड़े की पीठ पर से उतर पड़ी और गिल्लन ने भी जीन खाली कर दी। सांवलसिंह ने दोनों घोड़ों को लम्बी बागडोर के साथ बांध दिया जिसमें वे भी अपनी हरारत मिटा लें और तब ये तीनों आदमी सुबह की सुहावनी छटा देखने की नीयत से उस टीले पर चढ़ने लगे॥

इस टीले पर से दूर दूर की छटा दिखाई दे रही थी। गौहर बड़ी प्रसन्नता के साथ देर तक अपने चारो तरफ देखती रही। इतने ही में यकायक उसकी निगाह दो सवारों पर पड़ी जो दूर से आते हुए दिखाई पड़ रहे थे। उसने गिल्लन से कहा-"सखी! देखो तो ये दोनों कौन सवार हैं जो पूरब तरफ जा रहे हैं?"

तीनों कुछ देर तक गौर से उस तरफ देखते रहे। अभी पूरी तरह चांदना हुआ न था दूसरे वे सवार भी दूर थे इससे सूरत शक्ल के विषय में तो कुछ कहा नहीं जा सकता हां इतना मालूम होता था कि उनमें से एक तो मर्द है और दूसरी औरत॥

गौहर०। (गिल्लन से) पता लगाना चाहिये कि ये दोनों कौन हैं॥

सांवल०। इन व्यर्थ की बातों में क्या पड़ा हुआ है, तुम्हें अपने काम से मतलब है या दुनिया से। वे दोनों कोई हों तुम्हें क्या?

गौहर० नहीं, मेरा दिल गवाही देता है कि इन दोनों से अवश्य

मेरा कुछ न कुछ काम निकलेगा। मैं अवश्य उसका पता लगाऊँगी॥

गिल्लन०। जैसी तुम्हारी मर्जी॥

सांवल। यदि ऐसा,ही है तो चलो हम तीनों आदमी साथ ही चले चलें, आखिर,उधर ही तो हमें भी जाना है॥

गौहर०। नहीं, ऐसा करने से मुमकिन है कि वे दोनों होशियार हो कर निकल जायँ और अगर ऐसा हुआ तो मुझे बहुत रञ्ज होगा (गिल्लन से) सखी तुम जाओ और पता लगाओ कि वे दोनों कौन हैं॥

सांवल०। अगर ऐसा ही है तो मैं ही जाता हूं और पता लगाने की कोशिश करता हूं,तुम दोनों इसी जगह रहना मैं शीघ्रही लौटूंगा॥

गौहर०। हां हां तुम जाओ, हम दोनों इसी जगह हैं॥

सांवलसिंह यह सुन वहां से रवाना हुआ और शीघ्र ही टीले के नीचे उतर उन दोनों सवारों की तरफ जाता हुआ दिखाई पड़ा जो अब कुछ दूर निकल गये थे॥

सांवलसिंह के दूर निकल जाने पर गौहर ने मुस्कुरा कर गिल्लन की तरफ देखा और कहा,"तुम समझती होगी कि मैंने सांवल को व्यर्थ के काम पर भेज दिया है पर वास्तव में ऐसा नहीं है,मुझे तुम से कुछ ऐसी बातें कहनी हैं जिनका जिक्र उसके सामने तुमसे करना पसन्द नहीं था। आओ बैठ जाओ और मेरी बातें सुनो।" इतना कह गौहर और गिल्लन एक साफ जगह देख बैठ गईं और धीरे धीरे कुछ बातें करने लगीं॥

हम सांवलसिंह के साथ चलते हैं और देखते हैं कि उसने उन सवारों का पीछा कर क्या किया॥

सांवलसिंह तेजी के साथ चलता हुआ शीघ्रही उन दोनों सवारों के पास जा पहुंचा जो बड़ी बेफिक्री के साथ धीरे धीरे पूरब की तरफ जा रहे थे॥

उन दोनों सवारों में से एक तो मर्द था और दूसरी औरत। पोशाक और पहिरावे आदि से वे दोनों अमीर खानदान के मालूम होते थे और उनकी सवारी के घोड़े भी बहुत तेज, चञ्चल और ताकतवर थे, मगर इस समय इन दोनों केही चेहरे नकाबों से ढँके हुए थे जिस सबब से इनका पहिचाना जाना कठिन था। जिस तरह यह मर्द तीर कमान और ढाल तलवार लगाये हुए था उसी तरह यह औरत

भी, बल्कि एक छोटा सा बटुआ भी लटकता हुआ दिखाई दे रहा था जिसके देखने से गुमान होता था कि यह अवश्य कोई ऐयारा है। ये दोनों जिन्हें इस बात का कुछ भी सन्देह न था कि कोई आदमी हमारा पीछा कर रहा है बेफिक्री के साथ कुछ बातें करते हुए जा रहे थे॥

कुछ देर बाद यह कह कर उस मर्द ने चेहरे पर से नकाब उलट दी, "ओफ! ऐसे समय में तो यह भारी नकाब बहुत ही बुरी मालूम हो रही है।" जिसके जवाब में उस औरत ने कहा, "इस वक्त हम लोगों को देखने ही वाला कौन है॥"

पाठक! नकाब हट जाने से अब आप इस आदमी को बखूबी पहिचान सकते हैं। यह हमारे बहादुर प्रभाकरसिंह हैं और इनके साथ जो औरत है वह कदाचित् वही है जिसे अब से पहिले दो बार आप उनके साथ देख चुके हैं। एक बार तो जब प्रभाकरसिंह दारोगा की कैद से छूटे थे तब और दूसरी बार तिलिस्म के अन्दर जाते हुए इन्द्रदेव और दलीपशाह ने उनके साथ देखा था। सम्भव है कि इस औरत को पाठक और भी कई बार इनके साथ देखें अस्तु जब तक इसका असल हाल और नाम न मालूम हो तब तक के लिये कोई बनावटी नाम रख देना उचित होगा। हमारी समझ में कालिन्दी नाम कुछ बुरा न होगा॥

प्रभाकरसिंह को चेहरे पर से नकाब हटाते देख सांवलसिंह मौका समझ चक्कर काटता हुआ पेड़ों की आड़ आड़ में कुछ आगे होगया और वहां से उसने इनकी सूरत अच्छी तरह देखी। सांवलसिंह स्वयं भी ऐयार था इस कारण और किसी दूसरे सबब से भी जो आगे चल कर मालूम होगा प्रभाकरसिंह को बखूबी पहिचानता था अस्तु इस जगह इस तरह पर उन्हें देख चौंका और यह जानने की कोशिश करने लगा कि इनके साथ की औरत कौन है और ये दोनों कहां जा रहे हैं। वह जहां तक हो सका उनके घोड़ों के और नजदीक होगया और बातें सुनने लगा:—

प्रभाकर०। आज का परिश्रम भी हमलोगों का व्यर्थ ही हुआ॥

कालिन्दी०। हां अब तो यही कहना पड़ेगा॥

प्रभाकर०। तुम्हारी इस किताब से तिलिस्म का पूरा हाल नहीं

मालूम होता नहीं तो अवश्य उन लोगों का पता लगता ॥

कालि०। खैर अब इस बात में सन्देह करने की तो कोई जगह रह नहीं गई है कि उन लोगों को दारोगाही ने तिलिस्म में फँसा दिया है ॥

प्रभाकर०। (कुछ रुक कर) मेरी राय तो अब यही होती है कि इन्द्रदेव जी के पास चला जाऊँ और सब बातें उनसे कह दूं। वे बुद्धिमान आदमी हैं अवश्य कोई न कोई तर्कीब उन लोगों के छुड़ाने की निकालेंगे ॥

कालिन्दी०। आप स्वतन्त्र हैं ऐसा कर सकते हैं मगर......

प्रभा०। मैं नहीं समझता कि तुम्हें इस बात में या ऐसा करने में क्या आपत्ति है। क्या तुम्हारी इन्द्रदेव से कोई लड़ाई है?

कालिन्दी०। (हँस कर) भला मेरी उनकी क्या लड़ाई! न मैंने उन्हें कभी देखा और उन्होंने मुझे कभी देखा फिर लड़ाई कैसी?

प्रभा०। जब ऐसी बात है तो अवश्य मेरे साथ तुम्हें भी उनके पास चले चलना चाहिये ॥

कालिन्दी०। (कुछ सोच कर) अच्छा दो दिन की मोहलत मैं और चाहती हूं दो रोज के बाद आपको जवाब दूंगी ॥

प्रभाकर०। खैर दो दिन और सही ॥

सांवलसिंह ने जो इन दोनों की बातचीत सुनता हुआ बराबर चला आ रहा था अब उनका साथ छोड़ दिया और पीछे की तरफ लौटा क्योंकि एक तो इनकी बातचीत में कोई बात ऐसी उसे मालूम न हुई जो उसके मतलब की हो दूसरे गौहर और गिल्लन को भी वह बहुत पीछे छोड़ आया था और शीघ्र ही उनके पास लौटना जरूरी समझता था ॥

प्रभाकर और कालिन्दी ने भी अपने घोड़ों को तेज किया और शीघ्र ही उस टीले के पास जा पहुंचे जो जमानिया से बहुत दूर न था और जिसके ऊपर बने हुए बङ्गले को इन्होंने आजकल अपना स्थान बना रक्खा था * टीले के नीचे ही उस औरत का एक साथी खड़ा मिला जिसके सुपुर्द दोनों घोड़े कर दिये और तब ये दोनों टीले के ऊपर चढ़ने लगे ॥

---

* देखो नौवां हिस्सा आठवां बयान ॥

इक्कीसवां बयान ।

भूतनाथ तीसरे खण्ड के ग्यारहवें बयान में हम लिख आये हैं कि जिस समय दारोगा और जयपाल, मेघराज और जमना को कहीं रख कर लौटे उसी समय असली सरस्वती भी वहां आ पहुंची और अपने तिलिस्मी खञ्जर की मदद से उसने उन दोनों को बेहोश कर दिया। अब हम उसके आगे का हाल लिखते हैं ॥

सरस्वती ने दारोगा और जयपाल को बेहोश कर दिया मगर इसके बाद वह और कुछ भी कर न सकी क्योंकि उसी समय वह चबूतरा (जिस पर ये तीनों थे) तेजी के साथ जमीन के अन्दर धँस गया और यह बात इतनी फुर्ती से हुई कि सरस्वती उस पर से कूद कर अपने को बचा भी न सकी बल्कि होश हवास जाते रहे और वह भी बेहोश होकर उसी जगह गिर गई ॥

जिस समय सरस्वती होश में आई उसने अपने को एक लम्बी चौड़ी बारहदरी में पड़े हुए पाया। उसके बगल ही में दारोगा और जयपाल भी बेहोश पड़े थे ॥

सरस्वती उठ कर बैठ गई और सोचने लगी कि वह यहां क्योंकर आ पहुंची। शीघ्र ही उसे सब पिछली बातें याद आ गईं और यह भी खयाल हो आया कि तिलिस्मी चबूतरे पर पहुंच वह भी बेहोश हो गई थी। उसने अपने ऊपर की तरफ निगाह की और तब मालूम हुआ कि ठीक ऊपर बारहदरी की छत में एक बड़ा छेद बना हुआ था जिसकी लम्बाई चौड़ाई की तरफ खयाल करने से मालूम होता था कि बेशक इसी राह से उस चबूतरे ने नीचे उतर उन तीनों को यहां पहुंचाया है। उस छेद के अन्दर की तरफ घोर अंधकार था और इस बात का बिल्कुल पता न लगता था कि उसके भीतर क्या है ॥

सरस्वती उठकर खड़ी होगई और उस बारहदरी के बाहर निकली। एक हरे भरे सुहावने बाग में उसने अपने को पाया जिसके फूल पत्ते सूर्य्य की ताजी किरणों के पड़ने से चुमहले हो रहे थे। यह बाग बहुत ही बड़ा था और इसका दूसरा सिरा दिखाई नहीं देता था। हां बाईं और दाहिनी तरफ कुछ इमारतें बनी हुई दिखाई पड़ रही थीं। कुछ सोचती विचारती सरस्वती दाहिनी तरफ को रवाना हुई ॥

इस बारहदरी से जिसमें से सरस्वती अभी निकली थी बराबर इमारतों का सिलसिला उस बड़ी इमारत तक चला गया था जिस की तरफ सरस्वती बढ़ी चली जाती थी। हम नहीं कह सकते कि वह इसके पहिले भी कभी यहां आई थी या नहीं मगर इस समय तो वह सिर झुकाये सीधी सामने ही की तरफ जा रही थी॥

बीच की दूरी तय कर के सरस्वती एक बहुत ही लम्बे चौड़े दालान में पहुंची और उसे भी पार करके उसने एक बड़े भारी आलीशान कमरे के अन्दर पैर रक्खा। यह कमरा कुछ विचित्र ढङ्ग का बना हुआ था। काले पत्थर के बहुत ही मोटे मोटे चालीस खम्भों पर इसकी ऊँची छत रक्खी हुई थी। बीचोबीच कमरे में एक लम्बा चौड़ा काले ही पत्थरों का बना हुआ सिंहासन रक्खा हुआ था और इस सिंहासन के चारों तरफ काले पत्थर के चार शेर बने हुए रक्खे थे जो बड़े ही कद्दावर और इतने ऊँचे थे कि आदमी अगर उनके पास जा कर खड़ा होता तो उनकी गरदन तक पहुंचता। ये शेर नकली होने पर भी भयानक मालूम हो रहे थे और इनमें से हर एक के सिर पर किसी धातु के बने चार उकाब बैठाये हुए थे जिन्होंने गरदन घुमा कर अपनी चोंच में शेर का एक कान पकड़ा हुआ था। सरस्वती ने एक ही निगाह में इन सब चीजों को देख लिया॥

इस कमरे के तीन तरफ बड़ी २ कोठड़ियां बनी हुई थीं और चौथी तरफ वही दालान था जिधर से हो कर सरस्वती अभी आई थी। सरस्वती ने उन कोठड़ियों को गिना। हर तरफ दस दस कोठड़ियें यानी सब मिला कर तीस कोठड़ियां थीं जिनमें से कुछ के दर्वाजे बन्द थे और कुछ के खुले हुए थे। धीरे धीरे चलती हुई सरस्वती एक खुले दरवाजे के पास आ पहुंची और झांक कर अन्दर का हाल देखने लगी। दर्वाजे के पास ही अन्दर की तरफ दो लाशें पड़ी हुई दिखाई दीं जिन्हें देखने के साथ ही सरस्वती ने पहिचान लिया और एक चीख मार कर वह उनकी तरफ झपटी॥

सरस्वती के कोठड़ी के अन्दर पैर रखने के साथही उन चारों शेरों के मुंह से जो सिंहासन के चारों तरफ बने हुए थे गुर्राने की भयानक आवाज निकली और इसके साथ ही उस कोठड़ी का दरवाजा बड़े जोर के साथ बन्द हो गया जिसके अन्दर अभी २ सरस्वती गई थी॥

सरस्वती के जाने के कुछ देर बाद दारोगा और जैपाल की भी बेहोशी दूर हुई और वे उठ कर बैठ गये। जयपाल ने ताज्जुब के साथ अपने चारो तरफ देखा और कहा, "यह हम लोग कहां आ पहुंचे!"

दारोगा०। (उठ कर और अपने चारो तरफ देख कर) मुझे तो यह वही बाग मालूम होता है जिसमें रात को हमलोग उन दोनों—दयाराम और जमना को पहुंचा गये थे॥

दयाराम और जमना को अपने कब्जे में करने बाद दारोगा ने मौका पाकर एक तेज मसाले से साफ कर उन दोनों ही की असली सूरत देख ली और उन्हें पहिचान लिया था। अस्तु दारोगा की बात सुन जैपाल ने कहा, "मैं समझता हूं कि वह औरत सरस्वती थी जिसने हम लोगों पर खञ्जर का वार किया था॥

दारोगा०। मेरा भी यही खयाल है। (चारो तरफ देख कर) मगर वह औरत गई कहां? नियमानुसार तो हमलोगों की तरह उसे भी बेहोश होकर इसी स्थान पर पहुंचना चाहिये क्योंकि (छत की तरफ इशारा कर के) वह चबूतरा जिसने हमें यहां पहुंचाया है ठीक इस स्थान के ऊपर है॥

जयपाल०। बाहर निकल कर देखिये शायद हमलोगों के पहिले होश में आकर कहीं चली गई हो॥

दारोगा और जैपाल उस बारहदरी के बाहर निकले और चारो तरफ निगाह दौड़ाने लगे। किसी आदमी पर तो उनकी निगाह न पड़ी मगर यह विश्वास हो गया कि यह वही स्थान है जहां रात को दयाराम और जमना को ले कर आये थे। जयपाल ने दारोगा की तरफ देखकर कहा, "उस ओर वाले कमरे में चल कर देखना चाहिये शायद सरस्वती उधर ही गई हो॥"

दारोगा ने कुछ सोच कर कहा, "अच्छा चलो" और तब वे दोनों आदमी उसी तरफ चले जिधर थोड़ी देर पहिले सरस्वती गई थी॥

हम ऊपर लिख आये हैं कि सरस्वती एक बड़े दालान को पार करके उस ओर वाले कमरे में पहुंची थी। जिस तरह उस कमरे के तीन तरफ की कोठड़ियों में आने के लिये दरवाजे थे उसी तरह इस

दालान से उस कमरे में आने के लिये भी दस दर्वाजे बने हुए थे। सरस्वती को ये खुले हुए मिले थे मगर इस समय वे दसो दरवाजे बन्द थे और इस कारण उस कमरे में जाना असम्भव हो रहा था। दारोगा और जयपाल इस दालान में पहुंचे और कमरे के दरवाजे बन्द पा ताज्जुब करने लगे ॥

जैपाल०। ये दरवाजे क्या चलती वक्त आप बन्द करते गये थे?

दारोगा०। नहीं मैं उन्हें खुला हुआ ही छोड़ गया था ॥

जयपाल०। तब उनको किसने बन्द किया?

दारोगा०। शायद सरस्वती यहां पहुंची हो और उसी ने यह कार्रवाई की हो!

जयपाल०। हो सकता है। तो क्या अब आप इन दरवाजों को खोल कर इस कमरे के अन्दर नहीं जा सकते?

दारोगा०। नहीं, ये दरवाजे ही क्यों यह बाग और यह सब इमारतें तिलिस्म से सम्बन्ध रखती हैं और यहां के किसी दरवाजे या रास्ते को खोलना और बन्द करना अथवा इस जगह आना ही हर एक आदमी का काम नहीं है ॥

जय०। तब आपको यहां आने का रास्ता किस तरह मालूम हुआ?

दारोगा०। मैं एक बार महाराज के साथ यहां आया था इसी से यहां का कुछ हाल जानता हूं। अब यहां ठहरने से कोई फायदा नहीं न जाने और किसी तरह की आफत आ जाय ॥

जय०। खैर चलिये, मगर दयाराम आदि की क्या दशा होगी जिन्हें आप यहीं छोड़ते हैं?

दारोगा०। अब जो उनके भाग में होगा भोगेंगे मैं इसे क्या करूं, उन्हें यहां से निकाल ले जाना तो अब असम्भव है। अब वे लोग मेरे हाथ के बाहर होगये, खैर अब मुझे उनसे डरने की भी कोई जरूरत न रही क्योंकि जो लोग इस तिलिस्म में फँस जाते हैं वे अपनी मरजी से बाहर निकल नहीं सकते जब तक कोई जानकार आदमी उन्हें नहीं छुड़ावे ॥

जैपाल०। तब तो आप इस तरफ से भी अपने को अब निष्कण्टक ही समझिये। दयाराम की वजह से जो कुछ खौफ खतरा आपको था अब जाता रहा और जमना सरस्वती से भी नजात मिली ॥

दारोगा०। बेशक यह बात तो है, जमना सरस्वती के कारण गदाधर पर भी मेरा अहसान जरूर होगा अगर वह माने तो, खैर अब चलना चाहिये॥

जैपाल०। चलिये॥

आगे आगे दारोगा और उसके पीछे जयपाल उस जगह से घूमे और उस बाग के पश्चिम और उत्तर कोने की तरफ रवाना हुए जिधर एक ऊँचा बुर्ज बना हुआ दिखाई पड़ रहा था। इस बुर्ज के उत्तर और पश्चिम तरफ जो दीवारें पड़ती थीं वे बहुत ही ऊंची थीं और यह नहीं जाना जा सकता था कि उसके दूसरी तरफ क्या है मगर बीच बीच में कहीं कहीं एक आध दर्वाजा जरूर दिखाई पड़ता था जो भीतर की तरफ से मजबूती के साथ बन्द था॥

इस बुर्ज के निचले हिस्से में भी एक दर्वाजा बना हुआ था। दारोगा ने उसके पास जा कोई गुप्त खटका दबाया जिसके साथ ही वह दरवाजा खुल गया। दोनों आदमी भीतर चले गये और तब दारोगा ने हाथ से दबा कर दरवाजा बन्द कर दिया॥

अब ये दोनों एक छोटी आठपहली कोठड़ी में थे जिस के बीचो बीच में एक मोटे खम्भे के ऊपर एक पत्थर का शेर बैठाया हुआ था। दारोगा इस शेर के पास पहुंचा और उसकी बाईं आंख में उंगली डाल कर दबाया। कुछ जोर लगाने के साथ ही एक हलकी आवाज आई और जिस तरह किसी चूहेदानी का पल्ला ऊपर चढ़ जाता है इसी तरह सामने की तरफ एक पत्थर की सिल्ली ऊपर की तरफ चढ़ गई और आदमी के निकल जाने लायक रास्ता दिखाई देने लगा। दारोगा और जयपाल इस दर्वाजे के भीतर चले गये और इसके साथ ही वह दर्वाजा आप से आप ज्यों का त्यों बन्द हो गया॥

यह एक लम्बी और पतली सुरङ्ग थी जिसमें दारोगा ने अपने को पाया। इस में हवा आने के लिये जगहें बनी हुई थीं और उसी तरह से काफी रोशनी भी आ रही थी। दारोगा जयपाल को साथ लिये तेजी के साथ इसी सुरङ्ग में रवाने हुआ, लगभग हजार गज के जाने बाद यह सुरङ्ग खतम हो गई और सामने की तरफ एक बन्द दरवाजा नजर आया। इस दरवाजे को भी दारोगा ने कोई खटका दबा कर खोला। ऊपर चढ़ने के लिये खूबसूरत सीढ़ियां नजर आईं

जिसको पार करने बाद उन्होंने अपने को एक सुन्दर मगर छोटे बाग में पाया ॥

यह बाग वही था जिस में दयाराम और जमना को खोजती हुई सरस्वती आई थी अथवा जहां से चबूतरे पर चढ़ सरस्वती दारोगा और जयपाल इस दूसरे बाग में पहुंचे थे। सामने ही वह चबूतरा नजर आ रहा था जिसने इन तीनों को नीचे पहुंचाया था ॥

इस जगह पहुंच दारोगा रुका और जैपाल की तरफ घूम बोला, "अब किधर से चलना चाहिये ?"

जैपाल०। जिस राह से आप यहां आये थे वह राह तो मेरी समझ में ठीक नहीं है क्योंकि कौन ठिकाना दुश्मन होशियार हो गया हो और उसने कोई जाल हमें फँसाने के लिये फैलाया हो ॥

दारोगा०। (कुछ सोच कर) अच्छा इधर से आओ ॥

इतना कह पैर बढ़ाता हुआ दारोगा दक्खिन की तरफ रवाना हुआ और शीघ्र ही एक छोटे दालान में जा पहुंचा जिसके बीचोबीच में एक शेर पत्थर का ठीक वैसा ही बना हुआ था जैसा कि इस बाग में आती समय बुर्ज वाली कोठरी के अन्दर मिला था। दारोगा ने इस शेर की बाईं आंख में उंगली डाली जिसके साथ ही बांई तरफ की दीवार में एक दर्वाजा दिखाई पड़ने लगा। दारोगा जयपाल को लिये इस दर्वाजे के अन्दर चला गया और दर्वाजा बन्द हो गया ॥

जयपाल ने अपने को एक ऐसी कोठड़ी में पाया जिसमें तीन तरफ तीन लोहे के दर्वाजे बने हुए थे और चौथी तरफ वही रास्ता था जिस राह इस जगह आये थे। दारोगा ने कुछ सोच कर दाहिनी तरफ वाला दर्वाजा किसी तर्कीब से खोला और जयपाल को अपने साथ अन्दर कर दर्वाजा बन्द कर दिया। एक बहुत ही लंबी सुरङ्ग नजर आई जो इतनी तङ्ग थी कि एक आदमी भी मुश्किल से जा सकता था आगे आगे दारोगा और पीछे पीछे जयपाल रवाना हुए। यह सुरङ्ग आगे की तरफ ढालुईं थी अर्थात् नीचे की तरफ को कुछ झुकती हुई थी ॥

घण्टे भर से ऊपर समय तक उन दोनों को इस तङ्ग सुरङ्ग में चलना पड़ा और थकावट और गर्मी के कारण इनकी तबीयत परेशान हो गई क्योंकि इस सुरङ्ग में बनिस्बत बाहर के गर्मी ज्यादा थी और

हवा और रोशनी आने की जगहें भी बहुत दूर दूर पर थीं जिससे एक तरह पर अन्धकार ही बना रहता था। आखिर यह सुरङ्ग भी समाप्त हुई और इसका दूसरा मुहाना आ पहुंचा। सामने की तरफ कई सीढ़ियां थीं जिन पर इन दोनों को चढ़ना पड़ा और तब एक दर्वाजा मिला जिसके खोलने की जरूरत थी। यह दरवाजा भी लोहे और एक ही पल्ले का था और बहुत पुराना हो जाने के कारण उसका रङ्ग पत्थर के रङ्ग में इस तरह मिल गया था कि कुछ फर्क नहीं मालूम होता था॥

जगह तङ्ग थी और दारोगा के पीछे की तरफ होने के कारण जैपाल यह न देख सका कि दारोगा किस तरफ वह दर्वाजा खोलता है, हां इतना देखा कि एक हलकी आवाज के साथ वह लोहे का पल्ला ऊपर की तरफ चढ़ गया और सामने जाने का रास्ता दिखाई पड़ने लगा। दारोगा और जयपाल भीतर चले गये और अपने को एक दूसरी सुरङ्ग या गुफा में पाया जिसमें बाईं तरफ देखने से मुहाना नजर आता था॥

यह वही सुरङ्ग थी जिसकी राह उस गुप्त स्थान में आने जाने का रास्ता था जिसमें प्रभाकरसिंह और दयाराम वगैरह रहते थे और जिसके अन्दर घुस दारोगा इतना उपद्रव मचा चुका था। इस समय वह सुरङ्ग खाली थी कोई आता जाता नजर नहीं आता था अस्तु वह रास्ता जिस राह वह इस सुरङ्ग में पहुंचा था बन्द कर दारोगा बेधड़क उस गुफा के बाहर निकल आया और तेजी के साथ जमानियां की तरफ रवाना हुआ॥

दारोगा और जयपाल के बाहर निकलने के कुछ समय पहिले भूतनाथ भी सरस्वती द्वारा उस विचित्र घाटी के बाहर निकाला जा चुका था। भाग्यवश घने जङ्गल में से जाते हुए दारोगा और जयपाल ठीक उस समय वहां पहुंचे जब भूतनाथ ने अपनी कारीगरी से (नकली) जमना और सरस्वती को बेहोश किया था बल्कि मार डाला था॥

अपने सामने किसी तरह की आहट पा दारोगा रुक गया, कुछ ही सायत बाद उसकी निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो जमना सरस्वती (नकली) को मारने बाद उनकी लाश छिपाने की चेष्टा कर रहा था।

दारोगा और जयपाल एक आड़ की जगह में होकर उसकी सब कार्रवाई देखने लगे ॥

दोनों लाशों को छिपाने बाद जिस समय गदाधरसिंह ने किसी की ज़ुबानी "भला भला गदाधरसिंह! कोई हर्ज नहीं, अगर मैं जीता रहा तो बिना इसका बदला लिये कभी न छोड़ूंगा।" ये शब्द सुने तो घबड़ा कर उस आदमी को खोजने लगा मगर जब वह न मिला तो लाचार हो जमानियां की तरफ लौटा। उसके चले जाने के कुछ देर बाद दारोगा और जयपाल उस जगह पहुंचे जहां भूतनाथ ने दोनों लाशों को छिपाया था। दारोगा ने जयपाल से कहा, "बेशक भूतनाथ ने किसी का खून किया है। इन लाशों को निकाल कर देखना चाहिये कि किसका है॥"

"जो हुक्म" कह जयपाल ने वह मिट्टी और कतवार वगैरह हटाना शुरू किया जिनसे लाशों को ढांप भूतनाथ चला गया था। कुछ ही देर में वे दोनों लाशें और उनके सिर भी दिखाई देने लगे और जयपाल चौंक कर बोल उठा, "हैं! यह तो जमना सरस्वती की लाशें हैं॥"

दारोगा ने भी जमीन पर बैठ गौर से उन लाशों को देखा और तब सिर हिला कर कहा, "नहीं ऐसा नहीं हो सकता। जमना सरस्वती को तो हमलोग अभी अभी तिलिस्म में छोड़ते हुए आ रहे हैं। यद्यपि भूतनाथ ने इन दोनों को जमना सरस्वती समझ कर इनकी जानें ली हैं, मगर उसे धोखा हुआ और उसने इनके पहिचानने में भूल की क्योंकि वास्तव में ये सूरतें असली नहीं मालूम पड़तीं। देखो मैं अभी इसका पता लगाता हूं॥"

इतना कह दारोगा ने एक बटुए में से जो उसके साथ था एक छोटी शीशी निकाली जिसमें लाल रङ्ग का कोई अर्क भरा हुआ था। उसमें से थोड़ा अपनी उँगलियों में लगा दारोगा ने जमना के चेहरे पर लगाया, लगाने के साथ ही चेहरे का नकली रङ्ग उड़ गया और असली सूरत मालूम पड़ने लगी दारोगा ने उसी तरह सरस्वती की भी जांच की और उसकी सूरत भी नकली पाई॥

जैपाल०। बेशक अब इस बात में कोई सन्देह नहीं कि ये दोनों औरतें कोई दूसरी ही हैं और जमना सरस्वती बनने का इन्हें अवश्य कोई विशेष कारण था। मैं स्वयम् इस बात पर आश्चर्य कर रहा था

हवा और रोशनी आने की जगहें भी बहुत दूर दूर पर थीं जिससे एक तरह पर अन्धकार ही बना रहता था। आखिर यह सुरङ्ग भी समाप्त हुई और इसका दूसरा मुहाना आ पहुंचा। सामने की तरफ कई सीढ़ियां थीं जिन पर इन दोनों को चढ़ना पड़ा और तब एक दर्वाजा मिला जिसके खोलने की ज़रूरत थी। यह दरवाजा भी लोहे और एक ही पल्ले का था और बहुत पुराना हो जाने के कारण उसका रङ्ग पत्थर के रङ्ग में इस तरह मिल गया था कि कुछ फर्क नहीं मालूम होता था॥

जगह तङ्ग थी और दारोगा के पीछे की तरफ होने के कारण जैपाल यह न देख सका कि दारोगा किस तरफ वह दर्वाजा खोलता है, हां इतना देखा कि एक हलकी आवाज के साथ वह लोहे का पल्ला ऊपर की तरफ चढ़ गया और सामने जाने का रास्ता दिखाई पड़ने लगा। दारोगा और जयपाल भीतर चले गये और अपने को एक दूसरी सुरङ्ग या गुफा में पाया जिसमें बाईं तरफ देखने से मुहाना नज़र आता था॥

यह वही सुरङ्ग थी जिसकी राह उस गुप्त स्थान में आने जाने का रास्ता था जिसमें प्रभाकरसिंह और दयाराम वगैरह रहते थे और जिसके अन्दर घुस दारोगा इतना उपद्रव मचा चुका था। इस समय वह सुरङ्ग खाली थी कोई आता जाता नज़र नहीं आता था अस्तु वह रास्ता जिस राह वह इस सुरङ्ग में पहुंचा था बन्द कर दारोगा बेधड़क उस गुफा के बाहर निकल आया और तेजी के साथ जमानियां की तरफ रवाना हुआ॥

दारोगा और जयपाल के बाहर निकलने के कुछ समय पहिले भूतनाथ भी सरस्वती द्वारा उस विचित्र घाटी के बाहर निकाला जा चुका था। भाग्यवश घने जङ्गल में से जाते हुए दारोगा और जयपाल ठीक उस समय वहां पहुंचे जब भूतनाथ ने अपनी कारीगरी से (नकली) जमना और सरस्वती को बेहोश किया था बल्कि मार डाला था॥

अपने सामने किसी तरह की आहट पा दारोगा रुक गया, कुछ ही सायत बाद उसकी निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो जमना सरस्वती (नकली) को मारने बाद उनकी लाश छिपाने की चेष्टा कर रहा था।

दारोगा और जयपाल एक आड़ की जगह में होकर उसकी सब कार्रवाई देखने लगे॥

दोनों लाशों को छिपाने बाद जिस समय गदाधरसिंह ने किसी की ज़ुबानी "भला भला गदाधरसिंह! कोई हर्ज नहीं, अगर मैं जीता रहा तो बिना इसका बदला लिये कभी न छोड़ूंगा।" ये शब्द सुने तो घबड़ा कर उस आदमी को खोजने लगा मगर जब वह न मिला तो लाचार हो जमानियां की तरफ लौटा। उसके चले जाने के कुछ देर बाद दारोगा और जयपाल उस जगह पहुंचे जहां भूतनाथ ने दोनों लाशों को छिपाया था। दारोगा ने जयपाल से कहा, "बेशक भूतनाथ ने किसी का खून किया है। इन लाशों को निकाल कर देखना चाहिये कि किसका है॥"

"जो हुक्म" कह जयपाल ने वह मिट्टी और कलवार वगैरह हटाना शुरू किया जिनसे लाशों को ढाप भूतनाथ चला गया था। कुछ ही देर में वे दोनों लाशें और उनके सिर भी दिखाई देने लगे और जयपाल चौंक कर बोल उठा, "हैं! यह तो जमना सरस्वती की लाशें हैं॥"

दारोगा ने भी ज़मीन पर बैठ गौर से उन लाशों को देखा और तब सिर हिला कर कहा, "नहीं ऐसा नहीं हो सकता। जमना सरस्वती को तो हमलोग अभी अभी तिलिस्म में छोड़ते हुए आ रहे हैं। यद्यपि भूतनाथ ने इन दोनों को जमना सरस्वती समझ कर इनकी जानें ली हैं, मगर उसे धोखा हुआ और उसने इनके पहिचानने में भूल की क्योंकि वास्तव में ये सूरतें असली नहीं मालूम पड़तीं। देखो मैं अभी इसका पता लगाता हूं॥"

इतना कह दारोगा ने एक बटुए में से जो उसके साथ था एक छोटी शीशी निकाली जिसमें लाल रङ्ग का कोई अर्क भरा हुआ था। उसमें से थोड़ा अपनी उंगलियों में लगा दारोगा ने जमना के चेहरे पर लगाया, लगाने के साथ ही चेहरे का नकली रङ्ग उड़ गया और असली सूरत मालूम पड़ने लगी दारोगा ने उसी तरह सरस्वती की भी जांच की और उसकी सूरत भी नकली पाई॥

जैपाल०। बेशक अब इस बात में कोई सन्देह नहीं कि ये दोनों औरतें कोई दूसरी ही हैं और जमना सरस्वती बनने का इन्हें अवश्य कोई विशेष कारण था मैं स्वयम् इस बात पर आश्चर्य कर रहा था

कि यह क्या मामला है क्योंकि अभी अभी हमलोग उन दोनों को तिलिस्म में बन्द किये चले आ रहे हैं । खैर चलिये उठिये ॥

दारोगा ने वह शीशी बन्द कर अपने बटुए में रखली और उठ खड़ा हुआ । वे दोनों लाशें पुनः उसी तरह दबा दी गईं और तब भूतनाथ और इन दोनों लाशों के विषय में तरह तरह की बातें करते हुए वे दोनों जमानियां की तरफ रवाना हुए । मगर इस बात की खबर इन दोनों को जरा भी न थी कि कोई आदमी देर से हमलोगों का पीछा कर रहा है और बराबर चला आ रहा है ॥

हम नहीं कह सकते कि वह आदमी जो बड़ी होशियारी के साथ देर से दारोगा और जैपाल का पीछा करता चला आ रहा है कौन या किस सूरत का है क्योंकि उसने अपने चेहरे को बारीक कपड़े से इस तरह ढका हुआ है कि सूरत बिलकुल दिखाई नहीं पड़ सकती ॥

जब दारोगा और जयपाल जङ्गल और मैदान तेजी से तय करते हुए उस सड़क पर जा पहुंचे जो सीधी जमानियां की तरफ चली गई थी तो सड़क ही सड़क शहर (जमानियां) की तरफ रवाना हुए जो अब बहुत दूर न रह गया था । उस समय वह आदमी जो इन दोनों के पीछे पीछे आ रहा था रुका और यह बोला, "अब ये लोग सीधे घर जायेंगे, पीछा करना व्यर्थ है ॥"

इसी समय पीछे से दो सवारों के तेजी के साथ आने की आहट पा वह आदमी चौंका और तब हट कर एक घनी झाड़ी की आड़ में हो गया जो सड़क के किनारे ही पड़ती थी । बात की बात में वे दोनों सवार भी नजदीक आ गये ॥

ये दोनों नये आने वाले सवार वे ही थे जिनका हाल इस खण्ड के दूसरे बयान में लिखा गया है अर्थात् इनमें से एक तो शेरसिंह था और दूसरी गौहर ॥

उस झाड़ी में छिपे आदमी के देखते ही देखते भूतनाथ उस जगह पहुंचा, गौहर उसकी सूरत देख भाग गई और तब शेरसिंह से कुछ बातें कर भूतनाथ भी जिसकी सूरत से घबड़ाहट और परेशानी झलक रही थी गौहर के पीछे पीछे शेरसिंह को बिदा कर चला गया । अकेले शेरसिंह जमानियां की तरफ रवाना हुए और तब लकाटा था वह झाड़ी में छिपा हुआ आदमी भी बाहर निकला उस समय उसे मालूम हुआ

कि वहां केवल वही छिपा हुआ न था बल्कि पास ही की झाड़ी में एक और आदमी भी छिपा हुआ था जो उसी समय बाहर निकला। इस आदमी की सूरत भी नकाब से ढकी हुई थी॥

इसे देखते ही पहिला आदमी उसके पास चला गया और बोला, "कोनचे, गोबिन्द!"* दूसरे आदमी ने गौर से उसकी तरफ देखा और कहा, "यहा†" जिसके जवाब में पुनः वह पहिला आदमी बोला, "मेमचे माया"‡ और तब वे दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए जमानिया की तरफ रवाना हुए॥

बाईसवां बयान।

जमानिया पहुंच दारोगा और जयपाल अलग हो गये। जयपाल अपने ठिकाने चला गया और दारोगा अपने घर पहुंचा। उसके पहुंचने के कुछ समय बाद शेरसिंह वहां आए और उनके चले जाने के बाद भूतनाथ ने दारोगा से मिल कर बातें कीं। इन दोनों में जो कुछ बातें हुईं अथवा इसके बीच में जो घटना हुई हम ऊपर के कई बयानों में लिख चुके हैं इस जगह दोहरा कर लिखना व्यर्थ है मगर इतना कह देना जरूरी मालूम होता है कि यह सब हाल दामोदरसिंह का मरना मशहूर होने से पहिले का है, सिर्फ सिलसिला मिलाने के लिये ही हमें पीछे लौटना पड़ा है॥

भूतनाथ को बिदा करने के बाद दारोगा पुनः अपने ठिकाने आ बैठा और जैपाल से बातें करने लगा। यकायक उसे खयाल आया कि प्रभाकरसिंह को छुड़ाने वाले का पता लगाने की धुन में वह कैदखाने के कई दर्वाजे खुले ही छोड़ आया है अस्तु उसने जैपाल से कहा, "तुम यह तालियों का झब्बा लो, कैदखाने के सब ताले बन्द कर आओ। मालती को भी जिसके कोठड़ी की जंजीर कटी हुई पाई गई है उसमें से हटा कर किसी दूसरी कोठड़ी में कर देना॥"

जयपाल "बहुत खूब" कह कर चला गया मगर लगभग आधी घड़ी के बाद लौट आ कर घबड़ाए हुए ढङ्ग से बोला, "कैदखाना

* "कौन है गोबिन्द" † "हां" ‡ "मैं हूं माया॥"

खुला पड़ा है और मालती का कहीं पता नहीं है। ये कई तालियें भ जो उस समय कब्जे में नहीं मिलती थीं वहीं जमीनपर पड़ी हुईथीं॥

इस खबर ने दारोगा को हद्द से ज्यादा बेचैन कर दिया और बेतहाशा उसके मुंह से निकला, "बेशक मेरा ही कोई आदमी मेरे दुश्मनों से मिल गया है॥"

बड़ी देर तक दारोगा गरदन झुकाए गद्दी पर बैठा कुछ सोचता रहा और जयपाल भी गमगीन सूरत बनाए हुये उसके सामने बैठा रहा, आखिर दारोगा ने सिर उठाया और कहा, "ऐसे गुप्त कैदखाने में से दो दो कैदियों का निकल भागना कोई मामूली बात नहीं है, बेशक मेरे ऊपर कोई भारी आफत आना चाहती है॥"

जयपाल०। इस समय यदि प्रभाकरसिंह आप के हाथ में रहते तो शिवदत्त पर आपका बड़ा अहसान पड़ सकता था॥

दारोगा०। बेशक, और मालती से भी काम निकालने का मौका अब आया था, वर्षों से जिस लालच में पड़ उसे कैद रक्खा वह पूरी भी न होने पाई और वह हाथ से निकल गई। अफसोस!!

इतने ही में बाहर से किसी ने कहा, "अब अफसोस करने का कोई नतीजा नहीं, अपने दुष्कर्मों का फल भोगने के लिये तैयार हो!!"

यह आवाज सुनते ही दारोगा ने सामने पड़ी हुई तलवार उठा ली और कमरे के बाहर निकला मगर कोई नजर न आया। नीचे सदर दर्वाजे तक आया पर वहां भी पहरे में किसी तरह का फर्क न पाया लाचार पुनः लौटा और अपने कमरे में जाना चाहा पर कमरे के दर्वाजे ही पर पड़े हुए एक कागज के पुर्जे को देख चौंका और उसे उठा अन्दर ले जा कर शमादान की रोशनी में पढ़ा॥

न जाने उस पुर्जे में क्या बात लिखी हुई थी कि जिसने दारोगा के रहे सहे होश भी उड़ा दिये। उसके मुंह से एक चीख की आवाज निकली और वह एक दम बेहोश हो कर जमीन पर गिर गया॥

दारोगा की यह हालत देख जयपाल को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। उसने पहिले तो दारोगा को होश में लाने की कोशिश करना चाहा पर फिर कुछ सोच कर वह पुर्जा उठा लिया जो दारोगा के हाथ से छूट कर गिर पड़ा था। शमादान की रोशनी में उसने उस पुर्जे को पढ़ा, यह लिखा हुआ पाया —

यदुनाथ शर्मा !

अब मैं स्वतंत्र होगई, होशियार रहना, बदला लिये बिना कदापि न छोड़ूंगी, इतने दिनों तक तेरी क़ैद में रह कर जो कुछ तकलीफ मैं ने उठाई है उसका जब तक पूरा बदला मैं ले न लूंगी मुझे शान्ति न मिलेगी। पुनः कहती हूं कि होशियार हो जा और यह न समझ कि लोहगढ़ी का भेद मुझे मालूम नहीं है ॥

तेरी जानी दुश्मन

मालती।

इस चीठी में कोई ऐसा भेद छिपा हुआ था कि जयपाल की हालत भी खराब होगई, मगर बहुत ही कोशिश कर उसने अपने को सम्हाला और दारोगा साहब को होश में लाने की कोशिश करने लगा ॥

बड़ी तर्कीबों से किसी तरह दारोगा को होश आया और वह उठ कर बैठा। उसकी निगाह पुनः उस चीठी पर पड़ी और वह कांप उठा। उसके मुंह से कुछ बेजोड़ शब्द इस तरह पर निकलने लगे मानों वह अपने होश में नहीं है ॥

"ओफ़! लोहगढ़ी !! नहीं नहीं वह कोई दूसरी ही जगह होगी ! ओफ, मालती का छूट जाना बेशक बुरा हुआ, वह कम्बख़्त अवश्य इस भेद को जानती है नहीं तो इस तरह पर उसका जिक्र कदापि न करती, अफसोस अब तो दामोदरसिंह भी मेरा भारी दुश्मन बन जायगा क्योंकि मालती उसकी प्यारी भतीजी और अहिल्या...... उसकी बड़ी ही प्यारी......।ओफ़! मैं कहीं का न रहा। दयाराम और जमना सरस्वती को जहन्नुम में पहुंचा मैं समझे हुए था कि एक तरफ से छुट्टी मिली पर यह नहीं जानता था कि इतनी बड़ी आफत मेरे लिये खड़ी हुआ चाहती है। ओह, महाराज भी मेरे दुश्मन हो जायँगे क्योंकि दामोदरसिंह बिना उनके कान भरे न रहेगा और वे भी.........लोहगढ़ी......ओह......अहिल्या......"

इतना कहते कहते दारोगा पुनः बदहवास होगया। जयपाल ने गुलाबजल उसके मुंह पर छिड़का और हवा करना शुरू किया, कुछ देर में वह होश में आया पर बिना किसी से कुछ कहे अपने पलङ्ग पर

जा लेटा और तरह २ की बातें सोचता हुआ गरम २ आंसू बहाने लगा॥

इस बात के दो या तीन दिन बाद जमानियां शहर के चौमुहाने पर दामोदरसिंह की लाश पाई गई और उनका मरना मशहूर हुआ॥

तेईसवां बयान।

भूतनाथ जब होश में आया तो उसने अपने को उसी चश्मे के किनारे पड़ा पाया॥

इस समय वह बहुत ही सुस्त और उदास था, कुछ समय के भीतर जो कुछ उसके देखने में आया था उसको याद कर वह कांप रहा था, पिछली बातों को याद करने से कलेजा मुह में आता था और अपनी हालत की तरफ ध्यान देने से आंसू गिरने लगते थे। वह देर तक उसी तरह बैठा हुआ रोता और बिलखता रहा, अन्त में उठा और उसी चश्मे के पानी से हाथ मुह धो एक तरफ को रवाना हुआ॥

अभी बहुत दूर नहीं गया था कि पीछे किसी की आहट मालूम पड़ी, घूम कर देखा तो शेरसिंह पर निगाह पड़ी पलट पड़ा और उसे बेतहाशा गले से लिपटा आंसू गिराने लगा। शेरसिंह उसकी यह हालत देख घबड़ा गया और बोला, "गदाधर! यह क्या मामला है!! तुम रो क्यों रहे हो?"

भूत०। (अलग हो कर) बस एक तुम्ही से मिलने की आस थी सो पूरी हो गई अब मैं इस दुनिया ही को छोड़ दूंगा और किसी को अपना काला मुंह नहीं दिखाऊंगा॥

शेर०। (आश्चर्य से) आज तक ऐसी हालत तो तुम्हारी मैंने कभी नहीं देखी!! तुम्हें हो क्या गया है?

भूत०। अब मैं क्या बताऊं कि मुझे क्या हो गया है, अगर तुम्हें फुरसत हो तो बैठ जाओ और मेरा हाल सुन लो॥

शेर०। मैं बिल्कुल खाली हूं जो कुछ तुम्हें कहना हो कहो॥

शेरसिंह एक साफ जगह देख कर बैठ गया, भूतनाथ उसके सामने आ बैठा और अपना हाल कहने लगा॥

शुरू से ले अब तक का सब हाल भूतनाथ ने साफ साफ और सच सच शेरसिंह से कह सुनाया, प्रभाकरसिंह के घुमाए से भागने से

लेकर जमना सरस्वती और इन्दुमति को तिलिस्म में फँसाना, मैया-राजा का उनकी मदद करना वगैरह सब हाल कहा और अन्त में जमना और सरस्वती का मारना, गौहर की गिरफ़ारी, दारोगा की बातें और गौहर का भागना तक—सब हाल जो कुछ कि पाठक ऊपर पढ़ चुके हैं, उसने खुलासा खुलासा कह सुनाया और तब वह हाल भी पूरा कह सुनाया जो रात को देखा था ॥

शेरसिंह बड़े गौर से सब हाल चुपचाप सुनता रहा, बीच बीच में भूतनाथ की बातें सुन उसका चेहरा तरह तरह के भाव धारण करता और कभी लाल कभी पीला और कभी सुपेद होकर उसके दिल के भाव को जाहिर कर रहा था पर मुंह से उसने कुछ भी न कहा, और न भूतनाथ को अपना हाल कहने में किसी तरह टोका या रोका ॥

जब सब हाल कह भूतनाथ चुप हो गया तो शेरसिंह ने एक लम्बी सांस ली और कहा, "गदाधरसिंह ! मैं नहीं जानता था कि तुम ऐसे ऐसे काम कर चुके या कर रहे हो, यद्यपि बीच बीच में मैं तुम्हारी हालत का पता बराबर ले रहा था पर तुम यहां तक कर गुजरोगे इसका मुझे स्वप्न में भी खयाल न था, अगर बीच में कभी मुझे इन बातों का पता लगता तो बेशक मैं जिस तरह बन पड़ता तुम्हें उन कामों के करने से रोकता जिनके लिये आज तुम बिलख और रो रहे हो, अफसोस ! मुझे कुछ भी खबर न थी कि तुम्हारे हाथ से ऐसे काम हो रहे हैं जिनके कारण तुम पर हद्द दर्जे की मुसीबत और बदनामी का पहाड़ गिरा और तुम्हें अपने नीचे कुचल दिया चाहता है। गदाधर ! सच तो यह है कि तुम्हारे इन कर्मों को सुन मुझे तुमसे घृणा हो गई है और मैं तुम्हारा मुंह देखना पसन्द नहीं करता हूं ॥

भूत० । (गरदन झुका कर) बस अब तुम्हीं मुझसे ऐसी बातें करने लगे तो हो चुका, अब कुछ न कहूंगा और न तो तुम्हें और न अपने और किसी साथी को ही कभी अपना मुंह दिखाऊंगा। मालूम हो गया कि मेरे लिये दुनिया बस इतनी ही थी, अब मैं तुमसे बिदा होता हूं और भारतवर्ष के किसी घने जङ्गल में छिप कर........

इतना कहता हुआ भूतनाथ उठ खड़ा हुआ मगर लपक कर शेरसिंह ने उसे पकड़ लिया और यह कहते हुए अपने स्थान पर ला बैठाया,

"नहीं नहीं गदाधरसिंह ! मेरे कहने का यह मतलब नहीं है जो तुम समझे बैठे हो । मेरा मतलब यह है कि अब जब तक तुम अपनी अवस्था में परिवर्तन नहीं करोगे, अपने को नहीं सुधारोगे, अपने दुष्ट और पतित साथियों को नहीं छोड़ोगे और भले कामों में मन नहीं लगाओगे, न तो मैं तुम्हारा साथ दूंगा और न तुम्हें ही इस संसार में कभी शान्ति मिलेगी ॥

भूत० । तब आप क्या चाहते हैं ? मैं क्या करूँ ? मैंने तो सोच लिया था कि अब इस दुनिया ही को छोड़ दूँगा ॥

शेर० । भला ऐसा करने का क्या नतीजा निकलेगा ? ऐसा करोगे तो और भी बदनाम हो जाओगे, आदमी के हाथ से अगर कोई खराब काम हो जाय तो दृढ़ता और साहस के साथ उसको मिटाने का उद्योग करना चाहिये । जो कुछ तुम कर चुके हो उसका जवाब यह नहीं है कि दुनिया से गायब हो जाओ ! नहीं, यह नामर्दों का काम है जो मुसीबतों को काल समझते हैं और आफतों से उतना ही घबराते हैं जितना हाथी बुखार से । नहीं, दुष्कर्मों का जवाब इस दुनिया में कुछ है तो सुकर्म है, अगर तुम्हारे हाथ से एक दो या चार खराब काम हो गये हैं तो दस बीस या चालीस भले काम करके उस कलङ्क को धो डालो और दुनिया को बता दो कि मैंने अगर दो काम बुरे किये हैं तो सौ काम अच्छे भी किये हैं । जिस रोज तुम ऐसा कह सकोगे, जिस रोज तुम दुनिया को दिखा सकोगे कि तुम्हारे जिन्दगी के तराजू के पलड़े में पाप का पलड़ा कहीं ऊपर को चढ़ा हुआ है और पुण्य का पलड़ा नीचे झुका हुआ है उसी रोज से कोई फिर तुम्हें उँगली दिखाने का साहस न करेगा, कोई यह कहने की हिम्मत न करेगा कि गदाधरसिंह पातकी है । क्योंकि ऐसा इस दुनिया में कोई भी नहीं है जो दृढ़ता के साथ यह कह सके कि "मेरे हाथ से कोई कुकर्म नहीं हुआ !" दुनिया में हर एक छोटे से लेकर बड़ा तक, किसी न किसी दुष्कर्म के बोझ से दबा हुआ है, मुझे या इन्द्रदेव ही को क्यों न लो, इन्हें क्या एक दम से पवित्र समझते हो ? नहीं कभी नहीं, फिर तुम्हें घबड़ाने की क्या जरूरत है । उठो, होश सम्हालो और अपने पिछले कामों का बदला इस तरह पर अदा करो कि दुनिया कहे "गदाधर ने अगर एक काम बुरा किया तो सौ

काम अच्छे किये हैं ! वह उँगली दिखाने लायक नहीं है ।" बताओ यह नतीजा अच्छा है या वह जो तुमने सोचा है अर्थात् गायब हो जाना और दुनिया को यह कहने का मौका देना कि "गदाधर ने ऐसे ऐसे पाप किये कि उसने अपने को दुनिया में किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रक्खा ।" तुम्ही सोचो और बताओ कि क्या अच्छा है ॥

भूत० । आपकी बातें मेरी हिम्मत बढ़ाती हैं, मुझे मालूम होता है कि अब भी मेरे कर्मों का प्रायश्चित्त है ॥

शेर० । बेशक है, हजार बार है, और यही है कि सुकर्म कर के पिछली बदनामी को धो डालो, ऐसे २ काम करो कि दुश्मनों के भी दांत खट्टे हो जायँ और उन्हें भी कहना पड़े, "बेशक गदाधरसिंह बड़ा मर्द निकला, उसने अपने सब पापों को धोकर बहा दिया ॥"

भूत० । तो आप अब मुझे क्या करने का उपदेश देते हैं ?

शेर० । बस यही कि अब तक जो कुछ तुम कर चुके हो उसे बिल्कुल ही भूल जाओ, समझ लो कि वह एक दुःखान्त नाटक की पुस्तक का अन्तिम पृष्ठ था जो सदा के लिये उलट दिया गया । दारोगा और जयपाल ऐसे बेईमानों का साथ एक दम छोड़ दो और न पिछली किसी बात पर खयाल कर उनके साथ किसी तरह का रहम या मुरौवत का बर्ताव करो, आज कल दामोदरसिंह के मारे जाने से जमानियां भर में हलचल मच गई है, सब लोग घबराये हुए हैं राजा गिरधरसिंह बेचैन हो रहे हैं, कुंअर गोपालसिंह बदहवास हो रहे हैं, इन्द्रदेव परेशान हैं, उनकी मदद करो, दामोदरसिंह के खूनी का पता लगाओ, गिरधरसिंह से मुनासिब समझो तो मिलो और ऐसे आड़े वक्त पर उनको कम आओ, इन्द्रदेव पर कई तरह की मुसीबतें आपड़ी हैं (जिनके कारण तुम्हीं हो) उनकी मदद करो और यह खूब समझ रक्खो कि लाख होने पर भी वे तुम्हारे साथ बराबर दोस्ती का ही बर्ताव रक्खेंगे, तुम पर भरोसा करेंगे, तुम्हारी मदद करेंगे, तुम्हारे पिछले कलङ्कों को दूर करने में तुम्हारी नेकनामी के बाइस बनेंगे । तुम उनसे मिलो और बातें करो, जो कुछ मैंने कहा है उनको सुनाओ और उनकी राय लो, जहां तक मैं समझता हूं वे भी मेरी तरह तुमसे यही कहेंगे—गदाधर ! जो होगया उसे हो जाने दो, इसका खयाल एक दम भूल जाओ, उसे नाटक का एक वैसा सीन

"नहीं नहीं गदाधरसिंह ! मेरे कहने का यह मतलब नहीं है जो तुम समझे बैठे हो। मेरा मतलब यह है कि अब जब तक तुम अपनी अवस्था में परिवर्तन नहीं करोगे, अपने को नहीं सुधारोगे, अपने दुष्ट और पतित साथियों को नहीं छोड़ोगे और भले कामों में मन नहीं लगाओगे, न तो मैं तुम्हारा साथ दूंगा और न तुम्हें ही इस संसार में कभी शान्ति मिलेगी ॥

भूत० । तब आप क्या चाहते हैं ? मैं क्या करूँ ? मैंने तो सोच लिया था कि अब इस दुनिया ही को छोड़ दूँगा ॥

शेर० । भला ऐसा करने का क्या नतीजा निकलेगा ? ऐसा करोगे तो और भी बदनाम हो जाओगे, आदमी के हाथ से अगर कोई खराब काम हो जाय तो दृढ़ता और साहस के साथ उसको मिटाने का उद्योग करना चाहिये । जो कुछ तुम कर चुके हो उसका जवाब यह नहीं है कि दुनिया से गायब हो जाओ ! नहीं, यह नामर्दों का काम है जो मुसीबतों को काल समझते हैं और आफतों से उतना ही घबराते हैं जितना हाथी बुखार से । नहीं, दुष्कर्मों का जवाब इस दुनिया में कुछ है तो सुकर्म है, अगर तुम्हारे हाथ से एक दो या चार खराब काम हो गये हैं तो दस बीस या चालीस भले काम कर के उस कलङ्क को धो डालो और दुनिया को बता दो कि मैंने अगर दो काम बुरे किये हैं तो सौ काम अच्छे भी किये हैं । जिस रोज तुम ऐसा कह सकोगे, जिस रोज तुम दुनिया को दिखा सकोगे कि तुम्हारे जिन्दगी के तराजू के पलड़े में पाप का पलड़ा कहीं ऊपर को चढ़ा हुआ है और पुण्य का पलड़ा नीचे झुका हुआ है उसी रोज से कोई फिर तुम्हें ऊँगली दिखाने का साहस न करेगा, कोई यह कहने की हिम्मत न करेगा कि गदाधरसिंह पातकी है । क्योंकि ऐसा इस दुनिया में कोई भी नहीं है जो दृढ़ता के साथ यह कह सके कि " मेरे हाथ से कोई कुकर्म नहीं हुआ !" दुनिया में हर एक छोटे से लेकर बड़ा तक, किसी न किसी दुष्कर्म के बोझ से दबा हुआ है, मुझे या इन्द्रदेव ही को क्यों न लो, इन्हें क्या एक दम से पवित्र समझते हो ! नहीं कभी नहीं, फिर तुम्हें घबड़ाने की क्या जरूरत है । उठो, होश सम्हालो और अपने पिछले कामों का बदला इस तरह पर अदा करो कि दुनिया कहे—"गदाधर ने अगर एक काम बुरा किया तो सौ

काम अच्छे किये हैं! वह उंगली दिखाने लायक नहीं है।” बताओ यह नतीजा अच्छा है या वह जो तुमने सोचा है अर्थात् गायब हो जाना और दुनिया को यह कहने का मौका देना कि “गदाधर ने ऐसे ऐसे पाप किये कि उसने अपने को दुनिया में किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रक्खा।” तुम्हीं सोचो और बताओ कि क्या अच्छा है॥

भूत०। आपकी बातें मेरी हिम्मत बढ़ाती हैं, मुझे मालूम होता है कि अब भी मेरे कर्मों का प्रायश्चित्त है॥

शेर०। बेशक है, हजार बार है, और यही है कि सुकर्म कर के पिछली बदनामी को धो डालो, ऐसे २ काम करो कि दुश्मनों के भी दांत खट्टे हो जायँ और उन्हें भी कहना पड़े, “बेशक गदाधरसिंह बड़ा मर्द निकला, उसने अपने सब पापों को धोकर बहा दिया॥”

भूत०। तो आप अब मुझे क्या करने का उपदेश देते हैं?

शेर०। बस यही कि अब तक जो कुछ तुम कर चुके हो उसे बिल्कुल ही भूल जाओ, समझ लो कि वह एक दुःखान्त नाटक की पुस्तक का अन्तिम पृष्ठ था जो सदा के लिये उलट दिया गया। दारोगा और जयपाल ऐसे बेईमानों का साथ एक दम छोड़ दो और न पिछली किसी बात पर खयाल कर उनके साथ किसी तरह का रहम या मुरौवत का बर्ताव करो, आज कल दामोदरसिंह के मारे जाने से जमानियां भर में हलचल मच गई है, सब लोग घबराये हुए हैं राजा गिरधरसिंह बेचैन हो रहे हैं, कुंअर गोपालसिंह बदहवास हो रहे हैं, इन्द्रदेव परेशान हैं, उनकी मदद करो, दामोदरसिंह के खूनी का पता लगाओ, गिरधरसिंह से मुनासिब समझो तो मिलो और ऐसे आड़े वक्त पर उनको काम आओ, इन्द्रदेव पर कई तरह की मुसीबतें आपड़ी हैं (जिनके कारण तुम्हीं हो) उनकी मदद करो और यह खूब समझ रक्खो कि लाख होने पर भी वे तुम्हारे साथ बराबर दोस्ती का ही बर्ताव रक्खेंगे, तुम पर भरोसा करेंगे, तुम्हारी मदद करेंगे, तुम्हारे पिछले कलङ्कों को दूर करने में तुम्हारी नेकनामी के बाइस बनेंगे। तुम उनसे मिलो और बातें करो, जो कुछ मैंने कहा है उनको सुनाओ और उनकी राय लो, जहां तक मैं समझता हूं वे भी मेरी तरह तुमसे यहीं कहेंगे—गदाधर! जो होगया उसे हो जाने दो, उसका खयाल एक दम भूल जाओ उसे नाटक का एक वैसा सीन

समझो जिस पर पर्दा गिर गया है और अब नहीं उठेगा। नये सिरे से इस कर्ममय संसार में कमर कस कर उतरो और कुछ नामवरी पैदा करो। अगर मेरी विचार शक्ति मुझे धोखा नहीं दे रही है तो बेशक तुम इन्द्रदेव को वैसा ही मेहरबान और रहमदिल पाओगे जैसा मुझको॥

भूत०। (आंखें डबडबा कर) शेरसिंह! मैं तुम्हें भाई समझता था और समझता हूं मगर भाई से भी बढ़ कर मैं तुम्हें अपना दोस्त और सलाहकार समझता हूं। मैं नहीं कह सकता कि तुम्हारी बातों ने मुझे कैसी शान्ति पहुंचाई है, तुम्हारी इस नेक सलाह ने मेरे दिल में घर कर लिया है, मैं जरूर वही करूँगा जो तुमने कहा है और दिखा दूँगा कि मैं क्या क्या कर सकता हूं। आज से पिछली बातों और घटनाओं को मैं एक दुखदाई स्वप्न की तरह बिल्कुल ही भूल जाता हूं। आज से मैं अपनी मैली हो गई हुई नेकनामी की चादर को धोने का उद्योग करता हूं और शेरसिंह! खूब खयाल रक्खो कि या तो मैं कामयाबी ही हासिल करूँगा और नहीं तो दुनिया ही को छोड़ दूंगा। अब मुझे कुछ देर के लिये अकेला छोड़ दो॥

इतना कह भूतनाथ उठ खड़ा हुआ। शेरसिंह भी उठ खड़ा हुआ। भूतनाथ ने उसे पुनः गले लगाया और तब देखते देखते घने जङ्गल में घुस आंखों की ओट हो गया॥

चौबीसवां बयान।

सांवलसिंह को बिदा करने बाद गौहर गिल्लन को साथ ले एक साफ जगह पर बैठ गई और धीरे धीरे बातें करने लगी॥

गौहर०। रामदेई से मिलने पर मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई कि जिसे तुम सुनोगी तो ताज्जुब करोगी॥

गिल्लन०। क्या?

गौहर०। मगर इस बात को खूब छिपाए रखना जो मैं कहने वाली हूं॥

गिल्लन०। मुझसे ज्यादा छिपा कर तुम भी न रख सकोगी, मगर कुछ कहो भी तो?

गौहर०। रामदेई अपने पति को नहीं जानती!!

गिल्लन०। क्या कहा! रामदेई गदाधरसिंह को नहीं जानती!!

गौहर०। हां॥

गिल्लन०। भला यह भी कोई बात है, जिसके सङ्ग बराबर रहना उसे जानेगी नहीं!!

गौहर०। बेशक मैं जो कुछ कहती हूं बहुत ठीक कह रही हूं। बात यह है कि रामदेई समझती है कि उसका गदाधरसिंह वास्तव में रघुबरसिंह है॥

गिल्लन०। रघुबरसिंह कौन? वही जिसे लोग जयपालसिंह कह कर पुकारते हैं और जो जमानियां के दारोगा साहब का बड़ा दोस्त है?

गौहर०। हां, हां, वही! यह बात भी बड़ी दिल्लगी की हुई है। वास्तव में हुआ यह कि इस रामदेई को वह रघुबरसिंह अपने घर से फुसला कर निकाल ले भागा था। बीच में से गदाधरसिंह ने उसकी सूरत बन या न जाने किस तरह से उसे उड़ा लिया और तबसे यह उसी के पास है, रघुबर समझता है कि उसकी रामदेई मर गई और रामदेई समझती है कि यह गदाधरसिंह उसी का रघुबरसिंह है और किसी सबब से अपना नाम बदले हुए है॥

गिल्लन०। मुझे तो इस बात पर विश्वास नहीं होता!!

गौहर०। तुम्हें विश्वास करना पड़ेगा, जो कुछ मैं कह चुकी उसमें रत्ती भर भी गलत नहीं है और इसके सबूत में मैं खास गदाधरसिंह

के हाथ की चीठी तुम्हें दिखा सकती हूं ॥

इतना कह गौहर ने अपनी चोली में छिपी हुई एक चीठी निकाली और गिल्लन के हाथ में दे कर बोली, "लो इसे पढ़ो ॥"

गिल्लन ने वह चीठी पढ़ी—यह लिखा हुआ था:—

मेरे प्यारे दोस्त !

तुम्हारी कारीगरी काम कर गई ! रामदेई को मैं उड़ा लाया और कम्बख्त रघुबर को रत्ती भर शक न हुआ ! मगर अब इतनी मदद तुम्हें और करनी चाहिये कि कोई ऐसी कार्रवाई हो जाय जिसमें वह अपनी रामदेई को मरा हुआ समझ कर निश्चिन्त हो जाय नहीं तो फिर भी शिकार के निकल जाने का डर बना ही रहेगा ॥

तुम्हारा ही

गदाधर ।

गिल्लन ने बड़े गौर से उस चीठी को पढ़ा और कहा, "बेशक यह गदाधर ही के हाथ की लिखी हुई है ॥

गौहर० । क्यों अब तो तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास हुआ ?

गिल्लन० । बेशक इससे बढ़ कर सबूत क्या मिल सकता है मगर यह चीठी तुम्हारे हाथ क्योंकर लगी ?

गौहर० । सो मैं अभी तुम्हें न बताऊँगी ॥

गिल्लन० । क्यों क्या मैं किसी से कह दूंगी ?

गौहर० । नहीं सो बात तो नहीं है, अच्छा सुनो ॥

गौहर ने झुक कर गिल्लन के कान में कुछ कहा जिसके सुनते ही वह चमक उठी और बोली, "ओफ ओह ! यहां तक बात हो चुकी है ? मगर उसने यह चीठी तुम्हें क्योंकर दे दी ?"

गौहर० । क्या यह चीठी मेरे मतलब को नहीं है ? क्या इससे मैं गदाधरसिंह को अपने कब्जे में नहीं कर सकती ?

गिल्लन० । बेशक कर सकती हो और यही तो मेरे सवाल का मतलब है कि यह तुमने उससे ले क्योंकर ली ? ऐसी चीज तो कोई जल्दी अपने हाथ से निकालता नहीं ॥

गौहर० । बस ले ही ली ! समझ जाओ कैसे ले ली !!

गिल्लन० । (पुनः उस चीठी को पढ़ कर) अब तुम इस चीठी को क्या करोगी ?

गौहर० । अभी कुछ दिन तक को अपने पास ही रक्खूंगी फिर जो कुछ होगा देखा जायगा ॥

गिल्लन० । यह चीठी अगर तुम जयपालसिंह को दिखा दो तो गजब हो जाय !!

गौहर० । (हँस कर) भला इसमें भी कोई शक है । अभी क्या है अभी देखो मैं क्या क्या करती हूं, अभी तो श्री गणेश ही है, मगर...

गिल्लन० । मगर क्या ?

गौहर० । मुझे फिर भी यह डर बना ही रहेगा कि पुनः भूतनाथ के कब्जे में न पड़ जाऊँ । वह कमबख्त बड़ा ही शैतान है ॥

गिल्लन० । तो अब तुम अपने घरही क्यों नहीं चली चलतीं ?

गौहर० । क्यों ? घर जा कर क्या करूंगी ?

गिल्लन० । आखिर कब तक इस तरह जङ्गल जङ्गल मारी फिरोगी ॥

गौहर० । जब तक मेरी मर्जी चाहेगी !!

गिल्लन० । तुम्हारे मां बाप क्या कहेंगे ॥

गौहर० । मेरे पिता कुछ न कहेंगे ॥

गिल्लन० । और तुम्हारी मां ?

गौहर० । उसकी मुझे फिक्र ही क्या है ? वह मेरा कर ही क्या सकती है ?

गिल्लन० । ऐसा न कहो, वे तुम्हें बहुत प्यार करती हैं ? देखो मुझे उन्हीं के सबब से आना पड़ा ?

गौहर० । बस रहने दीजिये, जैसा प्यार करती हैं वह मैं बखूबी जानती हूं ॥

गिल्लन० । (मुस्कुरा कर) क्यों सो क्या ?

गौहर० । सांवलसिंह का पुछल्ला तो मेरे पीछे लगा ही दिया था अब तुम्हें भी भेज दिया कि मैं और भी बेबस हो जाऊँ । मैं समझती हूं कि तुम्हें उन्होंने यह जरूर कहा होगा कि जिस तरह हो समझा बुझा कर मुझे घर लौटा ले आना ॥

गिल्लन० । (मुस्कुराती हुई) हां यह तो जरूर कहा है, तो क्या इसमें कोई हर्ज है ? तुम यह तो देखो कि वह तुम्हें चाहती कितना हैं ॥

तना चाहती है वह मैं जानती हूं अगर मेरे बाप का
ही जहर देदे ॥
हीं नहीं ऐसा न कहो ॥
यों न कहूं, अब भी क्या मुझे सांवलसिंह का डर बना
कर चुगली खा देगा । मैं उस कम्बख्त को जरा नहीं

तुम्हारी मां है, तुम्हें इज्जत करनी चाहिये ॥
गर सौतेली मां ही तो है ॥
फिर भी क्या हुआ, मां ही कही जायगी ॥
झे प्यार करने वाली मां मर गई, अब कोई नहीं है,
ां को जाने दो, इस समय तो मैं स्वतन्त्र हूं न मां के
के जो चाहूंगी करूंगी । तुम अगर चाहो तो मेरे साथ
ाओ और अपनी मालकिन से कह दो कि तुम्हारी
ी ॥
ाह अब तो तुम मुझसे ही बिगड़ खड़ी हुई ? मैं क्या
ाथ छोड़ सकती हूं ?
। बस फिर यह जिक्र मुझ से न करो ॥
च्छा न करूंगी ! मगर कुछ बताओ भी तो सही कि
करने का इरादा किया है ! कम से कम तुम उस बात
क्यो जो अपने पिता से कह आई हो । उन्होंने तुम्हारे
किया है उसे तो पहिले करो ॥
ी बलभद्रसिंह वाली चीठी तो ? मैं आज ही वह
ह के पास पहुंचाने का उद्योग करूंगी, क्योंकि मुझे
वह आजकल जमानिया ही में है ?
ां मुझे भी यही पता लगा है । खैर वह चीठी तो तुम्हारे

हां, यह देखो ?
हर ने अपनी कुर्ती की जेब में हाथ डाला और साथ
ली, "हैं वह चीठी क्या हुई ? इसी जेब में तो पड़ी

गई और उस चीठी को तलाश करने लगी जो उसके

बाप ने बलभद्रसिंह के हाथ में देने के लिये उसके सुपुर्द की थी, तमाम देख डालने पर भी वह चीठी कहीं न मिली और उसने बेचैनी के साथ कहा, "बेशक वह चीठी गदाधरसिंह ने बेहोशी की हालत में निकाल ली। अब क्या होगा ?"

गिल्लन० । यह बड़ा बुरा हुआ !!

गौहर० । बेशक बड़ा बुरा हुआ, उस चीठी में कोई बहुत ही गुप्त बात लिखी हुई थी क्योंकि मेरे बाप ने मुझे देती समय उसे बहुत हिफाजत से रखने के लिये बारबार कहा था। मालूम हुआ कि उसी चीठी के लिये भूतनाथ ने मुझे गिरफ्तार किया था ॥

गिल्लन० । हां मालूम तो अब ऐसा ही होता है कि उसी ने यह चीठी निकाल ली, मगर यह पहिली रामदेई के विषय वाली चीठी तो...

गौहर० । उसे मैंने बहुत ही छिपा कर रक्खा हुआ था, इसी से निगाह न पड़ी। अफसोस ! अगर मैं जानती तो इस चीठी को भी उसी हिफाजत से रख सकती थी, पर मुझे तो यह गुमान भी नहीं था कि इस तरह पर गदाधर के कब्जे में पड़ जाऊंगी ॥

गिल्लन० । खैर अब अफसोस करना तो बिल्कुल फजूल है, मेरी समझ में तो चीठी न होने की हालत में भी तुम एक बार बलभद्र-सिंह से मिलो और उनसे सब हाल कहो ॥

गौ० । हां अब ऐसाही करना पड़ेगा सांवलसिंह लौटे तो चलै चलें ॥

गिल्लन० । लो वह भी आ पहुंचा ॥

वास्तव में सांवलसिंह उसी तरफ आ रहा था। उसे देख ये दोनों उठ खड़ी हुईं। जब वह पास आ पहुंचा तो गौहर ने पूछा, "कहो क्या कर आये ?"

सांवल० । वे दोनों सवार जिनका पीछा करने को आपने भेजा था निकल गये—उनमें से एक को सिर्फ मैं पहिचान सका ॥

गौहर० । कौन था ?

सांवल० । वे प्रभाकरसिंह थे और उनके साथ कोई औरत थी जिसे मैं पहिचान न सका। वे दोनों कुछ बातें करते हुए जा रहे थे, कुछ दूर जाने बाद घोड़े तेज कर निकल गये, लाचार मैं भी लौट आया ॥

इन तीनों में कुछ देर तक और भी बातें होती रहीं और तब पुनः ये लोग उधर ही रवाना हुए जिधर जा रहे थे ॥

गौहर०। जितना चाहती है वह मैं जानती हूं अगर मेरे बाप का डर न हो तो मुझे जहर दे दे॥

गिल्लन०। नहीं नहीं ऐसा न कहो॥

गौहर०। क्यों न कहूं, अब भी क्या मुझे सांवलसिंह का डर बना हुआ है कि जा कर चुगली खा देगा। मैं उस कम्बख़्त को ज़रा नहीं चाहती॥

गिल्लन०। तुम्हारी मां है, तुम्हें इज्जत करनी चाहिये॥

गौहर०। मगर सौतेली मां ही तो है॥

गिल्लन०। फिर भी क्या हुआ, मां ही कही जायगी॥

गौहर०। मुझे प्यार करने वाली मां मर गई, अब कोई नहीं है, खैर इन सब बातों को जाने दो, इस समय तो मैं स्वतन्त्र हूं न मां के कब्जे में हूं न बाप के जो चाहूंगी करूंगी। तुम अगर चाहो तो मेरे साथ रहो नहीं लौट जाओ और अपनी मालकिन से कह दो कि तुम्हारी लड़की नहीं आती॥

गिल्लन०। वाह अब तो तुम मुझसे ही बिगड़ खड़ी हुईं? मैं क्या भला तुम्हारा साथ छोड़ सकती हूं?

गौहर०। तो बस फिर वह जिक्र मुझ से न करो॥

गिल्लन०। अच्छा न करूंगी! मगर कुछ बताओ भी तो सही कि अब तुमने क्या करने का इरादा किया है! कम से कम तुम उस बात का तो खयाल रक्खो जो अपने पिता से कह आई हो। उन्होंने तुम्हारे सुपुर्द जो काम किया है उसे तो पहिले करो॥

गौहर०। वही बलभद्रसिंह वाली चीठी तो? मैं आज ही वह चीठी बलभद्रसिंह के पास पहुंचाने का उद्योग करूंगी, क्योंकि मुझे पता लगा है कि वह आजकल जमानिया ही में है?

गिल्लन०। हां मुझे भी यही पता लगा है। खैर वह चीठी तो तुम्हारे पास है न?

गौहर०। हां हां, यह देखो?

यह कह गौहर ने अपनी कुर्ती की जेब में हाथ डाला और साथ ही चौंक कर बोली, "हैं वह चीठी क्या हुई? इसी जेब में तो पड़ी हुई थी!!"

गौहर घबड़ा गई और उस चीठी की तलाश करने लगी औ उसके

बाप ने बलभद्रसिंह के हाथ में देने के लिये उसके सुपुर्द की थी, तमाम देख डालने पर भी वह चीठी कहीं न मिली और उसने बेचैनी के साथ कहा, "बेशक वह चीठी गदाधरसिंह ने बेहोशी की हालत में निकाल ली । अब क्या होगा ?"

गिल्लन० । यह बड़ा बुरा हुआ !!

गौहर० । बेशक बड़ा बुरा हुआ, उस चीठी में कोई बहुत ही गुप्त बात लिखी हुई थी क्योंकि मेरे बाप ने मुझे देती समय उसे बहुत हिफाजत से रखने के लिये बारबार कहा था । मालूम हुआ कि इसी चीठी के लिये भूतनाथ ने मुझे गिरफ्तार किया था ॥

गिल्लन० । हां मालूम तो अब ऐसा ही होता है कि उसी ने यह चीठी निकाल ली, मगर वह पहिली रामदेई के विषय वाली चीठी तो...

गौहर० । उसे मैंने बहुत ही छिपा कर रक्खा हुआ था, इसी से निगाह न पड़ी । अफसोस ! अगर मैं जानती तो इस चीठी को भी उसी हिफाजत से रख सकती थी, पर मुझे तो यह गुमान भी नहीं था कि इस तरह पर गदाधर के कब्जे में पड़ जाऊंगी ॥

गिल्लन० । खैर अब अफसोस करना तो बिल्कुल फजूल है, मेरी समझ में तो चीठी न होने की हालत में भी तुम एक बार बलभद्र-सिंह से मिलो और उनसे सब हाल कहो ॥

गौ० । हां अब ऐसाही करना पड़ेगा सांवलसिंह लौटे तो चले चलें ॥

गिल्लन० । लो वह भी आ पहुंचा ॥

वास्तव में सांवलसिंह उसी तरफ आ रहा था । उसे देख ये दोनों उठ खड़ी हुईं । जब वह पास आ पहुंचा तो गौहर ने पूछा, "कहो क्या कर आये ?"

सांवल० । वे दोनों सवार जिनका पीछा करने को आपने भेजा था निकल गये—उनमें से एक को सिर्फ मैं पहिचान सका ॥

गौहर० । कौन था ?

सांवल० । वे प्रभाकरसिंह थे और उनके साथ कोई औरत थी जिसे मैं पहिचान न सका । वे दोनों कुछ बातें करते हुए जा रहे थे, कुछ दूर जाने बाद घोड़े तेज कर निकल गये, लाचार मैं भी लौट आया ॥

इन तीनों में कुछ देर तक और भी बातें होती रहीं और तब पुनः ये लोग उधर ही रवाना हुए जिधर जा रहे थे ॥

पचीसवां बयान।

दामोदरसिंह के जमानियां वाले आलीशान महल के फाटक के ऊपर जो इमारत है उसमें आजकल इन्द्रदेव का डेरा पड़ा है जो अपने ससुर के मरने की खबर पा यहां आये हुए हैं। आज इसी जगह हम भूतनाथ को देख रहे हैं जो यहां इन्द्रदेव जी से मिलने की नीयत से आया है और उन्हीं के कमरे में बैठा हुआ उनके आने की राह देख रहा है क्योंकि नौकर की जुबानी इन्द्रदेव ने उसे कहला भेजा है कि मैं एक जरूरी काम से छुट्टी पाकर अभी आता हूं। पाठकों को साथ ले हम भूतनाथ का साथ छोड़ अन्दर की तरफ चलते हैं और देखते हैं कि इन्द्रदेव क्या कर रहे हैं या किस जरूरी काम में फंसे हुए हैं॥

इस इमारत के सबसे ऊपरी हिस्से में एक छोटा मगर खूबसूरती के साथ सजा हुआ बङ्गला है। इन्द्रदेव इस समय इसी बङ्गले में एक आराम कुरसी पर लेटे हुए हैं और अपने सामने की खुली खिड़की की राह दूर दूर तक के मकान मैदान और जङ्गल का सुहावना दृश्य देखने के साथ ही साथ उस आदमी की बातें भी सुनते जा रहे हैं जो इनके सामने एक दूसरी कुर्सी पर बैठा हुआ है॥

इस आदमी का चेहरा नकाब से ढंका हुआ है इस कारण हम इसकी सूरत शक्ल के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते हां उसकी पोशाक इत्यादि की तरफ ध्यान देने से यह जरूर मालूम होता है कि यह कोई ऐयार है क्योंकि खञ्जर के अलावा उसके पास ऐयारी का बटुआ और कमन्द भी दिखाई दे रहा है। इस समय यह आदमी कोई गुप्त हाल इन्द्रदेवजी को सुना रहा है जिसे वे बड़े ध्यान से सुन रहे हैं और बीच बीच में कोई कोई सवाल भी करते जाते हैं॥

इस आदमी ने क्या क्या बातें इन्द्रदेव से कहीं या यह कौन है इसे हम इस जगह कहना मुनासिब नहीं समझते, आगे चलने पर आप ही मालूम हो जायगा॥

इसकी बातें समाप्त हो जाने पर इन्द्रदेव ने कहा:—

इन्द्र०। तो इन सब बातों का पता आपको अपने उसी शागिर्द की जुबानी लगा जिसका जिक्र कर चुके हैं?

नकाबपोश० जी हां! यद्यपि यह कहा जा सकता है कि मालिक

के दोस्त के साथ मैंने बुराई की और उसके साथ विश्वासघात किया पर यह एक ऐसी खबर थी कि जिसे सुन और जान कर मैं चुप भी नहीं रह सकता था ॥

इन्द्रदेव० । बेशक ऐसा ही है, इन सब बातों को जान कर आप कभी बिना कुछ किये नहीं रह सकते थे, और इसके लिये कोई यदि आपको दोष दे तो वह पूरा बेवकूफ है । आपने उसको कैद से छुड़ा कर मेरे ऊपर अहसान किया और इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं ॥

नकाब० । यह आपका बड़प्पन है जो आप ऐसा कहते हैं और मैं तो आपको अपना बड़ा और बुजुर्ग मानता हूं और मुझे आप ही का भरोसा भी है । इसी लिये मैंने यह सब हाल आपको सुना देना बहुत ही जरूरी समझा क्योंकि यह मुझे दृढ़ निश्चय है कि आप के ससुर की मौत और इस घटना के बीच कोई न कोई सम्बन्ध जरूर है ॥

इन्द्र० । बेशक ऐसा ही है और यह आपने बहुत ही अच्छा किया जो मुझे सब बातें बता दीं नहीं तो मैं सख्त परेशानी में पड़ा हुआ था । अच्छा तो अब आपका क्या इरादा है, क्या आप जमानिया में और कुछ दिन रहेंगे ?

नकाब० । जी नहीं मैं शीघ्र ही लौट जाऊंगा । कदाचित आप से पुनः मिलने का मौका मुझे न मिले यही समझ कर बेमौका होने पर भी यहां आया था और अब यदि आज्ञा हो तो जाऊं ॥

इन्द्र० । कैसे कहूं, यदि गदाधरसिंह के आने की इत्तला मुझे न मिली होती तो मैं कुछ देर तक और भी आप को रोकता और बातें करता ॥

नकाब० । गदाधर के विषय में तो मुझे आपही का भरोसा है, आपही के हाथ से यदि वह ठीक हो सकेगा तो होगा, नहीं तो मुझे उसके विषय में अब कुछ भी उम्मीद नहीं है, इसके बारे में जो कुछ आप से कहना था मैं कही चुका हूं पर इतनी फिर भी प्रार्थना है कि इस पर दया बनाये रहियेगा, इधर उसके हाथ से बहुत कुकर्म हो चुके और हो रहे हैं ॥

इन्द्र० । मेरे हाथ से इसका कोई अनिष्ट कदापि न होगा, इसका तो आप विश्वास रक्खें मैं इसको सुधारने की ही चेष्टा में लगा

रहता हूं, पर मेरी कुछ अक्ल ही हैरान हो रही है कि इसे किस तरह कब्जे में करूं॥

नकाब०। मुझे तो उम्मीद है कि अब वह सम्हल जायगा, इस बार की चोट उसके दिल पर बैठ गई है और अगर उसमें कुछ भी आदमीयत होगी तो अब वह कभी इस रास्ते पर पैर न रक्खेगा जिसने उसे इस दशा तक पहुंचा दिया है॥

इन्द्र०। देखिये ईश्वर की इच्छा॥

इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और वह नकाबपोश भी खड़ा हो गया। दोनों आदमी साथ ही साथ नीचे आए जहां कुछ और बातचीत के बाद इन्द्रदेव ने उसे बिदा किया और तब उस कमरे की तरफ बढ़े जिसमें भूतनाथ के होने की उन्हें खबर लग चुकी थी॥

भूतनाथ उस समय बेचैनी के साथ कमरे में इधर उधर टहल रहा था। इन्द्रदेव के पहुंचते ही वह रुक कर खड़ा हो गया। पहिली ही निगाह में इन्द्रदेव ने उसके दिल का भाव भली प्रकार समझ लिया और जान लिया कि बेचैनी और घबराहट ने उसे अपना शिकार बनाया हुआ है तथापि उन्होंने बनावटी मुस्कुराहट के साथ कहा, "कहो भूतनाथ! अब की तो बहुत दिनों पर आये? क्या हाल है? बहुत सुस्त मालूम हो रहे हो?"

भूतनाथ०। मेरी सुस्ती और उदासी का तो पूछना ही क्या है, जान बची हुई है इसे ही गनीमत समझिये!!

इन्द्र०। क्यों क्यों? ऐसा क्या?

भूत०। जैसी जैसी आफतें मेरे ऊपर आई हैं उनको झेल कर भी जीता हूं बस यही बहुत है॥

इन्द्र०। (अपनी गद्दी पर बैठ कर) इस तरह पर नहीं, आओ मेरे सामने बैठो और साफ साफ बताओ कि क्या बात है और तुम किस मुसीबत में मुबतिला हो॥

भूतनाथ इन्द्रदेव के सामने उनसे कुछ हट कर बैठ गया और अपने चारो तरफ देख कर बोला, "यहां कोई मेरी बातें सुनने वाला तो नहीं है?"

इन्द्र०। नहीं कोई नहीं, ऐसा ही सन्देह है तो दरवाजा बन्द कर सकते हो॥

"हां यही ठीक होगा !" कह कर भूतनाथ ने उठ कर कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और तब पुनः अपनी जगह पर आ कर बैठ गया। कुछ देर तक के लिये सन्नाटा हो गया और इन्द्रदेव भी चुप और से भूतनाथ की सूरत देखते रहे जो जमीन की तरफ देखता हुआ न जाने क्या क्या सोच रहा था ॥

आखिर एक लम्बी सांस ले कर भूतनाथ ने सिर उठाया और इन्द्रदेव की तरफ देख हाथ जोड़ कर बोला, "मेरे हाथ से आपका एक बड़ा भारी कसूर हो गया है ॥"

इन्द्र०। सो क्या ?

भूत०। यदि आप मुझे माफ करें तो मैं कहूं ॥

इन्द्र०। ऐसा कौन सा काम तुम कर बैठे कि माफी की जरूरत समझते हो ॥

भूत०। जमना और सरस्वती का मैंने खून कर डाला है ॥

भूतनाथ की बात सुन इन्द्रदेव चौंक पड़े। यद्यपि वे जानते थे कि भूतनाथ नकली प्रभाकरसिंह बन कर उनकी घाटी में चला गया था और उसके बाद उसने (नकली) जमना और सरस्वती को मार डाला पर यह विश्वास उन्हें कदापि न था कि भूतनाथ उनके सामने इस तरह पर अपना कसूर साफ २ कह देगा। वे कुछ आश्चर्य में हो कर भूतनाथ का मुंह देखने लगे ॥

भूत०। एक ऐसी घटना हो गई है जिसने मुझे साफ साफ बता दिया है कि मैं बड़े बुरे रास्ते पर जा रहा हूं और अगर अब भी अपने को न सम्हालूंगा तो किसी को दुनिया में मुंह दिखाने लायक न रहूंगा। आप पर मेरी श्रद्धा है, और मुझे दृढ़ विश्वास है कि आप मेरे हितेच्छुक हैं। अस्तु यही सोचकर मैं आपके पास आया हूं कि अपने सब कसूर आप से साफ साफ कह दूंगा और तब यदि आप मुझे क्षमा करेंगे बल्कि सहायता देंगे तो फिर से इस दुनिया में कुछ नेकनामी हासिल करने की कोशिश करूंगा। मुझे दृढ़ निश्चय है कि आप ऊपर से नहीं तो भी दिल से मुझे प्यार करते हैं और यदि मेरे हाथ से आपका कोई अनिष्ट भी हो जाय तो भी आप मुझे माफ कर देंगे। यही सोच कर मैं आपके पास आया हूं कि अपने सब कसूर, अपनी सब भूलें, अपने सब दुष्कर्म, आपके सामने कह सुनाऊं और

यदि आप मुझे माफी के अयोग्य ठहरावें तो फिर इस दुनिया ही को छोड़ दूं, क्योंकि अब मुझे बदनामी के साथ इस संसार में रहना मंजूर नहीं है ॥

इन्द्र० । तुम्हारे स्वभाव में इतना परिवर्तन हो गया देख मुझे आश्चर्य होता है ॥

भूत० । जो बात मेरे देखने में आई है वह यदि आप देखते तो आपको भी आश्चर्य होता । अपनी आंखों से मैंने मुर्दों को जिन्दे होते और बातें करते देखा !!

इन्द्र० । (आश्चर्य से) सो कैसे और कहां ?

इसके जवाब में भूतनाथ वह बिल्कुल हाल बयान कर गया जो हम इस खण्ड के अट्ठारहवें बयान में लिख आए हैं। इन्द्रदेव चुपचाप सब हाल सुनते रहे, इस समय उनका चेहरा बड़ा ही गम्भीर था और इस बात का पता लगाना बिल्कुल असम्भव था कि इस समय उनके दिल में क्या क्या बातें उठ रही हैं या वे क्या सोच रहे हैं ॥

वह हाल कह सुनाने बाद भूतनाथ अपना बाकी सब हाल यानी नागर के मकान से निकलती समय मेघराज* के साथ हो प्रभाकर-सिंह को गिरफ्तार कर दारोगा के कब्जे में पहुंचाने से लेकर तिलिस्मी घाटी में आने और विचित्र ढङ्ग से वहां से बाहर निकलने बाद जमना और सरस्वती के मार डालने तक का सब हाल कह सुनाया जिसे इन्द्रदेव चुपचाप सुनते रहे । सब हाल कह कर भूतनाथ ने कहा—"मैंने सब हाल सच्चा सच्चा और साफ साफ आपको कह सुनाया, अब यह आपके हाथ है कि मुझे मारें या जिलावें,क्योंकि यदि आप मुझे सच्चे मन से क्षमा न कर देंगे तो मैं इस दुनिया में रहने का नहीं ॥"

इन्द्र० । मेरा तुम्हारे पर जोर ही क्या है और मेरे माफ करने या न करने से होता ही क्या है, मैं हूं कौन चीज ! माफ करने और न करने वाला तो ईश्वर है जो सब का भला-बुरा देखता है और साथ ही सबको सजा देने की कुदरत रखता है ॥

* भूतनाथ अभी तक बिल्कुल नहीं जानता कि यह मेघराज कौन है, पर हमारे पाठक बखूबी जानते हैं कि दयारामजी का नाम इन्द्रदेव ने मेघराज रख दिया था और आज कल वे इसी नाम से पुकारे जाते थे ॥

भूत० । (लम्बी सांस ले कर) बस मालूम हो गया! मैं समझ गया कि आप मुझे माफ करना मुनासिब नहीं समझते, खैर मैं जाता हूं ॥

इतना कह यकायक भूतनाथ उठ खड़ा हुआ। यह देखते ही इन्द्रदेव भी उठ खड़े हुए और भूतनाथ का हाथ पकड़ कर बोले—"बैठो बैठो! भागे क्यों जाते हो? कुछ सुनो भी तो सही॥"

भूत०। नहीं अब मैं कुछ सुना ही नहीं चाहता, जब आपही मुझ से खफा हैं तो फिर क्या! यह दुनिया किस मसरफ की!!

इन्द्र०। नहीं नहीं भूतनाथ मैं तुमसे खफा नहीं हूं। मेरे कहने का मतलब तो सिर्फ यही है कि तुम ईश्वर से प्रार्थना करो वही तुम्हारे कसूरों को माफ करेगा, मैं माफ करने वाला कौन?

भूत०। इस समय मेरे ईश्वर आप ही हैं—मैं आप ही को अपना बड़ा, बुजुर्ग, सलाहकार, दोस्त, मुरब्बी, सब कुछ समझता हूं और आप ही पर भरोसा करता हूं॥

इन्द्र०। यह तुम्हारी गलती है॥

भूत०। खैर जो कुछ हो, इस समय तो आप ही मेरे सब कुछ हैं और आप ही से मैं माफी की उम्मीद रखता हूं॥

इन्द्रदेव ने यह सुन एक लम्बी सांस ली और तब भूतनाथ का हाथ छोड़ कुछ सोचते हुए कमरे में इधर से उधर टहलने लगे। भूतनाथ बेचैनी के साथ उनका मुंह देखता रहा। कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "भूतनाथ! तुम मुझसे माफी चाहते हो! और मैं अब भी तुम्हें माफ करने को तैयार हूं,मगर क्या तुमने यह भी कभी सोचा है कि तुमने मेरे साथ कैसा कैसा बर्ताव किया है! किस तरह मेरे कलेजे पर छुरी चलाई है, किस तरह मेरे जिगर के टुकड़ों को मुझ से अलग किया है! कौन सा ऐसा काम है जो तुम्हारे हाथ से नहीं हुआ? कौन सा ऐसा पाप है जिससे तुम बचे हुए हो! मैं नहीं चाहता कि अपने मुंह से इन बातों का जिक्र करूं मगर फिर भी मुझे कहना ही पड़ता है कि तुमने हद से ज्यादा अत्याचार किये हैं—अपने कई निरपराध शागिर्दों की तुमने हत्या की, अपने दोस्त गुलाबसिंह को तुमने मारा, भैयाराजा तुम्हारी ही बदौलत जहन्नुम में चले गये, प्रभाकरसिंह तुम्हारी ही बदौलत खटाई में पड़ गए,

दयाराम के मारने का इलज़ाम तुम्हारी गरदन पर मौजूदही है और अब तुम उन की बेकसूर दोनों स्त्रियों को मार डालने का हाल मुझे सुना रहे हो—अब तुम ही सोचो कि ऐसी हालत में मैं क्योंकर तुम्हें माफ कर सकता हूं, अगर मेरी ज़ुबान तुम्हें माफ कर भी दे तो मेरा दिल क्योंकर उस बात को कबूल कर सकता है। आखिर मैं भी तो आदमी हूं, मेरा कलेजा तो पत्थर का नहीं है। अपनी आंख से अपने निर्दोष रिश्तेदारों और दोस्तों का अनिष्ट करते हुए देख कर भी मैं कहां तक बर्दाश्त कर सकता हूं, भला तुम ही तो इस बात पर विचार करो कि यदि इस समय मेरी जगह पर तुम होते और मैं तुम्हारा कसूरवार होता तो तुम्हारा दिल क्या कहता?

भूतनाथ की आंखों से बराबर आंसू जारी था। इन्द्रदेव की बातें सुन उसका दिल भर गया और वह हाथ जोड़ हिचकियां लेता हुआ बोला, "इन्द्रदेव! बेशक आपका कहना ठीक है! बेशक मैं आपका बहुत भारी गुनाहगार हूं! बेशक आप मुझे माफ नहीं कर सकते! यह मेरी गलती है कि ऐसे कर्म कर के भी माफी की उम्मीद करता हूं मगर फिर भी इन्द्रदेव! आप का हृदय कितना प्रशस्त है इसे मैं बखूबी जानता हूं और इसी भरोसे पर कहता हूं कि एक बार और आप मेरे अपराधों को क्षमा करें। इस लकुर के मौके पर आप मुझ पर भरोसा करें और मुझसे काम ले कर मुझे अपने पिछले पापों का प्रायश्चित्त करने का मौका दें। अगर आप ऐसा न करेंगे तो मैं कहीं का भी न रहूंगा॥"

इन्द्र०। (कुछ सोच कर) खैर अब तुम इस तरह पर कह रहे हो तो मैं तुम्हें माफ करता हूं—सच्चे दिल से माफ करता हूं॥

इन्द्रदेव की यह बात सुनते ही गद्गद हो कर भूतनाथ ने उनके पैरों पर गिरना चाहा मगर बीच में से रोक उन्होंने उसे गले लगा लिया॥

दोनों दोस्त देर तक एक दूसरे से लिपटे रहे, भूतनाथ की आंखों से अब भी आंसू जारी था। इन्द्रदेव ने अपने रूमाल से उसकी आंखें पोछीं और तब अपनी जगह पर ला बैठाया॥

भूत०। मेरा दिल कहता था कि आप मुझे अवश्य माफ कर देंगे और सच तो यह है कि आपके ऐसे ऊँचे दिल का तो कोई आदमी

ही मैंने नहीं देखा खैर अब इस विषय पर बात करना व्यर्थ है, अब जुबान से नहीं बल्कि अपने कामों से मैं आपको दिखा दूंगा कि मैं क्या कर सकता हूं, या तो पिछली बदनामी की कालख को दूर कर नेकनामी ही हासिल करूँगा और या फिर अपना काला मुंह कभी आपको न दिखाऊँगा ॥

इन्द्र० । ईश्वर तुम्हारी इस इच्छा को बनाए रक्खे, खैर यह तो बताओ कि अब तुम क्या किया चाहते हो ?

भूत० । इस समय और सब कामों का खयाल छोड़ मैं सिर्फ दो बातों की फिक्र में लगता हूं, एक तो आपके ससुर की मौत के विषय में पता लगाना दूसरे प्रभाकरसिंह की खोज निकालना ॥

इन्द्र०। प्रभाकरसिंह को तो तुम दारोगा के हवाले कर आए थे ?

भूत० । जी हां, मगर इधर पता लगाने से मालूम हुआ कि उन्हें कोई छुड़ाले गया और अब वे दारोगा के कब्जे में नहीं हैं ॥

इन्द्रदेव० । ठीक है यही मुझे भी पता लगाने से मालूम हुआ है ॥

भूत० । मेरे शागिर्दों ने दो तीन बार उन्हें एक औरत के साथ देखा है, इससे उम्मीद करता हूं कि बहुत जल्द उनका पता लगा लूँगा ॥

इन्द्र० । क्या बताऊं मेरे स्वसुर की मौत ने मुझे एक दम परेशान कर दिया है, मैं बिलकुल घबड़ा गया हूं और मेरे को यह नहीं सूझता कि क्या करूं तौ भी मैं पता लगाने की कोशिश कर रहा हूं । तुम भी कोशिश करना जिसमें शीघ्र ही मालूम हो जाय कि यह काम किसका है ॥

भूत० । मैं दिलोजान से कोशिश करूँगा मगर एक शक तो मुझे बार बार होता है ॥

इन्द्र० । क्या ?

भूत० । यही कि दामोदरसिंह जी मारे नहीं गये, जरूर इनकी मौत के साथ कोई न कोई भेद छिपा हुआ है । यह एक विचित्र बात है कि उनकी लाश पाई जाय और सिर का पता न हो !!

इन्द्र० । हां यही बात तो मुझे भी शक दिलाती है मगर कुछ ठीक पता नहीं लगता कि क्या बात है ॥

भूत० । अब मुझे आज्ञा हो तो मैं जाऊँ शीघ्र ही पुनः आप से

मिलूँगा और कई बातें बताऊँगा जिनके जानने का उद्योग कर रहा हूँ ॥

इन्द्रदेव०। अच्छा जाओ, मगर खयाल रखना कि फिर न दारोगा और मायार वगैरह के फन्दे में कहीं पड़ जाना ॥

भूत० । भला अब ऐसा हो सकता है ? ईश्वर चाहेगा तो अब आप मुझको कभी उस रास्ते पर पैर रखते हुए न पावेंगे, इसकी तो मैं आप से प्रतिज्ञा ही कर चुका हूं ॥

इन्द्र० । ईश्वर तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी करे ॥

भूतनाथ उठा और इन्द्रदेव को सलाम कर कमरे का दरवाजा खोल मकान के बाहर निकल आया ॥

भूतनाथ ! अब क्या वास्तव में तू नेक राह पर आ गया है, क्या वास्तव में तू ने उस पेचीले और कटीले रास्ते को छोड़ दिया जो तुझे अन्धेरे गार की तरफ ले जा रहा था ? क्या वास्तव में अब तू बदनामी की सड़क को छोड़ नेकनामी की पगडण्डी पर पैर रखना चाहता है ? यद्यपि तेरा कथन है, कथन ही नहीं निश्चय है, केवल निश्चय ही नहीं, तेरा प्रण है कि अब बुरे मार्ग पर न चलूंगा, पर लोगों को जो तेरे दिल की मजबूती की थाह पा चुके हैं तेरे कहने पर विश्वास नहीं हो सकता ! इसके पहिले भी अपने को सुधारने की न जाने कितनी प्रतिज्ञा, कितने ही वादे, तू कर और तोड़ चुका है, जिनका हाल जानने वाला अब कभी भी तुझ पर और तेरी बातों पर भरोसा नहीं कर सकता और जिन्होंने सभों का विश्वास तुझ पर से उठा दिया है ॥

छब्बीसवां बयान।

आज हम पाठकों को ले कर उस टीले वाले मकान के अन्दर जाया चाहते हैं जिस में कई बार एक औरत के साथ प्रभाकरसिंह को आते जाते देख चुके हैं और जिसका जिक्र ऊपर कई जगह आ भी चुका है॥

पहिली बार जब पाठकों को उस मकान के पास जाने की जरूरत पड़ी थी तो समय रात का था पर आज ठीक दोपहर की दनदनाती धूपमें वह सुफेद मकान दूर से दिखाई पड़ सकता है क्योंकि ऊँचे टीले पर बने रहने के कारण बड़े बड़े पेड़ों की आड़ उसको छिपा नहीं सकती॥

घूमघुमौवा पगडण्डी पर होते हुए जब आप उस टीले के ऊपर पहुंच जायँगे तो आपको एक अजीब समा नजर आवेगा, घने और भयानक जङ्गल ने तीन तरफ से उस टीले को अच्छी तरह घेरा हुआ है और चौथी तरफ कुछ मैदान छोड़ कर एक पहाड़ी नाला बह रहा है जो चौड़ाई में बहुत कम नहीं है। इस नाले के साथ साथ जब आप निगाह दौड़ावेंगे तो उस अजायबघर का भी कोई अंश अवश्य दिखाई पड़ जायगा क्योंकि नाले के ऊपर बनी हुई वह विचित्र इमारत यहां से बहुत दूर नहीं है। दक्खिन की तरफ यदि आप निगाह करेंगे और आप की आंखें तेज होंगी तो आपको कुछ पहाड़ियों की कालिमा दिखाई पड़ेगी, मगर ये पहाड़ियां बहुत दूर हैं और सिवाय एक लम्बी काली लकीर के और कुछ मालूम नहीं हो सकता॥

इस टीले के ऊपर कुछ जगह चारो तरफ छोड़ कर वही मकान है जिसका ऊपर जिक्र आ चुका है। सरसरी निगाह से देखने पर आपको वह मकान कुछ अजीब किते का नजर आवेगा क्योंकि इसके चारो तरफ सिवाय ऊँची दीवारों के और कुछ भी नजर नहीं आता यहां तक कि कोई दर्वाजा खिड़की या मोखे पर भी निगाह नहीं पड़ती। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है और ऊपर से चाहे वह इमारत कैसीही भूंडी या बेडौल और साधारण मालूम हो पर असल में वह एक विचित्र चीज है और उसके अन्दर जाने वाले को कई आश्चर्य चीजें नजर आ सकती हैं इस समय हमें इस मकान के

अन्दर ही चलना है इसमें यदि आप भी हमारे साथ चले चलेंगे तो भीतर की कुछ अद्भुत चीजें अवश्य देख पावेंगे ॥

यदि आप मकान के पश्चिम तरफ वाले हिस्से के सामने पहुँचेंगे तो आपको एक पुरसे से कुछ ज्यादा की ऊंचाई पर बनी हुई 'गणेश' की लाल रङ्ग की मूर्ति नजर आवेगी। यह मूर्ति कुछ अजीब ढङ्ग की बनी हुई है और इसका भाव यह है कि बालक गणेश दो सांपों को हाथ में लिये उनके साथ खेल रहे हैं। यदि आप मकान के अन्दर आना चाहते हैं तो आप को इन दोनों सांपों में से बाईं तरफ वाले सांप का फन पकड़ कर खींचना चाहिये। यदि मकान के अन्दर रहने वालों ने दर्वाजा बन्द करने के लिये कोई खास तर्कीब नहीं कर दी है तो फन के खींचते ही एक हलकी आवाज होगी और सामने की दीवार का इतना बड़ा हिस्सा जमीन की तरफ धंस जायगा कि जिसके अन्दर दो आदमी बखूबी घुस सकते हैं बस आप अन्दर चले जायें ॥

अन्दर जाकर आप अपने को एक ऐसी जगह में पावेंगे जो लगभग दस गज के लम्बी और दो गज के चौड़ी होगी। इस जगह के दाहिने और बायें दोनों तरफ दो दालान हैं जो जमीन से लगभग हाथ भर ऊँचे पर बने हुए हैं और सामने की तरफ एक और दरवाजा है जिसके खोलने की जरूरत पड़ेगी। पहिले दर्वाजे की तरह इस दरवाजे के ऊपर भी वैसी ही मूर्ति बनी हुई नजर आवेगी और उसी तर्कीब से यह दरवाजा भी खुल जायगा मगर इस दरवाजे के खुलने के पहिले ही वह पहिला दरवाजा बन्द हो जायगा ॥

दूसरा दरवाजा रुप कर जब आप दूसरी तरफ पैर रक्खेंगे तो अपने को एक विचित्र जगह में पावेंगे। आपके दाहिने और बाईं तरफ तो दो पतली गलियाँ होंगी जो ऊपर से खुली हैं और सामने की तरफ एक लोहे की दीवार होगी जो बहुत ऊंची और पालिशदार है, इस दीवार के दूसरी तरफ हो जाने से आप असली इमारत में पहुँचेंगे मगर उसके अन्दर जाने का रास्ता इतना पेचीला और और खतरनाक है कि हम इस समय अपने पाठकों को इस रास्ते से ले जाना नहीं चाहते, वे हमारे साथ ही दीवार टप कर दूसरी तरफ पहुँच जायें और तब एक अद्भुत चीज देखें ॥

लगभग एक बिगहे का मैदान है जिसमें चारों तरफ सुन्दर पौधे और गुलबूटे लगे हुए हैं जो अपनी खुशबू से इस जगह आने वाले का दिमाग मुअत्तर कर देते हैं। इस छोटे से बागीचे को चारों तरफ से उसी लोहे की ऊँची चारदीवारी ने घेर रक्खा है जिसे इस कदर आप इस तरफ आये हैं और बीचोबीच में एक छोटी मगर अजूबा इमारत है॥

इस छोटी मगर बहुत ही खूबसूरत इमारत की कुरसी जमीन से छाती के बराबर ऊँची है। सामने की तरफ दरवाजा पड़ता है और उस पर पहुँचने के लिये खूबसूरत चार २ अंगुल ऊँची सीढ़ियां बनी हुई हैं मगर यह सीढ़ियां, दर्वाजा, यहां तक कि यह पूरी इमारत बिल्कुल लोहे की बनी हुई है और यह लोहा भी इतना साफ और चमकदार है कि सूरज की तेज रोशनी में उस पर आंख ठहरना मुश्किल है। इस इमारत को देखने वाला पहिली ही निगाह में कह देगा कि "यद्यपि यह इमारत बहुत खूबसूरत बनी हुई है मगर साथ ही मजबूत भी इतनी है कि हजारों वर्ष तक इसका कुछ नहीं बिगड़ सकता और सैकड़ों गोले इसकी जड़ नहीं हिला सकते तथा इसमें रहने वाले आदमी का सैकड़ों दुश्मन भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते॥

इस समय इस विचित्र मकान का दर्वाजा खुला हुआ है अस्तु आप बेधड़क इसके अन्दर जा सकते हैं। दरवाजा पार कर सामने बढ़ते ही मकान का चौक (सहन) पड़ता है और उसके चारों तरफ चार खूबसूरत दालान तथा इन दालानों के चारों कोनों पर चार कोठड़ियां हैं। बस नीचे की मंजिल में इतना ही है, हां ऊपर जाने पर मुमकिन है कि कोई और भी ताज्जुब की चीज नजर आ जावे॥

यह सहन दालान और कोठड़ियें, यहां तक कि छत और दीवारें तथा जमीन तक बिल्कुल लोहे का ही बनी हुई है और ऊपर वाली मंजिल का जो कुछ अंश आंखों के सामने है वह भी लोहे ही का मालूम पड़ रहा है। मगर हमें अभी ऊपर जाने की कोई जरूरत नहीं, चारों तरफ की चार कोठड़ियों ही से हमें मतलब है॥

मकान में घुसते ही बाईं तरफ जो कोठड़ी है उसमें से ऊपर की मंजिल में जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं दोनों तरफ कोठड़ी के दो दर्वाजे हैं जो दोनों तरफ के दालानों में खुलते हैं और इसी प्रकार

इन चारों कोठड़ियों में दो दो दर्वाजे हैं। ये सभी दर्वाजे इस समय खुले हुए हैं और इस लिये आप हर एक कोठड़ी के अन्दर का हाल चाल देख सकते हैं॥

दाहिनी तरफ जो कोठड़ी है उसमें सिर्फ आलमारियें ही बनी हुई हैं, ऊपर नीचे चारों तरफ आलमारियें ही नजर आती हैं जिनमें तरह तरह की विचित्र और अद्भुत चीजें रक्खी हुई नजर आ रही हैं, जो इस लायक हैं कि फुरसत के समय देखी जायें॥

इस कोठड़ी के अन्दर से होते हुए दालान पार कर आप दूसरी कोठड़ी में पहुंचेंगे तो उसे अन्दर से ईंट और चूने की बनी हुई पावेंगे। कोठड़ी के बीचोबीच में पत्थर का लाल रङ्ग से रङ्गा हुआ एक चबूतरा है और उस पर लाल ही रङ्ग का एक पत्थर का शेर बैठा हुआ है। बस इसके सिवाय उस कोठड़ी में और कुछ नहीं है। चौथी कोठड़ी में जब आप जायँगे तो उसे बारूद के थैलों, छोटी तोपों और लड़ाई के दूसरे सामानों से भरा हुआ पावेंगे, और एक तहखाने की सीढ़ियों की तरफ गौर करने से मालूम होगा कि इसके नीचे भी कोई कोठड़ी है और वह भी ऐसी ही किसी भयानक चीज से भरी हुई है॥

बस यही सब सामान है जो पहिली निगाह में यहां आने वाले को दिखाई देता है और जिसका बयान करने में हमें इतना समय व्यर्थ नष्ट करना पड़ा है क्योंकि अभी तक कोई आश्चर्यजनक चीज यहां देखने में नहीं आई। हां इतना कह देना हम यहां मुनासिब समझते हैं कि इस इमारत का नाम लोहगढ़ी है और यह नाम मात्र के लिये जमानिया के राजा के कब्जे में है मगर इस समय तो यहां कोई और ही आदमी रहा करता है जिसका अभी तक हमने कोई हाल नहीं बताया है॥

सामने तरफ वाले दालान में इस समय उम्दा फर्श बिछा हुआ है और दो चार तकिये भी पड़े हुए हैं जिनके सहारे एक आदमी अधलेटा सा पड़ा हुआ एक पंखे से अपनी गर्मी दूर कर रहा है क्योंकि इस मकान के अन्दर गर्मी मामूली से कुछ ज्यादा है। इस आदमी की पोशाक सिपाहियाना है और बगल ही में तलवार और दूसरी तरफ एक साफा रक्खा हुआ है जिससे मालूम होता है कि या तो

यह अभी कहीं जाया चाहता है और या अभी कहीं से लौटा आ रहा है। हमारे पाठक इस नौजवान को बखूबी पहिचानते हैं क्योंकि यह हमारा प्रसिद्ध पात्र प्रभाकरसिंह है॥

प्रभाकरसिंह के चेहरे से प्रसन्नता नहीं प्रगट होती, बल्कि वे कुछ चिन्तित और उदास मालूम होते हैं और थोड़ी थोड़ी देर पर उनका लम्बी सांसें लेना साफ कहे देता है कि इनका दिल किसी बोझ से अवश्य दबा हुआ है। इस समय उनकी आंखें बन्द हैं और वे किसी सोच में डूबे हुए एक तकिये के सहारे अधलेटे से पड़े हुए हैं॥

कुछ देर बाद प्रभाकरसिंह आप ही आप इस प्रकार कहने लगे, कुछ समझ में नहीं आता कि यह बात आखिर क्या है? यह औरत कौन है? मुझसे इसका क्या सम्बन्ध है? यह मुझसे क्या चाहती है या किस बात की आशा रखती है? यह भी नहीं मालूम होता कि यह मेरी दोस्त है या दुश्मन? अगर दोस्त ही होती तो अपना भेद मुझसे क्यों छिपाती? और इस जगह मुझे कैद ही क्यों रखती? इसे कैद ही रहना कहते हैं कि अपनी मर्जी से मैं इस मकान के बाहर नहीं जा सकता हूं॥

मगर दुश्मन ही इसे क्योंकर कहूं? अभी तक कोई बुरा बर्ताव तो इसने मेरे साथ नहीं किया? कोई तकलीफ नहीं दी, कोई कष्ट नहीं पहुंचाया, बल्कि मेरे दोस्तों को खोजने और उनका पता लगाने में यह मेरी मदद कर रही है। अस्तु इसे दुश्मन क्योंकर मान लूं॥

इस मकान का भी कुछ पता नहीं लगता कि क्या बला है, न जाने कोई तिलिस्म है या जादूघर! इसके गुप्त दरवाजों, रास्तों और सुरङ्गों का कुछ अन्त ही नहीं मालूम होता? मजबूत भी इतना है कि तोपों की मार से भी इसे नुक्सान नहीं पहुंच सकता, बिलकुल लोहे का बना हुआ है। न जाने इतना मजबूत यह क्यों बनाया गया। इसमें तो कोई शक नहीं कि यह मकान कुछ विचित्र जरूर है और तिलिस्म से भी इसका कुछ सम्बन्ध अवश्य है मगर उस औरत को भी इसका पूरा हाल नहीं मालूम है, यदि मालूम होता तो इतनी बार मैं पूछ चुका कुछ न कुछ अवश्य बताती॥

यह सब तो जाने दो कुछ यह भी तो नहीं मालूम होता कि आखिर मुझे कब तक इस तरह पड़े रहना पड़ेगा, कब तक अपने

प्रभाकरसिंह अभी यह सोच ही रहे थे कि उस सुरङ्ग में उतरें या न उतरें कि उन्हें अपने सामने किसी तरह की आहट सुनाई पड़ी जो उसी सुरङ्ग की राह आती मालूम होती थी जिसे उन्होंने अभी खोला था। वे कुछ आश्चर्य के साथ झुक कर देखने लगे और उसी समय एक औरत को जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी सीढ़ियां चढ़ कर उसी राह से निकलते हुए देखा। नकाब से चेहरा ढका रहने पर भी प्रभाकरसिंह इस औरत को बखूबी पहिचान गये क्योंकि इसी की बदौलत उन्हें कैदियों की तरह इस "लोहगढ़ी" में बन्द रहना पड़ता था। वह औरत सुरङ्ग के बाहर आ गई और प्रभाकरसिंह को सामने देख आश्चर्य करने लगी॥

औरत०। (प्रभाकरसिंह से) क्या आप ही ने यह दरवाजा खोला है?

प्रभाकर०। (मुस्कुरा कर) हां!

औरत०। आपको इसके खोलने का ढङ्ग क्योंकर मालूम हुआ?

प्रभाकर०। ऐसे ही बैठे बैठे जी उकता गया यहां आकर इस शेर की देख भाल करने लगा, देखते ही देखते यह खुल गया और तुम नजर पड़ीं॥

औरत०। खैर कोई हर्ज नहीं चलिये॥

प्रभा०। इस समय कहां से आ रही हो?

औरत०। जमानिया से॥

प्रभा०। क्या खबर है?

औरत०। चलिये बाहर चलिये, कई नई बातें मालूम हुई हैं?

प्रभाकरसिंह को साथ ले वह औरत उस कोठड़ी के बाहर निकल आई, उस दर्वाजे को जिसकी राह आई थी उसने उसी तरह खुला छोड़ दिया और कुछ सोच कर प्रभाकरसिंह ने भी उसके विषय में कुछ कहना मुनासिब न समझा, वह औरत दालान में आकर फर्श पर बैठ गई और प्रभाकरसिंह भी कुछ हट कर बैठ गये॥

प्रभा०। कहो क्या नई बात तुम्हें मालूम हुई है॥

औरत०। आज कुंअर गोपालसिंह का कहीं पता नहीं है, न मालूम वे कहां चले गये या क्या हुए॥

प्रभा०। (चौंक कर) सो क्यों, क्या वे महाराज से रंज हो कर कहीं चले गये हैं?

औरत०। नहीं नहीं सो बात नहीं है। कुछ और ही बात है और इनका गायब होना बेसबब नहीं है॥

प्रभा०। बेशक नहीं है और जरूर यह काम भी दारोगा या उसकी उस कुमेटी का ही है॥

औरत०। सम्भव है॥

प्रभा०। सम्भव क्या निश्चय ऐसा ही है, थोड़े दिन हुए दामोदरसिंह मारे गये आज यह बात हुई, कल को महाराज के ऊपर कोई वार होगा॥

उस औरत ने कोई जवाब न दिया, प्रभाकरसिंह बोले, "बड़े अफसोस की बात है कि महाराज कहने को तो तिलिस्म के राजा हैं मगर उन्हें अपने घर ही की खबर नहीं है कि क्या हो रहा है और उन्हीं के नौकर उनके साथ कैसा बर्ताव कर रहे हैं। अब मैं कदापि चुप नहीं रह सकता, बेशक महाराज से मिल कर उन्हें होशियार करूंगा॥"

औरत०। (चौंक कर) क्यों सो क्या? क्या आप महाराज से मिलेंगे?

प्रभा०। बेशक! अब मैं कदापि रुक नहीं सकता तुम मुझे इस मकान के बाहर करो मैं इसी समय जाकर उनसे मिलूंगा और उन्हें सावधान करूँगा॥

औरत०। मगर आपको इस झगड़े में पड़ने से मतलब ही क्या?

प्रभा०। क्यों नहीं मतलब है, क्या महाराज गिरधरसिंह मेरे रिश्तेदार नहीं हैं?

औरत०। क्या महाराज आपके रिश्तेदार हैं?

प्रभा०। वे मेरे मामा होते हैं॥

औरत०। मामा! यह तो आपने अजीब बात कही मुझे यह मालूम नहीं था॥

प्रभा०। खैर अब तो मालूम हो गया! अब तुम उठो और मुझे इस मकान के बाहर करो, मैं इसी समय उनसे मिलने जाऊंगा॥

औरत०। ठहरिये, घबराये क्यों जाते हैं, आखिर यह भी तो सोचिये कि आप.........

प्रभा०। मैं सब कुछ सोच समझ चुका हूं, बस अब तुम मुझे यहां से बाहर करो, मैं एक सायत के लिये नहीं रुक सकता॥

इतना कह प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए। उस औरत ने यह देख कहा, "आप इतनी जल्दी न मचाइये, जरा सोचिये विचारिये और साथ ही इस बात पर भी विचार कीजिये कि आपके ऐसा करने का नतीजा क्या निकलेगा ? आप के ऐसा करने से मेरे काम में बहुत भारी हर्ज पड़ेगा ॥

प्रभा० । जो कुछ हो, अब मैं इस कैदखाने में एक सायत भी नहीं रह सकता ॥

औरत० । (मुस्कुरा कर) क्या यह मकान आपको कैदखाना मालूम होता है ? इसमें आपको क्या तकलीफ है ?

प्रभा० । कैदखाना नहीं तो क्या है, जहां से मैं अपनी मर्जी से बाहर नहीं निकल सकता वह कैदखाना नहीं तो क्या है ?

औरत० । मैंने आपको बाहर जाने से कब रोका है ?

प्रभा० । खैर इस झगड़े से कोई मतलब नहीं, इस समय तो मैं बाहर जाया ही चाहता हूं ॥

औरत० । (कुछ बिगड़ कर) और अगर मैं न जाने दूं तो ?

प्रभा० । तो जो कुछ मेरे से बन सकेगा मैं करूँगा और जिस तरह से बन पड़ेगा मैं बाहर जाने का रास्ता पाऊँगा, फिर मुझे दोष न देना ॥

औरत० । क्या आप एक औरत पर हाथ उठावेंगे ?

प्रभा० । लाचारी है, मेरा बाहर निकलना जरूरी है, अब मैं यहां कदापि नहीं रह सकता ॥

वह औरत प्रभाकरसिंह की बातें सुन कुछ गौर में पड़ गई, थोड़ी देर बाद वह उठ खड़ी हुई और प्रभाकरसिंह से बोली, "अच्छा आप इसी जगह बैठें, मैं अभी आती हूं तो आपको साथ लिये बाहर चली चलूँगी ॥"

प्रभा० । नहीं सो नहीं हो सकता, तुम जहां जाती हो वहां मुझे भी लेती चलो ॥

औरत० । मैं अभी एक काम करके लौटती हूं । क्या आप अब इतना अविश्वास मेरे ऊपर करने लगे ?

प्रभाकर० । बेशक करने लगा, अब मैं मकान के बाहर गये बिना तुम्हारा साथ एक पल के लिये भी नहीं छोड़ा चाहता ॥

औरत० । (कुछ देर चुप रहने बाद मुस्कुरा कर) आज आप मुझ

पर बहुत खफा मालूम होते हैं, क्या मामला है ? मुझ से कोई कसूर तो नहीं हो गया ? आखिर बात क्या है ?

प्रभा० । सच तो यह है कि मुझे तुम्हारी चालें बिल्कुल पसन्द नहीं आतीं, मुझे मालूम नहीं होता कि क्यों तुमने मुझे यहां बन्द कर रक्खा है, न तो मैं तुम्हारी सूरत शक्ल से ही वाकिफ हूं और न मैंने तुम्हें पहिले कहीं देखा ही, न तुम अपना नाम ही बताती हो न कुछ हाल ही, मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो और न मैं जानता हूं कि मुझ से तुम क्या काम निकला चाहती हो, न मैं अपनी मर्जी से इस मकान के अन्दर आ ही सकता हूं और बाहर ही निकलता हूं, यदि कभी बाहर निकलने का मौका मिला भी तो तुम्हारे साथ, स्वतन्त्रता से कुछ करने का मौका ही नहीं पाता, ऐसी हालत में पराधीन बन कर मैं क्योंकर तुम्हारा विश्वास कर सकता हूं ॥

औरत० । आखिर मैं आप की भलाई में ही तो लगी हूं, आपके दोस्तों ही का मैं पता लगा रही हूं और आपके दुश्मनों ही से बदला लेने का बन्दोबस्त कर रही हूं । क्या आप यह समझते हैं कि मैं आप की मदद नहीं कर रही हूं ॥

प्रभा० । मैं ऐसे आदमी से न तो मदद ही लिया चाहता हूं और न साथी ही बनाया चाहता हूं जिसका न तो कोई हाल जानता हूं, न नाम पते से वाकिफ हूं यहां तक कि जिसकी सूरत भी मैंने कभी नहीं देखी । अगर तुम मेरी मदद ही पर हो तो इस समय मुझे यहां से जाने क्यों नहीं देतीं ?

औरत० । मैं आपको जाने से कब रोकती हूं ?

प्रभा० । इसे रुकावट डालना नहीं तो क्या कहते हैं ?

औरत० । खैर यदि आप ऐसा भी समझ लें तो कोई हर्ज नहीं । मैं इस लिये आपको बाहर जाने से रोकती हूं कि आपके दुश्मन चारों तरफ फैले हुए हैं, उनकी चालाकियों का जाल अच्छी तरह फैला हुआ है आप उनसे अपने को किसी तरह नहीं बचा सकेंगे ॥

प्रभा० । कुछ नहीं यह सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं, मेरा दुश्मन कोई नहीं है और अगर है भी तो वह मेरा उस समय तक कुछ नहीं बिगाड़ सकता जब कि मैं होशहवास में हूं या तलवार का कब्जा मेरे हाथ में है ॥

औरत० । मगर मुझे डर है कि आप कभी अपने को बचा न सकेंगे। वे सब बहुत जबर्दस्त हैं ?

प्रभा० । नहीं यह सब कोई बात नहीं है और अगर है तो सिर्फ तुम्हारा नखरा है, मैं तुम्हारी बातों पर कभी विश्वास नहीं करूंगा ॥

औरत० । अख़्तियार आपको है विश्वास करें या न करें मैं कुछ नहीं बोल सकती, मगर ख्याल रखिये कि यदि आप इस समय मेरी बात न मानेंगे तो पछतायेंगे । फिर मुझको दोष न दीजियेगा ॥

प्रभा० । नहीं कभी नहीं ॥

औरत० । ख़ैर तो चलिये, मैं आपको मकान के बाहर किये देती हूं ॥

प्रभाकरसिंह को साथ लिये हुए वह औरत उस मकान के बाहर आई और छोटे बगीचे या नजरबाग को तय करके उस लोहे की चार-दीवारी के पास पहुंची जिसने इस नजरबाग और इमारत को चारों तरफ से घेरा हुआ था । मामूली तौर पर उसने बाहर निकलने का रास्ता पैदा किया और इस दीवार के दूसरी तरफ पहुंच गई । वे दोनों फाटक भी पार किये जिनका हाल ऊपर लिख आए हैं और तब प्रभाकरसिंह ने अपने को उस मकान के बाहर पाया । उस औरत ने इन्हें टीले के नीचे कुछ दूर तक पहुंचा दिया ॥

प्रभा० । अच्छा अब तुम जाओ मैं भी जाता हूं ॥

औरत० । जो आज्ञा ॥

इतना कह वह औरत लौटी, उसी समय प्रभाकरसिंह ने टोका और कहा, "अगर मुनासिब समझो तो कम से कम अपना नाम तो बताती जाओ जिसमें यह तो जान सकूं कि फलानी औरत ने इस तरह पर आराम से रक्खा और मदद दी थी ।" मकान हटाने के लिये तो कहना ही व्यर्थ है ॥

औरत० । नहीं नहीं आप मेरी सूरत भी देख सकते हैं और नाम भी जान सकते हैं ॥

इतना कहते ही उस औरत ने अपने चेहरे पर से नकाब उलट कर पीछे की तरफ कर दी ॥

हम कह सकते हैं कि प्रभाकरसिंह ने अपनी जिन्दगी में ऐसी सुन्दर और कभी न देखी होगी यद्यपि वे अपनी इन्दुमति के ध्यान में मस्त हो रहे थे तथापि इस औरत के भोले चेहरे ने इनका ध्यान

अपनी तरफ खींच ही लिया ॥

मगर अफसोस ! दिल की दिल ही में रह गई, नजर भर उसकी सूरत देखने भी न पाए कि उसने पुनः चेहरे पर नकाब डाल ली और उन्हें उसी तरह खड़े छोड़ पीछे को पलट पड़ी । प्रभाकरसिंह कहते ही रहे कि अपना नाम तो बताती जाओ पर उसने पीछे फिर कर भी नहीं देखा ॥

सत्ताईसवां बयान ।

आज जमानियां में कुंअर गोपालसिंह के गायब हो जाने के कारण बड़ी ही बेचैनी और हलचली पड़ी हुई है, कल रात ही से वे गायब हैं और यद्यपि इस समय तक हजारों ही आदमी उनकी खोज में आ चुके हैं मगर उनका कहीं भी पता नहीं लगता ॥

बूढ़े और दिल के कमजोर राजा गिरधरसिंह की परेशानी की हद्द नहीं है । दामोदरसिंह की मौत ने पहिले ही उन्हें दुखी कर रक्खा था और अब अपने बेटे के गायब होने से वे बिलकुल ही बदहवास हो गए और उन्हें अपनी जान की भी उम्मीद जाती रही । केवल अपने एकान्त कमरे में अकेले बैठे हुए आंसू गिरा रहे और लम्बी सांसें ले रहे हैं ॥

कुछ देर बाद एक ऊंची सांस ले महाराज ने आप ही आप कहा, "इन्द्रदेव को बुलाना चाहिये ।" और तब एक सोने की छोटी घण्टी उठा कर बजाई जो सामने ही एक सङ्गमर्मर की चौकी पर रक्खी हुई थी । बजाते ही हाथ बांधे हुए एक चोबदार हाजिर हुआ और महाराज ने उसे इन्द्रदेव को बुला लाने का हुक्म दिया ॥

चोबदार "जो हुक्म" कह कर चला गया और महाराज पुनः उसी तरह बैठे रहे । इन्द्रदेव का मकान बहुत दूर न था अस्तु थोड़ी ही देर के बाद वे आ पहुंचे और महाराज को प्रणाम करने बाद इशारा पा अदब से सामने बैठ गए ॥

महाराज ने अपनी आंखें पोछीं और इन्द्रदेव की तरफ देख कर कहा, "इस नई मुसीबत का हाल तुमने सुना ?"

इन्द्र० । (हाथ जोड़ कर) जी हां, महाराज बल्कि कहना होगा

कि सब के पहिले मुझी को इस बात का विश्वास करना पड़ा कि कुंअर गोपालसिंह जी का कहीं पता नहीं लगता ॥

महा० । हां यह तो मुझे मालूम है कि उसने तुम्हें बुलाया था मगर फिर तुम्हारे आने के पहिले ही कहीं चला गया बस उसके बाद से फिर उसका कहीं पता नहीं ॥

इन्द्र० । उस समय से मैं स्वयम् उनकी खोज में परेशान हूं मगर अभी तक कुछ पता नहीं लगता ॥

महा० । (लम्बी सांस ले कर) देखो इस थोड़े ही जमाने में मेरे ऊपर कैसी कैसी मुसीबतें आईं । भैयाराजा चले गए, बहुरानी गायब हो गई, दामोदरसिंह मारे गए और अब गोपालसिंह का पता नहीं है ॥

इन्द्र० । जी हां, यह तो ठीक ही है, पर बुद्धिमानों का कथन है कि मुसीबतों से कभी भी घबराना या भागना नहीं चाहिये । अस्तु इस समय आपको अपना दिल कमजोर करना कदापि उचित नहीं, मैं आपको राय देने की हिम्मत तो नहीं कर सकता मगर इतना निवेदन किये बिना भी न रहूंगा कि ऐसे मौके पर आप अगर किसी तरह भी अपनी दिल छोटा करेंगे तो रिआया पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा ॥

महा० । हां यह तो मैं भी समझ सकता हूं मगर मैं अपने दिल को सम्हालूं तो क्योंकर ? जैसी जैसी आफतें इधर मुझे झेलनी पड़ी हैं उससे मेरा दिल एक दम टूट गया है, मैंने तो निश्चय कर लिया था कि अब यह राज्य गोपालसिंह के हाथ में दे मैं इस झगड़े से एक दम अलग ही हो जाऊँगा मगर अब तो उसी का पता नहीं न जाने वह कहां गया या किसी मुसीबत में पड़ गया । न जाने अब उसका कभी पता लगेगा या नहीं या उसके बारे में कैसी खबर सुनने में आवेगी ॥

इतना कहते हुए महाराज की आंखों से आंसू गिरने लगे, इन्द्रदेव ने उन्हें बहुत कुछ दम दिलासा दे कर शान्त किया । आखिर उनके यह कहने पर कि "मैं इस बात का वादा करता हूं कि अड़तालीस घण्टे के भीतर उनकी खबर महाराज को दूंगा ।" वे कुछ चैतन्य हुए और बोले—मुझे तो अब तुम्हारा ही भरोसा है । गोपाल तुम्हारा दिली दोस्त था और तुम से मुहब्बत करता था, अस्तु अब उसके विषय में मेरा तुमसे कुछ कहना बिल्कुल व्यर्थ होगा, सब तुम्हीं

जिस तरह से हो सके उसका पता लगाओ और उसे खोजो, मेरे सब मुलाज़िम और नौकर तुम्हारे ही हैं जिसे चाहो अपने काम पर भेज सकते हो और जैसा चाहो काम ले सकते हो। अब मुझे तो तुम किसी मसरफ़ का न समझो। बिहारी और हरनाम तो गोपाल की आज्ञानुसार किसी काम पर मुस्तैद हैं मगर मेरे चाकरों के ऐयारों से भी तुम काम लो। बस समझ रक्खो कि गोपाल के बिना मेरा खाना पीना सब बन्द है॥

इन्द्रदेव ने पुनः महाराज को समझाया बुझाया और शान्त करने बाद उनकी आज्ञा ले अपने घर लौटे। महाराज उसी तरह गद्दी पर पड़े आंसू की धारें गिराते रहे॥

वह दिन बीता, रात बीती, और दूसरा दिन भी बीत गया मगर गोपालसिंह का पता कुछ भी न लगा, महाराज की घबड़ाहट और परेशानी का कोई हद्द न रहा और वे बिलकुलही बदहवास होगये॥

कुंअर साहब के गायब होने के चौथे दिन पहुलही सुबह के समय महाराज अपने सोने के कमरे में पलङ्ग पर अधलेटे से पड़े हुए थे। इस कमरे में और कोई भी न था क्योंकि महाराज का हुक्मही ऐसा था, और पहरेदार भी इस कमरे के बाहर का एक दूसरा कमरा छोड़ एक लम्बे चौड़े दालान में थे जहां से यहां आने का रास्ता था मगर जहां से भीतर का हाल कोई देख नहीं सकता था॥

महाराज की निद्रा भङ्ग हुए बहुत समय होगया था कि बल्कि कहना कहना चाहिये कि अपने बेटे के गम में उन्हें रात को नींद आई ही न थी। वे कई तकियों के सहारे लेटे हुए कुछ सोच रहे थे कि बाहर से घण्टी बजने की आवाज़ आई जिससे ज़ाहिर हुआ कि कोई नौकर या पहरेदार कुछ कहा चाहता है। महाराज के सिरहाने की तरफ एक ऊंची चन्दन की चौकी पर जल, फूल और ज़रूरी सामान और एक घण्टा भी पड़ा हुई थी जिसे उठा कर उन्होंने बजाया॥

घण्टी बजते ही महाराज का एक खास खिदमतगार कमरे के दर्वाज़े पर आ खड़ा हुआ। महाराज के इशारे से यह पूछने पर कि "क्या है?" उसने एक चीठी औं उनके हाथ में दे दिखा कर अर्ज़ किया. "कल रात को एक सवार यह चीठी महल के दरवाज़े पर पहरेदारों को दे गया था और ताकीद कर गया था कि हुजूर ही के

हाथ में दी जाय। पहरेदारों ने यह चीठी मुझे पेश करने को दी पर महाराज आराम कर रहे थे इस कारण उस समय हाजिर न कर सका। चीठी देने वाले ने इसके बारे में सख्त ताकीद की थी इस लिये बेमौका होने पर भी इसी समय लाया हूं॥

महाराज ने हाथ बढ़ाया और नौकर ने आगे बढ़ कर चीठी हाथ में दे दी और तब पुनः दर्वाजे के पास जा इस इन्तजार में खड़ा हो गया कि कदाचित् महाराज कोई हुक्म दें॥

यह चीठी मोटे मोमजामे के अन्दर बहुत मजबूती के साथ बन्द की हुई थी और जोड़ पर लाल रङ्ग की मुहर की हुई थी। महाराज ने मुहर तोड़ मोमजामा हटाया। अन्दर से एक और लिफाफा निकला, उसे भी खोला। इस लिफाफे के अन्दर एक चीठी और एक पन्ने की अँगूठी थी जिसकी बनावट कुछ विचित्र प्रकार की थी॥

अँगूठी देखते ही महाराज चौंक पड़े, कुछ देर तक बड़े गौर के साथ उसे देखते रहे और तब एक लम्बी सांस के साथ यह कह कर कि "बेशक वही है" उसे रख चीठी उठा देखने लगे॥

टेढ़े मेढ़े अजीब कुढङ्गे अक्षरों में मामूली बातों के बाद यह लिखा हुआ था॥

"बड़े ही अफसोस की बात है कि महाराज तिलिस्म के राजा हो कर भी और असाधारण ताकत रखने पर भी अपने दोस्त और दुश्मन के पहिचानने में भूल करते हैं। बड़े ही दुःख की बात है कि महाराज ही के नौकर और गुलाम महाराज ही के साथ दगा करें और साफ बच जायँ!!"

"इस समय आप कुंअर गोपालसिंह जी के गायब होने के कारण परेशान हैं मगर खूब खयाल रखिये कि वे इस समय भी आप ही के राज्य और आप ही की हुकूमत के अन्दर हैं मगर फिर भी आप उनका पता नहीं लगा सकते! अफसोस की बात है!!

"अगर अब भी आप अपने तिलिस्म के अन्दर, या अपने उस मकान में जो लोहगढ़ी के नाम से पुकारा जाता है, अथवा उस अजायबघर में जिसे दारोगा साहब पा गये हैं तलाश करेंगे तो कई ऐसी बातें जानेंगे कि ताज्जुब होगा॥"

बस यही उस चीठी का मजमून था और इसके नीचे किसी का

नाम या दस्तखत न था॥

हम नहीं कह सकते कि महाराज पर इस चीठी का असर ज्यादे पड़ा या उस अंगूठी का जो इसके साथ पाई गई थी पर इतना अवश्य हुआ कि वे कुछ देर के लिये ऐसी गहरी चिन्ता में पड़ गये कि तनोबदन की सुध न रही॥

घड़ी भर से ऊपर समय बीत जाने पर महाराज ने सिर उठाया, एक बार पुनः उस अँगूठी को देखा और वह चीठी पढ़ी और तब आपही आप कहा, "मैं अभी तिलिस्म के अन्दर जाऊँगा॥"

महाराज पलङ्ग पर से उतर पड़े, खूंटी से लटकती हुई तिलिस्मी तलवार उतार ली और चोबदार की तरफ देख कर बोले, "मैं तिलिस्म के अन्दर जाता हूं, कोई बहुत जरूरी काम है, ठीक नहीं कह सकता कि कब तक लौटूंगा।" पास ही में किसी दूसरी जगह जाने का दर्वाजा था जिसके अन्दर वे चले गये और दर्वाजा बन्द कर लिया॥

अफसोस! महाराज बड़ी भारी भूल कर गये। वह अँगूठी और चीठी उन्होंने उसी जगह छोड़ दी जिसे उन के जाते ही चोबदार ने आगे बढ़ कर उठा लिया और तब अपने कपड़ों में छिपा कमरे के बाहर निकल गया॥

अट्ठाईसवां बयान।

जब से मालती उसकी कैद से निकल गई है तब से दारोगा की कुछ अजीब ही हालत होगई है, वह हरदम कांपता और डरता रहता है और किसी गहरे सोच में पड़ो हुई उसकी जान को सिर उठाना भारी पड़ रहा है, न मालूम वह किस तरद्दुद में पड़ गया है या मालती के कारण अपने को किस आफत में पड़ा हुआ समझता है, मगर इतना जरूर है कि उसकी घबड़ाहट बेसबब नहीं है॥

इस समय वह अपने एकान्त के कमरे में बैठा हुआ है, उस का सिर गम के बोझ से झुका हुआ है और वह एक छोटी चौकी के ऊपर कोहनी रक्खे, हथेली पर सिर दबाये कुछ सोच रहा है, उसके मन में जो कुछ बातें दौड़ रही हैं उसका कुछ आभास उन बातों से मिलता है जो बेमालूम तौर पर कभी कभी उसके मुंह से निकल पड़ती हैं॥

"इसमें तो कोई शक नहीं कि वह कम्बख्त जरूर लोहगढ़ी में पहुंच गई है, मगर उसका भेद उसे मालूम ही क्योंकर हुआ ? और अगर मालूम हुआ भी तो क्या वह सब बातें जानती है या...अगर सब जानती है तब तो बड़ी ही मुश्किल होगी, मैं किसी तरह अपने को बचा न सकूंगा। वह जब से मेरी कैद से भागी है तब से कभी दिखाई भी न पड़ी, जहां तक मैं समझता हूं वह अभी किसी से मिली ही नहीं, नहीं तो बगैर कुछ न कुछ आफत लाये न रहती। यद्यपि दामोदरसिंह को जो मेरे रास्ते का कांटा था मैंने दूर कर दिया तो भी अभी डर नहीं गया। महाराज कदाचित् उस भेद को जानते हैं और इन्द्रदेव भी......

"जब वह अभी तक किसी से मिली नहीं है तो या तो वह किसी आफत में ही फँस गई और या मुझ से कोई बुरा बदला लेने का ढङ्ग सोच रही है। उसका इस तरह अपने को छिपाए रखना मेरे लिये कोई शुभ लक्षण नहीं है। तब फिर किया क्या जाय ?

"तब किया क्या जाय।" कह कर दारोगा ने बेचैनी के साथ सिर उठाया। उसी समय उसकी निगाह जैपाल पर पड़ी जो कमरे के अन्दर आ रहा था॥

जयपाल को देखते ही दारोगा ने कहा, "कहो कुछ पता लगा ?" जिसके जवाब में उसने कहा, "नहीं कुछ भी नहीं, मगर मैं यह कहने को लिये आया हूं कि मनोरमा जी के दो ऐयार गोविन्द और मायासिंह उन्हीं के भेजे हुए यहां आये हैं, शायद आप से उन्होंने (मनोरमा ने) इनके बारे में कुछ जिक्र किया था॥"

दारोगा०। हां मुझे मालूम है, उन दोनों को यहां ले आओ॥

"बहुत खूब" कह जयपाल चला गया और थोड़ी ही देर में गोविन्द और मायासिंह को साथ लिये हुए आ पहुंचा। हमारे पाठक इन दोनों को कई बार मनोरमा के साथ देख चुके हैं इस लिये इनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है॥

दोनों आदमी दारोगा को सलाम कर के बैठ गये और जयपाल भी दारोगा का इशारा पाकर पास ही बैठ गया। गोविन्द ने अपने पास से एक चीठी निकाल कर दारोगा की तरफ बढ़ाई और कहा, मनोरमा जी ने यह चीठी दी है और जुबानी कहला भेजा है कि आज

किसी समय मैं भी आपसे मिलूँगी ॥"

दारोगा ने वह चीठी लेकर गौर से पढ़ी और तब उसके चेहरे से एक प्रकार की प्रसन्नता सी झलकने लगी। उसने उन दोनों ऐयारों की तरफ देख कर कहा, "मालूम होता है कि तुम लोगों ने प्रभाकरसिंह का कुछ पता लगाया है ॥"

माया०। जी हां, कुछ क्या हम लोग मनोरमा जी के हुक्म से उनका बहुत कुछ पता लगा चुके हैं और उन्हें गिरफ्तार भी कर लिये होते पर जिस मकान में वह रहते हैं वे कुछ ऐसा बना हुआ है कि कोई तर्कीब नहीं लगने पाती ॥

दारोगा०। वे कहां रहते हैं ?

माया०। जी अजायबघर के पूरब तरफ ऊँचे टीले पर इमारत है—शायद उसका नाम लोहगढ़ी है—उसी के अन्दर वे रहते हैं और कई बार एक औरत को भी उसके अन्दर आते जाते हम लोगों ने देखा है पर वह कौन है इसे बिल्कुल नहीं जान सके क्योंकि वह हमेशे नकाब से अपनी सूरत ढांके रहती है ॥

दारोगा०। (जयपाल से धीमे स्वर में) बेशक वह मालती ही होगी ॥

जय०। जी हां, यही शक मुझे भी होता है ॥

माया०। अगर आपका हुक्म हो तो हम लोग उस औरत को गिरफ्तार करने की कोशिश करें ॥

दारोगा०। जरूर करो, अगर तुम उसे गिरफ्तार कर सके तो मैं तुम लोगों को मुंह मांगा इनाम दूंगा ॥

माया०। हम लोग दिलोजान से कोशिश करेंगे ॥

गोबिन्द०। मगर एक बात अर्ज कर देना जरूरी मालूम होता है ॥

दारोगा०। क्या ?

गोबिन्द०। हमलोगों के सिवाय और भी कई आदमी उन दोनों का पीछा कर रहे हैं और आपके दोस्त भूतनाथ भी कई बार उस टीले पर दिखाई पड़ चुके हैं। हम लोग नहीं कह सकते कि वे दुश्मनी की नीयत से वहां जाते हैं या दोस्ती की, पर जाते अवश्य हैं ॥

दारोगा०। (कुछ सोच कर) खैर कोई हर्ज नहीं तुम अपना काम करो मगर उसकी निगाह से अपने को बचाये हुए ॥

माया० । बहुत खूब ॥

दारोगा० । (जैपाल से) इधर कई दिनों से भूतनाथ मुझसे नहीं मिला, न मालूम इधर वह किस धुन में है ॥

जैपाल०। मुझसे वह कल मिला था, वह कुछ परेशान सा मालूम होता था और घबड़ाया हुआ था ॥

माया० । जी हां, जब से शेरसिंह की लड़की गौहर को उन्होंने गिरफ़ार किया और वह उसके कब्जे से निकल गई तब से न जाने क्यों उनका यही हाल है ॥

दारोगा०। क्या गौहर को उसने गिरफ़ार किया था ? यह कब की बात है ?

माया० । कई दिन हो गए, क्या आप को यह हाल नहीं मालूम है ?

दारोगा० । नहीं बिलकुल नहीं ॥

माया० । जिस रोज आपने शेरसिंह से मुलाकात की थी जिस रोज प्रभाकरसिंह आपकी कैद से छूटे उसी रोज की यह बात है ॥

इतना कह मायासिंह वह सब हाल कह गया । पाठकों को याद होगा कि इक्कीसवें बयान के अन्त में हम दो आदमियों का हाल लिख चुके हैं जो भूतनाथ का पीछा कर रहे थे, वे दोनों आदमी यही गोविन्द और मायासिंह थे जो मनोरमा की आज्ञानुसार भूतनाथ का पीछा कर रहे थे ॥

कुछ देर तक और बातचीत करने और कुछ जरूरी बातें समझाने के बाद दारोगा ने मायासिंह और गोविन्द को बिदा किया और स्वयम् जयपाल को साथ ले कपड़े पहिन किसी तरफ को चल निकला ॥

सन्ध्या होगई थी जब दारोगा अकेला एक भारी लबादा ओढ़े अपने को छिपाता हुआ नागर के मकान पर पहुंचा । फाटक खुला हुआ था मगर दारोगा के अन्दर घुसते ही नौकरों ने दर्वाजा बन्द कर दिया, इसी समय नागर वहां आ पहुंची और दारोगा का हाथ पकड़े मीठी मीठी बातें करती हुई मकान के अन्दर ले गई ॥

मकान के अन्दर पहुंच नागर ने दारोगा को बड़ी खातरी से बैठाया और कहा, " अभी कुछ ही देर हुई मनोरमा जी भी आई हैं

और आप की राह बेचैनी के साथ देख रही हैं ॥"

दारोगा०। तो मुझे उन्हीं के पास ले चलो, वहीं बैठ कर तुमसे भी बातें होंगी ॥

"बहुत अच्छा" कह नागर उठ खड़ी हुई और दारोगा को साथ लिये हुए मकान की सबसे ऊंची मंज़िल में पहुंची जहां एक बङ्गला था। इसी कमरे में मनोरमा बैठी हुई थी और उसके सामने एक औरत भी बैठी हुई थी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी ॥

मनोरमा के साथ किसी और को देख दारोगा दरवाजे ही पर रुका मगर मनोरमा के यह कहने पर कि "कोई हर्ज नहीं चले आइये।" वह भी भीतर जा कर बैठ गया। नागर ने वह दरवाजा बन्द कर दिया जिसकी राह सीढ़ियां चढ़ इस मंजिल में आना होता था और तब वह भी आकर इन लोगों के पास बैठ गई ॥

दारोगा०। (नकाबपोश औरत की तरफ बता कर) ये कौन हैं?

मनो०। ये मेरी एक नई साथिन और ऐयारा हैं। इन्हें मैं आप से मुलाकात कराने को ले आई हूं ॥

दारो०। मगर ये तो अपनी सूरत दिखाने से भी परहेज करती हैं॥

मनो०। इसके लिये मैं लाचार हूं कि जोर नहीं दे सकती क्योंकि ऐसा ही वादा करके इन्हें लाई हूं हां इतना कह सकती हूं कि इनके जरिये बहुत कुछ मदद मिलने की उम्मीद है और इन पर विश्वास करने में किसी तरह का हर्ज नहीं है, इसके लिये मैं जिम्मेदार हूं ॥

दारोगा०। खैर जब तुम इन पर विश्वास करती हो तो मुझे भी करना ही होगा। अच्छा तो अब तुम क्या चाहती हो? तुम्हारे ऐयार गोबिन्द और मायासिंह तो मुझसे मिले थे ॥

मनोरमा०। खैर उनकी बातें तो पीछे होंगी पहिले इनकी बातें तो आप सुन लें। (नकाबपोश औरत से) अच्छा होगा कि तुम ही इनसे सब हाल खुलासा कह जाओ ॥

औरत०। कोई बात छिपाऊं तो नहीं ॥

मनो०। नहीं कोई नहीं और न ये ही तुमसे कोई बात छिपावेंगे ॥

दारोगा०। मगर यदि ये सूरत न दिखावें तो न सही कम से कम अपना नाम तो बता दें!!

औरत०। हा हा, मेरा नाम आप जान सकते हैं, मेरा नाम "सुन्दरी"

है और मैं ऐयारा हूं। शायद आपने गदाधरसिंह ऐयार का नाम सुना होगा, मैं उसी के रिश्नेदारों में से हूं और इसी सबब से (मनोरमा और नागर की तरफ़ बता कर) आप दोनों को बखूबी जानती हूं, यद्यपि आज से कुछ दिन पहिले मैंने इनकी सूरत नहीं देखी थी। खैर अब मैं अपने काम की तरफ झुकती हूं॥

इतना कह उस औरत (सुन्दरी) ने एक चीठी निकाली और उसे दारोगा की तरफ बढ़ा कर कहा, "यह चीठी पटने के शेरअली खां ने अपनी लड़की गौहर के हाथ आप के दोस्त बलभद्रसिंह के पास भेजी थी और इसके पढ़ने से आपको मालूम होगा कि आपकी इधर की कार्रवाइयों का बहुत कुछ हाल उसे मालूम हो चुका है॥"

दारोगा ने चौंक कर वह चीठी लेली और मन ही मन पढ़ गया, यह लिखा हुआ था "मेरे दोस्त बलभद्रसिंह! मुझे पक्का तौर से पता लगा है कि जमानियां के दारोगा साहब जिन्हें आप अपना दोस्त समझते हैं आपके दुश्मन हो रहे हैं। उनका वार आप पर और आप की लड़कियों पर होगा और खास कर आपकी बड़ी लड़की लक्ष्मी-देवी जिसे मैं बहुत प्यार करता हूं बहुत जल्द ही किसी मुसीबत में पड़ा चाहती है। लड़की गौहर ने जिसे ऐयारी का शौक है अपनी चालाकी से इन बातों का पता लगाया है इस लिये यह चीठी मैं उसी के हाथ आपके पास भेजता हूं। खुलासा हाल आपको उसी की जुबानी मालूम होगा॥"

चीठी के नीचे शेरअली खां का दस्तखत था॥

इस चीठी ने दारोगा को बदहवास कर दिया और उसने बेचैनी के साथ कहा, "तो क्या यह चीठी बलभद्रसिंह के हाथों तक पहुंच चुकी है?"

सुन्दरी०। अगर मेरे हाथ न लग गई होती तो अवश्य पहुंच जाती॥

दारोगा०। तुम्हें यह क्योंकर मिली?

सुन्दरी०। यह एक गुप्त बात है और आप से मैं बताया नहीं चाहती, हां अगर जोर दें तो लाचारी है॥

दारोगा०। नहीं, नहीं मैं जोर नहीं दे सकता। अच्छा यह बता सकती हो कि गौहर बलभद्रसिंह तक पहुंच गई या नहीं॥

सुन्दरी०। नहीं अभी तक नहीं, मगर फिर भी आप अपनी कुशल न समझें ॥

दारोगा० । सो क्यों ?

सुन्दरी० । उसे इस बात का पता लग चुका है कि आप हेलासिंह की लड़की के साथ गोपालसिंह की शादी कराया चाहते हैं अस्तु वह इस फिक्र में पड़ी हुई है कि उसे किसी तरह गिरफ़ार कर ले ॥

यह एक ऐसी बात थी जिसने दारोगा को बेचैन कर दिया और वह घबड़ा कर उसका मुंह देखने लगा कुछ देर बाद उसने कहा, "तुम्हें यह बात क्योंकर मालूम हुई ?"

सुन्दरी० । गौहर के रङ्ग ढङ्ग और उसकी कार्रवाइयों से । मैं आज कई दिनों से उसका पीछा कर रही हूं और जब से वह भूतनाथ की कैद से निकल कर आई है तब से तो मैं बराबर ही उसके साथ हूं। इसी से मैं उसकी इच्छा आप से कहती हूं ॥

मनोरमा० । (दारोगा की तरफ देख कर) तब क्यों न आप गौहर ही को गिरफ़ार कर लें ?

दारोगा० । (कुछ सोचता हुआ) हां यही तो मैं भी सोच रहा हूं मगर.........

सुन्दरी० । शायद आप सोचते हैं कि ऐसा करने से शेरअलीखां से आपकी खटपट हो जायगी जो आजकल दिग्विजयसिंह का बड़ा दोस्त बना हुआ है ॥

दारोगा० । (ताज्जुब से) बेशक मैं यही सोचता हूं, मगर तुम यह बात कैसे जानती हो ?

सुन्दरी० । (खिलखिला कर) आखिर मैं भी तो ऐयारा हूं और सब तरफ की खबर रखती हूं ॥

दारोगा० । अगर शेरअली को मालूम हो गया कि मैंने उसकी लड़की के साथ कोई बुरा बर्ताव किया तो वह अवश्य बिगड़ खड़ा होगा और खास कर ऐसी हालत में जब कि (सुन्दरी की तरफ बता कर) इन सब बातों की उसे खबर है, उसके साथ खुल्लमखुल्ला बिगाड़ करना मैं पसन्द नहीं करता ॥

सुन्दरी० । बेशक ऐसा ही है और यही सोच कर मैंने भी अभी तक गौहर को गिरफ़ार करने की कोई चेष्टा नहीं की है । यद्यपि मैं

जब चाहूं ऐसा कर सकती हूं परन्तु गौहर के साथ अभी छेड़खानी करना ठीक नहीं ॥

मनोरमा० । मगर, आखिर फिर किया क्या जाय ?

सुन्दरी० । (कुछ देर चुप रह कर) मुझे एक बहुत अच्छी तर्कीब सूझी है ॥

दारोगा० । क्या ?

सुन्दरी० । गौहर सुन्दर या हेलासिंह को गिरफ्तार करने की फिक्र में लगी हुई है, उसे ऐसा करने का मौका दिया जाय ॥

दारोगा० । वाह ! यह तो खूब कही. तब तो सब काम करा कराया ही चौपट हो जाय ॥

सुन्दर० । नहीं आप मेरा मतलब नहीं समझे, मैं यह कहती हूं कि एक नकली सुन्दर या हेलासिंह बना कर उसके हाथ में इस तरह पर दे दिये जायँ जिस में वह यही समझे कि हमने असली को ही गिरफ्तार किया । यदि वह सुन्दर को गिरफ्तार कर सकी तो फिर जहां तक मैं समझती हूं और कोई कार्रवाई न करेगी ॥

मनो० । क्योंकि वह यह समझेगी कि अब जब हेलासिंह और सुन्दर ही नहीं रहे......

सुन्दरी० । बस बस यही मेरा खयाल है ॥

दारोगा० । बेशक तुम्हारी यह राय सोचने के लायक है । मगर इस मामले में बिना हेलासिंह की राय लिये मैं कुछ भी नहीं कर सकता ॥

सुन्दरी० । यदि आप मुझे अपने हाथ की लिखी एक चीठी दे दें तो मैं खुद जाकर हेलासिंह से मिलूं और सब कुछ समझा कर जैसी राय पक्की हो आप से कहूं ॥

दारोगा० । हां यह बहुत ठीक होगा, तुम्हें सब हाल मालूम भी है । मैं अभी चीठी लिख देता हूं ॥

सुन्दरी० । मगर इस बात का ख्याल रहे कि मैं अपनी सूरत दिखाने पर मजबूर न की जाऊं ॥

दारोगा० । खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, मगर यह तो कहो कि जब तुम हमलोगों की साथी बनती हो और दुखन्दे में शरीक हो तो अपनी सूरत दिखाने से क्यों परहेज करती हो ?

सुन्दरी०। मैंने इसका पूरा पूरा सबब मनोरमाजी से बयान कर दिया है मेरे जाने बाद आप उनसे दरियाफ्त कर सकते हैं और फि यह बात कुछ ज्यादा दिन के लिये नहीं है॥

"खैर" कह कर दारोगा ने एक भेद की निगाह मनोरमा पर डाली और उसने लापरवाही के साथ गरदन हिला दी। इस इशारे को उस औरत ने भी देखा मगर कुछ जाहिर नहीं किया॥

दारोगा ने अपनी जेब से एक जस्ते की कलम और कागज का एक टुकड़ा निकाला और हेलासिंह के नाम एक पत्र लिख कर सुन्दरी के हवाले कर दिया॥

सुन्दरी०। अब मैं कल आप से मिलूंगी। मगर किस जगह मिलूं?

दारोगा०। मैं कल इस समय इसी जगह रहूंगा यहीं मुझसे मिलना॥

सुन्दरी०। बहुत अच्छा, अब यदि आज्ञा हो तो मैं जाऊँ क्योंकि बहुत विलम्ब हो गया है॥

दारोगा०। अच्छी बात है पर कल यहां मिलने का ख्याल रखना॥

सुन्दरी०। अवश्य॥

सुन्दरी उठ खड़ी हुई दारोगा के इशारे से नागर उसे पहुंचाने के लिये साथ हो गई और दर्वाजे तक पहुंचा आई॥